

षट्खंडागमः

5.5.54

चतुर्थसंज्ञे वेदानामप्रथमे

वेदनालुब्धोगद्धारगर्भितानि

वेदनाक्षेत्रविद्यान-वेदनाकालविद्यानानुयोगद्वाराणि

सामान्य सूचना

नागपुर विश्वविद्यालय-संस्कृत-पाठोद्घाटनविभागाध्यक्ष

एम् ए एलएल बी, डी लिट् इत्युपाधिधारी

हीराबाखो जैन:

सहस्रसम्पादक

पं बाळचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री

संशोधने साहायक

॥ नेमिनाथ तनय आदिनाथ उपाध्याय एम् ए, डी लिट्.

अथर्वश्रुतिः

श्रीमन्महाश्री शिवशिलाचरणाय नमः

जैन-साहित्योद्धारक-पंड-कार्यालय

अनूपपत्नी (बहार)

वि. सं. २०११]

वीर-निर्वाण संवत् २४८१

[ई स १९५५]

मूल्ये रूप्यक-प्राप्ताकम्

प्रकाशक—

श्रीमन्त शेट शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र
जैन-साहित्योद्धारक फंड कार्यालय
अमरावती (बरार)



मुद्रक—

१-१९ फार्म-सरस्वती मुद्रणालय,
अमरावती, म. प्र.
शेष-रघुनाथ दिपाजी देसाई
न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस,
६ केल्लेवाडी, गिरगाँव, बम्बई ४.

THE
ṢAṬKHAṆḌĀGAMA
OF
PUṢPADANTA AND BHŪTABALI
WITH
THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA
VOL. XI

Vedanākṣetravidhāna-Vedanākālavidhāna Anuyogadwāras

Edited

with translation, notes and indexes

BY

Dr. HIRALAL JAIN, M. A., LL. B., D. LITT.

ASSISTED BY

**Pandit Balchandra
Siddhānta Shāstri**

with the cooperation of

Dr. A. N. UPADHYE, M. A., D. LITT.

Published by

**Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sāhitya Uddhāraka Fund Kāryālaya,
AMBAVATI (Berar).**

1955

Price Rupees Twelve Only

Published by—

**Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sahitya Uddharaka Fund Karyalaya,
AMRAVATI (Berar).**



Printer:—

**Forms 1-19 Saraswati Printing Press,
Amraoti, M. P.**

**Rest—R. D. Desai,
New Bharat P. Press,
6, Kelawadi, Girgaon, Bombay 4.**

विषय-सूची



पृष्ठ

१ प्राक्-कथन

६

१

प्रस्तावना

१ विषय-परिचय

७

२ विषयसूची

१४

३ शुद्धिपत्र

१९

२

मूल, अनुवाद और टिप्पण

१ वेदनाक्षेत्रविधान

१—७४

२ वेदनाकालविधान

७५—३६८

३

परिशिष्ट

१ सूत्रपाठ

वेदनाक्षेत्रविधानका सूत्रपाठ

१

वेदनाकालविधानका सूत्रपाठ

४

२ अवतरण-गाथासूची

१५

३ ग्रन्थोल्लेख

१५

४ पारिभाषिक शब्द-सूची

१५



प्राक्-कथन

षट्खंडागम भाग १० के प्रकाशनके पश्चात् इतने शीघ्र प्रस्तुत भाग ११ को पाठक पाठक प्रसन्न होंगे, और प्रकाशनसम्बन्धी पूर्व विलम्बके लिये हमें क्षमा करेंगे, ऐसी आशा है।

इस भागके प्रथम १९ फार्म अर्थात् पृष्ठ १ से १५२ तक पूर्वानुसार सरस्वती प्रेस, अमरावतीमें छपे हैं; और शेष समस्त भाग न्यूभारत प्रेस, बम्बई, में छपा है। इस कारण यदि पाठकोंको टाइप, कागज व मुद्रण आदिमें कुछ द्विरूपता व दोष दिखाई दे तो क्षमा करेंगे। यदि बम्बईमें मुद्रणकी व्यवस्था न की गई होती तो अभी और न जाने कितने काल तक इस भागके पूरे होनेकी प्रतीक्षा करनी पड़ती।

बम्बईमें इसके मुद्रणकी व्यवस्था करा देनेका श्रेय श्रद्धेय पं० नाथूरामजी प्रेमीको है। इस कार्यमें हमें उनका औपचारिक रूपमात्रसे नहीं, किन्तु यथार्थतः तन, मन और धनसे सहयोग मिला है जिसके लिये हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। उनकी बड़ी तीव्र अभिलाषा और प्रेरणा है कि धवलशास्त्रका सम्पादन-प्रकाशन-कार्य जितना शीघ्र हो सके, पूरा कर देना चाहिये, और इसके लिये वे अपना सब प्रकार सहयोग देनेके लिये तैयार हो गये हैं।

इस कार्यकी शेष सब व्यवस्था पूर्ववत् स्थिर रही है जिसके लिये हम धवलाकी हस्तलिखित प्रतियोंके स्वामियोंके तथा सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी व व्यवस्थापक समितिके अन्य सदस्योंके उपकृत हैं।

सहारनपुरनिवासी श्री रतनचंद्रजी मुख्तार और उनके भ्राता श्री नेमिचन्द्रजी वकील इन सिद्धान्त ग्रंथोंके स्वाध्यायमें असाधारण रुचि रखते हैं, यह हम पूर्वमें भी प्रकट कर चुके हैं। यही नहीं, वे सावधानीपूर्वक समस्त मुद्रित पाठपर ध्यान देकर उचित संशोधनोंकी सूचना भी भेजनेकी कृपा करते हैं जिसका उपयोग शुद्धिपत्रमें किया जाता है। इस भागके लिये भी उन्होंने अपने संशोधन भेजनेकी कृपा की। इस निस्पृह और शुद्ध धार्मिक सहयोगके लिये हम उनका बहुत उपकार मानते हैं।

पाठक देखेंगे कि भाग १२ वाँ भी प्रायः इसके साथ ही साथ प्रकाशित हो रहा है, जिससे पूर्वविलम्बका हमारा समस्त अपराध क्षम्य सिद्ध होगा।

विषय-परिचय

वेदना महाधिकारके अन्तर्गत जो वेदनानिक्षेपादि १६ अनुयोगद्वार हैं उनमेंसे आदिके ४ अनुयोगद्वार पुस्तक १० में प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तकमें उनसे आगेके वेदनाक्षेत्रविधान और वेदनाकालविधान ये २ अनुयोगद्वार प्रकाशित किये जा रहे हैं।

५ वेदनाक्षेत्रविधान

द्रव्यविधानके समान इस अनुयोगद्वारमें भी पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये तीन अनुयोगद्वार हैं। यहाँ प्रारम्भमें श्री वीरसेन स्वामीने क्षेत्रविधानकी सार्थकता प्रगट करते हुए प्रथमतः नाम, स्थापना, द्रव्य व भावके भेदसे क्षेत्रके ४ भेद बतला कर उनमेंसे नोआगमद्रव्यक्षेत्र (आकाश) को अधिकारप्राप्त बतलाया है। ज्ञानावरणादि आठ कर्म रूप पुद्गल द्रव्यका नाम वेदना है। समुद्घातादि रूप विविध अवस्थाओंमें संकोच व विस्तारको प्राप्त होनेवाले जीवप्रदेश उक्त वेदनाका क्षेत्र है। प्रकृत अनुयोगद्वारमें चूँकि इसी क्षेत्रकी प्ररूपणा की गई है, अतएव 'वेदनाक्षेत्रविधान' यह उसका सार्थक नाम है।

(१) पदमीमांसा—जिस प्रकार द्रव्यविधान (पु. १०) के अन्तर्गत पदमीमांसा अनुयोगद्वारमें द्रव्यकी अपेक्षा ज्ञानावरणादि कर्मोंकी वेदनाके उत्कृष्ट, अनुकृष्ट, जघन्य व अजघन्य तथा देशामर्शकभावसे सूचित सादिअनादि पदोंकी प्ररूपणा की गई है; ठीक उसी प्रकारसे यहाँ इस अनुयोगद्वारमें भी उन्हीं १३ पदोंकी क्षेत्रकी अपेक्षा प्ररूपणा की गई है। उससे यहाँ कोई उल्लेखनीय विशेषता नहीं है (देखिए द्रव्यविधानका विषयपरिचय प्रस्तावना पृ. २-४)।

(२) स्वामित्व अनुयोगद्वारमें उत्कृष्ट पद विषयक स्वामित्व और जघन्य पद विषयक स्वामित्व, इस प्रकार स्वामित्वके २ भेद बतलाकर प्रकरण वश यहाँ जघन्य व उत्कृष्टके विषयमें निश्चित पद्धतिके अनुसार नामादि रूप निक्षेपविधिकी योजना की गई है। इसमें नोआगमद्रव्य-जघन्यके ओष और आदेशकी अपेक्षा मुख्यतया २ भेद बतलाकर फिर उनमेंसे भी प्रत्येकके द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा ४-४ भेद बतलाये हैं। उनमें ओषकी अपेक्षा एक परमाणुको द्रव्य-जघन्य कहा गया है। कर्मक्षेत्रजघन्य और नोर्मक्षेत्रजघन्यके भेदसे क्षेत्रजघन्य दो प्रकारका है। इनमें सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहनाका नाम कर्मक्षेत्रजघन्य और एक आकाशप्रदेशका नाम नोर्मक्षेत्रजघन्य बतलाया है। एक समयको कालजघन्य और परमाणुमें रहनेवाले एक स्निग्धत्व आदि गुणको भावजघन्य कहा गया है। आदेशतः तीन प्रदेशवाले स्कन्धकी अपेक्षा दो प्रदेशवाला स्कन्ध द्रव्यजघन्य, तीन आकाशप्रदेशोंमें अधिष्ठित द्रव्यकी अपेक्षा दो आकाशप्रदेशोंमें अधिष्ठित द्रव्य क्षेत्रजघन्य, तीन समय परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो

समय परिणत द्रव्य कालजघन्य, तथा तीन गुण-परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो गुण-परिणत द्रव्य भावजघन्य है। इसी प्रकारसे आदेशकी अपेक्षा इन द्रव्यजघन्यादिके भेदोंकी आगे भी कल्पना करना चाहिये। जैसे—चार प्रदेशवाले स्कन्धकी अपेक्षा तीन प्रदेशवाला तथा पाँच प्रदेशवाले स्कन्धकी अपेक्षा चार प्रदेशवाला स्कन्ध आदेशकी अपेक्षा द्रव्यजघन्य है, इत्यादि। यही प्रक्रिया उत्कृष्टके सम्बन्धमें भी निर्दिष्ट की गयी है। विशेष इतना है कि यहाँ ओषकी अपेक्षा महास्कन्धको द्रव्य-उत्कृष्ट, लोकाकाशको कर्मक्षेत्र-उत्कृष्ट, आकाशद्रव्यको नोकर्मक्षेत्र-उत्कृष्ट, अनन्त लोकोंको काल-उत्कृष्ट, और सर्वोत्कृष्ट वर्णादिको भाव-उत्कृष्ट कहा गया है।

आगे इस अनुयोगद्वारमें ज्ञानावरणादि आठ कर्मोंकी क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य वेदनायें किन किन जीवोंके कौन कौनसी अवस्थाओंमें होती हैं, इस प्रकार इन वेदनाओंके स्वामियोंकी विस्तारसे प्ररूपणा की गयी है। उदाहरणस्वरूप क्षेत्रकी अपेक्षा ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा करते हुए बतलाया गया है कि एक हजार योजन प्रमाण आयत जो महामत्स्य स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य तटपर स्थित है, वहाँ वेदना-समुद्रातको प्राप्त होकर जो तनुवातवलयसे संलग्न है तथा जो मारणान्तिकसमुद्रातको करते हुए तीन विग्रहकाण्डकोंको करके अनन्तर समयमें नीचे सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न होनेवाला है उसके ज्ञानावरण कर्मकी क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना होती है। इस उत्कृष्ट वेदनासे भिन्न ज्ञानावरणकी क्षेत्रकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट वेदना है। इसी प्रकारसे दर्शनावरण आदि शेष कर्मोंकी उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट वेदनाओंकी प्ररूपणा की गयी है। वेदनीय कर्मकी क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना लोकपूरण केवलिसमुद्रातको प्राप्त हुए केवलीके कही गयी है।

ज्ञानावरणकी क्षेत्रतः जघन्य वेदना ऐसे सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवके बतलायी है जो ऋजुगतिसे उत्पन्न होकर तद्भवस्थ होनेके तृतीय समयमें वर्तमान व तृतीय समयवर्ती आहारक है, जघन्य योगवाला है, तथा सर्वजघन्य अवगाहनासे युक्त है। इस जघन्य क्षेत्रवेदनासे भिन्न अजघन्य क्षेत्रवेदना कही गयी है। इसी प्रकारसे शेष कर्मोंकी भी क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य व अजघन्य वेदनाकी यहाँ प्ररूपणा की गयी है।

(३) अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारमें आठों कर्मोंकी उक्त वेदनाओंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा जघन्यपदविषयक, उत्कृष्टपदविषयक व जघन्य-उत्कृष्टपदविषयक, इन ३ अनुयोगद्वारोंके द्वारा की गयी है। प्रसंग पाकर यहाँ (सूत्र १०-९९ में) मूलग्रन्थकर्ताने सब जीवोंमें अवगाहनादण्डककी भी प्ररूपणा कर दी है।

६ वेदनाकालविधान

इस अनुयोगद्वारमें पहिले नामकाल, स्थापनाकाल, द्रव्यकाल, समाचारकाल, अद्वाकाल, प्रमाणकाल और भावकाल, इस प्रकार कालके ७ भेदोंका निर्देश कर इनके और भी उत्तरभेदोंको बतलाते हुए तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकालके प्रधान और अप्रधान रूपसे २ भेद बतलाये हैं। इनमें जो काल शेष पाँच द्रव्योंके परिणमनमें हेतुभूत है वह प्रधानकाल कहा गया है। यह

प्रधानकाल कालाणु स्वरूप होकर संख्यामें लोकाकाशप्रदेशोंके बराबर, रत्नराशिके समान प्रदेश-प्रचयसे रहित, अमूर्त एवं अनादि-निधन है। अप्रधानकाल सचित्त, अचित्त और मिश्रके भेदसे तीन प्रकारका बतलाया है। इनमें दंशकाल (डांसोंका समय) व मशककाल (मच्छरोंका समय) आदिको सचित्तकाल; धूलिकाल, कर्दमकाल, वर्षाकाल, शीतकाल व उष्णकाल आदिको अचित्त-काल; तथा सदंश शीतकाल आदिको मिश्रकालसे नामांकित किया गया है।

समाचारकाल लौकिक और लोकोत्तरके भेदसे दो प्रकार है। वन्दनाकाल, नियमकाल, स्वाध्यायकाल, व ध्यानकाल आदिरूप लोकोत्तर समाचारकाल तथा कर्षणकाल (खेत जोतनेका समय) लुननकाल व वपनकाल (बोनेका समय) आदि रूप लौकिक समाचारकाल कहा जाता है। वर्तमान, अतीत व अनागत रूप काल अद्वाकाल तथा पत्योपम व सागरोपम आदि रूप काल प्रमाणकाल नामसे प्रसिद्ध हैं।

वेदनाद्रव्यविधान और क्षेत्रविधानके समान इस अनुयोगद्वारमें भी पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व ये ही तीन अनुयोगद्वार हैं।

(१) **पदमीमांसा** अनुयोगद्वारमें ज्ञानावरणादि कर्मोंकी वेदनाओंके उत्कृष्ट-अनुकृष्ट आदि उन्हीं १३ पदोंकी प्ररूपणा कालकी अपेक्षा ठीक उसी प्रकारसे की गयी है जैसे कि द्रव्य-विधानमें द्रव्यकी अपेक्षासे और क्षेत्रविधानमें क्षेत्रकी अपेक्षासे वह की गयी है। यहाँ उससे कोई उल्लेखनीय विशेषता नहीं है।

(२) **स्वामित्व**—पिछले उन दोनों अनुयोगद्वारोंके समान यहाँ भी इस अनुयोगद्वारको उत्कृष्ट पदविषयक और अनुकृष्ट पदविषयक इन्हीं दो भेदोंमें विभक्त किया गया है। प्रकरणवश यहाँ भी प्रारम्भमें क्षेत्रके विधानके समान जघन्य और उत्कृष्टके विषयमें नामादि रूप निक्षेपविधिकी योजना की गयी है। तत्पश्चात् ज्ञानावरणादि कर्मों सम्बन्धी कालकी अपेक्षा होनेवाली उत्कृष्ट-अनुकृष्ट एवं जघन्य-अजघन्य वेदनाओंके स्वामियोंकी प्ररूपणा की गयी है। उदाहरणार्थ, ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामीका कथन करते हुए यह बतलाया है कि जो संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीव सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो चुका है, साकार उपयोगसे युक्त होकर श्रुतोपयोगसे सहित है, जागृत है, तथा उत्कृष्ट स्थितिबन्धके योग्य संक्लेश-स्थानोंसे अथवा कुल मध्यम जातिके संक्लेश परिणामोंसे सहित है, उसके ज्ञानावरण कर्मकी कालकी उत्कृष्ट वेदना होती है। उपर्युक्त विशेषताओंसे संयुक्त यह जीव कर्मभूमिज (१५ कर्म-भूमियोंमें उत्पन्न) ही होना चाहिये, भोगभूमिज नहीं; कारण कि भोगभूमियोंमें उत्पन्न जीवोंके उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त वह चाहे अकर्मभूमिज (देव-नारकी) हो, चाहे कर्मभूमिप्रतिभागज (स्वयंप्रभ पर्वतके बाह्य भागमें उत्पन्न) हो; इसकी कोई विशेषता यहाँ अभीष्ट नहीं है। इसी प्रकार वह संख्यातवर्षायुष्क (अर्द्ध द्वीप-समुद्रों तथा कर्मभूमि प्रतिभागमें उत्पन्न) और असंख्यातवर्षायुष्क (देव-नारकी) इनमेंसे कोई भी हो सकता है। वह देव होना

चाहिये, मनुष्य होना चाहिये, तिर्यच होना चाहिये अथवा नारकी होना चाहिये; इस प्रकारकी गतिजन्य विशेषताके साथ ही यहाँ वेदजनित विशेषताकी भी कोई अपेक्षा नहीं की गयी है। वह जलचर भी हो सकता है, धलचर भी हो सकता है, और नभचर भी हो सकता है; इसकी भी विशेषता यहाँ नहीं ग्रहण की गयी।

इस उत्कृष्ट वेदनासे मित्र वेदना अनुत्कृष्ट बतलायी गई है। इसी प्रकारसे यथासम्भव शेष कर्मोंकी कमी कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट वेदनाओंकी विशदतासे प्ररूपणा की गयी है। आयु कर्मकी कालतः उत्कृष्ट वेदनाका निरूपण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि उत्कृष्ट देवायुके बन्धक मनुष्य सम्यग्दृष्टि ही होते हैं, किन्तु उत्कृष्ट नारकायुके बन्धक मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टिके साथ संजी पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यच मिथ्यादृष्टि भी होते हैं। देवोंकी उत्कृष्ट आयुका बन्ध १५ कर्मभूमियोंमें ही होता है, कर्मभूमिप्रतिभाग और भोगभूमियोंमें उत्पन्न जीवोंके उसका बन्ध सम्भव नहीं है। उत्कृष्ट नारकायुका बन्ध १५ कर्मभूमियोंके साथ कर्मभूमिप्रतिभागमें भी उत्पन्न जीवोंके होता है, भोगभूमियोंमें उसका बन्ध नहीं होता। इस उत्कृष्ट देवायु और नारकायुके बन्धक संख्यात वर्षकी आयुवाले मनुष्य व तिर्यच उसके बन्धक नहीं होते। तीनों वेदोंमेंसे किसी भी वेदके साथ उत्कृष्ट आयुका बन्ध हो सकता है, उसका किसी वेदविशेषके साथ विरोध सम्भव नहीं है; यह जो मूल ग्रन्थकारद्वारा सामान्य कथन किया गया है उसका स्पष्टीकरण करते हुए श्री वीरसेन स्वामीने कहा है कि वेदसे अभिप्राय यहाँ भाववेदका रहा है। कारण कि अन्यथा द्रव्य बीवेदसे भी उत्कृष्ट नारकायुका बन्ध हो सकता है, किन्तु वह “आ पंचमी त्ति सिंहा इयीओ जंति छट्ठिपुढवि त्ति” इस सूत्र (मूलाचार १२-११२) के विरुद्ध होनेसे सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त द्रव्यबीवेदके साथ उत्कृष्ट देवायुका भी बन्ध संभव नहीं है, क्योंकि, उसका बन्ध निर्घन्य लिगके साथ ही होता है; परन्तु द्रव्यस्त्रियोंके वक्षादि त्यागरूप भावनिर्घन्यता सम्भव नहीं है।

कालकी अपेक्षा सब कर्मोंकी जघन्य वेदनाकी प्ररूपणा करते हुए ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय कर्मकी यह वेदना छद्मस्थ अवस्थाके अन्तिम समयको प्राप्त जीवके (क्षीणकषायके अन्तिम समयमें) बतलायी गयी है। वेदना, आयु, नाम व गोत्रकी कालतः जघना वेदना अयोग-केवलीके अन्तिम समयमें होती है। मोहनीय कर्मकी उक्त वेदना मूक्षमसाम्यरावके अन्तिम समयमें होती है। अपनी अपनी जघन्य वेदनासे भिन्न सब कर्मोंकी कालतः अजघन्य वेदना कही गयी है।

(३) अल्पबहुत्व—अनुयोगद्वारमें क्रमशः जघन्य पद, उत्कृष्ट पद और जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आठों कर्मोंकी कालवेदनाके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है। इस प्रकार इन १ अनुयोगद्वारोंके समाप्त हो जानेपर प्रस्तुत वेदनाकालविधान अनुयोगद्वारा समाप्त हो जाता है। आगे चलकर उसकी प्रथम चूलिका प्रारम्भ होती है।

चूलिका १

इस चूलिकामें निम्न ४ अनुयोगद्वार हैं—स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणा, निषेकप्ररूपणा, आबाधाकाण्डकप्ररूपणा और अल्पबहुत्व । (१) स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणामें चौदह जीवसमासोंके आश्रयसे स्थितिबन्धस्थानोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है । अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमेंसे जघन्य स्थितिको कम करके एक अंकके मिला देनेपर जो प्राप्त हो उतने स्थितिस्थान होते हैं । इस अल्पबहुत्वको देशामर्शक मूचित कर श्री वीरसेन स्वामीने यहाँ अल्पबहुत्वके अव्वोगाढअल्पबहुत्व और मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व ये दो मेद बतला कर स्वस्थान-परस्थानके मेदसे विस्तारपूर्वक प्ररूपणा की है । अव्वोगाढअल्पबहुत्वमें कर्मविशेषकी अपेक्षा न कर सामान्यतया जीवसमासोंके आधारसे जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिबन्ध, स्थितिबन्धस्थान और स्थितिबन्धस्थानविशेषका अल्पबहुत्व बतलाया गया है । परन्तु मूलप्रकृतिअल्पबहुत्वमें उन्हीं जीवसमासोंके आधारसे ज्ञानावरणादि कर्मोंकी अपेक्षा कर उपर्युक्त जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिबन्धादिके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है ।

आगे जाकर “ बध्यते इति बन्धः, स्थितिश्चासौ बन्धश्च स्थितिबन्धः, तस्य स्थानं विशेषः स्थितिबन्धस्थानम् ; अथवा बन्धनं बन्धः, स्थितेर्बन्धः स्थितिबन्धः, सोऽस्मिन् तिष्ठतीति स्थितिबन्धस्थानम् ” इन दो निरुक्तियोंके अनुसार स्थितिबन्धस्थानका अर्थ आबाधास्थान करके पूर्वोक्त पद्धतिके ही अनुसार अव्वोगाढअल्पबहुत्वमें स्वस्थान-परस्थान स्वरूपसे जघन्य व उत्कृष्ट आबाधा, आबाधास्थान और आबाधास्थानविशेषके अल्पबहुत्वकी सामान्यतया तथा मूलप्रकृतिअल्पबहुत्वमें इन्हींके अल्पबहुत्वकी कर्मविशेषके आधारसे प्ररूपणा की गयी है । तत्पश्चात् जघन्य व उत्कृष्ट आबाधा, आबाधास्थान और आबाधाविशेष, इन सबके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा पूर्वोक्त पद्धतिके ही अनुसार सम्मिलित रूपमें एक साथ भी की गयी है ।

तत्पश्चात् “ स्थितयो बध्यन्ते एमिरिति स्थितिबन्धः, तेषां स्थानानि अवस्थाविशेषाः स्थितिबन्धस्थानानि ” इस निरुक्तिके अनुसार स्थितिबन्धस्थानपदसे स्थितिबन्धके कारणभूत संक्लेश व विशुद्धि रूप परिणामोंकी व्याख्या प्ररूपणा, प्रमाण व अल्पबहुत्व इन ३ अनुयोगद्वारोंसे की गयी है । संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व स्वयं मूलग्रन्थकर्ता भट्टारक भूतबलिके द्वारा चौदह जीवसमासोंके आधारसे किया गया है । तत्पश्चात् स्थितिबन्धकी जघन्य व उत्कृष्ट आदि अवस्थाविशेषोंके अल्पबहुत्वका भी वर्णन मूलसूत्रकारने स्वयं ही किया है^१ ।

(२) निषेकप्ररूपणा—संज्ञी पञ्चेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आदि विविध जीव ज्ञानावरणादि कर्मोंके आबाधाकालको छोड़कर उत्कृष्ट स्थितिके अन्तिम समय पर्यन्त प्रथमादिक समयोंमें किस्त प्रमाणसे द्रव्य देकर निषेकतत्त्वना करते हैं, इसकी प्ररूपणा इस अधिकारमें प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व, इन ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा विस्तारसे की गई है ।

१ यह अल्पबहुत्व श्वेतान्तर कर्मप्रकृति ग्रन्थकी आचार्य मलयगिरि विरचित संस्कृत टीकामें भी यत् किंचित् भेदके साथ प्रायः ज्योंका त्यों पाया जाता है (देखिये कर्मप्रकृति गाथा १, ८०-८१ की टीका) । इसके अतिरिक्त यहाँ अन्य भी कुछ प्रकरण अनूदित जैसे उपलब्ध होते हैं ।

(३) **आबाधाकाण्डकप्ररूपण**में यह बतलाया गया है कि पंचेन्द्रिय संज्ञी आदि जीव आयुर्कर्मको छोड़कर शेष ७ कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिसे आबाधाके एक एक समयमें पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र नीचे आकर एक आबाधाकाण्डकको करते हैं । उदाहरणार्थ विवक्षित जीव आबाधाके अन्तिम समयमें ज्ञानावरणादिकी उत्कृष्ट स्थितिको भी बांधता है, उससे एक समय कम स्थितिको बांधता है, दो समय कम स्थितिको भी बांधता है, तीन समय कम स्थितिको भी बांधता है, इस क्रमसे जाकर उक्त समयमें ही पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्रसे हीन तक उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है । इस प्रकार आबाधाके अन्तिम समयमें जितनी भी स्थितियाँ बन्धके योग्य हैं उन सबकी एक आबाधाकाण्डक संज्ञा निर्दिष्ट की गयी है । इसी क्रमसे आबाधाके द्विचरमादि समयोंके विवक्षित द्वितीयादिक आबाधाकाण्डकोंको भी समझना चाहिये । यह क्रम जघन्य स्थिति प्राप्त होने तक चालू रहता है । यहाँ श्री वीरसेन स्वामीने चौदह जीवसमासोंमें आबाधास्थानों और आबाधाकाण्डकशलाकाओंके प्रमाणकी भी प्ररूपणा की है ।

यहाँ आयु कर्मके आबाधाकाण्डकोंकी प्ररूपणा न करनेका कारण यह है कि अमुक आबाधामें आयुकी अमुक स्थिति बाँधती है, ऐसा कोई नियम अन्य कर्मोंके समान आयुर्कर्मके विषयमें सम्भव नहीं है । कारण कि पूर्वकोटिके त्रिभागको आबाधा करके उसमें तेतीस सागरोपम प्रमाण [उत्कृष्ट] आयु बाँधती है, उससे एक समय कम भी बाँधती है, दो समय कम भी बाँधती है, तीन समय कम भी बाँधती है, यहाँ तक कि इसी आबाधामें क्षुद्रभवप्रहण मात्र तक आयुस्थिति बाँधती है । यही कारण है कि यहाँ आयुके आबाधाकाण्डकोंकी प्ररूपणा नहीं की गयी ।

(४) **अल्पबहुत्व** अनुयोगद्वारमें मूलसूत्रकार द्वारा चौदह जीवसमासोंमें ज्ञानावरणादि ७ कर्मों तथा आयु कर्मकी जघन्य व उत्कृष्ट आबाधा, आबाधास्थान, आबाधाकाण्डक, नाना-प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर, एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर, एक आबाधाकाण्डक, जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिबन्ध तथा स्थितिबन्धस्थान, इन सबके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा विशद रूपसे की गयी है^१ । आगे चलकर यहाँ श्री वीरसेन स्वामीने इस अल्पबहुत्वके द्वारा सूचित स्वस्थान व परस्थान अल्पबहुत्वोंकी भी प्ररूपणा बहुत विस्तारसे की है ।

चूलिका २

इस चूलिकाके अन्तर्गत स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी प्ररूपणामें जीवसमुदाहार, प्रकृति-समुदाहार और स्थितिसमुदाहार ये ३ अनुयोगद्वार निर्दिष्ट किये गये हैं ।

(१) **जीवसमुदाहार**में यह बतलाया है कि जो जीव ज्ञानावरणादि रूप ध्रुवप्रकृतियोंके बन्धक हैं वे दो प्रकार होते हैं—सातबन्धक, और असातबन्धक । इसका कारण यह है कि

साता व असाता वेदनीयके बन्धके बिना उक्त ज्ञानावरणादि प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव नहीं है। इनमें जो सातबन्धक हैं वे तीन प्रकार हैं—चतुःस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और द्विस्थानबन्धक। असातबन्धक भी तीन प्रकार की हैं—द्विस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और चतुःस्थानबन्धक। इनमें साताके चतुःस्थानबन्धक सर्वविशुद्ध (अतिशय मंदकपायी), उनसे उसीके त्रिस्थानबन्धक संक्लिष्टतर होते हैं। असाताके द्विस्थानबन्धक सर्वविशुद्ध, इनसे त्रिस्थानबन्धक संक्लिष्टतर, और इनसे भी उसके चतुःस्थानबन्धक संक्लिष्टतर, होते हैं। साताके चतुःस्थानबन्धक जीव उक्त ज्ञानावरणादि प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिको, त्रिस्थानबन्धक अजघन्य अनुकृष्ट स्थितिको, तथा द्विस्थानबन्धक उत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हैं। असाताके द्विस्थानबन्धक उपर्युक्त प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिको, त्रिस्थानबन्धक अजघन्य-अनुकृष्ट स्थितिको, तथा चतुःस्थानबन्धक उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिके साथ ही असाताकी भी उत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हैं। तत्पश्चात् साता व असाताके चतुःस्थानबन्धक व द्विस्थानबन्धक आदि जीवोंमें ज्ञानावरणकी जघन्य आदि स्थितियोंको बाँधनेवाले जीव कितने हैं, तथा ज्ञानोपयोग व दर्शनोपयोगसे बंधनेवाली स्थितियाँ कौन कौनसी हैं, इत्यादि बतलाकर छह यवोंके अधस्तन व उपरिम भागोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है।

(२) प्रकृतिसमुदाहारमें प्रमाणानुगम और अल्पबहुत्व ये दो अनुयोगद्वार हैं इनमें प्रमाणानुगमके द्वारा ज्ञानावरणादि कमोंकी स्थितिके बन्धके कारणभूत स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा तथा अल्पबहुत्वके द्वारा उक्त आठों कमोंके स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है।

(३) स्थितिसमुदाहारमें प्रगणना, अनुकृष्टि और तीव्र-मंदता ये तीन अनुयोगद्वार हैं। इनमें प्रगणनाके द्वारा ज्ञानावरणादि आठ कमोंकी जघन्य स्थितिसे लेकर उत्कृष्ट स्थिति पर्यन्त पाये जानेवाले स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी संख्या और उनके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है। अनुकृष्टिमें उपर्युक्त जघन्य आदि स्थितियोंमें इन्हीं स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी समानता व असमानताका विचार किया गया है। तीव्र-मंदता अनुयोगद्वारमें जघन्य स्थिति-आदिके आधारसे स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंके अनुभागकी तीव्रता व मंदताका विवेचन किया गया है। इस प्रकार द्वितीय चूल्हिकाके समाप्त हो जानेपर प्रस्तुत वेदनाकालविधान अनुयोगद्वार समाप्त होता है।

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
५ वेदनाक्षेत्रविधान		
१	वेदनाक्षेत्रविधानमें ज्ञातव्य पदमीमांसा आदि ३ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख	१
२	क्षेत्रके सम्बन्धमें नामादि निक्षेपोंकी योजना (पदमीमांसा)	२
३	पदमीमांसामें क्षेत्रकी अपेक्षा ज्ञानावरणकी वेदना सम्बन्धी उत्कृष्ट-अनुकृष्ट आदि १३ पदोंका विचार	३
४	शेष कर्मोंके उक्त पदोंका विचार (सामित्व)	११
५	सामित्वके जघन्य व उत्कृष्ट पदविषयक २ मेदोंका निर्देश	॥
६	जघन्यके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना	॥
७	उत्कृष्टके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना	१३
८	क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा	१४
९	क्षेत्रतः अनुकृष्ट ज्ञानावरणीयवेदनाके स्वामीकी अनेक विकल्पोंमें प्ररूपणा	२३
१०	अनुकृष्ट क्षेत्रविकल्पोंके स्वामियोंका प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा निरूपण ।	२७
११	दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट व अनुकृष्ट क्षेत्रवेदनाकी प्ररूपणा ज्ञानावरणीयके समान बतलाकर वेदनीय कर्मकी उत्कृष्ट वेदनाके स्वामीका निरूपण ।	२९
१२	वेदनीय कर्मकी अनुकृष्ट क्षेत्रवेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा करते हुए प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा अनुकृष्ट क्षेत्रमेदोंके स्वामियोंका निरूपण	३०
१३	वेदनीय कर्मके ही समान आयु, नाम और गोत्रकी उत्कृष्ट क्षेत्रवेदना बतला कर क्षेत्रतः ज्ञानावरणीयकी जघन्य वेदनाके स्वामीका निरूपण	३३
१४	वेदनीय सम्बन्धी अनुकृष्ट क्षेत्रवेदनाके स्वामियोंकी अनेक मेदोंमें प्ररूपणा करते हुए चौदह जीवसमाप्तोंमें क्रमशः वृद्धिको प्राप्त होनेवाले अवगाहनामेदोंकी प्ररूपणा (अल्पबहुत्व)	३६
१५	अल्पबहुत्वप्ररूपणामें जघन्य, उत्कृष्ट और जघन्य-उत्कृष्ट पदविषयक ३ अनुयोग- द्वारोंका उल्लेख ।	५३
१६	जघन्य पदकी अपेक्षा आठों कर्मोंसम्बन्धी जघन्य क्षेत्रवेदनाकी परस्पर समानताका उल्लेख ।	॥
१७	उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा ज्ञानावरणादि कर्मोंकी क्षेत्रवेदनाका अल्पबहुत्व ।	५४
१८	जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उक्त वेदनाका अल्पबहुत्व ।	५५
१९	मूल सूत्रोंद्वारा सत्र जीवोंमें अवगाहनामेदोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा ।	५६

- १० एक सूक्ष्म जीवकी अपेक्षा दूसरे सूक्ष्म जीवकी, सूक्ष्म जीवकी अपेक्षा बादर जीवकी तथा बादर जीवकी अपेक्षा सूक्ष्म जीवकी अवगाहना सम्बन्धी गुणाकारविशेषोंका उल्लेख । ६९
- ११ संघट्टिद्वारा अवगाहनाभेदोंके स्वामियोंका निर्देश । ७१

६ वेदनाकालविधान

- १ वेदनाकालविधानमें ज्ञातव्य ३ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख करते हुए कालके ७ मूलभेदोंका उल्लेख करते हुए कालके ७ मूलभेदों एवं उत्तर भेदोंका स्वरूप । ७५
- २ पदमीमांसा आदि उक्त ३ अनुयोगद्वारोंका नामोल्लेख (पदमीमांसा) ७७
- ३ पदमीमांसामें कालकी अपेक्षा ज्ञानावर्णीयवेदना सम्बन्धी उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट आदि १३ पदोंकी प्ररूपणा ७८
- ४ शेष ७ कर्मोंकी कालवेदनाके उक्त १३ पदोंका विचार (स्वामित्व) ८५
- ५ स्वामित्वके जघन्य व उत्कृष्ट पदविषयक २ भेदोंका निर्देश "
- ६ जघन्यके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना "
- ७ उत्कृष्टके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना ८६
- ८ कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट ज्ञानावर्णीयवेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा ८८
- ९ कालकी अपेक्षा अनेक भेदोंमें विभक्त अनुत्कृष्ट ज्ञानावर्णीयवेदनाके स्वामियोंकी प्ररूपणा ९१
- १० प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा उक्त अनुत्कृष्ट स्थानविकल्पोंके स्वामियोंकी प्ररूपणा । १०८
- ११ ज्ञानावर्णीयके ही समान शेष ६ कर्मोंकी भी उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट वेदना बतलाकर आयु कर्मकी उत्कृष्ट कालवेदनाके स्वामीका निरूपण । ११२
- १२ कालकी अपेक्षा आयु कर्म सम्बन्धी अनुत्कृष्ट वेदनाकी प्ररूपणा । ११६
- १३ कालकी अपेक्षा जघन्य ज्ञानावर्णीयवेदनाके स्वामीका विवेचन । ११८
- १४ कालकी अपेक्षा अजघन्य ज्ञानावर्णीयवेदनाके स्वामिभेदोंकी प्ररूपणा । १२०
- १५ दर्शनावर्णीय और अन्तराय सम्बन्धी जघन्य व अजघन्य वेदनाओंकी ज्ञानावर्णसे समानताका उल्लेख । १२२
- १६ कालकी अपेक्षा जघन्य वेदनीयवेदनाके स्वामीका निर्देश । "
- १७ वेदनीयकी अजघन्य वेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा । १२३
- १८ आयु, नाम और गोत्र सम्बन्धी जघन्य-अजघन्य कालवेदनाओंकी वेदनीयवेदनासे समानताका उल्लेख । १२४
- १९ कालकी अपेक्षा जघन्य व अजघन्य मोहनीयवेदनाओंके स्वामियोंका उल्लेख (अत्यबहुत्व) १२५

- २० अल्पबहुत्व प्ररूपणामें जघन्य, उत्कृष्ट और जघन्य-उत्कृष्ट पदविषयक ३ अनुयोग-
द्वारोंका निर्देश । १३६
- २१ जघन्य पदकी अपेक्षा आठों कर्मोंकी जघन्य वेदना सम्बन्धी परस्पर समानताका
उल्लेख । १३७
- २२ उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आठों कर्मोंकी वेदनाका अल्पबहुत्व । "
- २३ जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उक्त कर्मवेदनाका अल्पबहुत्व । १३८

प्रथम चूल्का

- २४ मूलप्रकृति-स्थितिबन्धकी प्ररूपणामें स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणा, निषेकप्ररूपणा,
आबाधाकाण्डकप्ररूपणा और अल्पबहुत्व, इन ४ अनुयोगद्वारोंका निर्देश करके
उनकी आवश्यकताका दिग्दर्शन । १४०

(स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणा)

- २५ चौदह जीवसमासोंमें स्थितिबन्धस्थानोंका अल्पबहुत्व । १४२
- २६ इस अल्पबहुत्वद्वारा सूचित चार प्रकारके अल्पबहुत्वमेंसे स्वस्थान अव्वोगाढ
अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा । १४७
- २७ परस्थान अव्वोगाढअल्पबहुत्व । १४८
- २८ स्वस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व । १५०
- २९ चौदह जीवसमासोंमें आठों कर्मोंका परस्थान अल्पबहुत्व । १५४
- ३० व्युत्पत्तिविशेषसे स्थितिबन्धस्थानका अर्थ आबाधास्थान करके उनकी प्ररूपणा,
प्रमाण और अल्पबहुत्वके द्वारा व्याख्या । १६२
- ३१ प्रस्तुत अल्पबहुत्व प्ररूपणामें स्वस्थान अव्वोगाढअल्पबहुत्व । १६३
- ३२ परस्थान अव्वोगाढअल्पबहुत्व । १६४
- ३३ स्वस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व । १६६
- ३४ परस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व । १६९
- ३५ उपर्युक्त दोनों अल्पबहुत्वदण्डकोकी सम्मिलित प्ररूपणामें स्वस्थान अव्वोगाढ-
अल्पबहुत्व १७७
- ३६ परस्थान अव्वोगाढअल्पबहुत्व १७९
- ३७ स्वस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व १८२
- ३८ परस्थान मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व १९०
- ३९ चौदह जीवसमासोंमें संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व २०५
- ४० जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिबन्धका अल्पबहुत्व २२५

(निषेकप्ररूपणा)

- ४१ अनन्तरोपनिधा द्वारा पञ्चेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्त जीवोंमें ज्ञानावरण, दर्शना-
वरण, वेदनीय और अन्तराय कर्मोंकी निषेकचरणाका क्रम २३८

४२	उपर्युक्त जीवोंमें मोहनीय कर्मकी निषेकरचनाका क्रम ।	२४२
४३	पंचेन्द्रिय संज्ञी सम्यग्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि पर्याप्त जीवोंमें आयु कर्मकी निषेक- रचनाका क्रम	२४५
४४	पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंमें नाम व गोत्रकी निषेकरचनाका क्रम	२४६
४५	पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि अपर्याप्तोंमें सात कर्मोंकी निषेकरचनाका क्रम	२४७
४६	पंचेन्द्रियादिक अपर्याप्तों तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें आयुकी निषेक- रचनाका क्रम ।	२४८
४७	पंचेन्द्रिय असंज्ञी, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तोंमें आयुको छोड़कर शेष सात कर्मोंकी निषेकरचनाका क्रम ।	२४९
४८	उपर्युक्त जीवोंमें आयु कर्मकी निषेकरचनाका क्रम ।	२५१
४९	उपर्युक्त अपर्याप्तोंमें तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें सात कर्मोंकी निषेक- रचनाका क्रम	२५२
५०	परम्परोपनिषाके द्वारा विविध जीवोंमें निषेकरचनाक्रमकी प्ररूपणा	२५३
५१	श्रेणिमरूपणासे सूचित अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा ।	२५८
	(आबाधाकाण्डप्ररूपणा)	
५२	पंचेन्द्रिय संज्ञा व असंज्ञी आदि जीवोंमें आयुको छोड़कर शेष सात कर्मोंके आबाधा- काण्ड करनेका नियम ।	२६७
५३	आयुर्कर्मसम्बन्धी आबाधाकाण्डप्ररूपणा न करनेका कारण ।	२६९
	(अल्पबहुत्व)	
५४	पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्त-अपर्याप्त जीवोंमें सात कर्मोंकी जघन्य-उत्कृष्ट आबाधा आदिका अल्पबहुत्व ।	२७०
५५	पंचेन्द्रिय संज्ञी व असंज्ञी पर्याप्त जीवोंमें जघन्य व उत्कृष्ट आबाधा आदिका अल्पबहुत्व ।	२७३
५६	पंचेन्द्रिय संज्ञी व असंज्ञी अपर्याप्तों तथा शेष चतुरिन्द्रियादि पर्याप्त-अपर्याप्त जीवोंमें आयुसम्बन्धी जघन्य आबाधा आदिका अल्पबहुत्व ।	२७५
५७	पंचेन्द्रिय असंज्ञी आदि पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें सात कर्मोंकी आबाधा आदिका अल्पबहुत्व ।	२७६
५८	एकेन्द्रिय बादर व सूक्ष्म पर्याप्त-अपर्याप्तोंमें सात कर्मोंकी आबाधा आदिका अल्पबहुत्व ।	२७८
५९	श्री वीरसेन स्वामीके द्वारा प्रकृत अल्पबहुत्व सूचित स्वस्थान-परस्थान अल्पबहुत्वोंमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा ।	२७९
६०	परस्थान अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा ।	२८७
६१	प्रकृत अल्पबहुत्व सम्बन्धी विषम पदोंकी पंजिका ।	३०३

द्वितीय चूलिका

- ६२ इस चूलिकाके अन्तर्गत स्थितिबन्धाध्यवसायप्ररूपणमें जीवसमुदाहार, प्रकृति-समुदाहार और स्थितिसमुदाहार, इन तीन अनुयोगद्धारोंका निर्देश । ३०८
- ६३ प्रकृत चूलिकाकी अनावश्यकताविषयक शंका और उसका परिहार । ”
(जीवसमुदाहार)
- ६४ ज्ञानावरणादि ध्रुवप्रकृतियोंके बन्धक जीवोंके साताबन्धक व असाताबन्धक इन दो भेदोंका निर्देश । ३११
- ६५ साताबन्धकोंके ३ भेद । ३१२
- ६६ असाताबन्धकोंके ३ भेद । ३१३
- ६७ उक्त भेदोंमें सर्वविशुद्ध व संकलिष्टतर अवस्थाओंका निर्देश । ३१४
- ६८ साताके चतुःस्थानबन्धकादिकोंमें तथा असाताके द्विस्थानबन्धकादिकोंमें जघन्य स्थिति आदिके बंधनेका नियम । ३१६
- ६९ ज्ञानावरणादि ध्रुवप्रकृतियोंके स्थितिविशेषोंको आधार करके उनमें स्थित जीवोंकी प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व इन ६ अनुयोगद्धारोंके द्वारा प्ररूपणा । ३२०
- ७० ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोगके द्वारा बंधने योग्य स्थितियोंका उल्लेख । ३२२
- ७१ छह यवोंके अधस्तन व उपरिम भागोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा । ३२४
- ७२ साताके व असाताके चतुःस्थानादिबन्धकोंका अल्पबहुत्व । ३४१
(प्रकृतिसमुदाहार)
- ७३ प्रकृतिसमुदाहारमें प्रमाणानुगम और अल्पबहुत्व इन दो अनुयोगद्धारोंका निर्देश करके प्रमाणानुगमके द्वारा ज्ञानावरणादिके स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी प्रमाण-प्ररूपणा । ३४६
- ७४ उक्त स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंका अल्पबहुत्व । ३४७
(स्थितिसमुदाहार)
- ७५ स्थितिसमुदाहारमें प्रगणना, अनुकृष्टि और तीव्र-मन्दता इन ३ अनुयोगद्धारोंका निर्देश । ३४९
- ७६ प्रगणना द्वारा ज्ञानावरणीयादि कर्मोंकी जघन्य स्थिति आदि सम्बन्धी स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी गणना । ३५०
- ७७ अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधाके द्वारा उक्त स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी प्ररूपणा । ३५२
- ७८ श्रेणिप्ररूपणासे सूचित अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्वके द्वारा उपर्युक्त स्थानोंकी प्ररूपणा । ३५८
- ७९ अनुकृष्टि द्वारा उक्त स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंकी समानता-असमानताका विचार । ३६२
- ८० तीव्र-मन्दता द्वारा उपर्युक्त स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानोंके अनुभाग सम्बन्धी तीव्रता व मन्दताका विचार । ३६६

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१२	वेदनानिक्षेपविधान	वेदनाक्षेत्रविधान
२	२२	वह आकाश है	वह क्षेत्र है
३	३०	पदनावायाभावादो	पदनावायाभावादो
७	६	विसेसाभादो	विसेसाभावादो
७	१२	उक्कसा	उक्कस्सा
१०	११-१४	सुत्तत्था	सुत्तत्थो
१४	११	मो ण	मोत्तण
२५	१	एवमगेगास-	एवमेगेगास-
२६	७	"	"
२७	१	वणा	परूवणा
३०	९	पुविल्ल	पुविल्ल
४८	१	वड्ढावेद्व्या	वड्ढावेद्व्या
९३	६	ट्टिदिबंघट्टाणाणि लब्धंति	ट्टिदिबंघट्टाणाणि ण लब्धंति
९३	२४	पंचेन्द्रियोमें पाये	पंचेन्द्रियोमें नहीं पाये
९६	१४	तदियसमओ	विदियसमओ
९६	३१	तृतीय समय	द्वितीय समय
९७	१७	स्थितिसंतकर्म	स्थितिसत्कर्म
९७	२१	"	"
१००	१३	णापुणरुत्तट्टाणं	ण पुणरुत्तट्टाणं
१००	२६	समय देखा	समय कम देखा
१००	३१	अपुनरुत्त	पुनरुत्त
१००	३२	ताप्रतौ 'सेसफालीहितो ण पुणरुत्तट्टाणं'	× × ×
१०४	१३	दुसमयूण-	समयूण- ^२
१०४	३२	दो समय	एक समय
१०४	३३	× × ×	२ अ-आ-काप्रतिषु 'दुसमयूण' इति पाठः ।
१०९	२३	शतपृथक्त्व तक	शतपृथक्त्व स्थिति तक
१२७	४	छेदभागहारो !	छेदभागहारो होदि ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२७	१९	अब इस छेदभागहारको कहते हैं ।	इसका छेदभागहार होता है ।
१३१	५	पुण्वत्तंसं	पुण्वत्तंसं
१३९	५	असंखेज्जगुणाओ	संखेज्जगुणाओ'
१३९	१२	योगद्वारं' संगतो-	-योगद्वारं' संगतो-
१३९	१७	असंख्यातगुणी	संख्यातगुणी
१३९	२६	१ अ-आ-काप्रतिषु	१ प्रतिषु 'असंखेज्जगुणाओ' इति पाठः- २-अ-आ-का प्रतिषु
१४०	७	समत्ते	समत्तं
१४७	११	संखेज्जगुणो	असंखेज्जगुणो
१४७	२६	संख्यातगुणो	असंख्यातगुणो
१४७	३१	२ ताप्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'असंखेज्जगुणो'	२ ताप्रतौ 'संखेज्जगुणो'
१५०	१९	उसीसे उसीके...अधिक है ।	× × ×
१५३	१५	स्थितिवन्धस्थानविशेष	स्थितिवन्धस्थानविशेष
१६२	५	तस्स	तस्य
१६४	१	[एवं सण्णिपंचिदिय-]	[सण्णिपंचिदिय-]
१६८	६	एवं	उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । एवं
१६८	२१	हैं । इसी	हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । इसी
१७७	३२	है स्व—स्थान	है—स्वस्थान
१९०	२७	चतुरिन्द्रिय	बादर एकेन्द्रिय
१९१	११	तेइंदियपज्जत्तयस्स	तेइंदिय अपज्जत्तयस्स'
१९१	२७	त्रीन्द्रिय पर्याप्तक	त्रीन्द्रिय अपर्याप्तक
१९१	३३	× × ×	प्रतिषु 'तेइंदियपज्ज०' इति पाठः ।
१९२	२५	पर्याप्तक	अपर्याप्तक
१९३	२८	आबाधास्थान	आबाधास्थानविशेष
१९७	६	वादरेइंदिय	वेइंदिय
१९७	२१	वादर एकेन्द्रिय	त्रीन्द्रिय
२०७	२३	संकलेशस्थानोंकी	विशुद्धि परिणामोंकी
२१०	४	अपज्जत्तयस्स	अपज्जत्तयस्स
२२०	२८	५१३	५३३
२२२	१५	कधं.....असंखेज्जगुणंतं	कधं.....संखेज्जगुणत्तं
२२२	३०	असंख्यातगुणे	संख्यातगुणे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२२	३१	१ अ-आ-काप्रतिषु ' संखेज्जगुणत्तं,	१ ताम्रतौ
२२७	२४	२३	२३
२२८	३१	आबाहा	अबाहा
२२९	६	असंखेज्जगुणो	असंखेज्जगुणो'
२२९	१३	अपज्जस्यस्स	अपज्जस्यस्स
२३३	१७	पकेन्द्रियके	त्रीन्द्रियके
२३६	१८	असंख्यात	असंयत
२३६	२५	संखी पंचेन्द्रिय	संखी सिध्याद्यष्टि पंचेन्द्रिय
२४५	१४	क्षपित-गुणित-घोलमान	क्षपितघोलमान व गुणितघोलमान
२४५	२२	तीस	तेतीस
२५२	८	-मुहुत्तयाबाधं	-मुहुत्तमाबाधं
२६२	२४	है ।	है { (१६×१२×४) × १ ÷ (१६×१२) = ४ }
२८०	१	कम्माणमाबाहाद्वाणा	कम्माणमाबाहाद्वाणाणि
२८०	८	असंखेज्जगुणाणि	संखेज्जगुणाणि
२८०	३४	असंख्यातगुणे	संख्यातगुणे
२८०	३२	१ मप्रतिपाठोऽयम् । ... इति पाठः ।	१ मप्रती ' असंखेज्जगुणाणि ' इति पाठः ।
२८१	१	असंखेज्जगुणो	संखेज्जगुणो'
२८१	१७	असंख्यातगुणा	संख्यातगुणा
२८१	३३		१ प्रतिषु ' असंखेज्जगुणो ' इति पाठः ।
२८६	९	असंखेज्जगुणो	संखेज्जगुणो'
२८६	२४	असंख्यातगुणा	संख्यातगुणा
२८६	३३	× × ×	१ अ-आ-काप्रतिषु ' असंखेज्जगुणो ' इति पाठः ।
३०२	१०	विसेसाहिओ । मोहणीयस्त	विसेसाहिओ । [चतुष्णं कम्माणं जहण्णओ ट्टिविंशो विसेसाहिओ ।] मोहणीयस्स
३०२	२७	है । मोहनीयका	है । [चार कम्मोका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ।] मोहनीयका
३०३	२६	समय तक	समय कम
३०५	१५	उत्पत्तिका	अनुत्पत्तिका
३०६	१९	अन्य	जघन्य
३०८	९	अणिभाग-	अणिभोग-
टि० ३१३ ३३		कर्षः विस्थानगतः	कर्षः स विस्थानगतः

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
टि० ३१४ २१		सर्वविशुद्धा रसं	सर्वविशुद्धा अन्तवस्ते परावर्तमानशुभ- प्रकृतीनां सतुःस्थानगतं रसं
टि० ३१५ २८		ते तास-	त तासां
३१५ ३०		१, ८१	१, ९१
३२९ ३६		$\frac{3}{4} \times 4$	$\frac{3}{4} \times 4$
३३२ ८		पदमासु	अपदमासु ^२
३३२ २४		प्रथम	अप्रथम
३३२ ३१		२ अणगारप्याउग्मा	२ प्रतिषु 'पदमासु' इति पाठः । ३ अणगारप्याउग्मा
३३५ १३		असंख्यातगुणे	संख्यातगुणे
३३५ ३५		तेभ्योऽपि.....३।	यह टिप्पण नं. १ का अंश है जो टिप्पण २ के अन्तर्गत छप गया है ।
३३६ २१		देख	देख
३३६ २५		होना है ।	अशुभ होना है ।
३३८ ११		अंतोकोडाकोडिआबाधूणा	अंतोकोडाकोडी आबाधूणा
टि० ३३९ ३०		स्थितिर्ज्ञायस्थिति	स्थितिर्ज्ञायस्थिति
३४८ ३		द्विविध बंधताण	द्विविधघट्टाणाण
३४८ १७		शंका-नाम	किन्तु नाम
३४९ १८		संख्यातगुणे	असंख्यातगुणे
३५२ ८		कदो	कुदो
३५९ १५		रिज्जति तं	रिज्जति । तं
३५९ १७		रूपेणु	रूपेषु
३६२ २१		अजघन्य	जघन्य
३६३ ३		णिव्वग्गणकंदयं ^१	णिव्वग्गणकंदयं
३६३ ६		तदियसंडं	तदियसंडं
३६७ ३१		समुदहारे	समुदाहारे

वेयणखेत्तविहाणणिओगद्वारं
वेयणकालविहाणणिओगद्वारं



सिरि-भगवंत-पुष्पदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाहरिय विरहय-धवला-टीका-समणिणदो

तस्स चउत्थे खंडे वेयणाए

वेदणाखेत्तविहाणाणिओगद्वारं

वेयणखेत्तविहाणे त्ति तत्थ इमाणि तिणिण अणिओगद्वाराणि
णादव्वाणि भवंति ॥ १ ॥

वेदणाणिक्खित्तल्लियाखेत्तं णिक्खिद्विद्वं । किमट्ठं खेत्तणिक्खिवो कीरदे ?
अवगद्वेत्तट्ठाणपटिमहं कादूण पयदखेत्तट्ठपरूवणट्ठं । उक्तं च —

अउगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च ।

समयविणासणट्ठं तच्चत्यवहारणट्ठं च ॥ १ ॥

वेदनानिक्षेपविधान यह जो अनुयोगद्वार है उसमें ये तीन अनुयोगद्वार
ज्ञातव्य हैं ॥ १ ॥

वेदनामें निक्षिप्त्त क्षेत्रका यहां निक्षेप करना चाहिये ।

शंका — क्षेत्रका निक्षेप किसलिये करते हैं ?

समाधान— अग्रकृत क्षेत्रस्थानका प्रतिषेध करके प्रकृत क्षेत्रकी अर्थप्ररूपणा
करनेके लिये क्षेत्रका निक्षेप करते हैं । कहा भी है —

अग्रकृतका निवारण करनेके लिये, प्रकृतकी प्ररूपणा करनेके लिये, संशयको
नष्ट करनेके लिये, और तरवार्यका निश्चय करनेके लिये निक्षेप किया जाता है ॥ १ ॥

तत्थ खेतं चउत्विहं णामखेतं द्रवणखेतं दव्वखेतं भावखेतं चेदि । तत्थ णाम-
द्रवणखेत्ताणि सुगमाणि । दव्वखेतं दुविहमागम-णोआगमदव्वखेतभेएण । तत्थ आगम-
दव्वखेतं णाम खेतपाहुडजाणगो अणुवजुत्तो । णोआगमदव्वखेतं तिविहं जाणुगसरीर-मविय-
तव्वदिरित्तभेदेण । तत्थ जाणुगसरीर-मवियणोआगमदव्वखेत्ताणि सुगमाणि । तव्वदिरित्त-
णोआगमखेतमागासं । तं दुविहं लोगागासमलोगागासमिदि । तत्थ-लोक्यन्ते उपलभ्यन्ते यस्मिन्
जीवादयः पदार्थाः स लोकस्तद्विपरीतस्त्वलोकः । कथमागासस्स खेतववएसो ? क्षीयन्ति
निवसन्त्यस्मिन् जीवादय इति आकाशस्य क्षेत्रत्वोपपत्तेः । भावखेतं दुविहं आगम-णोआगम-
भावखेतभेएण । तत्थ खेतपाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभावखेतं । सव्वदव्वाणमपपण्यो
भावो णोआगमभावखेतं । कथं भावस्स खेतववएसो ? तत्थ सव्वदव्वावट्ठाणादो ।

एत्थ णोआगमदव्वखेतेण अहियारो । अट्ठविहकम्मदव्वस्स वेयणै त्ति सण्णा । वेयणाए
खेतं वेयणाखेतं, वेयणाखेतस्स विहाणं वेयणाखेतविहाणमिदि पंचमस्स अणिओगहारस्य
गुणणामं । इदिसदो ववच्छेदफलो । तत्थ वेयणखेतविहाणे हमाणि तिणिण अणिओगहाराणि

क्षेत्र चार प्रकार है— नामक्षेत्र, स्थापनाक्षेत्र, द्रव्यक्षेत्र और भावक्षेत्र ।
उनमें नामक्षेत्र और स्थापनाक्षेत्र सुगम हैं । द्रव्यक्षेत्र आगम और नोआगम द्रव्य-
क्षेत्रके भेदसे दो प्रकार है । उनमें क्षेत्रयाभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगम-
द्रव्यक्षेत्र कहलाता है । नोआगमद्रव्यक्षेत्र ज्ञायकशरीर, भावी और तद्द्रव्यनिरिकके
भेदसे तीन प्रकार है । उनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यक्षेत्र सुगम हैं । तद्-
व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यक्षेत्र आकाश है । वह दो प्रकार है— लोकाकाश और अलोका-
काश । इनमें जहां जीवादिक पदार्थ देखे जाते हैं या जाने जाते हैं वह लोक है ।
उससे विपरीत अलोक है ।

शंका— आकाशकी क्षेत्र संज्ञा कैसे है ?

समाधान— 'क्षीयन्ति अस्मिन्' अर्थात् जिसमें जीवादिक रहते हैं वह अकाश
है, इस निरुक्तिके अनुसार अकाशको क्षेत्र कहना उचित ही है ।

भावक्षेत्र आगम और नोआगम भावक्षेत्रके भेदसे दो प्रकार है । उनमें क्षेत्र-
प्राकृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावक्षेत्र है । सब द्रव्योंका अपना अपना
भाव नोआगमभावक्षेत्र कहलाता है ।

शंका— भावकी क्षेत्र संज्ञा कैसे हो सकती है ?

समाधान— उसमें सब द्रव्योंका अवस्थान होनेसे भावकी क्षेत्र संज्ञा बन
जाती है ।

यहां नोआगमद्रव्यक्षेत्रका अधिकार है । आठ प्रकारके कर्मद्रव्यकी वेदना
संज्ञा है । वेदनाका क्षेत्र वेदनाक्षेत्र, वेदनाक्षेत्रका विधान वेदनाक्षेत्रविधान । यह पांचवें
अनुयोगद्वारका गुणनाम है । सूत्रमें स्थित 'इति' शब्द व्यवच्छेद करनेवाला है ।
उस वेदनाक्षेत्रविधानमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं ।

हवन्ति । एत्थ अहियारा तिणिण चेव किमट्ठं परूविज्जन्ति ? ण, अण्णेसिमेत्थ संभवाभावादो । कुदो ? [ण] संखा-ट्ठाण-जीवसमुदाहाराणमेत्थ संभवो, उक्कस्साणुकस्स-जहण्णाजहण्णभेद-भिण्णसामित्ताणिओगहारो एदेसिमंतम्भावादो । ण ओज-जुम्माणिओगहारस्स वि संभवो, तस्स पदमीमांसाए पवेसादो । ण गुणगाराणिओगहारस्स वि संभवो, तस्स अप्पाबहुए पवेसादो । तम्हा तिणिण चेव अणिओगहाराणि होंति त्ति सिद्धं ।

पदमीमांसा सामित्तं अप्पाबहुए त्ति ॥ २ ॥

पदमं चेव पदमीमांसा किमट्ठमुच्चदे ? ण, पदेसुं अणवगएसु सामित्तप्पाबहुआणं परूवणोवायाभावादो^१ । तदणंतंरं सामित्ताणिओगहारमेव किमट्ठं तुच्चदे ? ण, अणवगए पदप्पमाणे तदप्पाबहुगणुववत्तीदो । तम्हा एसेव अहियारविण्णासक्कमो इच्छियव्वो, गिरवज्जत्तादो ।

**पदमीमांसाए णाणावरणीयवेयणा खेतदो किं उक्कस्सा कि-
मणुकस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा ? ॥ ३ ॥**

शंका — यहाँ केवल तीन ही अधिकारोंकी प्ररूपणा किसलिये की जाती है ।

समाधान — नहीं, क्योंकि, और दूसरे अधिकार यहाँ सम्भव नहीं हैं । कारण कि संख्या, स्थान और जीवसमुदाहार तो यहाँ सम्भव नहीं हैं, क्योंकि, इनका अन्तर्भाव उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य व अजघन्य भेदसे भिन्न स्वामित्वअनुयोगद्वारमें होता है । ओज-युग्मानुयोगद्वार भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, उसका प्रवेश पदमीमांसामें है । गुणकार अनुयोगद्वार भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, उसका प्रवेश अल्पबहुत्वमें है । इस कारण तीन ही अनुयोगद्वार हैं, यह सिद्ध है ।

पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये तीन अनुयोगद्वार यहाँ ज्ञातव्य हैं ॥ २ ॥

शंका — पदमीमांसाको पहिले ही किसलिये कहा जाता है ?

समाधान — चूंकि पदोंका ज्ञान न होनेपर स्वामित्व और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की नहीं जा सकती, अत एव पहिले पदमीमांसाकी प्ररूपणा की जा रही है ।

शंका — उसके पश्चात् स्वामित्व अनुयोगद्वारको ही किसलिये कहते हैं ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, पदप्रमाणका ज्ञान न होनेपर उनका अल्पबहुत्व बन नहीं सकता । इस कारण निर्दोष होनेसे उक्त अधिकारोंके इसी विन्यासक्रमको स्वीकार करना चाहिये ।

पदमीमांसामें — ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, और क्या अजघन्य है ? ॥ ३ ॥

एत्थं णाणावरणीयवेयणा सेसकम्माणं पडिसेहो कदो । द्व्व-काल-भावादिपडिसेहहं
खेत्तिपिसेहो कदो । एदं पुच्छासुत्तं देसामासियं, तेण अण्णाओ णव पुच्छाओ एदेण
सूचिदाओ । तम्हा णाणावरणीयवेयणा किमुक्कस्सा, किमणुक्कस्सा, किं जहण्णा, किमजहण्णा,
किं सादिया, किमणादिया, किं धुवा, किमडुवा, किमोजा, किं जुम्मा, किमोमा, किं विसिद्धा,
किं णोम-णोविसिद्धा ति वत्तवं । एवं णाणावरणीयवेयणाए विसेसामावेण सामण्णरूपाए सामण्णं
विसेसाविणाभावि ति कट्टु तेरस पुच्छाओ परूविदाओ । एदेणव सुत्तेण सूचिदाओ अण्णाओ
तेरसपदविसयपुच्छाओ वत्तव्वाओ । तं जहा — उक्कस्सा णाणावरणीयवेयणा किमणुक्कस्सा, किं
जहण्णा, किमजहण्णा, किं सादिया, किमणादिया, किं धुवा, किमडुवा, किमोजा, किं जुम्मा,
किमोमा, किं विसिद्धा, किं णोम-णोविसिद्धा ति बारस पुच्छाओ उक्कस्सपदस्स हवंति । एवं
सेसपदाणं पि बारस पुच्छाओ पादेक्कं कायव्वाओ । एत्थ सच्चपुच्छासमासे एगूण-
सत्तरिसदमेत्ते । १६९ । तम्हा एदम्हि देसामासियसुत्ते अण्णाणि तेरस सुत्ताणि दट्ठव्वाणि ति ।

उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा ॥४॥

एदं पि^१ देसामासियसुत्तं । तेणेत्य सेसणवपदाणि वत्तव्वाणि । देसामासियत्तादो चव
मेसतेरससुत्ताणमेत्थ अंतम्भावो वत्तव्वो । तत्थ ताव पढपसुत्तपरूवणा कीरदे । तं जहा —

सूत्रमें ज्ञानावरण पदका ग्रहण करके शेष कर्मोंका प्रतिषेध किया गया है ।
द्रव्य, काल और भाव आदिका प्रतिषेध करनेके लिये शेषका निर्वेदा किया है । यह
पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसलिये इसके द्वारा अन्य नौ पृच्छाएं सूचित की गई हैं ।
इस कारण ज्ञानावरणकी वेदना क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या
अजघन्य है, क्या सादिक है, क्या अनादिक है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या ओज
है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, और क्या नोम-नोविशिष्ट है, ऐसा कहना
चाहिये । इस प्रकार सामान्य चूंकि विशेषका अविनाभावी है अतः विशेषका अभाव
होनेसे सामान्य स्वरूप ज्ञानावरणीयवेदनाके विषयमें इन तरह पृच्छाओंकी प्ररूपणा
की गई है । इसी सूत्रसे सूचित अन्य तरह पद विषयक पृच्छाओंका कहना चाहिये ।
यथा — उत्कृष्ट ज्ञानावरणवेदना क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है,
क्या सादिक है, क्या अनादिक है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या ओज है, क्या युग्म
है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, और क्या नोम-नोविशिष्ट है, ये बारह पृच्छाएं
उत्कृष्ट पदके विषयमें होती हैं । इसी प्रकार शेष पदोंमेंसे भी प्रत्येक पदके विषयमें
बारह पृच्छाएं करना चाहिये । यहां सब पृच्छाओंका जोड़ एक सौ उनत्तर (१६९)
मात्र होता है । इसी कारण इस देशामर्शक सूत्रमें अन्य तरह सूत्रोंको देखना चाहिये ।

उक्त वेदना उत्कृष्ट भी है, अनुत्कृष्ट भी है, जघन्य भी है, और अजघन्य भी है ॥४॥

यह भी देशामर्शक सूत्र है । इसलिये यहां शेष नौ पदोंको कहना चाहिये ।
देशामर्शक होनेसे ही इस सूत्रमें शेष तरह सूत्रोंका अन्तर्भाव कहना चाहिये । उनमें
पहिले प्रथम सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—ज्ञानावरणीयकी वेदना

णाणावरणीयवैयणा खेतदो सिया उक्कसा, अट्टरञ्जण मुक्कमारणेतियमहामञ्जमि उक्कस्स-
खेतुवलंभादो । सिया अणुक्कस्सा, अण्णत्थ अणुक्कस्सखेतदंसणादो । सिया जहण्णा,
तिसमयआहारय-तिसमयतभवत्थसुहुमाणिमोदमिह जहण्णखेतुवलंभादो । सिया अजहण्णा,
अण्णत्थ अजहण्णखेतदंसणादो । सिया सादिया, पज्जवट्टियणए अवलंभिज्जमाणे सव्वखेत्ताणं
सादित्तुवलंभादो । सिया अणादियां, दव्वट्टियणए अवलंभिज्जमाणे अणादित्तदंसणादो ।
सिया धुवा, दव्वट्टियणयं पडुच्च णाणावरणीयखेतस्स सव्वलोगस्स धुवत्तुवलंभादो । सिया
अडुवा, पज्जवट्टियं पडुच्च अट्टवत्तदंसणादो । सिया ओजा, कत्थ वि खेतविसेसे कलि-
तेजोजसंखाविसेसाणमुवलंभादो । सिया जुम्मा, कत्थ वि खेतविसेसे कद-वादरजुम्माणं
संखाविससाणमुवलंभादो । सिया आमा, कत्थ वि खेतविसेसे परिहाणिदंसणादो । सिया
विसिद्धा, कत्थ वि वट्ठिदंसणादो । सिया णोम-णोविसिद्धा, कत्थ वि वट्ठि-हाणीहि विणा
खेतस्स अवट्ठाणदंसणादो । १३ ।

संपहि विदियसुत्तथो उच्चदे । तं जहा — उक्कस्सणाणावरणीयवैयणा जहण्णा
अणुक्कस्सा च ण होदि, पाडिवक्खत्तादो । सिया अजहण्णा, जहण्णादो उवरिमा-
सेसखेतवियप्पावट्ठिदे अजहण्णे उक्कस्सस्स वि संभवादो । सिया सादिया,

क्षेत्रकी अपेक्षा कथंचित् उत्कृष्ट है, क्योंकि, आठ राज्योंमें मारणान्तिक समुद्घातको
करनेवाले महामत्स्यक उत्कृष्ट क्षेत्र पाया जाता है । कथंचित् वह अनुत्कृष्ट है,
क्योंकि, महामत्स्यको छोड़कर अन्यत्र अनुत्कृष्ट क्षेत्र देखा जाता है । कथंचित् वह
अजघन्य है, क्योंकि, त्रिसमयवर्ती आहारक व त्रिसमयवर्ती तद्भवस्थ सूक्ष्म निगोद
जीवके जघन्य क्षेत्र पाया जाता है । कथंचित् वह अजघन्य है, क्योंकि, उक्त
सूक्ष्म निगोद जीवको छोड़कर अन्यत्र अजघन्य क्षेत्र देखा जाता है । कथंचित् वह
सादिक है, क्योंकि, पर्यायाधिक नयका आश्रय करनेपर सब क्षेत्रोंके सादिता पायी
जाती है । कथंचित् वह अनादिक है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका आश्रय करनेपर
अनादिपना देखा जाता है । कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा
ज्ञानावरणीय कर्मका क्षेत्र जो सब लोक है वह ध्रुव देखा जाता है । कथंचित् वह
अध्रुव है, क्योंकि, पर्यायाधिक नयकी अपेक्षा उक्त क्षेत्रके अध्रुवपना भी देखा जाता
है । कथंचित् वह भोज है, क्योंकि, किसी क्षेत्रविशेषमें कलिभोज और तेजोज संख्या-
विशेष पायी जाती हैं । कथंचित् वह युग्म है, क्योंकि, किसी क्षेत्रविशेषमें कृतयुग्म
और वादयुग्म ये विशेष संख्यायें पायी जाती हैं । कथंचित् वह ओम है, क्योंकि,
किसी क्षेत्रविशेषमें हानि देखी जाती है । कथंचित् वह विशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर
वृद्धि देखी जाती है । कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर वृद्धि और
हानिके बिना क्षेत्रका अवस्थान देखा जाता है (१३) ।

अथ द्वितीय सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है — उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय-
वेदना अजघन्य और अनुत्कृष्ट नहीं है, क्योंकि, वे उसके प्रतिपक्षभूत हैं । कथंचित् वह
अजघन्य भी है, क्योंकि, अजघन्यसे ऊपरके समस्त विकल्पोंमें रहनेवाले अजघन्य
पदमें उत्कृष्ट पद भी सम्भव है । कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट

१ प्रतिपु 'अद' इति पाठः । २ तापती 'अणादि' इति पाठः ।

३ अक्षप्रयोः 'जहण्णा अजहण्णा', तापती 'जहण्णाजहण्णा' इति पाठः ।

अणुकस्सादो उक्कस्सखेतुप्पतीए । सिया अडुवा, उक्कस्सपदस्स सव्वकालमवट्ठाणा-
मावादो । सिया कदजुम्मा, उक्कस्सखेतम्मि बादरजुम्म-कलित्तैजो जसंखाविसेसाणमणु-
वलंभादो । सिया णोम-णोविशिष्टा, वट्ठिदे हाइदे च उक्कस्सत्तविरोहादो । एवं उक्कस्स-
णाणावरणीयवेयणा पंचपदपिया । ५ ।

अणुकस्सणाणावरणीयवेयणा सिया जहण्णा, उक्कस्सं भोतूण सेसहेट्ठिमा-
सेसवियप्पे अणुकस्से जहण्णस्स [वि] संभवादो । सिया अजहण्णा, अणुकस्सस्स अजहण्णा-
विणाभावित्तादो । सिया सादिया, उक्कस्सादो अणुकस्सुप्पत्तीदो अणुकस्सादो^१ वि
अणुकस्सविसेसुप्पत्तिदंसणादो च । अणादिया ण होदि, अणुकस्सपदविसेस्स विवक्खिय-
त्तादो । अणुकस्ससामण्णम्मि अप्पिदे वि अणादिया ण होदि, उक्कस्सादो अणुकस्स-
पदपदिदं पडि सादित्तदंसणादो । ण च णिच्चणिगोदेसु अणादित्तं लब्भदि, तत्थ अणुकस्स-
पदाणं पल्लट्ठणेण सादित्तुवलंभादो । सिया अडुवा, अणुकस्सेक्कपदविसेसस्स सव्वदा
अवट्ठाणाभावादो । सामण्णे अस्सिदे वि भुवत्तं णत्थि, अणुकस्सादो उक्कस्सपदं पडिवज्ज-
माणजीवदंसणादो । सिया ओजा, कत्थ वि पदविसेसे अवट्ठिदद्विविहविममसेसुवलंभादो ।
सिया जुम्मा, कत्थ वि अणुकस्सपदविसेसे दुविहसमसंखदंसणादो । सिया ओमा, कत्थ

क्षेत्रसे उत्कृष्ट क्षेत्रकी उत्पत्ति है । कथंचित् वह अधुव भी है, क्योंकि, उत्कृष्ट पद सर्वदा
नहीं रहता । कथंचित् वह कृतयुग्म भी है, क्योंकि, उत्कृष्ट क्षेत्रमें बादरयुग्म, कलिभोज
और तेजोज रूप विशेष संख्यायें नहीं पायी जातीं । कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट भी है
क्योंकि, वृद्धि और हानिके होनेपर उत्कृष्टपनेका विरोध है । इस प्रकार उत्कृष्ट
ज्ञानावरणीयवेदना पांच (५) पद स्वरूप है ।

अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् जघम्य है, क्योंकि, उत्कृष्टको छोड़कर
शेष सब नीचेके विकल्प रूप अनुत्कृष्ट पदमें जघम्य पद भी सम्भव है । कथंचित्
वह अजघम्य भी है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट अजघम्यका अविनाभावी है । कथंचित् वह
सादिक भी है, क्योंकि, उत्कृष्ट पदसे अनुत्कृष्ट पदकी उत्पत्ति है, तथा अनुत्कृष्टसे भी
अनुत्कृष्टविशेषकी उत्पत्ति देखी जाती है । वह अनादिक नहीं है, क्योंकि, यहाँ
अनुत्कृष्ट पदविशेषकी विवक्षा है । अनुत्कृष्ट सामान्यकी विवक्षा करनेपर भी वह अनादि
नहीं हो सकती, क्योंकि, उत्कृष्टसे अनुत्कृष्ट पदमें गिरनेकी अपेक्षा सादिपना देखा जाता
है । यदि कहा जाय कि नित्य निगोद जीवोंमें उसका अनादिपना पाया जाता है, सो भी ठीक
नहीं है, क्योंकि, उनमें भी अनुत्कृष्ट पदोंके पलटनेसे सादिपना पाया जाता है । कथंचित्
वह अधुव भी है, क्योंकि, सर्वदा एक अनुत्कृष्ट पदविशेष रह नहीं सकता । सामान्यका
आश्रय करनेपर भी भुवपना सम्भव नहीं है, क्योंकि, अनुत्कृष्टसे उत्कृष्ट पदको प्राप्ता होने-
वाले जीव देखे जाते हैं । कथंचित् वह भोज भी है, क्योंकि किसी पदविशेषमें अवस्थित
दोनों प्रकारकी विषम संख्या पायी जाती है । कथंचित् वह युग्म भी है, क्योंकि,
किसी अनुत्कृष्ट पदविशेषमें दोनों प्रकारकी सम संख्या देखी जाती है । कथंचित् वह

१ अतिदु 'संका' इति पाठः । १ ताम्रौ 'पंचपदसिया' इति पाठः । १ ताम्रौ 'अणुक- [स्सा] यो ' इति पाठः ।

वि हाणीदो' समुप्पण्णअणुक्कस्सपदुवलंभादो । सिया विसिद्धा, कत्थ वि वड्ढीदो अणुक्कस्स-
पदुवलंभादो । सिया गोम-गोविसिद्धा, अणुक्कस्स-जहण्णम्मि अणुक्कस्सपदविसेसे वा अप्पिदे
वड्ढि-हाणीणमभावादो । एवं णाणावरणाणुक्कस्सवेयणा णवपदप्पिया । ९। एवं तदियसुत्त-
परूवणा कदा ।

संपहि चउत्थसुत्तपरूवणा कीरदे । तं जहा— जहण्णा णाणावरणीयवेणा सिया
अणुक्कस्सा, अणुक्कस्सजहण्णस्स ओघजहण्णेण विसेसाभादो । सिया सादिया, अजहण्णादो
जहण्णपदुप्पत्तीए । सिया अट्टुवा, सासदभावणे अवट्टाणाभावादो । अणादिय-धुवपदाणि पत्थि,
जहण्णक्खेत्तविसेसम्मि अणादिय-धुवत्ताणुवलंभादो । सिया जुम्मा, चट्ठहि अवहिरिज्जमाणे
णिरग्गतदंसणादो । सिया गोम-गोविसिद्धा, तत्थ वड्ढि-हाणीणमभावादो । एवं जहण्णक्खेत्त-
वेयणा पंचपयारा सरूवेण छप्पयारा वा । ५। एवं चउत्थसुत्तपरूवणा कदा ।

संपहि पंचमसुत्तपरूवणा कीरदे । तं जहा— अजहण्णा णाणावरणीयवेयणा सिया
उक्कसा, अजहण्णक्कस्सस्स ओघुक्कस्सादो पुपत्ताणुवलंभादो । सिया अणुक्कस्सा,
तदविणाभावादो । सिया सादिया, पल्लट्टणेण विणा अजहण्णपदविसेसाणमवट्टाणाभावादो ।
सिया अट्टुवा । कारणं सुगमं । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिद्धा ।

ओम भी है, क्योंकि, कहींपर हानिसे भी उत्पन्न अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है । कथंचित् वह
वह विशिष्ट भी है, क्योंकि, कहींपर वृद्धिसे अनुत्कृष्ट पद पाया जाता है । कथंचित् वह
गोम-गोविशिष्ट भी है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट जघन्यमें अथवा अनुत्कृष्ट पदविशेषकी
विवक्षा करनेपर वृद्धि और हानि नहीं पायी जाती है । इस प्रकार ज्ञानावरणकी अनुत्कृष्ट
वेदना नौ (९) पदात्मक है । इस प्रकार तीसरे सूत्रकी अर्थप्ररूपणा की गई है ।

अब चतुर्थ सूत्रकी अर्थप्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—अजघन्य ज्ञानावरणीय-
वेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट जघन्य ओघजघन्यसे भिन्न नहीं है ।
कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, अजघन्यसे जघन्य पद उत्पन्न होता है ।
कथंचित् वह अधुव भी है, क्योंकि, उसका सर्वदा अवस्थान नहीं रहता । अनावि
और धुव पद उसके नहीं हैं, क्योंकि, जघन्य क्षेत्रविशेषमें अनावि एवं धुवपना नहीं
पाया जाता । कथंचित् वह युग्म है, क्योंकि, उसे चारसे अपहृत करनेपर शेष कुछ
नहीं रहता । कथंचित् वह गोम-गोविशिष्ट है, क्योंकि, उसमें वृद्धि और हानिका
अभाव है । इस प्रकार जघन्य क्षेत्रवेदना पांच (५) प्रकार अथवा अपने रूपके साथ
छह प्रकार है । इस प्रकार चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा की है ।

अब पांचवें सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—अजघन्य ज्ञाना-
वरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, क्योंकि, अजघन्य उत्कृष्ट ओघउत्कृष्टसे पृथक् नहीं
पाया जाता । कथंचित् वह अनुत्कृष्ट भी है, क्योंकि, वह उसका अधिनाभावी है ।
कथंचित् वह सादिक भी है, क्योंकि, पलटनेके बिना अजघन्य पदविशेषोंका अवस्थान
नहीं है । कथंचित् वह अधुव भी है । इसका कारण सुगम है । कथंचित् वह
ओज भी है, युग्म भी है, ओम भी है, और विशिष्ट भी है । इसका कारण सुगम

जुम्मं । सिया गोम-गोविसिद्धा, निरुद्धपदविसेसत्तादो । एवमजहण्णा अवभंगा दसमंगा वा ९ । एसो पंचमसुत्तथो ।

सादिया णाणावरणवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया अट्ठुवा । ण [अणादिया] जुवा, सादियस्स अणादिय-धुवत्तिविरोहादो । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिद्धा, सिया गोम-गोविसिद्धा । एवं सादिय-वेयणाए दस मंगा एक्कारस मंगा वा १० । एसो छट्ठसुत्तथो ।

अणादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया । कधमणादियवेयणाए सादित्तं ? ण, वेयणाए सामण्णवेक्खाए अणादियम्मि उक्कस्सादिपदवेक्खाए सादियत्तविरोहाभावादो । सिया धुवा वेयणा, सामण्णस्स विणासाभावादो । सिया अट्ठुवा, पदविसेसस्स विणासदंसणादो । अणादियत्तम्मि सामण्णविक्खाए समुप्पण्णम्मि कथं पदविसेससंभवो ? ण, संगतोक्खित्त-असेसविसेसम्मि सामण्णम्मि अपिदे तदविरोहादो । दिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया है । कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट भी है, क्योंकि, यहां पदविशेषकी विवक्षा है । इस प्रकार अजघम्य वेदनाके नौ (९) या दस भंग होते हैं । यह पांचवें सूत्रका अर्थ है ।

सादिकक्षानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघम्य, कथंचित् अजघम्य, और कथंचित् अधुव भी है । वह [अनादि व] ध्रुव नहीं है, क्योंकि, सादि पदके अनादि व ध्रुव होनेका विरोध है । कथंचित् वह ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है । इस प्रकार सादि वेदनाके दस (१०) भंग अथवा ग्यारह भंग होते हैं । यह छठे सूत्रका अर्थ है ।

अनादिक्षानावरणवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघम्य, कथंचित् अजघम्य और कथंचित् सादिक भी है ।

शंका—अनादि वेदना सादि कैसे हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सामान्यकी अपेक्षा वेदनाके अनादि होनेपर भी उत्कृष्ट आदि पदविशेषोंकी अपेक्षा उसके सादि होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

कथंचित् वह वेदना ध्रुव है, क्योंकि, सामान्यका कभी विनाश नहीं होता । कथंचित् वह अधुव भी है, क्योंकि, पदविशेषका विनाश देखा जाता है ।

शंका—सामान्य विवक्षाले अनादित्वके होनेपर पदविशेषकी सम्भावना ही कैसे हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अपने भीतर समस्त विशेषोंको रखनेवाले सामान्यकी विवक्षा होनेपर उसमें कोई विरोध नहीं है ।

कथंचित् वह ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और

ओमा, सिया विसिद्धा, सिया गोम-गोविसिद्धा । एवमणादिया वेयणा बारसभंगा तेरसभंगा वा [१५] । एसो सत्तमसुत्तथो ।

धुवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया अड्डवा, सिया ओजा, सिया छुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिद्धा, सिया गोम-गोसिद्धा । एवं धुवपदस्स बारस भंगा तेरस भंगा वा [१६] । एसो अट्ठमसुत्तथो ।

अड्डवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया ओजा, सिया छुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिद्धा, सिया गोम गोविसिद्धा । एवमड्डवपदस्स दस भंगा एक्कारस भंगा वा [१७] । एसो णवमसुत्तथो ।

ओजाणाणावरणीयवेयणा उक्कस्स-जहण्णपदेसु णत्थि, कदछुम्मे तेसिमव-
ट्ठाणादो । तदो सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया । सिया अणादिया ।
कुदो ? सामण्णविवक्खादो । सिया धुवा, सामण्णविवक्खादो चेव । सिया अड्डवा,
विसेसविवक्खाए । दच्चविहाणे अणादिय-धुवत्तं किण्ण परूविदं ? ण, तत्थ सामण्ण-

कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है । इस प्रकार अनादिषेदनाके बारह (१२) भंग
अथवा तेरह भंग होते हैं । यह सातवें सूत्रका अर्थ है ।

ध्रुवज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य,
कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् अध्रुव, कथंचित्
ओज, कथंचित् युग्म, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट
भी है । इस प्रकार ध्रुव पदके बारह (१२) अथवा तेरह भंग होते हैं । यह आठवें
सूत्रका अर्थ है ।

अध्रुवज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित्
जघन्य, कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् ओज, कथंचित् युग्म,
कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है । इस प्रकार
अध्रुव पदके दस (१०) अथवा ग्यारह भंग होते हैं । यह नौवें सूत्रका अर्थ है ।

ओजज्ञानावरणीयवेदना उत्कृष्ट और जघन्य पदोंमें नहीं होती, क्योंकि,
उनका अवस्थान कृतयुग्म राशिमें है । इसलिये वह कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित्
अजघन्य व कथंचित् सादि है । वह कथंचित् अनादि भी है, क्योंकि, सामान्यकी
विवक्षा है । कथंचित् वह ध्रुव भी है, क्योंकि, उसी सामान्यकी ही विवक्षा है ।
कथंचित् वह विशेषकी विवक्षाले अध्रुव भी है ।

शंका—द्रव्यविधानमें अनादि और ध्रुव पदोंकी प्रकृपणा क्यों नहीं की गई है ?

विवक्षितभावाद्दे । सामण्यविवक्षया पुन संतीत्य तत्त्व वि एदे दो भंगा वस्तुत्वा । सिया
ओमा, सिया विसिद्धा, सिया गोम-गोविसिद्धा । एवमोजस्स णव भंगा दस भंग वा [९] ।
एसो इत्थमसुत्तथो ।

लुम्भणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कत्सा, सिया अणुक्कत्सा, सिया जहण्णा,
सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अण्डुवा, सिया
ओमा, सिया विसिद्धा, सिया गोम-गोविसिद्धा । एवं लुम्भस्स एक्कारस्स बारस्स भंगा वा
[११] । एसो एक्कारस्समसुत्तथो ।

ओमणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कत्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया ।
सिया अणादिया, ओमत्तसामण्यविवक्षाए । सिया धुवा तेणेव कारणेण । सिया अण्डुवा ।
सामण्यविवक्षाए अभावोर्णं दव्वविहाणे ओमस्स अणादिय-धुवत्तं ण परुविदं । सिया ओजा,
सिया लुम्मा । एवमोमपदस्स अट्ठ णव भंगा वा [८] । एसो बारसमसुत्तथा ।

विसिद्धणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कत्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया,
सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अण्डुवा, सिया ओजा, सिया लुम्मा । एवं विसिद्ध-
पदस्स अट्ठ भंगा णव भंगा वा [८] । एसो तेरसमसुत्तथा ।

समाधान — नहीं, क्योंकि, वहाँ सामान्यकी विवक्षाका अभाव है । यदि सामान्यकी
विवक्षा अभीष्ट हो तो वहाँ भी इन दो पदोंको कहना चाहिये ।

यह कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है ।
इस प्रकार ओज पदके नौ (९) भंग अथवा दस भंग होते हैं । यह दसवें सूत्रका अर्थ है ।
युग्मज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य,
कथंचित् अजघन्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव,
कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट भी है । इस प्रकार युग्म
पदके ग्यारह (११) अथवा बारह भंग होते हैं । यह ग्यारहवें सूत्रका अर्थ है ।

ओमज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य व कथंचित्
सादि भी है । वह कथंचित् अनादि भी है, क्योंकि, ओमत्व सामान्यकी विवक्षा है ।
इसी कारणसे वह कथंचित् ध्रुव भी है । कथंचित् वह अध्रुव भी है । सामान्यकी
विवक्षा न होनेसे द्रव्यविधानमें ओमके अनादि और ध्रुव पद नहीं कहे गये हैं ।
वह कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म भी है । इस प्रकार ओम पदके आठ (८) अथवा
नौ भंग होते हैं । यह बारहवें सूत्रका अर्थ है ।

विशिष्टज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य, कथंचित्
सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित्
युग्म भी है । इस प्रकार विशिष्ट पदके आठ (८) अथवा नौ भंग होते हैं । यह
तेरहवें सूत्रका अर्थ है ।

१ ताप्रश्नी 'एक्कारस्स' इति पाठः । २ ताप्रश्नी 'सिया अण्डुवा सामण्यविवक्षाए अभावेण ।' इति पाठः ।

गोम-गोविसिद्धा णाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा; सिधा जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया । सिया अणादिया । कुदो ? गोम-गोविसिद्धत्त-विक्कस्साए । सिया धुवा तेणेव कारणेण । सिया अजुवा, सिया भोजा, सिया जुम्मा + एवं दस भंगा एक्कारस भंगा वा [१०] । एसो चोदसयसुत्तयो ।

एदेसि संगणमंकाविण्णामो — | १३ | ५ | ९ | ५ | ९ | १० | १२ | १२ | १० | ९ | ११ | ८ | ८ | १० | ।

एवं सत्तणं कम्माणं ॥ ५ ॥

जहा णाणावरणीयस्स पदमीमांसा कदा तहा सेससत्तणं कम्माणं पदमीमांसा कायव्वा । एवमंतोस्सित्तोजाणियोगहारपदमीमांसा समत्ता ।

सामित्तं दुविहं जहणपदे उक्कस्सपदे ॥ ६ ॥

तत्थ जहणं चउव्विहं णाम-द्ववणा-दव्व-मायजहणमिदि । णामजहणं द्ववणा-जहणं च सुगमं । दव्वजहणं दुविहं आगमदव्वजहणं गोआगमदव्वजहणं चेदि । तत्थ जहणपाहुडजाणयो अणुवजुत्तो आगमदव्वजहणं । गोआगमदव्वजहणं तिविहं, जाणुग-

गोम-गोविसिद्धाणावरणीयवेयना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अजुक्कष्ट, कथंचित् जघन्य, कथंचित् अजघन्य व कथंचित् सावि भी है । कथंचित् वह अनवि भी है, क्योंकि, गोम-गोविसिद्धत्थ सामान्यकी विवक्षा है । इसी कारणसे वह कथंचित् ध्रुव भी है । वह कथंचित् अणुव, कथंचित् भोज और कथंचित् युग्म भी है । इस प्रकार गोम-गोविसिद्ध पदके दस (१०) भंग अथवा ग्यारह भंग होते हैं । यह चौदहवें खण्डका अर्थ है ।

इन भंगोंका अंकाधिन्यास इस प्रकार है— १३ + ५ + ९ + ५ + ९ + १० + १२ + १२ + १० + ९ + ११ + ८ + ८ + १० = १३१ ।

इसी प्रकार सात कर्मोंकी पदमीमांसा सम्बन्धी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ ५ ॥

जिस प्रकार णाणावरणीयकी पदमीमांसा की है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी पदमीमांसा करना चाहिये । इस प्रकार भोजानुयोगहारगमित पदमीमांसा समाप्त हुई ।

स्वामित्व दो प्रकार है— जघन्य पदरूप और उत्कृष्ट पदरूप ॥ ६ ॥

उनमें जघन्य पद चार प्रकार है— नामजघन्य, स्थापनाजघन्य, द्रव्यजघन्य और भावजघन्य । इनमें नामजघन्य और स्थापनाजघन्य सुगम है । द्रव्यजघन्य दो प्रकार है— आगमद्रव्यजघन्य और भोगागमद्रव्यजघन्य । इनमें जघन्य प्राप्तका जलकार उपयोग रहित अथवा आगमद्रव्यजघन्य कहा जाता है । भोगागमद्रव्यजघन्य

सरीर-भविष्य-तत्त्वदिरित्तणोआगमद्वजहणभेदेण । जाणुगसरीरं भवियं गदं । तत्त्वदिरित्तं णोआगमद्वजहणं दुविहं— ओघजहणमादेसेण जहणं चेदि । तत्थ ओघजहणं चउत्विहं— दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वजहणमेगो परमाणू । खेत्तजहणं दुविहं कम्म-णोकम्मखेत्तजहणभेदेण । तत्थ सुहुमणिगोदस्स जहणिया ओगाहणा कम्मखेत्तजहणं । णोकम्मखेत्तजहणभेगो आगासपदेसो । कालजहण-भेगो समओ । भावजहणं परमाणुमिह णिद्धत्तादिगुणो । आदेसजहणं पि दव्व-खेत्त-काल-भावभेदेहि चउत्विहं । तत्थ दव्वदो आदेसजहणं उच्चदे । तं जहा— तिपदेसियं खंधं ददूट्ठण दुपदेसियखंधो आदेसदो दव्वजहणं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । तिपदेसोगाढदव्वं ददूट्ठण दुपदेसोगाढदव्वं खेत्तदो आदेसजहणं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । तिसमयपरिणदं ददूट्ठण दुसमयपरिणदं दव्वमादेसदो कालजहणं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । तिगुणपरिणदं दव्वं ददूट्ठण दुगुणपरिणदं दव्वं भावदो आदेसजहणं ।

भावजहणं दुविहं आगम-णोआगमभावजहणभेदेण । तत्थ जहणपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावजहणं । सुहुमणिगोदजीवलद्धिअपज्जतयस्स जं सव्वजहण-णाणं तं

तीन प्रकार है—झायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त । इनमें झायकशरीर और भावी अवगत हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यजघन्य दो प्रकार है—ओघजघन्य और आवेशजघन्य । इनमें ओघजघन्य द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है । उनमें द्रव्यजघन्य एक परमाणु है । क्षेत्रजघन्य कर्मक्षेत्रजघन्य और नोकर्मक्षेत्रजघन्यके भेदसे दो प्रकार है । उनमें सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहना कर्मक्षेत्रजघन्य है । नोकर्मक्षेत्रजघन्य एक आकाशप्रदेश है । एक समय कालजघन्य है । परमाणुमें रहनेवाला किञ्चित्त्व आदि गुण भावजघन्य है ।

आवेशजघन्य भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके भेदसे चार प्रकार है । उनमें द्रव्यसे आवेशजघन्यको बतलाते हैं । वह इस प्रकार है—तीन प्रदेशवाले स्कन्धको देखकर दो प्रदेशवाला स्कन्ध आवेशसे द्रव्यजघन्य है । इसी प्रकार शेष स्कन्धोंमें (चार प्रदेशवालेकी अपेक्षा तीन प्रदेशवाला, पांच प्रदेशवालेकी अपेक्षा चार प्रदेशवाला स्कन्ध इत्यादि) भी ले जाना चाहिये । तीन प्रदेशोंकी अवगाहनकरनेवाले द्रव्यकी अपेक्षा दो प्रदेशोंकी अवगाहन करनेवाला द्रव्य क्षेत्रकी अपेक्षा आवेशजघन्य है । इसी प्रकार शेष प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये । तीन समय परिणत द्रव्यको देखकर दो समय परिणत द्रव्य आवेशसे कालजघन्य है । इसी प्रकार शेष समयोंमें भी ले जाना चाहिये । तीन गुण परिणत द्रव्यको देखकर दो गुण परिणत द्रव्य भावसे आवेशजघन्य है ।

भावजघन्य आगमभावजघन्य और नोआगमभावजघन्यके भेदसे दो प्रकार है । उनमें जघन्य प्राकृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावजघन्य है । सूक्ष्म निगोद जीव लघ्वपर्याप्तकका जो सबसे जघन्य ज्ञान है वह नोआगमभावजघन्य है ।

णोभागमभावजहणं । एत्थ ओघजहणखेत्तेण पयदं, णाणावरणीयखेत्तेसु सव्वजहणखेत्त-
गह्वादो । सव्वजहणखेत्तमेगो आगासपदेसो ति एत्थ ण धेत्तव्वं, णाणावरणीयखेत्तेसु
तदभावादो ।

उक्कस्सं चउत्विहं णाम-द्ववणा-दव्व-भावुकस्समेएण । तत्थ णाम-द्ववणुकस्सामि
सुगमाणि । दव्वुकस्सं दुविहं आगम-णोआगमदव्वुकस्समेएण । तत्थ उक्कस्सपाहुड-
जाणगो अनुवज्जुत्तो आगमदव्वुकस्सं । णोआगमदव्वुकस्सं ति विहं जाणुगसरीर-भविय-
तव्वदिरित्तोआगमदव्वुकस्सभेदेण । जाणुगसरीर-भवियणोआगमदव्वुकस्सामि सुगमाणि ।
तव्वदिरित्तोआगमदव्वुकस्सं दुविहं— ओघुकस्समादेसुकस्सं चेदि । तत्थ ओघुकस्सं
चउत्विहं— दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वदो उक्कस्सं महाखंधो ।
खेत्तुकस्सं दुविहं— कम्मखेत्तं णोकम्मखेत्तमिदि । कम्मखेत्तुकस्सं लोणागासं । णोकम्म-
खेत्तुकस्सं आगासदव्वं । कालदो उक्कस्समणता लोणा । भावदो उक्कस्सं सव्वुकस्स-
वण्ण-गंध-रस-पासा । आदेसुकस्सं पि चउत्विह— दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि ।
तत्थ दव्वदो एगपरमाणुं ददट्ठण दुपदेसियखंधो आदेसुकस्सं । दुपदेसियखंधं ददट्ठण
तिपदेसियखंधो वि आदेसुकस्सं । एवं सेसेसु वि णेदव्वं । खेत्तदो एयक्खेत्तं ददट्ठण

यहां ओघजघन्य क्षेत्र प्रकृत है, क्योंकि, ज्ञानावरणीयके क्षेत्रोंमें सर्वजघन्य
क्षेत्रका ग्रहण है। यहां सर्वजघन्य क्षेत्ररूप एक आकाशप्रदेशको नहीं लेना चाहिये,
क्योंकि, ज्ञानावरणीयके क्षेत्रोंमें उसका (सर्वजघन्य क्षेत्रका) अभाव है।

उत्कृष्ट नामउत्कृष्ट, स्थापनाउत्कृष्ट, द्रव्यउत्कृष्ट और भावउत्कृष्टके भेदसे चार
प्रकार है। उनमें नामउत्कृष्ट और स्थापनाउत्कृष्ट सुगम हैं। द्रव्यउत्कृष्ट आगमद्रव्यउत्कृष्ट
और नोआगमद्रव्यउत्कृष्टके भेदसे दो प्रकार है। उनमें उत्कृष्ट माभूतका ज्ञानकार
उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यउत्कृष्ट है। नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट ज्ञायकशरीर, भावी
और तदव्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यउत्कृष्टके भेदसे तीन प्रकार है। इनमें
ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट सुगम हैं। तदव्यतिरिक्त नोआगम-
द्रव्यउत्कृष्ट दो प्रकार है— ओघउत्कृष्ट और आवेशउत्कृष्ट। इनमें ओघउत्कृष्ट द्रव्य, क्षेत्र,
काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है। उनमें द्रव्यसे उत्कृष्ट महास्कन्ध है। क्षेत्रकी
अपेक्षा उत्कृष्ट दो प्रकार है— कर्मक्षेत्र और नोकर्मक्षेत्र। लोकाकाश कर्मक्षेत्रउत्कृष्ट
है। आकाश द्रव्य नोकर्मक्षेत्रउत्कृष्ट है। अनन्त लोक कालसे उत्कृष्ट हैं। भावसे
उत्कृष्ट सर्वोत्कृष्ट वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श हैं।

आवेशउत्कृष्ट भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है। इनमें
एक परमाणुको देखकर दो प्रवेशवाला स्कन्ध द्रव्यसे आवेशउत्कृष्ट है। दो प्रवेशवाले
स्कन्धको देखकर तीन प्रवेशवाला स्कन्ध भी आवेश उत्कृष्ट है। इसी प्रकार शेष
स्कन्धोंमें भी छे आना चाहिये। क्षेत्रकी अपेक्षा एक क्षेत्रप्रदेशको देखकर दो क्षेत्रप्रदेश

दोषखेत्तपदेसा आदेसदो उक्कस्सं खेतं । एवं सेसेसु वि नेदव्वं । कालदो एगसमवं ददूण
 देससवया आदेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि नेदव्वं । भावदो एगगुणजुतं ददूण दुगुणजुतं
 दव्वमादेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि नेदव्वं । भावुक्कस्सं दुविहं— आगम-गोआगमभावुक्कस्स-
 भेदेण । तत्थ उक्कस्सपाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभावुक्कस्सं । गोआगमभावुक्कस्सं
 केवलणणं । एत्थ ओघखेतुक्कस्सेण अहियारो, अप्पिदकम्मखेतुसु उक्कस्सखेतमाहणादो ।
 ओक्कस्सममासदव्वं, तस्स गहणं किण्ण कदं ? ण, कम्मखेतुसु तदभावादो । एगं
 सामित्तं जहणपदे, अण्णेममुक्कस्सपदे, एवं दुविहं चैव सामित्तं होदि; अण्णस्सांसंभावादो ।

**सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीयवेयणा खेतदो उक्कस्सिया
 कस्स ? ॥ ७ ॥**

जहणपदपडिसेहट्ठं उक्कस्सपदणिसेसो कदो । णाणावरणमाहणं सेसकम्मपडिसेहफलं ।
 खेतसगहणं दव्वादिपडिसेहफलं । पुव्वाणुपुव्विं मो ण पच्चाणुपुव्वीए उक्कस्सखेतस्स
 परूवणा किमट्ठं कीरदे ? ण, महल्लपरिवाहीए परूवणट्ठं कीरदे ।

आदेशकी अपेक्षा उत्कृष्ट क्षेत्र हैं । इसी प्रकार शेष प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये ।
 कालकी अपेक्षा एक समयको देखकर दो समय आदेशउत्कृष्ट हैं । इसी प्रकार शेष
 समयोंमें भी ले जाना चाहिये । भावकी अपेक्षा एक गुण युक्त द्रव्यको देखकर दो गुण
 युक्त द्रव्य आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष गुणोंमें भी ले जाना चाहिये ।

भावउत्कृष्ट आगमभावउत्कृष्ट और नोआगमभावउत्कृष्टके भेदसे दो प्रकार है ।
 उनमें उत्कृष्ट प्राश्रुतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावउत्कृष्ट है । नोआगमभाव-
 उत्कृष्ट केवलज्ञान है । यहाँ ओघक्षेत्रउत्कृष्टका अधिकार है, क्योंकि, विचक्षित कर्मक्षेत्रोंमें
 उत्कृष्ट क्षेत्रका ग्रहण किया गया है ।

शंका—ओघउत्कृष्ट आकाश द्रव्य है, उसका ग्रहण क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, कर्मक्षेत्रोंमें आकाशद्रव्यका अभाव है ।

एक स्वाभित्व जघम्य पदमें और दूसरा एक उत्कृष्ट पदमें, इस प्रकारसे दो
 प्रकारका ही स्वाभित्व है, क्योंकि, इनके अतिरिक्त अन्य स्वाभित्वकी सम्भावना नहीं है ।

स्वाभित्वसे उत्कृष्ट पदमें ज्ञानावरणीयवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके
 होती है ? ॥ ७ ॥

जघम्य पदके प्रतिषेधके लिये स्वयं उत्कृष्ट पदका निर्देश किया है । ज्ञानावरणका
 ग्रहण शेष कर्मोंका प्रतिषेध करता है । क्षेत्र पदके ग्रहणका फल द्रव्य आविष्कार प्रतिषेध
 करता है ।

शंका—पूर्वाह्णपूर्वको ओघकर पश्चात्पूर्वसे उत्कृष्ट क्षेत्रकी प्रकल्पना किसलिये
 की जाती है ?

**जो मच्छो जेयणसहस्सओ सयंभुरमणसमुदस्स बाहिरिस्स
तदे अच्छिदो ॥ ८ ॥**

जो मच्छो जेयणसहस्सओ ति एदेण सुत्तवयणेणं गुलस्स असंखेज्जविभागमादिं कादूण जा उक्कस्सेण पदेसूण जेयणसहस्स ति आयामेण जे हिदा मच्छा तेसिं पडिसेहो कहे । उस्सेह-विकखंभेहि महामच्छासरिसलद्धमच्छेसु गहिदेसु वि ण कोच्छि दोसो अत्तिप, तदो तेसिं गहणं किण्ण कीरदे ? ण एस दोसे, महामच्छायाम-विकखंभुस्सेहसु अणवगमस्सु लद्धमच्छायामविकखंभुस्सेहाणं अवगमोवायाभावादो । ण महामच्छायामो अण्णदो अवगममे, सुत्तभूदस्स एदम्हादो जेड्डस्स अण्णत्तासंभवादो । महामच्छस्स आयामो जेयणसहस्सं १००० । एदस्स विकखंभुस्सेहा केत्तिया होति ति उत्ते, उच्चदे — एसो महामच्छो पंचजेयणसदविकखंभो ५०० पंचासुत्तरवीसदुस्सेहो २५० । सुत्तेण विणा कधमेदं ण्वदे ?

समाधान— नहीं, महान् परिपाटीसे प्ररूपणा करनेके लिये पञ्चादानुपूर्वीसे प्ररूपणा की जा रही है । (अर्थात् उद्देश्यके अनुसार यद्यपि पहिले जघन्य पदकी प्ररूपणा करना चाहिये थी, तथापि विस्तृत होनेसे पहिले उत्कृष्ट पदकी प्ररूपणा की जा रही है ।)

जो मत्स्य एक हजार योजनकी अवगाहनावाला स्वयम्भूरमण समुद्रके बाह्य तटपर स्थित है ॥ ८ ॥

‘जो मत्स्य एक हजार योजनकी अवगाहनावाला है’ इस सूत्रांशसे, जो मत्स्य अंगुलके असंख्यातवें भागको आदि लेकर उत्कर्षसे एक प्रदेश कम हजार योजन प्रमाण तक आयामसे स्थित हैं, उनका प्रतिषेध किया गया है ।

शंका— उत्सेध और विष्कम्भकी अपेक्षा महामत्स्यके सहस्र पाये जानेवाले मत्स्योंका ग्रहण करनेपर भी कोई दोष नहीं है, अतः उनका ग्रहण क्यों नहीं करते ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जब तक महामत्स्यके आयाम, विष्कम्भ और उत्सेधका परिज्ञान न हो जाये तब तक प्राप्त मत्स्योंके आयाम, विष्कम्भ और उत्सेधका परिज्ञान होना किसी प्रकारसे सम्भव नहीं है । महामत्स्यका आयाम किसी अन्य सूत्रसे नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस सूत्रसे ज्येष्ठ प्राचीन सूत्रभूत कोई अन्य वाक्य सम्भव नहीं है ।

महामत्स्यका आयाम एक हजार (१०००) योजन प्रमाण है । इसके विष्कम्भ और उत्सेधका प्रमाण कितना है, ऐसा पृच्छनेपर उत्तर देते हैं कि उस महामत्स्यका विष्कम्भ पांच सौ (५००) योजन और उत्सेध दो सौ पचास (२५०) योजन मात्र है ।

शंका— यह सूत्रके विषय कैसे जाना जाता है ?

आइरियपरंपरागववाइजंतुवदेसादो । ण च महामच्छविकखंमुस्सेहाणं सुत्तं णत्थि चेवे ति भियंमो, देसासासिण 'जोयणसहस्सिओ' ति उत्तेण सूचिदत्तादो । एदे विक्खंमुस्सेहा महामच्छस्स सव्वत्थ सरिसा । मुह-पुच्छेसु विक्खंमुस्सेहाणं पमाणमेतियं होदि ति, एदेहिंतो पुघभूदविकखंमुस्सेहाणं परूवयसुत्त-वक्खाणाणमणुवलंमादो जोयणसहस्सणिहेसण्ण-हाणुवत्तीदो च ।

के वि आइरिया महामच्छो मुह-पुच्छेसु सुदुट्ठ सण्हओ ति भणंति । एत्थतणमच्छे ददुट्ठण एदं ण घडदे, कहल्लिमच्छोसुं विथिहचारदंसणादो । अथवा एदे विक्खंमुस्सेहा समकरणसिद्धा ति के वि आइरिया भणंति । ण च सुदुट्ठ सण्णमुहो महामच्छो अण्णेगंजोयण-सदोगाहणतिमिगिलादिगिलणखमो, विरोहादो । तग्हा वक्खाणमि उत्तविकखंमुस्सेहा चेव महामच्छस्स घेत्त्वा । अथवा मज्झपदेसे चेव उत्तविकखंमुस्सेहो मच्छो घेत्त्वा, आदि-मज्झवसाणेसु एदग्हादो तिगुणं विपुंजमाणस्स उक्कस्सखेतुप्पत्तिं पडि विरोहाभावादो । 'सयंभुरमणसमुद्दस्स' ति सव्वदीव-समुद्दवाहिरसमुद्दस्स गहणट्ठं । सव्ववाहिरो समुदो चेव

समाधान—यह आचार्यपरम्पराके प्रवाह स्वरूपसे आये हुए उपदेशसे जाना जाता है । और महामत्स्यके विष्कम्भ व उत्सेधका ज्ञापक सूत्र है ही नहीं, ऐसा नियम भी नहीं है, क्योंकि, 'जोयणसहस्सिओ ति' अर्थात् एक हजार योजनवाला इस देशामर्शक सूत्रवचनसे उनकी सूचना की गई है ।

ये विष्कम्भ और उत्सेध महामत्स्यके सब जगह समान हैं । मुख और पूँछमें विष्कम्भ एवं उत्सेधका प्रमाण इतने मात्र ही है, क्योंकि, इनसे भिन्न विष्कम्भ और उत्सेधकी प्रकृपणा करनेवाला सूत्र व व्याख्यान पाया नहीं जाता, तथा इसके बिना हजार योजनका निर्देश बनता भी नहीं है ।

महामत्स्य मुख और पूँछमें अतिशय सूक्ष्म है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । किन्तु यहांके मत्स्योंको देखकर यह घटित नहीं होता, तथा कहीं कहीं मत्स्योंके अंगोंमें व्याभिचार देखा जाता है । अथवा, ये विष्कम्भ और उत्सेध समकरणसिद्ध हैं, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । दूसरी बात यह है कि अतिशय सूक्ष्म मुखसे संयुक्त महामत्स्य एक सौ योजनकी अवगाहनावाले अन्य तिमिगल आदि मत्स्योंके निगलनेमें समर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि, उसमें विरोध आता है । अत एव व्याख्यानमें महामत्स्यके उपर्युक्त विष्कम्भ और उत्सेधको ही ग्रहण करना चाहिये ।

अथवा, उक्त विष्कम्भ और उत्सेध महामत्स्यके मध्य प्रदेशमें ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि आदि, मध्य और अन्तमें इससे तिगुने फैलनेवालेके उत्कृष्ट क्षेत्रकी उत्पत्तिके प्रति कोई विरोध नहीं है ।

'सयंभुरमणसमुद्दस्स' इस पदके द्वारा द्वीप-समुद्रोंमें सबसे बाह्य समुद्रका ग्रहण किया गया है ।

होदि ति कथं गव्वदे ? सयंभुरमणसमुद्दस बाहिरे' दीवे अच्छिदो ति अभणिय 'सयंभुरमणसमुद्दस बाहिरिल्लए तडे अच्छिदो' ति सुत्तादो गव्वदे ? सयंबाहिरवेइयाए पैंतो ति सयंभुरमणसमुद्दो, तरस बाहिरिल्लतडो णाम समुद्दपरभूभागदेसो । तत्थ अच्छिदो ति वेत्तव्वं । सयंभुरमणसमुद्दस बाहिरिल्लतडो णाम तदवयवभूद्बाहिरवेइया, तत्थ महामच्छो अच्छिदो ति के वि आइरिया भणंति । तण्ण घडदे, 'कायलेरिसयाए लम्पो' ति उव्वरि भण्णमाणसुत्तेण सह विरोहादो । ण च सयंभुरमणसमुद्दबाहिरवेइयाए संबद्धा तिण्णि वि वादवल्या, तिरियलोगविकखंभरस एगरज्जुपमाणादो ज्जणत्तप्पसंगादो । तं कथं गव्वदे ? जंबूदीवजोयणलक्खविकखंभदो दुगुणवकमेण गदसव्वदीव-सागरविकखंभसु भेलाविदेसु जग-सेहीए सत्तमभागाणुप्पत्तीदो । तं पि कथं गव्वदे ? रूवाहियदीव-सागररूवाणि बिरलिय विगं करिय अण्णोण्णभरत्थं कादण तत्थ तिण्णि रूवाणि अवणिय जोयणलक्खेण गुणिदे दीव-समुद्दरुद्धतिरियलोगखेत्तायासुप्पत्तीदो । ण च एत्तियो चेव तिरियलोगविकखंभो, जगसेहीए

शंका—सर्वबाह्य समुद्र ही है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'स्वयंभूरमण समुद्रके बाह्य द्वीपमें स्थित' ऐसा न कहकर स्वयंभूरमण समुद्रके बाह्य तटपर स्थित' ऐसा जो सूत्र है उसीसे यह जाना जाता है ।

अपनी बाह्य वेदिका पर्यन्त स्वयंभूरमण समुद्र है, उसके बाह्य तटसे अभिप्राय समुद्रके परभूभागप्रदेशका है । वहांपर स्थित, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

स्वयंभूरमण समुद्रके बाह्य तटका अर्थ उसकी अंगभूत बाह्य वेदिका है, वहाँ स्थित महामत्स्य, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । किंतु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर आगे बड़े जानेवाले 'तनुवातबलयसे संलग्न हुआ' इस सूत्रके साथ विरोध आता है । कारण कि स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकासे तीनों ही वातबलय सम्बद्ध नहीं हैं, क्योंकि, वैसा होनेपर त्रियंगलोक सम्बन्धी विस्तारप्रमाणके एक राजुसे हीन होनेका प्रसंग आता है ।

शंका—वह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—चूंकि जंबूद्वीप सम्बन्धी एक लाख योजन प्रमाण विस्तारकी अपेक्षा दुगुणे क्रमसे गये हुए सब द्वीप-समुद्रोंके विस्तारोंको मिलानेपर जगभ्रमणिका सातवां भाग (राजु) उत्पन्न नहीं होता है, अतः इसीसे जाना जाता है कि तीनों वातबलय स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकासे सम्बद्ध नहीं है ।

शंका—वह भी कैसे जाना जाता है ?

समाधान—एक अधिक द्वीप-समुद्र सम्बन्धी रूपोंका बिरलन कर दुगुणा करके परस्पर गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उसमें तीन रूपोंको कम करके एक लाख योजनसे गुणित करनेपर द्वीप-समुद्रों द्वारा रोक गये त्रियंगलोक क्षेत्रका आयाम उत्पन्न होता है, अतः इसीसे जाना जाता है कि उक्त प्रकारसे जगभ्रमणिका सातवां भाग नहीं उत्पन्न होता ।

सद्धमभागम्मि पंचसुण्णाणुवलंभादो । ण च एदम्हादो रज्जुविकखंभो ऊणो होदि, रज्जुअम्मं-
तरमुदस्स चउब्बीसजोयणमेत्तवाद्दरुद्धक्खेतस्स बज्जमुवलंभादो । ण च तेत्तियमेत्तं पक्खित्ते
पंचसुण्णमो फिट्ठंति, तद्वाणुवलंभादो । तम्हा सयलदीव-सायरविकखंभादो बाहिं केत्तिएण
वि क्खेत्तेण होद्वं । सयंभुरमणसमुदम्भंतरे द्विदमहामच्छो जलचरो कथं तस्स बाहिरिल्लं
तहं गहो ? ण एस दोसो, पुव्ववहरियदेवपओगेण तस्स तत्थ गमणसंभवादो ।

वेयणसमुग्घादेण समुहदो ॥ ९ ॥

वेयणावसेण जीवपदेसाणं विकखंभुस्सेहेहि तिगुणविपुंजणं वेयणासमुग्घादो णाम ।
ण च एस णियमो सज्जेसि जीवपदेसा वेयणाए तिगुणं चेव विपुंजंति त्ति, किंतु सगविकखं-
भादो तरतमसरूवेण द्विदेवेयणावसेण एग-दोपदेसादीहि वि वट्ठी होदि । ते वेयणसमुग्घादा
एत्थ ण गहिदा, उक्कस्सेण खेत्तेण अहियारादो । महामच्छो चेव किमिदि वेयणसमुग्घादं
णीदो ? महल्लोगाहणत्तादो, जलयरस्स थले क्खित्तस्स उण्हेण दज्जमाणंगस्स संचिय-
बहुपावकम्मस्स महावेयणुप्पत्तिदंसणादो च ।

तिर्यग्लोकका विस्तार इतने मात्र ही हो, सो भी नहीं है; क्योंकि, जगभ्रेणिके
खालवें भागमें पांच शून्य नहीं पाये जाते । और इससे राजुविष्कम्भ हीन भी नहीं है,
क्योंकि, राजुके अन्तर्गत चौबीस योजन प्रमाण वायुरुद्ध क्षेत्र बाह्यमें पाया जाता है ।
दूसरे, उतने मात्र क्षेत्रको मिलानेपर पांच शून्य नष्ट भी नहीं होते, क्योंकि, वैसा पाया
नहीं जाता । इसी कारण समस्त द्वीप-समुद्र सम्बन्धी विस्तारके बाहिर भी कुछ क्षेत्र
होना चाहिये ।

शंका—स्वयम्भूरमण समुद्रके भीतर स्थित महामत्स्य जलचर जीव उसके
बाह्य तटको कैसे प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पूर्वके वैरी किसी देवके प्रयोगसे
इसका वहां गमन सम्भव है ।

वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ ॥ ९ ॥

वेदनाके वशसे जीवप्रदेशोंके विष्कम्भ और उत्प्रेषकी अपेक्षा तिगुणे प्रमाणमें
फैलनेका नाम वेदनासमुद्घात है । परन्तु सबके जीवप्रदेश वेदनाके वशसे तिगुणे
ही फैलते हों, ऐसा नियम नहीं है । किन्तु तरतम रूपसे स्थित वेदनाके वशसे अपने
विष्कम्भकी अपेक्षा एक दो प्रदेशादिकोंसे भी वृद्धि होती है । परन्तु उन वेदनासमुद्-
घातोंका यहां प्रहण नहीं किया गया है, क्योंकि, यहां उत्कृष्ट क्षेत्रका अधिकार है ।

शंका—महामत्स्यको ही वेदनासमुद्घातको क्यों प्राप्त कराया है ?

समाधान—क्योंकि, एक तो उसकी अवगाहना बहुत अधिक है, दूसरे जलचर
जीवको स्थलमें रखनेपर उष्णताके कारण अंगोंके संतप्त होनेसे बहुत पापकर्मोंके
संचयको प्राप्त हुए उसके महा वेदनाकी उत्पत्ति देखी जाती है ।

कायलेस्सियाए लग्गो ॥ १० ॥

कायलेस्सिया णाम तदियो वादवलओ । कथं तस्स एसा सण्णा ? कामवणत्तादो सो कागलेस्सियो णाम । एत्थ अंधकायलेस्सो ण घेतत्त्वा, तत्थ अंधत्तवेण्णाणुवलंभादो । लोगवत्तिवसेण लोगनाडीदो परदो संखेज्जजोयणाणि ओसरिय ड्ढितदियवादे लोगनालीए अम्मंतरड्ढिमहामच्छो कथं लग्गदे ? सच्चभेदं महामच्छस्स तदियवादेण संपासो णत्थि ति । किंतु एसा सत्तमी सामीवे^१ वड्ढि । न च सत्तमी सामीप्ये^२ असिद्धा, गंगायां घोषः प्रतिवसतीत्यत्र सामीप्ये सप्तम्युपलंभात्^३ । तेण काउलेस्सियाए छुत्तदेसो काउलेस्सिया ति गहिदो । तीए काउलेस्सियाए जाव लग्गदि ताव वेयणासमुग्घादेण समुहदो ति उत्तं होदि । भावत्थो— पुव्वेवरियदेवेण महामच्छे सयंभुरमणवाहिरेइयाए बाहिरे भागे लोगनालीए समीपे पादिदो^४ । तत्थ तिक्खेयणावसेण वेयणसमुग्घादेण समुहदो^५ जाव लोगनालीए बाहिरेपंतो लग्गो ति उत्तं होदि ।

जो तनुवातवलयेस स्पृष्ट है ॥ १० ॥

काकलेइयाका अर्थ तीसरा वातवलय है ।

शंका— उसकी यह संज्ञा कैसे है ?

“ समाधान— तनुवातवलयका काकके समान वर्ण होनेसे उसकी काकलेइया संज्ञा है ।

यहां अंधकाकलेइया (काला स्याह काकवर्ण) का ग्रहण नहीं करना चाहिये, क्योंकि, उसमें अंधत्व अर्थात् काला स्याह वर्ण नहीं पाया जाता ।

शंका— लोकनालीके भीतर स्थित महामत्स्य लोकविस्तारानुसार लोकनालीके भागे संख्यात योजन जाकर स्थित तृतीय वातवलयसे कैसे संसक्त होता है ?

समाधान— यह सत्य है कि महामत्स्यका तृतीय वातवलयसे स्पर्श नहीं होता, किन्तु यह सप्तमी विभक्ति सामीप्य अर्थमें है । यदि कहा जाय कि सामीप्य अर्थमें सप्तमी विभक्ति असिद्ध है, सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि ‘ गंगामें घोष (ग्वालवसति) बसता है ’ यहां सामीप्य अर्थमें सप्तमी विभक्ति पायी जाती है । इसलिये कापोतलेइयासे स्पृष्ट प्रदेश भी कापोतलेइया रूपसे ग्रहण किया गया है । उस कापोतलेइयासे अहां तक संसर्ग है वहां तक वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ, यह उसका अभिप्राय है ।

मावार्थ— पूर्वके वैरी किसी देवके द्वारा महामत्स्य स्वयंभुरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकाके बाहिर भागमें लोकनालीके समीप पड़का गया । वहां तीव्र वेदनाके वशा वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त होकर लोकनालीके बाह्य भाग पर्यन्त वह संसक्त होता है, यह अभिप्राय है ।

१ साप्रती ‘ अद्धकायलेस्सा ’ इति पाठः । २ साप्रती ‘ अम्भत्त ’ इति पाठः ।

३ साप्रती ‘ समीपे ’ इति पाठः । ४ साप्रती ‘ न च सप्तमी सामीप्ये ’ इति पाठः ।

५ साप्रती ‘ सप्तम्युपलंभादो ’ इति पाठः । ६ प्रतिष्ठ ‘ पुणीयो ’; साप्रती पुणी (पति) यो इति पाठः ।

७ प्रतिष्ठ ‘ समुग्घादो ’ इति पाठः ।

**पुनरवि मारणंतियसमुग्धादेण समुहदो तिणि विग्गहकंद-
याणि कादूण ॥ ११ ॥**

महामच्छे लोणालीए वायव्वदिसाए पुव्वेवरियदेवसंघेण दक्खिणुत्तरायामेण पदिदो । तत्थ मारणंतियसमुग्धादेण समुहदो । तेण महामच्छेण वेयणसमुग्धादेण मारणंतियसमुग्धादं करंतेण तिणि विग्गहकंदयाणि कदाणि । विग्गहो णाम वक्कत्तं, तेण तिणि कंदयाणि कदाणि । तं जहा — लोणालीवायव्वदिसादो कंडुज्जुवाए गईए सादिरियअद्धरज्जुमेत्तमागदो दक्खिणदिसाए । तेमंगं कंदयं । पुणो तत्तो वलिदूण कंडुज्जुवाए गईए एगरज्जुमेत्तं पुव्वदिसमागदो । तं बिदियं कंदयं । पुणो तत्तो वलिदूण अधो अरज्जुमेत्तद्धाणमुजुगदीए गदो । तं तदिय कंदयं । एवं तिणि कंदयाणि कादूण मारणंतिय-समुग्धादं गदो । चत्तिर कंदए किण्ण कराविदो ? ण, तसेसु दो विग्गह मौत्तूण तिणि-विग्गहाणमभावादो । तं कथं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो ।

**से काले अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उप्पज्जिहिदि ति
तस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो उक्कस्सा ॥ १२ ॥**

फिर भी जो तीन विग्रह करके मारणान्तिकसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ है ॥ ११ ॥

महामत्स्य लोकनालीकी वायव्य दिशामें पूर्वके वैरी देवके सम्बन्धसे दक्षिण-उत्तर आधाम स्वरूपसे गिरा । वहां वह मारणान्तिकसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ । वेदनासमुद्घातके साथ मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले उक्त महामत्स्यने तीन विग्रहकाण्डक किये । विग्रहका अर्थ वक्रता है, उससे तीन काण्डक किये । वे इस प्रकारसे — लोकनालीकी वायव्य दिशासे बाणके समान अजुगतिसे साधिक अर्थ राजु मात्र दक्षिण दिशामें आया । वह एक काण्डक हुआ । फिर वहांसे मुड़कर बाण जैसी सीधी गतिसे एक राजु मात्र पूर्व दिशामें आया । वह द्वितीय काण्डक हुआ । फिर वहांसे मुड़कर नीचे छह राजु मात्र मार्गमें अजुगतिसे गया । वह तृतीय काण्डक हुआ । इस प्रकार तीन काण्डकोंको करके मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुआ ।

शंका — चार काण्डकोंको क्यों नहीं कराया ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, त्रसोंमें दो विग्रहोंको छोड़कर तीन विग्रह नहीं होते ।

शंका — वह कैसे ज्ञात होता है ?

समाधान — वह इसी सूत्रसे ज्ञात होता है ।

अनन्तर समयमें वह सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न होगा, अतः उसके ज्ञानावरणीयवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ १२ ॥

१ मप्रतिपाद्येऽयम् । अ-कप्रत्योः 'पुव्वदिसावसमागदो', ताप्रतौ 'पुव्वदिसाव (५) समागदो' इति पाठः ।

२ मप्रतिपाद्येऽयम् । अ-कप्रत्योः 'तं तदियकंदयाणि', ताप्रतौ 'तं तदियकंद [वं] । या (ता) णि' इति पाठः ।

सत्तमपुढवि मोत्तूण हेड्डा णिगोदेसु सत्तरज्जुमेत्तद्धाणं गंतूण किण्ण उप्पाइदो ? णिगोदेसुप्पज्जमाणस्स अइतिव्वेयणाभावेण सरीरतिगुणवेयणसमुग्घादस्स अमावादो । जदि एवं तो पुव्विल्लविकखंभुरेसेहेहिंतो वेयणाए जहा विक्खंभुरेसेहा दुगुणा होंति तथा कादूण णिगोदेसु किण्ण उप्पाइदो ? ण, वड्ढिदक्खेत्तादो परिहीणखेत्तस्स सादिरेयअट्टगुणत्तुवलंभादो । जदि वि वारुणदिसादो एगरज्जुमेत्तं पुव्वदिसाए गंतूण पुणो हेड्डा सत्तरज्जुअद्धाणं गंतूण पुणो दक्खिणेण आहुट्ठरज्जुओ गंतूण सुहुमणिगोदेसु उपपजदि तो वि पुव्विल्लखेत्तादो एदस्स खेत्तं विसेसहीणं चेव, विक्खंभुरेसेहाणं तिगुणत्ताभावादो । सुहुमणिगोदेसु उप्पज्जमाणस्स महामच्छस्स विक्खंभुरेसेहा तिगुणा ण होंति, दुगुणा विसेसाद्विया वा होंति ति कथं णव्वेदे ? अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु से काले उप्पज्जिहिदि ति सुत्तादो णव्वेदे । संतकम्मपाहुडे पुण णिगोदेसु उप्पाइदो, णेरइएसु उप्पज्जमाणमहामच्छो व्व सुहुमणिगोदेसु

शंका—सातवीं पृथिवीको छोड़कर नीचे सात राजु मात्र अध्वान जाकर निगोद जीवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीधके अतिशय तीक्ष्ण वेदनाका अभाव होनेसे विचक्षित शरीरसे तिगुणा वेदनासमुद्घात सम्भव नहीं है ।

शंका—यदि ऐसा है तो वेदनासमुद्घातमें पूर्वोक्त विष्कम्भ और उत्सेधसे जिस प्रकार दुगुणा विष्कम्भ व उत्सेध होता है वैसा करके निगोद जीवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उसके वृद्धिगत क्षेत्रकी अपेक्षा हानिको प्राप्त क्षेत्र साधिक आठगुणा पाया जाता है ।

यद्यपि पश्चिम दिशासे एक राजु मात्र पूर्व दिशामें जाकर, फिर नीचे सात राजु अध्वान जाकर, फिर दक्षिणसे साढ़े तीन राजु जाकर सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होता है, तो भी पूर्वके क्षेत्रसे इसका क्षेत्र विशेष हीन ही है, क्योंकि, इसमें विष्कम्भ और उत्सेध तिगुणे नहीं हैं ।

शंका—सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यका विष्कम्भ और उत्सेध तिगुणा नहीं होता, किन्तु दुगुणा अथवा विशेष अधिक होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—“ नीचे सातवीं पृथिवीकी नारकियोंमें वह अनन्तर कालमें उत्पन्न होगा ” इस सूत्रसे जाना जाता है ।

सत्कर्मप्राप्तमें उसे निगोद जीवोंमें उत्पन्न कराया है, क्योंकि, नारकियोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके समान सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाला महामत्स्य

उप्यज्जमाणमहामच्छो वि तिगुणसरिवाहत्तेण मारणंतियसमुग्घादं गच्छदि ति । ण च एदं जुज्जदे, सत्तमपुढवीणेरइएसु असादबहुलेसु उप्यज्जमाणमहामच्छवेयणा-कसाएहिंतो सुहुमणिगोदेसु उप्यज्जमाणमहामच्छवेयण-कसायाणं सरिसत्ताणुववत्तीदो । तदो एसो चेव अत्थो पहाणो ति धेतत्त्वो । 'लोगणालीए अंतो सत्तमपुढवीए सेडिबद्धो अत्थि ति' एदेण सुत्तेण णव्वदे, अण्णहा तिणिण विग्गहप्पसंगादो । से काले उप्यज्जिहिदि' ति किमइं उच्चदे ? ण, णेरइएसुप्पणपढमसमए उवसंहरिदपढमदंडस्स य उक्कस्सखेत्ताणुववत्तीदो । एत्थ संहिद्दी-



सादिरेयमद्धरज्जुपमाणं^१ के वि आइरिया

एवं होदि' ति भणंति । तं जहा— अवरदिसादो मारणंतियसमुग्घादं कादूण पुव्वदिस-मागदो जाव लोगणालीए अंतं पत्तो ति । पुणो विग्गहं करिय हेट्ठा छरज्जुपमाणं गंतूण पुणरवि विग्गहं करिय वारुणदिसाए अद्धरज्जुपमाणं गंतूण अवहिट्ठाणमि उप्पणस्स खेत्तं होदि ति । एदं ण घडदे, उववादट्ठाणं वोलेदूण गमणं णत्थि ति पवाइजंतउवदेसेण सिद्धत्तादो ।

भी विचक्षित शरीरकी अपेक्षा तिगुणे बाह्यसे मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त होता है । परन्तु यह योग्य नहीं है, क्योंकि, अत्यधिक असाताका अनुभव करनेवाले सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यकी वेदना और कषायकी अपेक्षा सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यकी वेदना और कषाय सह्य नहीं हो सकती । इस कारण यही अर्थ प्रधान है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । “लोकनालीके अन्तमें सातवीं पृथिवीका श्रेणिवद्ध है” इस सूत्रसे जाना जाता है, क्योंकि, इसके बिना तीन विग्रहोंका प्रसंग आता है ।

शंका—अनन्तर कालमें उत्पन्न होगा, यह किसलिये कहते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, नारकियोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें प्रथम वृष्णका उपसंहार हो जानेसे उसका उच्छिष्ट क्षेत्र नहीं बन सकता ।

यहां संदष्टि—(मूलमें देखिये) ।

साधक साडे सात राज्जुका प्रमाण इस (निष्) प्रकार होता है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । यथा—“पश्चिम दिशासे मारणान्तिकसमुद्घातको करके लोकनालीका अन्त प्राप्त होने तक पूर्वदिशामें आया । फिर विग्रह करके नीचे छह राज्जु मात्र जाकर पुनः विग्रह करके पश्चिम दिशामें आध राज्जु प्रमाण जाकर अवधिस्थान नरकमें उत्पन्न होनेपर उसका उच्छिष्ट क्षेत्र होता है ।” किन्तु यह घटित नहीं होता, क्योंकि, वह ‘उपपादस्थानका अतिक्रमण करके गमन नहीं होता’ इस परम्परागत उपदेशसे सिद्ध है ।

१ अग्रती ‘उप्यज्जदि’, ताग्रती ‘उप्यज्जहिदि’ इति पाठः । २ ताग्रती ‘सादिरेयमद्धरज्जुपमाणं’ इति पाठः । ३ प्रतिष्ठ ‘होति’ इति पाठः ।

एत्थ उवसंहरो उच्चदे । तं जहा— एगरज्जुं ठविय सादियेयज्जट्टमरुवेहि गुणेदूण पुणो तिगुणिदविकखेणेण [१५००] तिगुणिदउत्सेहगुणिदेण [७५०] गुणिदे णाणावरणीयस्स उक्कस्सखेत्तं होदि ।

तव्वदिरित्ता अणुक्कस्सा ॥ १३ ॥

उक्कस्समहामच्छवखेत्तादो वदिरित्तं खेत्तं तव्वदिरित्तं णाम । सा अणुक्कस्सा खेत्तवेयणा । सा च असंखेज्जवियप्पा । तिस्से सामी किण्ण परूविदो ? ण, उक्कस्ससामी चेव अणुक्कस्सस वि सामी होदि त्ति पुधसामित्तपरूवणाकरणादो, सेसवियप्पाणं पि एदम्हादो चेव सिद्धीदो च । तं जहा— मुहग्गि एगागासपदेसेणूक्कस्सोगाहणमहामच्छेण पुव्ववेरियदेवसंबंधेण लोमणालीए वायव्वदिमाए णिवदिय वेयणसमुग्घादेण पुव्वविकखं-भुस्सेहंहितो तिगुणविकखंभुस्सेहे आवण्णेण मारणंतियसमुग्घादेण तिण्णि कंदयाणि कादूण सत्तमपुढवि पत्तेण अणुक्कस्सुक्कस्सवखेत्तं कंदं । तेण एदस्स अणुक्कस्सुक्कस्सवखेत्तस्स महामच्छो चेव सामी । पुणो मुहपदेसे दोहि आगासपदेसेहि उणवो महामच्छो वेयण-समुग्घादेण समुहदो होदूण तिण्णि विग्गहकंडयाणि कादूण मारणंतियसमुग्घादेण सत्तम-पुढवि गदो बिदियअणुक्कस्सखेत्तस्स सामी होदि । पुणो तीहि आगासपदेसेहि परिहीणमुहो

यहां उपसंहार कहते हैं । वह इस प्रकार है—एक राजाको स्थापित करके साक्षिक साढ़े सात रूपोंसे गुणित करके पश्चात् तिगुणे उत्सेध ($२५० \times ३ = ७५०$) से गुणित तिगुणे विष्कम्भ ($५०० \times ३ = १५००$) के द्वारा गुणित करनेपर ज्ञानावरणीयका उत्कृष्ट क्षेत्र होता है ।

महामत्स्यके उपर्युक्त उत्कृष्ट क्षेत्रसे भिन्न अनुत्कृष्ट वेदना है ॥ १३ ॥

उत्कृष्ट महामत्स्यक्षेत्रसे भिन्न क्षेत्र तद्व्यतिरिक्त है । वह अनुत्कृष्ट क्षेत्रवेदना है । वह असंख्यात विकल्प रूप है ।

शंका—उसके स्वामीकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उत्कृष्टका स्वामी ही चूंकि अनुत्कृष्टका भी स्वामी होता है, अतः उसके स्वामित्वकी पृथक् प्ररूपणा नहीं की गई है, तथा शेष विकल्प भी इसीसे सिद्ध होते हैं । यथा—मुखमें एक प्रदेशसे हीन उत्कृष्ट अवगाहनासे संयुक्त, पूर्ववैरी देवके सम्बन्धसे लोकनालीकी वायव्य दिशामें गिरकर वेदनासमुद्घातसे पूर्व विष्कम्भ व उत्सेधकी अपेक्षा तिगुणे विष्कम्भ व उत्सेधको प्राप्त, तथा मारणान्तिक-समुद्घातसे तीन काण्डकोंको करके सातवीं पृथिवीकी प्राप्त हुआ महामत्स्य अनुत्कृष्ट-उत्कृष्ट क्षेत्रको करता है । इस कारण इस अनुत्कृष्ट-उत्कृष्ट क्षेत्रका महामत्स्य ही स्वामी है ।

पुनः मुखप्रदेशमें दो आकाशप्रदेशोंसे हीन महामत्स्य वेदनासमुद्घातसे समुद्घातकी प्राप्त होकर तीन विग्रहकाण्डकोंको करके मारणान्तिकसमुद्घातसे सातवीं पृथिवीकी प्राप्त होता हुआ द्वितीय अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी होता है । फिर तीन

महामच्छो पुव्वविहिणा चेव मारणंतियसमुग्घादेण सत्तमपुढविं गदो तदियखेतस्स सामी । मुहम्मि चत्तारिआगासपदेसूणमहामच्छो मारणंतियसमुग्घादेण सादिरियअद्धट्टमरज्जुआयदो चउत्थखेतस्स सामी । एवमेदेण कमेण महामच्छमुहपदेसे ऊणे करिय संखेज्जपदरंगुलमेत्ता अणुक्कस्सकखेतवियप्पा उप्पादेदव्वा ।

एत्थतणसव्वपच्छिमखेतं केण सरिसं होदि ति वुत्ते वुच्चदे — ओधुक्कस्सोगाहण-महामच्छस्स वेयणसमुग्घादेण तिगुणविकखंभुस्सेहे गंतूण पदेसूणद्धट्टमरज्जूण मुक्कमारणंतियस्स खेत्तेण सरिसं होदि । पुणो वि महामच्छमुहवियप्पे अस्सिदूण पदेसूणद्धट्टमरज्जूणं मारणंतियं मेत्ताविय संखेज्जपदरंगुलमेत्तखेत्ताणं सामित्तरूवणा कायव्वा । एत्थ अंतिमक्खेतवियप्पो केण सरिसो होदि ति उत्ते, उच्चदे— ओधुक्कस्सोगाहणमहामच्छस्स पुव्वविहाणेण दुपदे-सूणद्धट्टमरज्जूण मुक्कमारणंतियस्स खेत्तेण सरिसो । पुणो एदं मारणंतियखेत्तायामं धुवं कादूण महामच्छमुहवियप्पे अस्सिदूण संखेज्जपदरंगुलमेत्तखेत्ताणं सामित्तरूवणं कायव्वं । पुणो एत्थ सव्वपच्छिमवियप्पो तिपदेसूणद्धट्टमरज्जूणं मुक्कमारणंतियखेत्तेण सरिसो ।

आकाशप्रदेशोंसे हीन सुखवाला महामत्स्य पूर्व विधिसे ही मारणान्तिकसमुद्घातसे सातवीं पृथिवीको प्राप्त होकर तृतीय अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी होता है । सुखमें चार आकाशप्रदेशोंसे हीन महामत्स्य मारणान्तिकसमुद्घातसे साधिक साढ़े सात राजु मात्र आयामसे युक्त होता हुआ चतुर्थ अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी होता है । इस प्रकार इस क्रमसे महामत्स्यके मुखप्रदेशोंको हीन करके संख्यात प्रतरांगुल प्रमाण अनुत्कृष्ट क्षेत्रके विकल्पोका उत्पन्न कराना चाहिये ।

शंका—यहाँका सबसे अन्तिम क्षेत्र किसके सदृश होता है ?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि यह क्षेत्र सामान्योक्त उत्कृष्ट अवगाहनावाले और वेदनासमुद्घातसे तिगुणे विष्कम्भ व उत्सेधको प्राप्त होकर एक प्रदेश कम साढ़े सात राजु तक मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले महामत्स्यके क्षेत्रके सदृश होता है ।

फिरसे भी महामत्स्यके मुख सम्बन्धी विकल्पोका आश्रय करके प्रदेश कम साढ़े सात राजु तक मारणान्तिकसमुद्घातको छुड़ाकर संख्यात प्रतरांगुल प्रमाण क्षेत्रोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

शंका—यहाँ अन्तिम विकल्प किसके सदृश होता है ?

समाधान—इस प्रकार पुछनेपर उत्तर देते हैं कि वह क्षेत्र ओषोक्त उत्कृष्ट अवगाहनासे संयुक्त और पूर्व विधिके अनुसार दो प्रदेशोंसे हीन साढ़े सात राजु तक मारणान्तिकसमुद्घातको छोड़नेवाले महामत्स्यके क्षेत्रके सदृश होता है ।

फिर इस मारणान्तिकक्षेत्रके आयामको अवस्थित करके महामत्स्यके मुख-विकल्पोका आश्रय कर संख्यात प्रतरांगुल मात्र क्षेत्रोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । यहाँ सबसे अन्तिम विकल्प तीन प्रदेश कम साढ़े सात राजु तक मारणान्तिक-

एवमेवेषासपदेसूणाओ कमेण मारणंतियं मेलाविय अणुक्कस्सखेत्ताणं सामितपक्खं कायच्चं । सत्तमपुढविं मारणंतियं मेल्लमाणजीवाणं मारणंतियखेत्तायांओ सर्व्वेसिं किण्ण सरिसे ? ण, मारणंतियं मेल्लिदणं पुणो मूलसरीरं पविस्सिय कालं कर्त्तताणं मारणंतियखेत्तायांमाणेणगवियप्पत्तं पडि विरोहाभावादो । समुप्पत्तिकखेत्तमपाविय कयमारणंतियसमुत्पादजीवा पल्लट्टिय मूलसरीरं पविरसंति चि कथं णव्वदे ? पवाइज्जंतउव्वेसादो । सुहुमणिगोदेसु उत्पज्जमाणमहामच्छे अस्सिदूण किण्ण सामितं उच्चदे ? ण, तेसु तिस्सवेयणा कसायविवज्जिएसु एक्कसराहेण महामच्छुक्कस्समारणंतियखेत्तादो अणेगरज्जुमेत्तखेत्तपदेसूणेसु महामच्छुक्कस्सखेत्तादो पदेसूणादिखेतवियप्पाणुवलंभादो । सुहुमणिगोदेसुप्पज्जमाणमहामच्छस्स उक्कस्समारणंतियखेत्तसमाणं सत्तमपुढविं सह समुप्पज्जमाणमहामच्छमारणंतियखेत्तपुढि हेट्ठिमेत्तवियप्पा सुहुमणिगोदेसु सत्तमपुढवीए च उत्पज्जमाणमहामच्छे अस्सिदूण उप्पादेद्वा । अहवा, महामच्छे चेव एगादिपगुत्तरागासपदेसकमेण पुरेदो समुद्घातको छोड्नेवाले महामत्स्यके क्षेत्रके सदृश होता है । इस प्रकार एक एक आकाशप्रदेशकी हीनताके क्रमसे मारणान्तिकसमुद्घातको छुड़ाकर अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

शंका—सातवीं पृथिवीमें मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले सब जीवोंके मारणान्तिकक्षेत्रोंका आयाम समान क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्घातको करके फिर मूल शरीरमें प्रवेश कर सृष्टीको प्राप्त होनेवाले जीवों सम्बन्धी मारणान्तिकक्षेत्रोंके आयामोंके अनेक विकल्प रूप होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका—उत्पत्तिकक्षेत्रको न पाकर मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले जीव पलटकर मूल शरीरमें प्रविष्ट होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—वह परम्परागत उपदेशसे जाना जाता है ।

शंका—सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्योंका आश्रय करके स्वामित्वकी प्ररूपणा क्यों नहीं की जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीव्र वेदना व कषायसे रहित होनेके कारण एक साथ पूर्वोक्त महामत्स्यके उत्कृष्ट मारणान्तिकक्षेत्रकी अपेक्षा अनेक राज्ञु प्रमाण क्षेत्रप्रदेशोंसे हीन उक्त निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्योंमें, सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्रसे एक प्रदेश कम दो प्रदेश कम इस्यादि क्षेत्रविकल्प नहीं पाये जाते ।

सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके उत्कृष्ट मारणान्तिकक्षेत्रके समान सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके मारणान्तिकक्षेत्रको सादि लेकर अधस्तन क्षेत्रके विकल्पोंको सूक्ष्म निगोद जीवोंमें और सातवीं पृथिवीमें भी उत्पन्न होनेवाले महामत्स्योंका आश्रय करके उत्पन्न करना चाहिये । सूक्ष्म,

१ अक्षप्रसो: 'मेडिदोण', ताप्रती 'मेडिदो न' इति पाठः ।

बौध्दप्रिय अणुक्कस्सखेत्ताणं परूवणा कायच्चा । एवं पेदच्चं जाव वेयणसमुग्घादेण समुहद-
महामच्छेत्तं ति ।

पुणो एदेण खेत्तेण कम्हि महामच्छे मारणंतियखेत्तं सरिसमिदि उत्ते उच्चदे, तं
जहा— जो महामच्छे वेयणसमुग्घादेण विणा मूलायामेण सह णवजोयणसहस्साणि
मारणंतियं भेल्लिदि, तस्स खेत्तं सरिसं होदि । पुणो पुवित्तं मोत्तूण इमं घेत्तूण खेत्तस्स
सामित्तरूवणं कायच्चं । तं जहा— मुहम्मि एगागासपदेसेण उणमहामच्छेण णवजोयण-
सहस्साणि मुक्कमारणंतिए मेलाविय अणंतरेहिट्ठिमअणुक्कस्समारणंतियखेत्तं होदि । एवमेगे-
गासपदेसं मुहम्मि उणं करिय णवजोयणसहस्साणि मारणंतियं भेल्लाविय संखेज्जपदरं-
गुलमेत्तखेत्ताणं सामित्तरूवणं कायच्चं । एवं परिहाइदूण द्विदपच्छिमखेत्तेण ओधुक्कस्सो-
गाहणाए पदेसुणणवजोयणसहस्साणि मुक्कमारणंतियमहामच्छेत्तं सरिसं होदि ? एवं
आणिदूण पदेसूणादिकमेण सेसखेत्ताणं पि सामित्तरूवणं कायच्चं जाव महामच्छेस्सद्धानु-
क्कस्सोगाहणे ति । पुणो पदेसुणुक्कस्सोगाहणमहामच्छे तदणंतरेहिट्ठिमअणुक्कस्सखेत्त-
सामी । एवमेगेगं खेत्तपदेसं णिरंतरं उणं करिय णेयच्चं जाव बादरवणफदिकाइयपेत्य-
महामत्स्यका ही एकको आदि लेकर एक अधिक आकाशप्रदेशके कमसे आगे बढ़ाकर
अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको
प्राप्त महामत्स्यके क्षेत्र तक ले जाना चाहिये ।

शुका— इस क्षेत्रसे कौनसे महामत्स्यका क्षेत्र सहश है ?

समाधान - इस शंकाका उत्तर कहते हैं । वह इस प्रकार है—जो महामत्स्य
वेदनासमुद्घातके बिना मूल आयागके साथ नौ हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घातको
करता है उसका क्षेत्र इस क्षेत्रके सहश होता है ।

अब पूर्वके क्षेत्रको छोड़कर व इसे ग्रहण कर स्वामित्वकी प्ररूपणा करना
चाहिये । वह इस प्रकार है—मुखमें एक आकाशप्रदेशसे हीन होकर नौ हजार योजन
मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले महामत्स्यका अनन्तर अधस्तन अनुत्कृष्ट मारणा-
न्तिकक्षेत्र होता है । इस प्रकार एक एक आकाशप्रदेशको मुखमें कम करके नौ हजार
योजन मारणान्तिकसमुद्घातको कराकर संख्यात प्रनरांगुल मात्र क्षेत्रोंके स्वामित्वकी
प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार हीन होकर स्थित अन्तिम क्षेत्रसे ओघोक उत्कृष्ट
अवगाहनामें एक प्रदेश कम नौ हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले
महामत्स्यका क्षेत्र सहश होता है । इस प्रकार एक प्रदेश कम, दो प्रदेश कम इत्यादि
कमसे महामत्स्यके अध्वानमें उत्कृष्ट अवगाहना तक शेष क्षेत्रोंके भी स्वामित्वकी प्ररूपणा
जानकर करना चाहिये । पुनः एक प्रदेश कम उत्कृष्ट अवगाहनावाला महामत्स्य उससे
अनन्तर अधस्तन अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी होता है । इस प्रकार एक एक क्षेत्रप्रदेशको
विरन्तर कम करके बादर घनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीरीकी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त

१ अथौ ' -मेगेगासपदेसं', ताप्रती ' -मेगेगासपदेस- ' इति पाठः । २ प्रतियु ' क्षेत्रस्स '

इति पाठः ।

सरीरउक्कस्सोगाहणं पत्तमिदि । पुणो तत्तो एगेगपदेसुणं करिय भेदव्वं जाव भेइदिय-
णिव्वत्तिपज्जत्तउक्कस्सोगाहणं पत्तमिदि । पुणो तत्तो णिरंतरं पदेसूणादिकमेण भेदव्वं जाव
चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणं पत्तमिदि । पुणो तत्तो पदेसूणादिकमेण भेदव्वं
जाव तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणं पत्तमिदि । पुणो एगेगपदेसूणादिकमेण
भेदव्वं जाव तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स अजहणमणुककस्समेगघणं गुलेगाहणं पत्तमिदि ।
एवं णिरंतरकमेण एगेगपदेसूणं करिय नेयव्वं जाव सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तजहणोगाहणं
परमिदि । एवमसंखेज्जसेड्ढित्ताणमणुककस्सखेत्तवियप्पाणं सामित्तरूवणा कदा ।

संपहि एदेसिं खेत्तवियप्पाणं जे सामिणे जीवा तेसिं परूवणाए कीरमाणाए तत्थ
अणियोगद्वाराणि णादवाणि भवंति । तत्थ परूवणा उच्चदे । तं जहा— उक्कस्सए ठणे
अत्थि जीवा । एवं भेदव्वं जाव जहणहाणे ति । वणा गदा ।

उक्कस्सए हाणे जीवा केत्तिया ? असंखेज्जा । एवं तसकाइयपाओग्गखेत्त-
वियप्पेसु असंखेज्जजीवा ति वत्तव्वं । थावरकाइयपाओग्गोसु वि असंखेज्जलोगा । ज्वरि
वणप्फइकाइयपाओग्गोसु अणंता । एवं पमाणपरूवणा गदा ।

सेडी अवहारो च ण सक्कदे णेदुमुवदेसामावादे । ज्वरि एइंदिएसु जहणहाण-
हानि तक ले जाना चाहिये । फिर उसमेंसे एक एक प्रदेश कम करके द्वीन्द्रिय
निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । फिर उसमेंसे
निरन्तर एक प्रदेश कम, दो प्रदेश कम इत्यादि क्रमसे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी
उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । फिर उसमेंसे प्रदेश हीनादिके
क्रमसे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये ।
फिर उसमेंसे एक एक प्रदेश हीनादिके क्रमसे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी अजघम्य-
अनुत्कृष्ट एक घनांगुल मात्र अवगाहनाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । इस
प्रकार निरन्तर क्रमसे एक एक प्रदेश हीन करके सूक्ष्म निगेद्व लघ्वपर्याप्तककी
जघम्य अवगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार असंख्यात अणि
मात्र अनुत्कृष्ट क्षेत्र सम्बन्धी विकल्पोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है ।

अब इन क्षेत्रविकल्पोंके जो जीव स्वामी हैं उनकी प्ररूपणा करते समय वहाँ
छह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं—[प्ररूपणा, प्रमाण, अणि, अवहार, भागाभाज और
अल्पबहुत्व] । उनमें प्ररूपणा अनुयोगद्वारको कहते हैं । वह इस प्रकार है—उत्कृष्ट
स्थानमें जीव हैं । इस प्रकार जघम्य स्थान तक ले जाना चाहिये । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

उत्कृष्ट स्थानमें जीव कितने हैं ? वे वहाँ असंख्यात हैं । इस प्रकार त्रसंख्याकों-
के योग्य क्षेत्रविकल्पोंमें असंख्यात जीव हैं, ऐसा कहना चाहिये । स्थावरकायिकोंके
योग्य क्षेत्रविकल्पोंमें भी असंख्यात लोक प्रमाण जीव हैं । विशेष इतना है कि वनस्पति-
कायिक योग्य क्षेत्रविकल्पोंमें अनन्त जीव हैं । इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अणि और अवहारकी प्ररूपणा नहीं की जा सकती, क्योंकि, उनका उपदेश
प्राप्त नहीं है । विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय जीवोंमें जघम्य स्थान सम्बन्धी जीवोंकी

अविहितो विदियद्वाणजीवा विसेसाहिया विसेसहीणा वा अंतोमुहुत्तपडिभागेण ।

उक्कस्सद्वाणजीवा सव्वद्वाणजीवाणं केवडिओ भागो ? अणंतिमभागो । जहण्णए
द्वाणे जीवा सव्वद्वाणजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । अजहण्णअणुक्कस्सएसु
द्वाणेषु जीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जा भागा । एवं भागाभागपरूवणा गदा ।

सव्वत्थोवा उक्कस्सए द्वाणे जीवा । जहण्णए द्वाणे अणंतगुणा । अजहण्णअणु-
क्कस्सएसु द्वाणेषु जीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।
अजहण्णए द्वाणे जीवा विसेसाहिया । अणुक्कस्सए द्वाणे जीवा विसेसाहिया । सव्वेसु
द्वाणेषु जीवा विसेसाहिया ।

अथवा अप्पावहुंगं तिविहं— जहण्णयमुक्कस्सयमजहण्णमणुक्कस्सयं चेदि ।
तत्थ जहण्णए पयदं— सव्वत्थोवा जहण्णए द्वाणे । अजहण्णए द्वाणे जीवा असंखेज्जगुणा ।
उक्कस्सए पयदं— सव्वत्थोवा उक्कस्सए द्वाणे जीवा । अणुक्कस्सए द्वाणे जीवा
अणंतगुणा । अजहण्णअणुक्कस्सए पयदं— सव्वत्थोवा उक्कस्सए द्वाणे जीवा । जहण्णए
द्वाणे जीवा अणंतगुणा । अजहण्णअणुक्कस्सएसु द्वाणेषु जीवा असंखेज्जगुणा । अजहण्णए

अपेक्षा द्वितीय स्थान सम्बन्धी जीव अन्तर्मुहूर्त प्रतिभागसे विशेष अधिक अथवा
विशेष हीन हैं ।

उत्कृष्ट स्थानके जीव सब स्थान सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ?
वे उनके अनन्तवें भाग प्रमाण हैं । जघन्य स्थानमें जीव सब स्थानों सम्बन्धी जीवोंके
कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । अजघन्य-अनुत्कृष्ट
स्थानोंमें जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके असंख्यात बहुभाग प्रमाण
हैं । इस प्रकार भागभागप्रकरण समाप्त हुई ।

उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे थोड़े हैं । उनसे जघन्य स्थानमें वे अनन्तगुणे हैं ।
उनसे अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव असंख्यातगुणे हैं ।

शंका—गुणकार क्या है ?

समाधान—गुणकार अंगुलका असंख्यातवां भाग है ।

उनसे अजघन्य स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं । अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव उनसे
विशेष अधिक हैं । उनसे सब स्थानोंमें जीव विशेष अधिक हैं ।

अथवा, अल्पबहुत्व तीन प्रकार है—जघन्य, उत्कृष्ट और अजघन्य-अनुत्कृष्ट ।
उनमें जघन्य अल्पबहुत्व प्रकृत है—जघन्य स्थानमें जीव सबसे स्तोका हैं । उनसे
अजघन्य स्थानमें जीव असंख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट अल्पबहुत्व प्रकृत है—उत्कृष्ट
स्थानमें जीव सबसे थोड़े हैं । अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव उनसे अनन्तगुणे हैं । अजघन्य-
अनुत्कृष्ट अल्पबहुत्व प्रकृत है—उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे स्तोका हैं । जघन्य स्थानमें
जीव उनसे अनन्तगुणे हैं । अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं ।

झाणे जीवा विसेसाहिया । अणुक्कस्सए झाणे जीवा विसेसाहिया । सव्वेसु झावेसु जीवा विसेसाहिया ।

एवं दंसणावरणीय-मोहणीय-अंतराहयाणं ॥ १४ ॥

एदेसिं तिण्हं घादिकम्माणं जहा णाणावरणीयउक्कस्साणुक्कस्ससेत्तपरूवणा कदा तहा कादब्बं, विसेसाम्मादो ।

समित्तेण उक्कस्सपदे वेदणीयवेदणा खेत्तदो उक्कस्सिमा कस्स ? ॥ १५ ॥

उक्कस्सपदे त्ति णिहेसेण जहण्णपदपडिसिहो कदो । वेदणीयवेदणा त्ति णिहेसेण सेसकम्मवेयणाए पडिसिहो कदो । खेत्तणिहेसेण दव्वादिवेयणाणं पडिसिहो कदो । कस्से त्ति किं देवस्स, किं णेरइयस्स, किं तिरिक्खस्स, किं मणुस्सस्स होदि त्ति पुच्छा कदा ।

अण्णदरस्स केवलस्स केवलिसमुग्घादेण समुहदस्स सव्वल्लोणं गदस्स तस्स वेदणीयवेदणा खेत्तदो उक्कस्सा ॥ १६ ॥

अण्णदरस्से त्ति णिहेसेण ओगाहणाविसेसाणं भरहादिक्खेत्तविसेसाणं च पडिसिहा-
उनसे अजघम्य स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं । उनसे अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं । उनसे सब स्थानोंमें जीव विशेष अधिक हैं ।

इसी प्रकार दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्मके भी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट वेदनक्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ १४ ॥

जैसे ज्ञानावरणीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही इन तीन घाति कर्मोंके उक्त क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उनमें कोई विशेषता नहीं है ।

स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें वेदनीय कर्मकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके होती है ? ॥ १५ ॥

‘उत्कृष्ट पदमें’ इस निर्देशसे अजघम्य पदका प्रतिषेध किया गया है । ‘वेदनीय कर्मकी वेदना’ इस निर्देशसे शेष कर्मोंकी वेदनाका प्रतिषेध किया है । क्षेत्रका निर्देश करनेसे द्रव्यादि वेदनाओंका प्रतिषेध किया गया है । ‘किसके होती है ?’ इससे उक्त वेदना क्या देवके, क्या नारकीके, क्या तिर्यक्के और क्या मनुष्यके होती है; यह पूछा की गई है ।

अन्यतर केवलीके, जो केवलिसमुद्घातसे समुद्घातको व उसमें भी सर्वत्रेक अर्थात् लोकपूर्ण अवस्थाको प्राप्त हैं, उनके वेदनीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ १६ ॥

‘अन्यतर’ पदके निर्देशसे अजगहाहनाविशेषोंके और भरतदिक क्षेत्रविशेषोंके

भावी परुषिदो । केवलिससे त्ति णिद्वेसेण छदुमत्थाणं पडिसेहो कदो । केवलिसमुग्घादेण समुद्दस्से त्ति णिद्वेसेण सत्थाणं केवलिपडिसेहो कदो । सव्वलोगं गदस्से त्ति णिद्वेसेण दंड-
कवाड-पदरगदाणं पडिसेहो कदो । सव्वलेगपूणे वट्टमाणस्स उक्कस्सिया वेयणीयवेयणा
होदि त्ति उतं होदि । एत्थ उवसंहारो सुगमो ।

तव्वदिरित्ता अणुक्कस्सा ॥ १७ ॥

एदम्हादो उक्कस्सखेतवेयणादो वदिरित्ता खेतवेयणा अणुक्कस्सा होदि । तत्थ-
तणठक्कस्सियाए खेतवेयणाए पदरगदो केवली सामी, एदम्हादो अणुक्कस्सखेतुसु महल्ल-
खेत्ताभावादो । एदं च उक्कस्सखेत्तादो विससहीणं, वादवल्यन्भतरे जीवपदेसाणमभावादो ।
सव्वमहल्लोगाहणाए कवाडं गदो केवली तदणंतरअणुक्कस्सखेतद्वाणसामी । णवीर पुविल्ल-
अणुक्कस्सखेत्तादो भिदियमणुक्कस्सखेतमसंखेज्जगुणहीणं, संखेज्जसूचीअणुल्लबाहल्लजग-
पदरपमाणकवाडखेतं पेक्खिदूण मंथक्खेतस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । पदेसूणक्कस्स-
विकखंभोगाहणाए कवाडं गदो केवली तदियक्खेतसामी । णवीर भिदियमणुक्कस्सखेतं
पेक्खिदूण तदियमणुक्कस्सखेतं विससहीणं होदि, पुविल्लक्खेत्तादो जगपदमेत्तखेत-
परिहाणिदंसणादो । दुपदेसूणक्कस्सविकखंभेण कवाडं गदो चउत्थखेतसामी । एदं पि

प्रतिषेधका अभाष बतलाया गया है । 'केवली' पदका निर्देश करके छद्मस्थोंका प्रतिषेध किया गया है । 'केवलिसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त' इस निर्देशसे स्वस्थानकेवलीका प्रतिषेध किया है । 'सर्व लोकको प्राप्त' इस निर्देशसे दण्ड, कपाट और प्रतर समुद्घातको प्राप्त हुए केवलियोंका प्रतिषेध किया है । सर्वलोकपूरण समुद्घातमें रहनेवाले केवलीके उत्कृष्ट वेदनीयवेदना होती है, यह उसका अभिप्राय है । यहाँ उपसंहार सुगम है ।

उत्कृष्ट क्षेत्रवेदनासे भिन्न क्षेत्रवेदना अनुत्कृष्ट है ॥ १७ ॥

इस उत्कृष्ट क्षेत्रवेदनासे भिन्न क्षेत्रवेदना अनुत्कृष्ट होती है । अनुत्कृष्ट क्षेत्र-
वेदनाधिकार्योंमें उत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाके स्वामी प्रतरसमुद्घातको प्राप्त केवली हैं, क्योंकि,
अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंमें इससे और कोई बड़ा क्षेत्र नहीं है । यह क्षेत्र उत्कृष्ट क्षेत्रकी अपेक्षा
विशेष हीन है, क्योंकि, इस क्षेत्रमें जीवके प्रदेश वातवल्लयोंके भीतर नहीं रहते ।
सबसे बड़ी अवगाहना द्वारा कपाटसमुद्घातको प्राप्त केवली तदनन्तर अनुत्कृष्ट
क्षेत्रस्थानके स्वामी हैं । विशेष इतना है कि पूर्वके अनुत्कृष्ट क्षेत्रसे द्वितीय अनुत्कृष्ट
क्षेत्र असंख्यातगुणा हीन है, क्योंकि, संख्यात सूर्यगुल बाहस्य रूप जगप्रतर प्रमाण
कपाटक्षेत्रकी अपेक्षा मंथक्षेत्र असंख्यातगुणा पाया जाता है । एक प्रदेश कम उत्कृष्ट
विष्कम्भ युक्त अवगाहनासे कपाटसमुद्घातको प्राप्त केवली तृतीय क्षेत्रके स्वामी हैं ।
विशेष इतना है कि द्वितीय अनुत्कृष्ट क्षेत्रकी अपेक्षा तृतीय अनुत्कृष्ट क्षेत्र विशेष हीन
है, क्योंकि, इसमें पूर्वके क्षेत्रकी अपेक्षा एक जगप्रतर मात्र क्षेत्रकी हानि देखी जाती है ।
दो प्रदेश कम उत्कृष्ट विष्कम्भसे कपाटको प्राप्त केवली चतुर्थ अनुत्कृष्ट क्षेत्रके स्वामी

अर्जतस्फुल्लखेत्तं पेक्खिदूणं विसेसहीणं दोजगपदरमेत्तेण । एवं सांतरकमेण खेत्तसामितं परूवेद्वं जाव आहुदुरयणिउस्सेहओगाहणाए विक्खंभेणूणंपंचधणुसद-पणुवीमुसरुस्सेह-ओगाहणविक्खंभमेत्तकवाडखेत्तवियप्पा ति । पुणो एदेण सच्चजहणपच्छिमक्खेत्तेण सरिस-मुत्तरादिमुहकवाडक्खेत्तं वेत्तूण पुणो ततो एगेगपदेसं विक्खंभम्मि उणं करिय कवाडं णेदूण खेत्तवियप्पाणं सामितं परूवेद्वं जाव उत्तराभिमुहकेवलजिह्वण्णकवाडक्खेत्तं पत्तो ति । पुणो तदणंतरहेट्ठिमअणुक्कस्सखेत्तसामी महामच्छो तिण्णिविग्गहकंदएहि सत्तमपुडविमारण-तियसमुग्घादेण समुहदो सामी, अण्णरस कवाडजहण्णखेत्तादो उणरस अणुक्कस्सखेत्तस्स अणुवलंभादो । णवरि कवाडजहण्णक्खेत्तादो महामच्छरस उक्कस्समसंखेज्जगुणी ।

एत्तो प्पुडि उवरिमक्खेत्तवियप्पाणं धादिकम्माणं भणिदविहाणेण सामितपरूवणं कायव्वं । दंडगयकेवलखेत्तद्वाणाणि संखेज्जपदरंगुलमेत्ताणि महामच्छक्खेत्ततो णिवदंति ति पुध ण परूविदाणि । केवली दंडं करमाणो सव्वो सरिरतिगुणबाह्वलेण [ण] कुणदि, वेयणाभावादो । को पुण सरिरतिगुणबाह्वलेण दंडं कुणइ ? पलियंकेण णिसण्णकेवली ।

हैं । यह भी अध्यवहित पूर्वकं क्षेत्रकी अपेक्षा दो जगप्रतर मात्रसे विशेष हीन है । इस प्रकार साम्तरकमसे सङ्के तीन रतिन उत्सेध युक्त अवगाहनाके विष्कम्भसे हीन पाँच सौ पञ्चीस धनुष उत्सेध युक्त अवगाहनाके विष्कम्भ प्रमाण कपाटक्षेत्रके विकल्पों तक क्षेत्रस्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । फिर इस सर्वजघन्य अन्तिम क्षेत्रके सहस्र उत्तराभिमुख कपाटक्षेत्रको ग्रहण करके पश्चात् उससे विष्कम्भमें एक एक प्रवेश कम करके कपाटसमुद्घातको लेकर उत्तराभिमुख केवलीके जघन्य कपाटक्षेत्रको प्राप्त होने तक क्षेत्रविकल्पोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । पुनः तीन विग्रहकाण्डको द्वारा सातवीं पृथिवीमे मारणान्तिकसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त महामत्स्य तदनन्तर अधस्तन अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी है, क्योंकि, उक्त जघन्य कपाटक्षेत्रसे हीन और दूसरा अनुत्कृष्ट क्षेत्र पाया नहीं जाता । विशेष इतना है कि जघन्य कपाटक्षेत्रसे महामत्स्यका उत्कृष्ट क्षेत्र असंख्यातगुणा हीन है ।

अब यहाँसे आगे पूर्वोक्त घातिकर्मोंके विधानसे उपरिम क्षेत्रविकल्पोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । दण्डगत केवलीके संख्यातप्रतरांगुल मात्र क्षेत्रस्थान कृत्वा महामत्स्यक्षेत्रके भीतर आजाते हैं, अतः उनकी पृथक् प्ररूपणा नहीं की गई है । दण्डसमुद्घातको करनेवाले समी केवली शरीरसे तिगुणे बाह्व्यसे उक्त समुद्घातको नहीं करते, क्योंकि, उनके वेदनाका अभाव है ।

शंका - तो फिर कौनसे केवली शरीरसे तिगुणे बाह्व्यसे दण्डसमुद्घातको करते हैं ?

समाधान— पर्यंक आसनसे स्थित केवली उक्त प्रकारसे दण्डसमुद्घातको करते हैं ।

स्वेसिं खेत्ताणं सुमिजीवाणं परूवणे कीरमाणे छअभिओगहाराणि हवंति । तत्स परूवणां वेपणीयसंस्वक्खेत्तावियण्येसु अत्थि जीवा । परूवणा गदा ।

उक्कस्सए द्वाणे जीवा केत्तिया ? संखेज्जा । एवं णेयव्वं जाव कवाडगदकेवल्लि-
जहण्णक्खेत्तावियणे सि । उवरि महामच्छउक्कस्सखेत्तप्पहुडि तसपाओगक्खेत्तेसु असंखेज्जा ।
क्कप्फादिकाइयपाओग्गेसु अणंता । एवं पमाणपरूवणा गदा । सेट्ठियरूवणा ण सक्कदे
पेह्णुं, पवाडज्जेत्तुवेदसाभावादे ।

अवहारो उच्चदे— उक्कस्सद्वाणजीवपमाणेण सव्वद्वाणजीवा केवचिरेण कालेण अव-
हिरिज्जंति ? अणंतेण कालेण । एवं पेदव्वं जाव तसकाइय-पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-
वाउकाइयपाओग्गद्वाणे सि । सुहुम-बादरवणप्फादिकाइयपाओग्गद्वाणजीवपमाणेण सव्वजीवा
केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? असंखेज्जेण ।

भागामागो उच्चदे— उक्कस्सए द्वाणे जीवा सव्वद्वाणजीवाणं केवडिओ भागो ?
अणंतिमभागो । जहण्णए द्वाणे सव्वद्वाणजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो ।
अजहण्णक्कस्सए द्वाणे जीवा सव्वद्वाणजीवाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जा भागा ।
भागामागपरूवणा गदा ।

इन क्षेत्रोंके स्वामी जीवोंकी प्ररूपणा करनेमें छह अनुयोगद्वार हैं ।
उनमें प्ररूपणा अनुयोगद्वारकी अपेक्षा वेदनीय कर्मके सब क्षेत्रविकल्पोंमें
जीव हैं । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

उत्कृष्ट स्थानमें जीव कितने हैं ? संख्यात हैं । इस प्रकार, कपाटसमुद्यतगत
केवलीके अक्षय क्षेत्रविकल्प तक ले जाना चाहिये । आगे महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्रसे
लेकर ब्रह्म योग्य क्षेत्रोंमें असंख्यात जीव हैं । वनस्पतिकायिक योग्य क्षेत्रोंमें अनन्त
जीव हैं । इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

श्रेणिप्ररूपणा बतलाना शक्य नहीं है, क्योंकि, उसके विषयमें प्रवाह
स्वरूपसे प्राप्त हुए परम्परागत उपदेशका अभाव है ।

अवहारकी प्ररूपणा करते हैं— उत्कृष्ट स्थानमें रहनेवाले जीवोंके प्रमाणसे
सब जीव कितने कालसे अपहृत होते हैं ? वे उक्त प्रमाणसे अनन्त कालमें अपहृत
होते हैं । इस प्रकार ब्रह्मकायिक, पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजकायिक और
वायुकायिक योग्य स्थानों तक ले जाना चाहिये । सूक्ष्म व बादर वनस्पतिकायिक योग्य
स्थानों सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने कालसे अपहृत होते हैं ? उक्त
प्रमाणसे वे असंख्यात कालमें अपहृत होते हैं ।

भागामागकी प्ररूपणा करते हैं— उत्कृष्ट स्थानमें रहनेवाले जीव सब स्थानों
सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके अनन्तवें भाग प्रमाण हैं । अक्षय
स्थानमें रहनेवाले जीव सब स्थानों सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके
असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । अत्रघन्योत्कृष्ट स्थानमें रहनेवाले जीव सब स्थानों
सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं ।
भागामागप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अप्पाबहुगं वतहस्सामो — सव्वत्थोवा उक्कस्सए ह्माणे जीवा । जहण्णए ह्माणे जीवा अन्नंतगुणा । अजहण्णअणुक्कस्सए ह्माणे जीवा असंखेज्जगुणा । अजहण्णए ह्माणे जीवा विसेसाहिया । अणुक्कस्सए ह्माणे जीवा विसेसाहिया । सन्नेसु ह्माणेसु जीवा विसेसाहिया ।

एवमाउव-णामा-गोदारं ॥ १८ ॥

जहा वेदणीयस्स उक्कस्साणुक्कस्सखेतपरूवणा कदा तहा आउव-णामा-गोदारं पि खेतपरूवणं कायव्वं, विसेसाभावादो । एवमुक्कस्साणुक्कस्सखेतपरूवणा समत्ता ।

सामित्तेण जहण्णपदे णाणावरणीयवेयणा खेततो जहण्णिया कस्स ? ॥ १९ ॥

जहण्णपदणिदेसो सेसपदपडिसेहफले । णाणावरणीयणिदेसो सेसकम्मपडिसेहफले । खेतणिदेसो दव्वादिपडिसेहफले । कस्से ति देव-गेरइयादिविसयपुच्छा ।

अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स तिसमयआहारयस्स तिसमयतवभवत्थस्स जहण्णजोगिस्स सव्वजहण्णयाए सरीरोगाह-णाए वट्टमाणस्स तस्स णाणावरणीयवेयणा खेततो जहण्णा ॥ २० ॥

अप्पाबहुत्वको कहते हैं— उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे अजघ्न्य स्थानमें जीव अनन्तगुणे हैं । उनसे अजघ्न्य-अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव असंख्यातगुणे हैं । उनसे अजघ्न्य स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं । उनसे अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं । उनसे सब स्थानोंमें जीव विशेष अधिक हैं ।

इसी प्रकार आयु, नाम व गोत्र कर्मके उत्कृष्ट एवं अनुत्कृष्ट वेदनाक्षेत्रोंकी प्ररूपणा करनी चाहिये ॥ १८ ॥

जिस प्रकार वेदनीय कर्मके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट क्षेत्रकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार आयु, नाम व गोत्र कर्मके भी उक्त क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार उत्कृष्ट-अनुत्कृष्टक्षेत्रप्ररूपणा समाप्त हुई ।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है ? ॥ १९ ॥

जघन्य पदका निर्देश शेष पदोंके प्रतिषेधके लिये किया है । ज्ञानावरणीयका निर्देश शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेवाला है । क्षेत्रका निर्देश द्रव्याविकका प्रतिषेध करता है । 'किसके होती है' इस निर्देशसे देव व नारकी आदि विषयक पृच्छा प्रगट की गई है ।

अन्यतर सूक्ष्म निगोद जीव लब्धपर्याप्तक, जो कि त्रिसमयवर्ती आहारक है, तदभवस्थ होनेके तृतीय समयमें वर्तमान है, जघन्य योगवाला है, और शरीरकी सर्वजघन्य अवगाहनामें वर्तमान है; उसके ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य होती है ॥ २० ॥

१ अ-काप्रत्यो: 'जीवा' इत्येतत् पदं नोपलभ्यते ।

२ सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जहण्ण तद्वियसमयमिह । जंघुलअसंखमागं जहण्णपुक्कस्सयं यच्छे ॥ गो. जी. ९४. ४. ११-५.

सुहुमणिगोदा अणता अस्थि, तत्थ एकस्स गहणडुमण्णदस्स सुहुमणिगोद-
जीवस्से ति उत्तं । तत्थ पज्जत्तणिराकरणडुमपज्जत्तस्से ति उत्तं । पज्जत्तणिराकरणं किम्हं
कीरदे ? अपज्जत्तजंहण्णोगाहणादो पज्जत्तजहण्णोगाहणाए बहुत्तुवलंमादो । विग्गहगदीए
जहण्णोगाहणा वि पुव्विल्लोगाहणाए सरिसा ति तप्पडिसेहं हं तिसमयआहारयस्से ति भणिदं ।
उज्जुगदीए उप्पण्णो ति जाणावणहं तिसमयतम्भवत्थस्से ति भणिदं । एग-दो-तिणिण वि
विग्गहो कादूण उप्पाइय छसमयतम्भवत्थस्स जहण्णसामित्तं किण्ण दिज्जदे ? ण, पंचसु
समएसु असंखेज्जगुणाए सेडीए वड्ढिदेण एगंताणुवड्ढिजेगेण वड्ढुमाणस्स बहुओगाहणप्प-
संगादो । पढमसमयआहारयस्स पढमसमयतम्भवत्थस्स जहण्णक्खेत्तसामित्तं किण्ण दिज्जदे ?
ण, तत्थ आयदच्चउरस्सक्खेसागोरेणं द्विदग्गि ओगाहणाए त्थोवत्ताणुववत्तीदो । उज्जुगदीए
उप्पण्णपढमसमयग्गि आयदच्चउरंससरूवेण जीवपदेसा चिट्ठंति ति कधं णव्वदे ? पवाइ-

सूक्ष्म निगोदिया जीव अनन्त हैं, उनमेंसे एकका ग्रहण करनेके लिये 'अन्यतर
सूक्ष्म निगोद जीवके' ऐसा कहा है। उनमें पर्याप्तका निराकरण करनेके लिये
'अपर्याप्तके' ऐसा निर्देश किया है।

शंका— पर्याप्तका निराकरण किसलिये किया जा रहा है ?

समाधान— अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहनासे चूँकि पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना
बहुत पायी जाती है, अतः उसका निषेध किया गया है।

विग्रहगतिसमें चूँकि जघन्य अवगाहना भी पूर्व अवगाहनाके सदृश है, अतः
उसका निषेध करनेके लिये 'त्रिसमयवर्ती आहारक' ऐसा कहा है। ऋजुगतिसे उत्पन्न
हुआ, इस बातके ज्ञापनार्थ 'तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ' ऐसा कहा है।

शंका— एक, दो अथवा तीन भी विग्रह करके उत्पन्न कराकर षष्ठसमयवर्ती
तद्भवस्थ निगोद जीवके जघन्य स्वामीपना क्यों नहीं देते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पांच समयोंमें असंख्यतानुगित भ्रेणिसे वृत्तिको प्राप्त
हुए एकान्तानुवृत्तियोगसे बढ़नेवाले उक्त जीवके बहुत अवगाहनाका प्रसंग आता है।

शंका— प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ हुए
निगोद जीवके जघन्य क्षेत्रका स्वामीपना क्यों नहीं देते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उस समय आयतचतुरस्र क्षेत्रके आकारसे स्थित
उक्त जीवमें अवगाहनाका स्तोकपना बन नहीं सकता।

शंका— ऋजुगतिसे उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें आयतचतुरस्र स्वरूपसे
जीवप्रवेश स्थित रहते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

१ तर्हि ऋजुगत्यापवर्त्यैव कथमुत्तमं ? विग्रहगती क्षेगवृद्धियुक्तत्वेन तदवगाहवृद्धिसम्भवात् । गो. जी. (जी. प्र.) १४.

२ प्रतिपु 'चरस्सं क्षेत्रागारेण' इति पाठः ।

ज्जंतुवदेसादो । विदियसमयआहारय-विदियसमयतन्मवत्थस्स जहण्णसामितं किण्ण दिज्जवे ?
 ५, तत्थ समचउरंससरूवेण जीवपदेसाणमवट्ठणादो । विदियसमए विक्खंसमसो आवाभो
 जीवपदेसाणं होदि त्ति कुदो णव्वदे ? परमगुरूवदेसादो । तदियसमयआहारयस्स तदिय-
 समयतन्मवत्थस्स चेव जहण्णखेत्तसामितं किमट्ठं दिज्जवे ? ५ एस दोसो, चउरंस-
 खेत्तस्स चत्तारि वि कोणे संकोडिय वट्ठुलागारेण जीवपदेसाणं तत्थावट्ठणदंसणादो^१ । तत्थ
 वट्ठुलागारेण जीवावट्ठणं कथं णव्वदे ? एदग्हादो चेव सुत्तादो । उप्पण्णपदमसमयप्पहुडि
 जहण्णउववादजोग-जहण्णएगंताणुवट्ठिजोगेहि चेव तिसु वि समएसु पयट्ठो त्ति जाणावणट्ठं
 जहण्णजोगिस्से त्ति भणिदं । तदियसमए अजहण्णाओ वि ओगाहणाओ अत्थि त्ति तप्पडि-
 सेहट्ठं सव्वजहण्णियाए सरीरोगाहणाए वट्ठमाणस्से त्ति भणिदं । एवंविह्विसेसणेहि विसेसि-

समाधान— यह आचार्यपरम्परागत उपदेशसे जाना जाता है ।

शंका— द्वितीय समयवर्ती आहारक और तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें वर्तमान जीवके जघन्य स्वामीपना क्यों नहीं देते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उस समयमें भी जीवप्रदेश समचतुरस्र स्वरूपसे अवस्थित रहते हैं ।

शंका— द्वितीय समयमें जीवप्रदेशोंका चिक्कम्भके समान आयाग होता है, यह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान— यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

शंका— तृतीय समयवर्ती आहारक और तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ निगोद जीवके ही जघन्य क्षेत्रका स्वामीपना किसलिये देते हैं ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उस समयमें चतुरस्र क्षेत्रके चारों ही कोनोंको संकुचित करके जीवप्रदेशोंका वर्तुल अर्धान् गोल आकारसे अवस्थान देखा जाता है ।

शंका— उस समय जीवप्रदेश वर्तुल आकारसे अवस्थित होंत हैं, यह कैसे जाना जाता है ।

समाधान— यह इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर जघन्य उपपादयोग और जघन्य एकान्ताजुहुदियोगसे ही तीनों समयोंमें प्रवृत्त होता है, इस बातको जतलानेके लिये 'जघन्य योगबालेके' ऐसा सूत्रमें निर्देश किया है । तृतीय समयमें अजघन्य भी अवगाहनायें होती हैं, अतः उनका प्रतिषेध करनेके लिये 'शरीरकी सर्वजघन्य अवगाहनमें वर्तमान' यह कहा है । इन विशेषणोंसे विशेषताको प्राप्त हुए सूत्रम निगोद

१ ननूयसत्तुतीयसमये एव सर्वजघन्यावगाहनं कथं सम्भवेत् इति चेत्— प्रथमसमये निगोदजीवसत्तीरस्यायत-
 चतुरस्रत्वात् द्वितीयसमये सचचतुरस्रत्वात् तृतीयसमये कोबापनयनेन वृत्तत्वात् तदेव [तदैव] तदवगाहनस्याप्यत-
 सम्भवात् । भौ. जी (जी. प्र.) १४.

यस्स सुहुमणिगोदजीवस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णा । एत्थ उपसंहारो उच्चदे—
एगउस्सेहधर्णगुलं ठविय तप्पाओग्गेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे णाणा-
वरणीयस्स जहण्णक्खेतं होदि ?

तत्त्वदिरित्तमजहण्णा ॥ २१ ॥

ततो जहण्णक्खेतत्तादो वदिरित्ता खेत्तवेयणा अजहण्णा । सा च बहुपयारा । तासि
सामित्तरूवणं कस्सामो । तं जहा— पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं विरलेदूणं षण्णगुलं
समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणं पावदि ।
पुणो एदिस्से उवरि पदेसुत्तोगाहणाए तत्थेव द्विदो अजहण्ण-जहण्णक्खेत्तस्स सामी । एत्थ
काए वड्डीए बड्ढिदो बिदियक्खेत्तवियप्पो ? असंखेज्जभागवड्ढिए । तं जहा— जहण्णोगाहणं
हेद्दा विरलेदूणं उवरिमपगरूवधरिदं समखंडं कादूणं दिण्णे एगागासपदेसो पावदि । पुणो
एत्थियमेत्तेण अहियमुवरिमपगरूवधरिदमिच्छामो ति रूवाहियेहेहिद्विमविरलणाए जदि एगरूव-
परिहाणी लम्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लमामो ति पमाणेण फलमुणित्तमिच्छमोवद्विय
लद्धे उवरिमविरलणाए सरिसच्छेदं कादूणं सोहिदे अजहण्ण-जहण्णोगाहणाए भागहारो होदि ।

जीवके ज्ञानावरणीयका वेदना क्षेत्रसे जघन्य होती है । यहाँ उपसंहार कहते हैं—
एक उत्सेधघनांगुलको स्थापित करके तत्प्रायोग्य पक्षोपमके असंख्यातवै भागका भाग
वेनेपर ज्ञानावरणीयका जघन्य क्षेत्र होता है ।

उससे भिन्न अजघन्य वेदना होती है ॥ २१ ॥

उससे अर्थात् जघन्य क्षेत्रसे भिन्न क्षेत्रवेदना अजघन्य है । वह अनेक प्रकार
है । उन बहुविध क्षेत्रवेदनाओंके स्वात्मिकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—
पक्षोपमके असंख्यातवै भागका विरलन करके घनांगुलको समखण्ड करके वेनेपर
एक एक रूपके प्रति सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तक जीवकी जघन्य अवगाहना प्राप्त होती
है । पश्चात् इसके आगे एक प्रदेश अधिक अवगाहनासे वहाँ (निगोद पर्यायमें) ही
स्थित जीव अजघन्य क्षेत्रवेदनाके जघन्य स्थानका स्वामी होता है ।

शंका— यहाँ द्वितीय क्षेत्रविकल्प कौनसी वृत्तिके द्वारा वृत्तिगत हुआ है ?

समाधान— वह असंख्यातभागवृत्तिके द्वारा वृत्तिगत हुआ है । वह इस
प्रकारसे— जघन्य अवगाहनाका नीचे विरलन करके उपरिम एक अंकेके प्रति प्राप्त
राशिको समखण्ड करके वेनेपर एक आकाशप्रदेश प्राप्त होता है । अब इतने मात्रसे
अधिक उपरिम एक रूपधरित राशिकी कृंकि इच्छा है, अतः एक रूपसे अधिक अघस्तन
विरलनमें यदि एक रूपकी हनि पायी जाती है तो उपरिम विरलन राशिमें वह कितनी
पायी जायेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलमुणित्त इच्छाको अपवर्तित करके लब्धको समखण्ड
करके उपरिम विरलनमेंसे भट्टा वेनेपर अजघन्य जघन्य अवगाहनाका भागहार होता है ।

जहण्णखेत्तस्सुवरि दोअमासपदेसे' वञ्चिय द्विदो विदियअजहण्णखेत्तस्स सामी' । एत्थ मि असंखेज्जसायवञ्चि चेव । तं जहा— हेड्डिमविरलणाए दुभागेण रूवाहिएण उवरिम-
विरलणं खंडिय तत्थ एगखंडेण उवरिमविरलणाए अवणिदे विदियक्खेत्तमागहारो होदि ।
तिपदेसुत्तरजहण्णोगाहणाए वट्टमाणो जीवो तदियखेत्तसामी । एत्थ वि मागहारपरिहाणी
पुण्वं व कायव्वा । णवरि हेड्डिमविरलणाए तिभागो रूवाहियो उवरिमविरलणाए मागहारो
होदि । एवमेगेगागासपदेसं वञ्चिय णेदव्वं जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जेणोवडिदेहेड्डिमविरलणाए रूवा-
हियाए उवरिमविरलणमोवहिय तत्थुवल्ले तत्थेव अवणिदे तदित्थखेत्तमागहारो होदि ।
एवं पदेसेसु एगादिएशुत्तरकमेण वट्टमाणेसु केत्तिए अट्ठाणे गदे उवरिमविरलणाए एगरूव-
परिहाणी' लम्भेदे । रूवणुवरिमविरलणाए जहण्णोगाहणाए खंडिहाए तत्थ एगखंडमेत्तेसु
अजहण्णखेत्तवियप्पेसु अदिक्कंतेसु एगरूवपरिहाणी लम्भदि । तं जहा— रूवणुवरिमविरलणं
हेट्ठा विरलिय जहण्णखेत्तं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि वञ्चिरूवाणि पावेति ।
पुणो एदाणि उवरि दाट्ठण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणं पमाणं उच्चदे— रूवाहिय-

जघन्य क्षेत्रके ऊपर दो आकाशप्रदेशोंको बढ़ाकर स्थित जीव द्वितीय
अजघन्य क्षेत्रका स्वामी होता है । यहाँ भी असंख्यातभागवृद्धि ही है । यथा— अघस्तन
विरलनके रूपाधिक द्वितीय भागसे उपरिम विरलन राशिको खण्डित कर उसमेंसे
एक खण्डको उपरिम विरलनमेंसे कम कर देनेपर द्वितीय क्षेत्रका भागहार होता है ।

तीन प्रदेश अधिक जघन्य अघगाहनामें रहनेवाला जीव तृतीय क्षेत्रका स्वामी है ।
यहाँपर भी भागहारकी हानिको पहिलेके समान ही करना चाहिये । विशेष इतना है कि
अघस्तन विरलनका रूपाधिक तृतीय भाग उपरिम विरलनका भागहार होता है । इस
प्रकार एक एक आकाश प्रदेशको बढ़ाकर जघन्य परीतासंख्यात प्रमाण आकाशप्रदेशों-
की वृद्धि होने तक ले जाना चाहिये । यहाँ भागहार लानेकी विधि कहते हैं— जघन्य
परीतासंख्यातसे अपवर्तित रूपाधिक अघस्तन विरलन द्वारा उपरिम विरलनको अपवर्तित
करके जो वहाँ उपलब्ध हो उसे उसीमेंसे घटा देनेपर वहाँके क्षेत्रका भागहार होता है ।

शुंका— इस प्रकार एकको आवि लेकर एक अधिक क्रमसे प्रदेशोंके बढ़नेपर
कितना अध्वान जानेपर उपरिम विरलनमें एक रूपकी हानि पायी जाती है ?

समाधान— रूप कम उपरिम विरलनसे जघन्य अघगाहनाको खण्डित करने-
पर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण अजघन्य क्षेत्रके विकल्पोंके बीच जानेपर एक
रूपकी हानि पायी जाती है । वह इस प्रकारसे— रूप कम उपरिम विरलनको नीचे
विरलित कर जघन्य क्षेत्रको समखण्ड करके देनेपर विरलन रूपके प्राप्ति वृद्धिरूप
प्राप्त होते हैं । अब इनको ऊपर देकर समकरण करते समय हीन रूपोंके प्रमाणको

१ अ-काम्योः '—पदेसो' इति पाठः । २ अ-काम्योः '—अजहण्णखेत्तसुवरि सामी' इति पाठः ।

३ अ-काम्योः 'एगखण्डपरिहाणी', ताप्रती 'एग [व] खण्डपरिहाणी' इति पाठः ।

विरलमेतद्वाचं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लम्बदि तो उवरिमविरलणाए किं लमामो ति पमाणेण फलपुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एवरूवमागच्छदि । तमि उवरिमविरलणाए अवणिदे ठदिस्वखेत्तवियप्पममहारो होदि । एवं गंतूण जहण्णोगाहणं^१ जहण्णपरितासंखेज्जेण खंडे-
द्व तत्थ एगखंडे वड्ठिदे वि असंखेज्जमागवड्ठी चेव । एत्थ समकरणे कीरमाणे परिहीण-
रूवाणयणं उच्चदे— रूवाहियजहण्णपरितासंखेज्जमेतद्वापमि जदि एगरूवपरिहाणी
लम्बदि तो उवरिमविरलणाए किं लमामो ति पमाणेण फलपुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परिहाणि-
रूवाणि आयच्छंति । पुणो ताणि उवरिमविरलणाए अवणिदे तदित्थजहण्णखेत्तद्वापमागहारो
होदि । पुणो एदिस्से ओगाहणाए उवरि^२ पदेसुत्तरं वड्ठिय ट्टिदजीवो तदणंतरउवरिमखेत्त-
सामी होदि । एत्थ वि असंखेज्जमागवड्ठी चेव, उक्कस्ससंखेज्जेण जहण्णोगाहणं^३ खंडिय
तत्थ एगखंडमेत्तपदेसाणं वड्ठीए अमावादो^४ । एवं गंतूण उक्कस्ससंखेज्जेण जहण्णोगाहणं
खंडिय तत्थेगखंडे जहण्णोगाहणाए उवरि वड्ठिदे संखेज्जमागवड्ठीए आदी असंखेज्जमाग-
वड्ठीए परिसमसी च जादो^५ ।

एत्थ मागहारो उच्चदे । तं जहा— उक्कस्ससंखेज्जं विरलिय उवरिमएगरूव-
कहते हैं— रूपाधिक विरलन राशि प्रमाण अध्वान जाकर यदि एक रुपकी हानि पायी
जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फल-
गुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक रुप आता है । उसको उपरिम विरलनमेंसे
कम करनेपर वहाँके क्षेत्रविकल्पका भागहार होता है । इस प्रकार जाकर जघन्य
अवगाहनाको जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करके उसमेंसे एक खण्ड मात्र वृद्धि
हो जानेपर भी असंख्यातभागवृद्धि ही रहती है ।

यहाँ समकरण करते समय हीन रुपोंके लानेके विधानको कहते हैं— रूपा-
धिक जघन्य परीतासंख्यात मात्र अध्वान जाकर यदि एक रुपकी हानि पायी जाती है
तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित
इच्छाको अपवर्तित करनेपर हीन रुपोंका प्रमाण आता है । उनको उपरिम विरलनमेंसे
कम करनेपर वहाँके अजघन्य क्षेत्रस्थानका भागहार होता है । पुनः इस अवगाहनाके
ऊपर एक प्रदेश अधिक क्रमसे बड़कर स्थित जीव तदनन्तर उपरिम क्षेत्रका स्वामी
होता है । यहाँ भी असंख्यातभागवृद्धि ही रहती है, क्योंकि, उत्कृष्ट संख्यातसे जघन्य
अवगाहनाको खण्डित कर उसमें एक खण्ड मात्र प्रदेशोंकी वृद्धिका अभाव है । इस
प्रकार जाकर जघन्य अवगाहनाको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करके उसमेंसे एक
खण्ड मात्र जघन्य अवगाहनाके ऊपर वृद्धि हो चुकनेपर संख्यातभागवृद्धिकी आवि-
र्भाव असंख्यातभागवृद्धिकी समाप्ति हो जाती है ।

यहाँ भागहार कहते हैं । वह इस प्रकार है— उत्कृष्ट संख्यातका विरलन

१ अ-सप्तथोः 'जहण्णोगाहणा', ताप्रती 'जहण्णोगाहणा (ण) इति पाठः । २ प्रतिपु 'उवरिम' इति पाठः ।

३ काप्रती 'जहण्णोगाहणा' इति पाठः । ४ प्रतिपु 'वड्ठी-अमावासे'; ताप्रती 'वड्ठिअमावासे' इति पाठः ।

५ अवगाहणमाणे जहण्णपरिमिदअसंखसुसिदि । अवरत्तुपरि उड्डे अट्टवसंखेज्जमागवड्ठा ॥ धो. जी. १०३.

परिदं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि बड्ढिपदेसपमाणं यावदि । पुणो एदं उवरिम-
रूवधरिदेसु दादूण समकरणे कीरमाणे णट्ठरूवाणं पमाणं उच्चदे— रुवाहियेदीहिमविरलण-
मेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लम्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो सि
पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवड्ढिदाए परिहीणरूवोवलद्धी होदि । पुणो लद्धरूवेसु उर्वरिम-
विरलणाए अवणिदेसु तदिस्थभागहारो होदि । एत्तो पण्डुडि उवरि संखेज्जभागवड्ढी चैव
होदूण गच्छदि जाव उवरिमविरलणाए अद्धं चेड्ढे सि । तस्य संखेज्जगुणवड्ढीए आदी
संखेज्जभागवड्ढीए परिसमत्ती च आदो ।

संपि पुणरवि तदो पण्डुडि पदेसुत्तर-दुपदेसुत्तरकमेण खेत्तवियप्पेसु बड्ढमाणेसु जहण्ण-
खेत्तमेत्तपदेसेसु वाड्ढेसु तिगुणवड्ढी होदि । तिरसे ओगाहणाए भागहारो जहण्णोगाहण-
भागहारस्स तिभागो होदि । तत्तो एग दोपदेसुत्तरादिकमेण जहण्णोगाहणमेत्तपदेसेसु बड्ढिदेसु
चदुगुणवड्ढी होदि । तस्य भागहारो जहण्णोगाहणाए भागहारस्स चदुभागो होदि । एवं णेद्वं
जाव उक्कस्ससंखेज्जमेत्तो जहण्णोगाहणाए गुणगारो आदो सि । तिस्से ओगाहणाए पुण
भागहारो जहण्णोगाहणाभागहारं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडिदे तरथ एगखंडमेत्तो होदि । पुणो

करके उपरिम एक रूपधरित राशिओ समखण्ड करके देनेपर विरलनरूपके प्रति वृद्धिगत
प्रदेशोंका प्रमाण प्राप्त होता है । फिर इसको उपरिम रूपधरित राशियोंपर देकर
समकरण करते समय नष्ट रूपोंका प्रमाण कहा जाता है — रूपाधिक अधस्तन विर-
लन मात्र अध्वान आकर यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है, तो उपरिम विरलनमें
वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करने-
पर परिहीन रूप प्राप्त होते हैं । पश्चात् प्राप्त रूपोंको उपरिम विरलनमेंसे घटा देने-
पर वहाँका भागहार होता है । वहाँसे लेकर ऊपर संख्यातभागवृद्धि ही होकर आती
है जब तक उपरिम विरलनका अर्ध भाग स्थित रहता है । वहाँ संख्यातगुणवृद्धिकी आवृत्ति
और संख्यातभागवृद्धिकी समाप्ति हो जाती है ।

अब वहाँसे लेकर फिर भी एक प्रदेश अधिक दो प्रदेश अधिक क्रमसे
क्षेत्राधिकरूपोंकी वृद्धि होकर अघन्य क्षेत्र प्रमाण प्रदेशोंके बड़ जानेपर तिगुणी
वृद्धि होती है । उस अवगाहनाका भागहार अघन्य अवगाहना सम्बन्धी
भागहारके तृतीय भाग प्रमाण होता है । पश्चात् एक प्रदेश अधिक दो प्रदेश अधिक
इत्यादि क्रमसे अघन्य अवगाहना मात्र प्रदेशोंकी वृद्धि होनेपर चतुर्गुणी वृद्धि होती है ।
वहाँ भागहार अघन्य अवगाहना सम्बन्धी भागहारके चतुर्थ भाग प्रमाण होता है ।
इस प्रकार अघन्य अवगाहना सम्बन्धी गुणकारके उत्कृष्ट संख्यात मात्र हो जाने तक
ले जाना चाहिये । उस अवगाहनाका भागहार, अघन्य अवगाहना सम्बन्धी भागहारकी
उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक ऋण्डके बराबर होता है । पश्चात्

तिसरे उबरि पदेसुत्तर-दुपदेसुत्तरादिकमेण एगजहण्णे।गाहणेभत्तपदेससु वड्डिदेसु असंखेज्जगुण-
वड्डीए अन्दी-संखेज्जगुणवड्डीए परिसमत्ती च हेदि' । तिसरे ओगाहणाए जहण्णेगाहण-
भागहारे' जहण्णपरित्तसंखेज्जेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तो भागहारो हेदि । पुणो एत्तो-
पड्डि उबरि पदेसुत्तर-दुपदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जगुणवड्डीए गच्छमाणाए सुहुमणिगोद-
जहण्णेगाहणाए सुत्तमणिदभावलिआए असंखेज्जदिभागमेत्तगुणगारे पविट्ठे सुहुमवाउकाइय-
लद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णेगाहणाए सरिसी सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तयस्स अजहण्ण-अणु-
क्कस्सओगाहणा हेदि ।

संपहि सुहुमणिगोदोगाहणं मोत्तूण वाउकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णेगाहणं घेत्तूण
पदेसुत्तरादिकमेण चहुदि वड्डीहिं वड्डीवेदव्वा जाव सुहुमतेउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स
जहण्णेगाहणाए सरिसी सुहुवाउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स अजहण्ण-अणुक्कस्सओगाहणा
आदां ति । पुणो तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चहुदि वड्डीहि वड्डीवेदव्वं
जाव सुहुमआउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णेगाहणाए सरिसी जादा ति । पुणो
तं मोत्तूण सुहुमआउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णेगाहणं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चउहि
वड्डीहि वड्डीवेदव्वा जाव सुहुमपुडविकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णेगाहणाए सरिसी

उसके ऊपर एक प्रदेश अधिक दो प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे एक जघन्य अव-
गाहना मात्र प्रदेशोंके बहु जानेपर असंख्यातगुणवृद्धिका प्रारम्भ और संख्यातगुणवृद्धिका
अन्त होता है । उस अवगाहनाका भागहार, जघन्य अवगाहना सम्बन्धी भागहारको
जघन्य परित्तसंख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्डके बराबर होता है ।

पश्चात् यहाँसे लेकर आगे एक प्रदेश अधिक दो प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे
असंख्यातगुणवृद्धिके चान्द्र रत्नेपर सूक्ष्म निगोद जीवकी जघन्य अवगाहनामें सूत्रोक्त
आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र गुणकारके प्रविष्ट हो जानेपर सूक्ष्म वायुकायिक लक्ष्य-
पर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश सूक्ष्म निगोद जीव लक्ष्यपर्याप्तककी अजघन्य-
अनुत्कृष्ट अवगाहना होती है ।

अब सूक्ष्म निगोद जीवकी अवगाहनाको छोड़कर और सूक्ष्म वायुकायिक
लक्ष्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे
चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म वायुकायिक लक्ष्यपर्याप्तककी अजघन्य-अनुत्कृष्ट अवगाहनाके
सूक्ष्म तेजकायिक लक्ष्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके समान हो जाने तक बढ़ाना
चाहिये । तत्पश्चात् उसको छोड़कर और इसे ग्रहण करके प्रदेश अधिक क्रमसे चार
वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म जलकायिक लक्ष्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने
तक बढ़ाना चाहिये । फिर उसको छोड़कर और सूक्ष्म जलकायिक लक्ष्यपर्याप्तककी
जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों
द्वारा सूक्ष्म पृथिवीकायिक लक्ष्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक

जादा ति । पुणो तं मोत्तूण सुहुमपुढविकाइयलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणं घेत्तूण पदेसुत्तरादि-
कमेण चहुहि वट्ठीहि वट्ठवेदव्वा जाव बादरवाउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाह-
णाए सरिसी जादा ति । णवीर एत्थ गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो । कुदो ?
परत्थाणगुणगारादो । पुणो तं मोत्तूण बादरवाउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणं
घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चहुहि वट्ठीहि वट्ठवेदव्वा जाव बादरतेउक्काइयलद्धिअपज्जत्तयस्स
जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ वि गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो । कुदो ?
बादरादो बादरस्स ओगाहणागुणगारो' पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो ति सुत्तवयणादो' । इमं
मोत्तूण बादरतेउक्काइयलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चहुहि वट्ठीहि
वट्ठवेदव्वा जाव बादरआउक्काइयलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ
वि गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो । कारणं पुवं व वत्तवं । पुणो इमं मोत्तूण'
बादरआउक्काइयलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चहुहि वट्ठीहि वट्ठवे-
दव्वा जाव बादरपुढविकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । पुणो

बढ़ाना चाहिये । फिर उसको छोड़ करके और सूक्ष्म पृथिवीकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी
जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों
द्वारा बादर वायुकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक
बढ़ाना चाहिये । विशेष इतना है कि यहां गुणकार पर्योपमका असंख्यातत्वा भाग
है, क्योंकि, वह परस्थानगुणकार है । फिर उसको छोड़कर और वायुकायिक लब्ध्य-
पर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार
वृद्धियों द्वारा बादर तेजकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने
तक बढ़ाना चाहिये । यहां भी गुणकार पर्योपमके असंख्यातत्वे भाग प्रमाण है,
क्योंकि, बादरसे बादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार पर्योपमके असंख्यातत्वे भाग प्रमाण है,
ऐसा सप्रवचन है । अब इसको छोड़कर और बादर तेजकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी
जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों
द्वारा बादर जलकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने
तक बढ़ाना चाहिये । यहां भी गुणकार पर्योपमका असंख्यातत्वा भाग है । इसका
कारण पहिलेके ही समान कहना चाहिये । पश्चात् इसको छोड़कर और बादर
जलकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक
इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर पृथिवीकायिक लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य
अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । फिर उसको छोड़कर और

१ ताप्रती ' बादरस्स गुणगारो ' इति पाठः । २ क्षेत्रविधान ९८. सुहमेदसुणगारो वावलि-पत्ता असंखमागो
हु । सट्ठणे सेदिग्गवा अहिया तत्तेगपडिमागो ॥ गो. जी. १०१. ३ अ-कप्रत्योः ' बाउक्काइय', ताप्रती ' बा (आ)
उ० ' इति पाठः । ४ अ-कप्रत्योः ' घेत्तूण', ताप्रती ' घे (यो) तूण ' इति पाठः ।

तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चटुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव बादरणिगोदलद्धि-
अपक्खज्जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । पुणो तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण
चटुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव णिगोदपदिद्धिदलीद्धअपज्जत्तजहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति ।
तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चटुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव बादरवणप्पदिकाइय-
पत्तेयसरीरलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ वि गुणगारो पल्लिदोवमस्स
असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चटुहि
वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव बेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ
वि गुणगारो पल्लि दोवमरस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । तं मोत्तूण इमं घेत्तूण
पदेसुत्तरादिकमेण चटुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव तेइंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए
सरिसी जादा ति । एत्थ वि गुणगारो पल्लिदोवमरस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं व
वत्तव्वं । तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चटुहि वड्ढीहि वड्ढावेदव्वं जाव चउ-
रिंदियलद्धिअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ वि गुणगारो पल्लिदोवमस्स
असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । तं मोत्तूण इमं घेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण चटुहि

इसे ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर
नियोद्द लब्धपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना
चाहिये । पश्चात् उसे छोड़कर और इसको ग्रहण करके प्रदेशाधिकक्रमसे चार
वृद्धियोंके द्वारा निगोदमतिष्ठित लब्धपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश
हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । अब उसको छोड़कर और इसको ग्रहण करके
एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर वनस्पतिकाधिक
प्रत्येकशरीर लब्धपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना
चाहिये । यहाँपर भी गुणकार पर्योपमका असंख्यातवां भाग है । कारणका कथन
पहिलेके ही समान करना चाहिये । अब उसको छोड़कर और इसको ग्रहण
करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा द्वीन्द्रिय लब्ध-
पर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहाँपर
भी गुणकार पर्योपमका असंख्यातवां भाग है । इसका कारण पहिलेके ही समान
कहना चाहिये । अब उसको छोड़कर और इसको ग्रहण करके चार वृद्धियों
द्वारा त्रीन्द्रिय लब्धपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना
चाहिये । यहाँपर भी गुणकार पर्योपमका असंख्यातवां भाग है । कारण पहिलेके
समान कहना चाहिये । अब उसको छोड़कर और इसे ग्रहण करके एक प्रदेश
अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा चतुरिन्द्रिय लब्धपर्याप्तककी जघन्य
अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहाँपर भी गुणकार पर्योपमका
असंख्यातवां भाग है । कारण इसका पहिलेके ही समान कहना चाहिये । पश्चात्

१ द्वीन्द्रियलब्धपर्याप्तसम्बन्धी प्रकृत्योऽं ताप्रती [] एतकोऽन्तर्गतते दक्षितः । २ चतुरिन्द्रियलब्धपर्याप्त-
सम्बन्धी प्रकृत्योऽं ताप्रती नोपलभ्यते ।

वक्त्रुहि वक्त्रुवेदव्वं जाव पंचिदियलद्विअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा सि ।
एत्थ वि गुणगारो पल्लोवमस्स असंखेज्जदिमागो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

पुणो पंचिदियलद्विअपज्जत्तजहण्णोगाहणं वेत्तूण^१ पदेसुत्तरादिकमेण चट्ठहि वक्त्रुहि
वक्त्रुवेदव्वं जाव सुहुमणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणाए सरिसी जादा सि । एत्थ
गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिमागो । कुदो ? बादरादो सुहुमस्स ओमाहणागुणगारो
आवलियाए असंखेज्जदिमागो ति सुत्तणिइसादो । पुणो सुहुमणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स
जहण्णोगाहणं वेत्तन पदेसुत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिमागेण खंडिदे तत्थ एगखंड-
मेत्तं वक्त्रुवेदव्वं । एवं वक्त्रुदूण द्विअओमाहणाए सुहुमणिगोदणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स
उक्कस्सोगाहणा सरिसा होदि । पुणो पुव्विल्लं मोत्तूण इमं वेत्तूण पदेसुत्तरादिकमेण एदं
चेव ओमाहणमावलियाए असंखेज्जदिमागेण खंडिदेगखंडमेत्तं जाव अदियं होदि ताव वक्त्रुवे-
दव्वं । एवं वक्त्रुदूण द्विअओमाहणा सुहुमणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए
सरिसा होदि । पुणो एदमोगाहणं^२ पदेसुत्तरादिकमेण चट्ठहि वक्त्रुहि वक्त्रुवेदव्वं जाव सुहुम-
वाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणं पत्तं ति । पुणो एत्थ गुणगारो आवलियाए

उसको छोड़कर और इसको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे
चार वृत्तियों द्वारा पंचेन्द्रिय लब्धपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सहश हो
जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहाँपर भी गुणकार पयोपमका असंख्यातवां भाग
है । कारण इसका पहिलेके ही समान कहना चाहिये ।

तत्पश्चात् पंचेन्द्रिय लब्धपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके
एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृत्तियों द्वारा सूक्ष्म निगोद जीव
निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सहश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये ।
यहाँ गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, बादरसे सूक्ष्मका
अवगाहनागुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, ऐसा सूत्रमें निश्चित है ।
अब सूक्ष्म निगोद जीव निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाको ग्रहण करके
एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर
उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार बढ़कर स्थित अवगाहना
सूक्ष्म निगोद निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सहश होती है । पश्चात्
पूर्व अवगाहनाको छोड़कर और इसको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि
क्रमसे इसी अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित कर उसमेंसे
एक खण्ड प्रमाण अब तक यह अधिक न हो जाये तब तक बढ़ाना चाहिये ।
इस प्रकार बढ़कर स्थित अवगाहना सूक्ष्म निगोद निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवकी उत्कृष्ट
अवगाहनाके समान होती है । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि
क्रमसे चार वृत्तियों द्वारा सूक्ष्म वायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके
प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिये । परन्तु यहाँ गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग

१ वैयर्थ्यलब्धपर्याप्तककी प्रकृष्टोक्त्यं ताप्रती पुनर्लिखितः । २ 'पुणो पंचिदियलद्विअपज्जत्तजहण्णो-
गाहणं वेत्तूण' इत्येतस्य स्थाने ताप्रती 'तं मोत्तूण इमं वेत्तूण' इति पाठः । ३ क्षेत्रविधान २७. ४ प्रतिपु 'एवमोगाहणं'
इति पाठः ।

असंखेज्जदिभागो । कुदो ? सुहुमादो सुहुमस्स ओमाहणगुणगारो आवलियाए असंखेज्जदि-
भागो ति सुत्तवयणादो^१ । एसो गुणगारो सुहुमेसु सव्वत्थ वत्तव्वे । पुणो इमं वेयूण
पदेसुत्तरादिकमेण इमिस्से ओमाहणाए उवरि एदं चेव ओमाहणमावलियाए असंखेज्जभागेण
खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वं । एवं वड्ढाविदे सुहुमवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्क-
स्सिथा ओमाहणा होदि । पुणो पदेसुत्तरादिकमेण तं चेव ओमाहणमावलियाए असंखेज्जदि-
भागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढिदे सुहुमवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोमाहणं
पावदि । पुणो तत्थ पदेसुत्तरादिकमेण चहुदि वड्ढिहि वड्ढावेदव्वं जाव सुहुमतेउक्काइय-
णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णोमाहणं पत्तं ति । पुणो एदमोमाहणं पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्ज-
भागवड्ढीए आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वं जाव सुहुमतेउ-
क्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोमाहणं पत्तं ति । पुणो एदं पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्ज-
भागवड्ढीए आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्ढावेदव्वं जाव सुहुमतेउ-
क्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोमाहणाए सरिसा^२ जादा ति । पुणो पदेसुत्तरादिकमेण
चहुदि वड्ढिहि इमा ओमाहणा वड्ढावेदवा जाव आउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णो-

है, क्योंकि, सूक्ष्मसे सूक्ष्मका अवगाहनागुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है,
ऐसा सूत्रमें निर्देश किया गया है । यह गुणकार सूक्ष्म जीवोंमें सर्वत्र कहना
चाहिये । पश्चात् इसको ग्रहण करके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे इस
अवगाहनाके ऊपर इसी अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित
करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार बढ़ानपर सूक्ष्म
वायुकायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना होती है । पश्चात् एक प्रदेश
अधिक इत्यादि क्रमसे उक्त अवगाहनाको ही आवलीके असंख्यातवें भागसे
खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण वृद्धि हो जानेपर सूक्ष्म वायुकायिक
निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त होती है । पश्चात् उसको एक प्रदेश
अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी
अधन्य अवगाहनाके प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिये । पश्चात् इस अवगाहनाको
एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके असंख्यातवें
भागसे खण्डित कर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि
सूक्ष्म तेजकायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना न प्राप्त हो जावे । पश्चात्
इसको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके
असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र बढ़ाना चाहिये
जब तक कि वह सूक्ष्म तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके
समान नहीं हो जाती । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे
चार वृद्धियों द्वारा सूक्ष्म जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी अधन्य अवगाहनाके

आहणाए सरिसी जादा सि । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवट्ठीए आवलियाए असंखेज्जदिमोगेण खंडिदेगखंडमेत्ता वट्ठवेदव्वं जाव सुहुमआउक्काइयणिव्वत्ति-
अपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादा सि । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादि-
कमेण असंखेज्जभागवट्ठीए इममोगाहणमावलियाए असंखेज्जदिमोगेण खंडिदेगखंडमेत्तं
वट्ठवेदव्वं जाव सुहुमआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोमाहणाए सरिसी जादा
सि । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चट्ठि वट्ठिहि वट्ठवेदव्वं जाव सुहुमपुढविकाइय-
णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणोगाहणाए सरिसी जादा सि । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादि-
कमेण असंखेज्जभागवट्ठीए अप्पिदोगाहणमावलियाए असंखेज्जदिमोगेण खंडिदेगखंडमेत्तं
वट्ठवेदव्वं जाव सुहुमपुढविकाइयणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्करिसयाए ओगाहणाए सरिसी
जादा सि । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवट्ठीए अप्पिदोगाहण-
मावलियाए असंखेज्जदिमोगेण खंडिदेगखंडमेत्ता वट्ठवेदव्वा जाव सुहुमपुढविकाइयणिव्वत्ति-
पज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादा सि । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण
चट्ठि वट्ठिहि वट्ठवेदव्वा जाव बादरवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाह-
सदश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । पञ्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश
अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा आबलीके असंख्यातवें भागसे
खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जर तक कि वह
सूक्ष्म जलकायिक निर्बृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदश नहीं हो जाती है ।
फिर इस अवगाहनाके ऊपर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि
द्वारा इसी अवगाहनाको आबलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे
एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह सूक्ष्म जलकायिक निर्बृत्ति-
पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदश नहीं हो जाती । तत्पश्चात् इस अवगाहनाको
एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियाँ द्वारा सूक्ष्म पृथिवीकायिक
निर्बृत्तिपर्याप्तककी अघन्य अवगाहनाके सदश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये ।
पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि
द्वारा विवक्षित अवगाहनाको आबलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर
उसमेंसे एक खण्ड मात्र बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह सूक्ष्म पृथिवीकायिक
निर्बृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदश नहीं हो जाती । पश्चात् इस
अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा
विवक्षित अवगाहनाको आबलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे
एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह सूक्ष्म पृथिवीकायिक
निर्बृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदश नहीं हो जाती है । तत्पश्चात्
इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियाँ द्वारा बादर
वायुकायिक निर्बृत्तिपर्याप्तककी अघन्य अवगाहनाके सदश हो जाने तक बढ़ाना

पाए सरिसी जादा ति । एस्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? सुहुमादो वादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ति सुत्तवयणादो । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवट्ठीए अपिदोमाहणभावत्तियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वट्ठुवेदव्वा जाव वादरवाउक्काइयणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादा ति । तदो पदेसुत्तरादिकमेण इमा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेम-खंडमेत्तं वट्ठुवेदव्वा जाव वादरवाउक्काइयणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसा जादा ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चटुहि वट्ठीहि वट्ठुवेदव्वा जाव वादरतेउक्काइयणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । एस्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? वादरादो वादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ति सुत्तवयणादो । तदो पदेसुत्तरादिकमेण इमा ओगाहणा असंखेज्जभागवट्ठीए आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वट्ठुवेदव्वा जाव वादरतेउक्काइयणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए सरिसी जादो ति । तदो एसा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवट्ठीए आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेग-

वाहिये । यहाँ गुणकार पट्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, सूत्रमसे वादरका अवगाहनागुणकार पट्योपमका असंख्यातवां भाग है, ऐसा सूत्रवाक्य है । पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा विवक्षित अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह वादर वायुकायिक निर्बृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती । तत्पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे इस अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह वायुकायिक निर्बृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा वादर तेजकायिक निर्बृत्तिपर्याप्तककी जञ्ज्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहाँ गुणकार पट्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, वादरसे वादरका अवगाहनागुणकार पट्योपमका असंख्यातवां भाग है, ऐसा सूत्रमें निर्दिष्ट है । पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे इस अवगाहनाको असंख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह वादर तेजकायिक निर्बृत्त्य-पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती । पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागवृद्धि द्वारा आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक भाग प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि

खंडमेत्तं वङ्गावेदव्वा जाव बादरतेउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसा जादा ति । तदो एसा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चटुहि वङ्गीहि वङ्गावेदव्वा जाव बादरआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाहणाए सरिसा जादा ति । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे । कारणं पुवं व परूवेदव्वं । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवङ्गीए इममोगाहणमावलियाए असंखेज्जभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वङ्गावेदव्वा जाव बादरआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसा जादा ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवङ्गीए अपिदेगाहणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वङ्गावेदव्वा जाव बादरआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसा जादा ति । पुणो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चटुहि वङ्गीहि वङ्गावेदव्वा जाव बादरपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाहणाए सरिसा जादा ति । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे । कारणं पुवं व वत्तव्वं । पुणो पदेसुत्तरादिकमेण अपिदेगाहणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण

वह बादर तेजकायिक निर्बृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है । तत्पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर जलकायिक निर्बृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहाँ गुणकार पट्योपमका असंख्यातवां भाग है । कारणकी प्रकृपणा पहिलेके ही समान करना चाहिये । पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभगवृद्धि द्वारा इस अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह बादर जलकायिक निर्बृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यात भाग वृद्धि द्वारा विवक्षित अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह बादर जलकायिक निर्बृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है । तत्पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा बादर पृथिवीकायिक निर्बृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहाँ गुणकार पट्योपमका असंख्यातवां भाग है । कारणकी प्रकृपणा पहिलेके ही समान करना चाहिये । फिर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे विवक्षित अवगाहनाको आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड मात्र इस अवगाहनाको

खंडिदेगखंडमेतमिमा ओगाहणा वहुवेदव्वा जाव बादरपुढविक्कइयणिव्वत्तिअपज्ज-
त्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । पुणो पदेसुत्तरादिकमेण इमा
ओगाहणा आवलियाए असंखेज्जदिमागेण खंडिदेगखंडमेतं वहुवेदव्वा जाव बादर-
पुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । पुणो
इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चट्ठहि वड्डीहि वहुवेदव्वा जाव बादरणिगोद-
णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ गुणगारो पलिदो-
वमस्स असंखेज्जदिमागे । पुणो पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवड्डीए आवलियाए
असंखेज्जदिमागेण खंडिदेगखंडमेतं वहुवेदव्वा जाव बादरणिगोदणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स
उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । तदो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण
आवलियाए असंखेज्जदिमागेण खंडिदेगखंडमेतं वहुवेदव्वा जाव बादरणिगोद-
णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । तदो पदेसुत्तरादि-
कमेण चट्ठहि वड्डीहि वहुवेदव्वा जाव णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स जहणियाए
ओगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ ओगाहणागुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागे ।
पुणो पदेसुत्तरादिकमेण असंखेज्जभागवड्डीए आवलियाए असंखेज्जदिमागेण

बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह बादर पृथिवीकाधिक निर्बृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट
अवगाहनाके सहश नहीं हो जाती है । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश
अधिक इत्यादि क्रमसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे
एक खण्ड मात्रसे बढ़ाना चाहिये जब तक कि वह बादर पृथिवीकाधिक
निर्बृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सहश नहीं हो जाती है ।
तत्पश्चात् इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार
बृत्तियों द्वारा बादर निगोद निर्बृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सहश हो
जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहां गुणकार पदोपमका असंख्यातवां भाग है ।
फिर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागबृत्ति द्वारा आवलीके
असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्रसे बढ़ाना
चाहिये जब तक कि वह बादर निगोद निर्बृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सहश
नहीं हो जाती है । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे
आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्रसे बढ़ाना
चाहिये जब तक कि वह बादर निगोद निर्बृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके
सहश नहीं हो जाती है । तत्पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार बृत्तियों
द्वारा उसके निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सहश हो जाने
तक बढ़ाना चाहिये । यहां अवगाहनागुणकार पदोपमका असंख्यातवां भाग है ।
फिर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे असंख्यातभागबृत्ति द्वारा आवलीके
असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्रसे बढ़ाना चाहिये

खंडिदेगखंडमेत्तं वड्डवेदव्वा जाव णिगोदपदिट्ठिदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिंवाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । तदो पदेसुत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तं वड्डवेदव्वा जाव णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स उक्कस्सिंवाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । तदो पदेसुत्तरादिकमेण चट्ठि वड्डिहि वड्डिहि वड्डवेदव्वं जाव बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । पुणो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण चट्ठि वड्डिहि वड्डिहि वड्डवेदव्वं जाव बीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

संपहि उस्सेहणंशुलस्स मागहारो संखेज्जरूवमेत्तो जादो । उवरि एसा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डिहि वड्डवेदव्वा जाव तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणो-गाहणाए सरिसी जादा ति । एत्थ गुणगारो संखेज्जा समया । कुदो ? बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो संखेज्जा समया ति सुत्तवयणादो । पुणो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डिहि वड्डवेदव्वा जाव चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । पुणो इमा ओगाहणा पदेसुत्तरादिकमेण तीहि वड्डिहि वड्डवेदव्वा जाव पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणियाए ओगाहणाए सरिसी जादा ति । पुणो इमा

जब तक कि वह निगोदप्रतिष्ठित निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है । फिर एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमें एक खण्ड मात्रसे बढ़ाना चाहिये जब तक कि यह निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके सदृश नहीं हो जाती है । तत्पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा उसके बादर घनरूपतिकाधिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहां गुणकार पत्योपमका असंख्यातवां भाग है । फिर इस अवगाहनाके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे चार वृद्धियों द्वारा द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहां गुणकार पत्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

अब उत्संघघनांशुलका भागहार संख्यात रूपों प्रमाण हो जाता है । इसके आगे इस अवगाहनाके एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । यहां गुणकार संख्यात समय है, क्योंकि, बादरसे बादरका अवगाहना-गुणकार संख्यात समय है, ऐसा सूत्रमें निर्देश है । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । फिर इस अवगाहनाको एक प्रदेश अधिक इत्यादि क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । फिर इस अवगाहनाको

सुत्तरादिकमेण तीहि वड्डीहि बड्ढावेदव्वा जाव बादरवणप्फादिकअहयपत्तेयसरीरणिप्पसि-
पज्जचयस्स उक्कस्सियाए ओगाहणाए सरिसी जादा चि । तदे पदेसुत्तरादिकमेण
तीहि वड्डीहि इमा ओगाहणा^१ वड्ढावेदव्वा जाव पंचिदियाणिप्पसिपज्जचयस्स उक्कस्सो-
गाहणाए सरिसी जादा चि ।

पुणो अण्णेगेण^२ विक्खंमुस्सेहेहि महामच्छसमाणेण महामच्छायामादो संखेज्जगुण-
हीणायामेण मुहप्पदेसे वड्ढिदगागासपदेसेण लद्धमच्छेण पुव्विल्लायामेण सह जोयणसहस्सस्स
वेयणाए विणा मारणंतियसमुग्घादे कदे महामच्छोगाहणादो एसा ओगाहणा पदेसुत्तरा
होदि, मुहम्मि वड्ढिदगागासपदेसेण अहियत्तुवलंमादो । पुणो एदेगेव लद्धमच्छेण मुहम्मि
वड्ढिददोआगासपदेसेण जोयणसहस्समारणंतियसमुग्घादे कदे पुव्विल्लक्खेसादो [दो-]
पदेसुत्तरवियपो होदि । एवमेदेण कमेण संखेज्जपदरंगुलेमत्ता आमासपदेसा वड्ढावेदव्वा ।
एवं वड्ढिदूण द्विदखेत्तेण पदेसुत्तरजोयणसहस्सस्स मारणंतियसमुग्घादे कदे^३ लद्धमच्छेत्त
सरिसं होदि । पुणो पदेसुत्तरादिकमेण मुहम्मि संखेज्जपदरंगुलाणि पुवं व वड्ढिय
द्विदखेत्तेण दुपदेसुत्तरजोयणसहस्सस्स कदमारणंतियसमुग्घादवखेत्तं सरिसं होदि । एवं
एदेण कमेण पेदव्वं जाव आयामो सादियेअद्धक्कमरज्जुमेत्तो जादो चि । एदेण खेत्तेण

द्वारा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाके
सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये । तत्पश्चात् एक प्रदेश अधिक इत्यादि
क्रमसे तीन वृद्धियों द्वारा इस अवगाहनाको पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट
अवगाहनाके सदृश हो जाने तक बढ़ाना चाहिये ।

फिर विष्कम्भ य उत्तंघकी अपेक्षा महामत्स्यके सदृश व महामत्स्यके
आयामसे संख्यातगुणे हीन आयामवाले तथा मुख्यप्रदेशमें एक आकाशप्रदेशकी
वृद्धिको प्राप्त हुए अन्य एक प्राप्त मत्स्यके द्वारा पूर्व आयामके साथ वेदनाके
विना एक हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घात किये जानेपर महामत्स्यकी अवगाहनासे
यह अवगाहना एक प्रदेश अधिक होती है, क्योंकि, वह मुख्यमें वृद्धिको प्राप्त
हुए एक आकाशप्रदेशसे अधिक पायी जाती है । पश्चात् इसी प्राप्त मत्स्यके
द्वारा मुख्यमें दो आकाश प्रदेशोंसे वृद्धिगत होकर एक हजार योजन मारणात्मिक
समुद्घात किये जानेपर पूर्वके क्षेत्रकी अपेक्षा [दो] प्रदेशोंसे अधिक विकल्प होता है ।
इस प्रकार इस क्रमसे संख्यात प्रतरांगुल प्रमाण आकाशप्रदेशोंकी बढ़ाना चाहिये ।
इस प्रकार बढ़कर स्थित क्षेत्रसे एक प्रदेश अधिक एक हजार योजन मारणा-
त्मिकसमुद्घात करनेपर प्राप्त मत्स्यका क्षेत्र समान होता है । पश्चात् एक प्रदेश
अधिक इत्यादि क्रमसे मुख्यमें पूर्वके समान संख्यात प्रतरांगुल बढ़कर स्थित क्षेत्रसे
दो प्रदेश अधिक एक हजार योजन मारणात्मिकसमुद्घात करनेवालेका क्षेत्र समान
होता है । इस प्रकार इस क्रमसे आयामके साधिक साढ़े सात राज्ञु प्रमाण हो

१ अ-आप्रत्योः 'इमाणि वड्डीणि' इति पाठः । २ अ-अप्रत्योः 'अण्णेगेण' इति पाठः ।

३ मरियु 'लद्धमच्छेत्त' इति पाठः ।

लेयणात्थीय सयन्वदिसादो तिणि विग्गहकंदयाणि कादूण मारणंतियसमुग्घादेण सत्तम-
पुत्तमीयसमुग्घादेण सेकाले उपपज्जहिदि ति डिदस्स खेतं सरिसं होदि । एवं वड्ढिदूण डिदो
च जण्णेमो वेयणसमुग्घादेण तिगुणविकखंभुस्सेहे काऊण मारणंतियसमुग्घादेण अद्धइम-
रज्जुणं भवमभागं गंतुण डिदो च ओगाहणाए सरिसा । पुणो वि पुंवल्लं मोत्तूण इमं
वेयणं गिरंतर-सांतरकमेण पुच्चं व वड्ढावेदव्वं जाव आयामो अद्धइमरज्जुमेत्तं पत्तो ति ।
एवं वड्ढाविदे णाणावरणीयस्स अजहणसव्वखेतवियपाणं सामित्तरूवणा कदा होदि ।

अथवा सित्थमच्छो चेव मारणंतियसमुग्घादेण तिणि विग्गहकंदयाणि कादूण
सादियेयअद्धइमरज्जुआयामस्सं णेदव्वो । पासखेत्ते वड्ढाविज्जमाणे एक्कसरहेण पासम्मि
वड्ढिअद्धइमरज्जुओ पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण खंडिय तत्थ एगखंडमेत्तमायामम्मि
अवणिय सरिसं कादूण पुणो सांतर-गिरंतरकमेण उणक्खेत्ते वड्ढावेदव्वं । एवं पुणो पुणो
पासखेत्ते^१ वड्ढाविय पुव्विल्लखेत्तेण सरिसं करिय पुणो उणक्खेत्ते वड्ढाविय णेदव्वं जाव
महामच्छुक्कस्ससमुग्घादखेत्तेण सरिसं जादं ति । एवं णाणावरणीयस्स अजहणसामित्त-
परूवणा कदा होदि ।

जाने तक ले जाना चाहिये । इस क्षेत्रसे, जो लोकनालीकी वायव्य दिशासे
तीन विग्रहकाण्डक करके मारणान्तिकसमुद्घातसे सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें
अनन्तर समयमें उत्पन्न होनेके सम्मुख स्थित है उसका, क्षेत्र समान है । इस
प्रकार बढ़कर स्थित तथा दूसरा एक येदनासमुद्घातसे तिगुणे विष्कम्भ व
उत्प्रेषको करके मारणान्तिकसमुद्घातसे साढ़े सान राजुओंके नौवें भागको प्राप्त
होकर स्थित हुआ, ये दोनों जीव अवगाहनाकी अपेक्षा समान हैं । फिरसे भी
पहिलेको छोड़कर और इसे प्रहणकर निरन्तर-सान्तर क्रमसे आयामके साढ़े सात
राजु प्रमाणको प्राप्त होने तक पहिलेके ही समान बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार
बढ़ानेपर ज्ञानावरणीयके सब अजघन्य क्षेत्रविकल्पोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा समाप्त
हो जाती है ।

अथवा सिक्थ मत्स्यको ही मारणान्तिकसमुद्घातसे तीन विग्रहकाण्डकोंको
कदाकर साधिक साढ़े सात राजु आयामको प्राप्त कराना चाहिये । पार्श्वक्षेत्रके
बढ़ते समय एक साथ पार्श्वक्षेत्रमें वृद्धिको प्राप्त साढ़े सात राजुओंको प्रतरां-
शुलके संख्यातवें भागसे खण्डित करके उसमेंसे एक खण्डप्रमाणको आयाममेंसे
कम करके सदृश कर फिर सान्तर निरन्तर क्रमसे कम किये गये क्षेत्रको बढ़ाना
चाहिये । इस प्रकार बार बार पार्श्वक्षेत्रको बढ़ाकर पूर्व क्षेत्रके समान करके पश्चात्
कम किये गये क्षेत्रको बढ़ाकर महामत्स्यके उत्कृष्ट समुद्घातक्षेत्रके सदृश हो
जाने तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार ज्ञानावरणीयके अजघन्य क्षेत्र सम्बन्धी
स्वामित्वकी प्ररूपणा समाप्त होती है ।

१ अथि 'सिद्ध' इति पाठः ।

२ ताप्रती 'सादियेया अद्धइमरज्जु आयामस्स' इति पाठः ।

३ प्रतिपु
'पासपत्त' इति पाठः ।

एत्थ खेतट्टाणसामिजीवपरूवणाए परूवणा एमाणं सेडी अवहारो भागामां
अप्पाबहुमिदि छ अणिओगदाराणि । एदेसिं छण्णमणिओगदाराणमुक्कस्साणुक्कस्सट्टाणेसु
अहा परूवणा कदा तहा कायव्वा ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ २२ ॥

जहा माणावरणीयस्स जहण्णाजहण्णखेतपरूवणा कदा तहा सत्तण्णं कम्माणं कायव्वं;
विसेसामावादे । एवं सामितपरूवणा संगतोक्खित्तसंख ट्टाण-जीवसमुदाहारा समत्ता ।

**अप्पाबहुए त्ति । तत्थ इमाणि तिण्णि अणिओगदाराणि-
जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥ २३ ॥**

एत्थ तिण्णि चेव अणिओगदाराणि त्ति संखाणियमो किमडं कीरदे ? ण एस दोसो,
अण्णेसिमेत्थ अणिओगदाराणं संभवामावादे ।

जहण्णपदे अट्टण्णं पि कम्माणं वेयणाओ तुल्लाओ ॥ २४ ॥

यहां क्षेत्रस्थानोंके स्वामिभूत जीवोंकी प्ररूपणामें प्ररूपणा, प्रमाण, भेजि,
अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व, ये छह अनुयोगद्वार हैं । इन छह अनुयोग-
द्वारोंकी प्ररूपणा जैसे उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंमें की गयी है वैसे ही यहाँ की
करना चाहिये ।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके जघन्य व अजघन्य क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना
चाहिये ॥ २२ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मके जघन्य व अजघन्य क्षेत्रोंकी प्ररूपणा की
गई है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंके उक्त क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये,
क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार अपने भीतर संख्या, स्थान
और जीवसमुदाहारको रखनेवाली स्वामित्वप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्व अधिकृत है । उसकी प्ररूपणामें ये तीन अनुयोगद्वार हैं— जघन्य
पदमें, उत्कृष्ट पदमें और जघन्योत्कृष्ट पदमें ॥ २३ ॥

शंका— यहां तीन ही अनुयोगद्वार हैं, ऐसा संख्याका विषय किसलिये
किया जाता है ?

यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, और दूसरे अनुयोगद्वारोंकी यहाँ
सम्भावना नहीं है ।

जघन्य पदमें आठों ही कर्मोंकी वेदनायें समान हैं ॥ २४ ॥

कुदो ? तदियसमयआहारय-तदियसमयतन्मवत्थसुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तयम्मि जहण्णजोमिहिं अट्ठणं पि कम्माणं जहण्णक्खेतुवलंभादो । तम्हा जहण्णपदप्पावहुगं अत्थि ति भणिदं होदि ।

उक्कस्सपदे गाणावरणीय-दंसणावरणीय-मोहणीय-अंतराह-
माणं वेयणाओ खेत्तदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ थोवाओ
॥ २५ ॥

कथमेदंस्मिं तुल्लंतं ? एगसामित्तादो । सदिरेयअट्ठमरज्जूदि संखेज्जपदरंगुलेसु गुणिदेसु चादिकम्माणमुक्कस्सखेतं होदि । एदं थोवमुवीरमण्णमाणखेत्तादो ति उतं होदि ।

वेयणीय-आउअ-णामा-गोदवेयणाओ खेत्तदो उक्कस्सियाओ
चत्तारि वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ ॥ २६ ॥

एत्थ गुणगरो जगपदरस्स असंखेज्जदिमाणो । कुदो ? संखेज्जपदरंगुलगुणिद-
जगसेट्ठितेण चादिकम्माणं उक्कस्सक्खेत्तेण घणलेगे भागे हिदे जगपदरस्स असंखे-
ज्जदिमाणुवलंभादो ।

इसका कारण यह है कि तृतीय समयवर्ती आहारक और तद्भवस्थ होनेके तीसरे समयमें वर्तमान सूक्ष्म जिगोद् लब्धपर्याप्तक जीवकं जघन्य योगके होनेपर आठों ही कर्मोंका जघन्य क्षेत्र पाया जाता है । इसीलिये जघन्य पदमें व्यवहार्य नहीं है, यह उक्त कथनका अभिप्राय है ।

उत्कृष्ट पदमें ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय, इन कर्मोंकी वेदनायें क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट चारों ही समान व स्तोक हैं ॥ २५ ॥

शंका—इन वेदनाओंके समानता कैसे है ?

समाधान—इसका कारण यह है कि उनका स्वामी एक है ।

साधक सोड़े सात राजुओं द्वारा संख्यात प्रतरांगुलोंको गुणित करनेपर आसिधा कर्मोंका उत्कृष्ट क्षेत्र होता है । यह भागे कहे जानेवाले क्षेत्रसे स्तोक है, यह सूत्रका अभिप्राय है ।

वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र, इनकी वेदनायें क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट चारों ही समान व पूर्वकी वेदनाओंसे असंख्यातगुणी हैं ॥ २६ ॥

यहां शुचकार जगप्रतरका असंख्यातर्षा भाग है, क्योंकि, धातिकर्मोंका ओ उत्कृष्ट क्षेत्र संख्यात प्रतरांगुलोंसे गुणित जगभ्रेणिके बराबर है उसका घनलोकोमें भाग देनेपर जगप्रतरका असंख्यातर्षा भाग पाया जाता है ।

जहण्णुक्कस्सपदेण अट्टण्णं वि कम्माणं वेदणाओ खेत्तदो
जहणियाओ तुल्लाओ योवाओ ॥ २७ ॥

सुगममेदं ।

णाणावरणीय-दसंणाणावरणीय-मोहणीय-अंतराहयवेयणाओ
खेत्तदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ ॥ २८ ॥

एत्थ गुणगारो जगसेहीए असंखेज्जदिमागो । कुदो ? अट्टण्णं कम्माणं जहण्ण-
क्खेत्तेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण घादिकम्मुक्कस्सखेत्ते माणे हिदे' वि अंगुलस्स
असंखेज्जदिभागेण जगसेहीए खंडिदाए तत्थ एगखंडुवलंभादो ।

वेयणीय-आउअ-णामा-गोदवेयणाओ खेत्तदो उक्कस्सियाओ
चत्तारि वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ ॥ २९ ॥

एत्थ गुणगारो सुगमो, पुवं परूविदत्तादो । एदमप्पाबहुगसुत्तं सब्बजीवसमा-
साओ अस्सिदण ण परूविदं ति कट्ठु संपहि सव्वंजीवसमासाओ अस्सिदण णाणावरणादि-
कम्माणं जहण्णुक्कस्सखेत्तपरूवणइमप्पाबहुगदंडयं मण्णदि—

जघन्योत्कृष्ट पदसे आठें ही कर्मोकी क्षेत्रकी अपेक्षा जघन वेदनायें तुल्य व
स्तोक हैं ॥ २७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्मकी वेदनायें क्षेत्रकी अपेक्षा
उत्कृष्ट चारों ही तुल्य व पूर्वोक्त वेदनाओंसे असंख्यागुणी हैं ॥ २८ ॥

यहां गुणकार जगभेणिका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, आठों कर्मोंका
जो जघन्य क्षेत्र अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है उसका घातिकर्मोंके उत्कृष्ट
क्षेत्रमें भाग देनेपर भी अंगुलके असंख्यातवें भागसे जगभेणिको क्षणित करनेपर
उसमेंसे एक खण्ड पाया जाता है ।

वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र कर्मकी वेदनायें क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट चारों ही
तुल्य व पूर्वोक्त वेदनाओंसे असंख्यातगुणी हैं ॥ २९ ॥

यहां गुणकार सुगम है, क्योंकि, उसकी पहिले प्ररूपणा की जरूरत नहीं है ।
यह अल्पबहुत्वसूत्र कृत्ति सब जीवसमासोंका आश्रय करके नहीं कहा गया है, अतः
एव सब जीवसमासोंका आश्रय करके ज्ञानावरणीय आदि कर्मोंके जघन्य
व उत्कृष्ट क्षेत्रकी प्ररूपणा करनेके लिये अल्पबहुत्वसूत्रक कहा जाता है ।

एतौ सव्वजीवेसु ओगाहणमहादंडो कायवो भवदि ॥३०॥
सुगमेदं ।

सव्वत्थोवा सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स जहणिया ओ-
गाहणा ॥ ३१ ॥

एतस्सुस्सेहवणं गुलं पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिंदे एदिस्से जहणो-
गाहणाए पमाणं होदि ।

सुहुमवाउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असं-
खेज्जगुणा ॥ ३२ ॥

एतस्स गुणगोरा आवलियाए असंखेज्जदिभागो । अपज्जत्ते त्ति उत्ते लद्धिअपज्ज-
त्तस्स गहणं, णिवत्तिअपज्जत्तजहणोगाहणाए ठवरि परूविज्जमाणत्तादो ।

सुहुमतेउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असं-
खेज्जगुणा ॥ ३३ ॥

गुणगोरा आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एतस्स लद्धिअपज्जत्तयस्सेव गहणं वययव्वं ।

सुहुमआउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असं-
खेज्जगुणा ॥ ३४ ॥

यहस्ति आगे सव्व जीवसमासेभेँ यह अवगाहनादण्डक करने योग्य है ॥३०॥

यह सूत्र सुगम है ।

सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तक जीवकी जघन्य अवगाहना सबसे स्तोक है ॥ ३१ ॥

एक उत्सेघघनांगुलमेँ एत्योपमके असंख्यातवाँ भागका भाग देनेपर इस
जघन्य अवगाहनाका प्रमाण होता है ।

सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असंख्यातगुणी है ॥३२॥

यहां गुणकार आवलीका असंख्यातवाँ भाग है । 'अपर्याप्त' कहनेपर उससे
लघ्वपर्याप्तकका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, निरृत्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना
आगे कही जानेवाली है ।

उससे सूक्ष्म तेजकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥३३॥

गुणकार आवलीका असंख्यातवाँ भाग है । यहां लघ्वपर्याप्तकका ही ग्रहण
करना चाहिये ।

उससे सूक्ष्म जलकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ३४ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एत्थ वि लद्धिअपज्जत्तयस्स गहणं कायच्चं ।

सुहुमपुढविकाइयलद्धिअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३५ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

बादरवाउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३६ ॥

एत्थ गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरतेउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३७ ॥

गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरआउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३८ ॥

एत्थ गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरपुढविकाइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ३९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है । यहां भी लब्धपर्याप्तकका ग्रहण करना चाहिये ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिक लब्धपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असंख्यातगुणी है ॥ ३५ ॥

गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

उससे बादर वायुकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ३६ ॥

यहां गुणकार पत्थोपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे बादर तेजकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ३७ ॥

गुणकार पत्थोपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे बादर जलकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ३८ ॥

यहां गुणकार पत्थोपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ३९ ॥

एष वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो ।

बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असं-
खेज्जगुणा ॥ ४० ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो ।

णिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्ज-
गुणा ॥ ४१ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरिरअपज्जत्तयस्स जहणिया ओ-
गाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ४२ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो ।

बीहंदियअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा
॥ ४३ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो ।

तीहंदियअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्ज-
गुणा ॥ ४४ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो ।

यहां भी गुणकार पद्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे बादर निगोद जीव अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ४० ॥

गुणकार पद्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ४१ ॥

गुणकार पद्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना
असंख्यातगुणी है ॥ ४२ ॥

गुणकार पद्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ४३ ॥

गुणकार पद्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

त्रीन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असंख्यातगुणी है ॥ ४४ ॥

गुणकार पद्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

चउरिंदियअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा
॥ ४५ ॥

गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

पंचिंदियअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा
॥ ४६ ॥

गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदाओ पुव्वं परूविदसव्वजहण्णो-
गाहणाओ लद्धिअपज्जत्ताणं ति धेतव्वाओ । संपहि उवरि मण्णमाणाओ णिव्वत्तिपज्जत्ताणं
णिव्वत्तिअपज्जत्ताणं [च] वेत्तव्वाओ ।

सुहुमणिगोदजीवणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असंखेज्जगुणा ॥ ४७ ॥

एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥

तस्सेवे ति उत्ते णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स गहणं, अण्णेण सह पन्नासत्तीए अभावादो ।
केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो । तस्स को पडिभागो ? आवद्धियाए
असंखेज्जदिभागो । केसिंचि आइरियाणमहिप्पाएण पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असंख्यातगुणी है ॥ ४५ ॥

गुणकार पत्थोपमका असंख्यातवां भाग है ।

पंचेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना उससे असंख्यातगुणी है ॥ ४६ ॥

गुणकार पत्थोपमका असंख्यातवां भाग है । ये पूर्व प्ररूपित सब जघन्य
अवगाहनायें लब्ध्यपर्याप्तकोंकी ग्रहण करना चाहिये । अब आगे कहीं जानेवाली
निवृत्तिपर्याप्तकोंकी और निवृत्त्यपर्याप्तकोंकी समझना चाहिये ।

उससे सूक्ष्म निगोद जीव निवृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ४७ ॥

यहां गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

उसके ही अपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ४८ ॥

‘उसके ही’ ऐसा कहनेपर निवृत्त्यपर्याप्तकका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि,
और किसी दूसरेके साथ प्रत्यासत्ति नहीं है । विशेषका प्रमाण कितना है ? वह अंगुलके
असंख्यातवें भाग प्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग
उसका प्रतिभाग है । किन्हीं आचार्योंके अभिप्रायसे वह पत्थोपमके असंख्यातवें भाग
प्रमाण है ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया
॥ ४९ ॥

एत्थ वि तस्सेवे ति वयणेण णिव्वत्तीए गहणं । केत्थियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिमागमेत्तो ।

सुहुमवाउक्काइयपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असं-
खेज्जगुणा ॥ ५० ॥

एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिमागो । एत्थ पज्जत्ते ति उत्ते णिव्वत्ति-
पज्जत्तयस्स गहणमण्णस्सासंभवादो ।

तस्सेव अपजत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥
केत्थियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिमागमेत्तो ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥
केत्थियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिमागमेत्तो ।

सुहुमतेउक्काइयपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असंखेज्जगुणा ॥ ५१ ॥

उसके ही पर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ४९ ॥

यहांपर भी 'उसके ही' इस निर्देशसे निर्वृत्तिका ग्रहण किया गया है। विशेषका प्रमाण कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है।

उससे सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्तकी अधन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ५० ॥

यहां गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है। यहां 'पर्याप्तक' ऐसा कहनेपर निर्वृत्तिपर्याप्तका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, दूसरेकी सम्भावना नहीं है।

उसीके अपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५१ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

इसीके पर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५२ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है।

उससे सूक्ष्म तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तकी अधन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ५३ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसा-
हिया ॥ ५५ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

सुहुमआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असंखेज्जगुणा ॥ ५६ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ५७ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ५८ ॥

गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

उसके ही अपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५४ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५५ ॥

विशेष कितना है ? वह आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे सूक्ष्म जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी अघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी
है ॥ ५६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५७ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ५८ ॥

केत्तिमेतो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेतो ।

सुद्धमपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असंखेज्जगुणा ॥ ५९ ॥

को गुणगारो ? आवलियार्ह असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६० ॥

केत्तिमेतो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेतो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६१ ॥

केत्तिमेतो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेतो ।

बादरवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असंखेज्जगुणा ॥ ६२ ॥

को गुणगारो ? पल्लोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६३ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी
है ॥ ५९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६० ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६१ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे बादर वायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यात-
गुणी है ॥ ६२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पक्षोपमका असंख्यातवां भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६३ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६४ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरतेउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असंखेज्जगुणा ॥ ६५ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६६ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६७ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा
असंखेज्जगुणा ॥ ६८ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६४ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे बादर तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यात-
गुणी है ॥ ६५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पत्तोपमका असंख्यातवां भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६६ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६७ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे बादर जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यात
गुणी है ॥ ६८ ॥

को गुणगारो ? पल्लिवमस्त असंखेज्जदिभागमेतो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ६९ ॥

केत्तिथमेतो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेतो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ७० ॥

केत्तिथमेतो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेतो ।

बादरपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स' जहणिया ओगाहणा
असंखेज्जगुणा ॥ ७१ ॥

को गुणगारो ? पल्लिवमस्त असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ७२ ॥

केत्तिथमेतेण ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेतेण ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ७३ ॥

गुणकार कितना है ? वह पद्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ६९ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ७० ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यात-
गुणी है ॥ ७१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पद्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ७२ ॥

कितने मात्रसे वह अधिक है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है ।

उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ॥ ७३ ॥

केत्तियमेत्तेण ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

बादरणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असं-
खेज्जगुणा ॥ ७४ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ७५ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ७६ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्ज-
गुणा ॥ ७७ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपजत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ७८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

कितने मात्रसे वह अधिक है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है ।

उससे बादर निगोद निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ७४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पक्षोपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ॥ ७५ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ॥ ७६ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ७७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पक्षोपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ॥ ७८ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसे-
साहिया ॥ ७९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरवणप्फदिकाह्यपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया
ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ८० ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

वेहंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखे-
ज्जगुणा ॥ ८१ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तेहंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा संखेज्ज-
गुणा ॥ ८२ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा संखेज्ज-
गुणा ॥ ८३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

उससे उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ॥ ७९ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना
असंख्यातगुणी है ॥ ८० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पदोपपमका असंख्यातवां भाग है ।

उसमे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ८१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पदोपपमका असंख्यातवां भाग है ।

उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा संखे-
ज्जगुणा ॥ ८४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समय ।

तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-
ज्जगुणा ॥ ८५ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समय ।

चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-
ज्जगुणा ॥ ८६ ॥

[को गुणगारो ? संखेज्जा समय ।]

बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-
ज्जगुणा ॥ ८७ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समय ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्क-
रिसिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८८ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समय ।

उससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकर्का जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकर्का उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकर्का उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८६ ॥

[गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।]

उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तकर्का उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्त्यपर्याप्तकर्का उत्कृष्ट अवगाहना
संख्यातगुणी है ॥ ८८ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

पंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-
ज्जगुणा ॥ ८९ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समय ।

तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-
ज्जगुणा ॥ ९० ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समय ।

चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-
ज्जगुणा ॥ ९१ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समय ।

वेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्ज-
गुणा ॥ ९२ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समय ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्क-
स्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ९३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समय ।

... ..

उससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ८९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ९० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ९१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ९२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना
संख्यातगुणी है ॥ ९३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखे-
ज्जगुणा ॥ ९४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

संपधि पुव्वपरूविदअप्पाबहुगम्भि गुणगारपमाणपरूवणदं उवरिमसुत्ताणि मण्दि-

सुहुमादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असंखे-
ज्जदिभागो ॥ ९५ ॥

सुहुमादो अण्णस्स सुहुमस्स ओगाहणा असंखेज्जगुणा ति जत्थ जत्थ मणिदं
तत्थ तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो ति वेत्तव्वो ।

सुहुमादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखे-
ज्जदिभागो ॥ ९६ ॥

सुहुमेइंदियओगाहणादो जत्थ बादरोगाहणमसंखेज्जगुणमिदि मणिदं तत्थ पल्लिदो-
वमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि ति वेत्तव्वं ।

बादरादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असंखे-
ज्जदिभागो ॥ ९७ ॥

बादरोगाहणादो जत्थ सुहुमेइंदियओगाहणा असंखेज्जगुणा ति मणिदं तत्थ
आवलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो ति वेत्तव्वो ।

उससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तकरी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ९४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

अब पहिले कहे गये अल्पबहुत्वमें गुणकारोंके प्रमाणको बतलानेके लिये आगेके
सूत्र कहते हैं—

एक सूक्ष्म जीवसे दूसरे सूक्ष्म जीवकी अवगाहनाका गुणकार आवलीक असंख्या-
तवां भाग है ॥ ९५ ॥

एक सूक्ष्म जीवसे दूसरे सूक्ष्म जीवकी अवगाहना असंख्यातगुणी है, ऐसा
जहां जहां कहा गया है वहां वहां आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार ग्रहण
करना चाहिये ।

सूक्ष्मसे बादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ॥ ९६ ॥

सूक्ष्म एकेन्द्रियकी अवगाहनासे जहां बादर जीवकी अवगाहना असंख्यातगुणी
कही है, वहां पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार होता है, ऐसा ग्रहण करना
चाहिये ।

बादरसे सूक्ष्मका अवगाहनागुणकार आवलीक असंख्यातवां भाग है ॥ ९७ ॥

बादरकी अवगाहनासे जहां सूक्ष्म एकेन्द्रियकी अवगाहना असंख्यातगुणी कही
है वहां आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

**बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असंखे-
ज्जदिभागो ॥ ९८ ॥**

एत्थ बादरा ति उत्ते जेण बादरणाकम्मोदइत्थानं जीवाणं गहणं तेण बीइंदिया-
दीणं पि गहणं होदि । बादरओगाहणादो अण्णा बादरओगाहणा जत्थ असंखेज्जगुणा
ति भणिदं तत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो ति घेतव्वो ।

बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो संखेज्जा समया ॥ ९९ ॥

बीइंदियादिणिव्वत्तिअपज्जत्तएसु तेसि पज्जत्तएसु च ओगाहणगुणगारो संखेज्जा
समया ति घेतव्वो । पुविल्लसुत्तेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे गुणगारो पत्ते तत्पडिमेहडु-
मिदं सुत्तमारद्धं, तेण ण दोण्णं पि सुत्ताणं विरोहो । एदे एत्थ गुणगारो होति ति कथं
णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो णव्वदे । ण च पमाणं पमाणंतरमेवक्खदे, अणवत्था-
पसंभादो । णाणावरणादीणमट्ठणं पि कम्माणमोगाहणपरूवणइं खेत्ताणियोगहारो परूविज्ज-
माणे जीवसमासाणमोगाहणपरूवणा किमट्ठंमत्थ परूविदा ? एत्थ परिहारो उच्चदे । एसो

बादरसे बादरका अवगाहनागुणकार पत्थोपमका असंख्यातवां भाग है ॥ ९८ ॥

यहां सूत्रमें 'बादरसे' ऐसा कहनेपर चूंकि बादर नामकर्मक उदय युक्त जीवोंका
ग्रहण है, अतः उनसे द्वीन्द्रियादिक जीवोंका भी ग्रहण होता है । बादरकी अवगाहनासे
अहां दूसरे बादर जीवकी अवगाहना असंख्यगुणा कही है यहां पत्थोपमका असं-
ख्यातवां भाग गुणकार ग्रहण करना चाहिये,

बादरसे दूसरे बादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार संख्यात समय है ॥ ९९ ॥

द्वीन्द्रिय आदिक निर्वृत्त्यपर्याप्तकों और उनके पर्याप्तकोंमें अवगाहनाका गुण-
कार संख्यात समय है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । पूर्व सूत्रमें पत्थोपमके असंख्यातव्व
भाग मात्र गुणकारके प्राप्त होनेपर उसका प्रतिषेध करनेके लिये यह सूत्र रचा गया
है । इसीलिये उपर्युक्त दोनों सूत्रोंमें कोई विरोध नहीं है ।

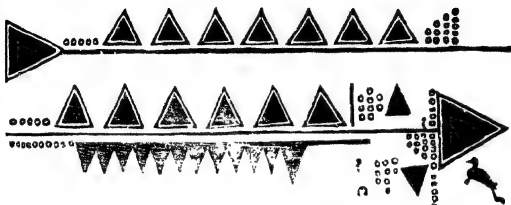
शंका— ये यहां गुणकार होते हैं, ऐसा कैसे जाना जाता है ?

समाधान— यह इसी सूत्रसे जाना जाता है । कारण कि एक प्रमाण दूसरे
प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता है, क्योंकि, वैसा होनेपर अनवस्थाका प्रसंग आता है ।

शंका— आनावरणादिक आठों कर्मोंकी अवगाहनाके प्ररूपणार्थ क्षेत्रानुयोग-
द्वाराकी प्ररूपणा करते समय जीवसमासोंकी अवगाहनाकी प्ररूपणा यहां किस-
लिये की गई है ?

समाधान— यहां इस शंकाका उत्तर कहते हैं— यह अवगाहना सम्बन्धी .

ओगाहणप्पाबहुअदंडओ जीवसमासाणं ण परूविदो, अप्पाबहुअस्स असंभदप्पसंभादो । किंतु अट्टण्णं पि कम्माणं जीवसमासेहितो अभेदेव उट्ठजीवसमासववप्पाणमोमाहणप्पाबहुअदंडओ एसो परूविदो ति । किमट्टमेसा अप्पाबहुगपरूवणा कदा ? समुत्पादेण विणा पाणावरणा-दीणमट्टण्णं पि कम्माणं सत्थाणोगाहणाणं जीवसमासभेदेण मिष्णाणं माहप्पपरूवणइं कदा, णाणावरणादीणमजहण्ण-अणुक्कस्ससत्थाणखेतट्ठाणपरूवणइं वा । एवमप्पाबहुगं सगतो-विस्सत्तगुणगारहियारं समत्तं । एवं वेयणखेतविहाणे ति समतमणियोगहारं ।



एदाओ सोलस उवरिमाओ ओगाहणाओ तिसमयआहारय-तिसमयतन्भवत्थलडि-अपजजत्ताणं जहण्णाओ घेतत्वाओ । आदिप्पहुडि सत्तारस ओगाहणाओ पंदेसुत्तरकमेण

अप्पबहुत्तवदण्डक जीवसमासोका नहीं कहा गया है, क्योंकि, वैसा करनेसे उक्त अप्पबहुत्वके अंतर्गत होनेका प्रसंग आता है । किन्तु यह जीवसमासोसे अभिन्न होनेके कारण जीवसमास संज्ञाको प्राप्त हुए आठों कर्मोंकी ही अवगाहनाका अप्पबहुत्व-दण्डक कहा गया है ।

शंका — यह अप्पबहुत्वकी प्ररूपणा किसलिये की गई है ?

समाधान — जीवसमासके भेदसे भेदको प्राप्त हुए ज्ञानावरणादिक आठों कर्मोंकी स्पष्टघात रहित स्वस्थान अवगाहनाओंके माहात्म्यको बतलानेके लिये उक्त प्ररूपणा की गई है । अथवा, ज्ञानावरणादिक कर्मोंके अजघन्य-अतुरकृत स्वस्थान क्षेत्रस्थानोंकी प्ररूपणा करनेके लिये उपर्युक्त प्ररूपणा की गई है । इस प्रकार अपने भीतर गुणकार अधिकारको रखनेवाला अप्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

इस प्रकार वेदनाक्षेत्रविधान यह अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

ये उपरिम सोलह अवगाहनायें तिसमयवर्ती आहारक और तिसमयवर्ती तद्भवस्थ लक्ष्यपर्याप्तक जीवोंकी अजघन्य ग्रहण करना चाहिये । आदिसे लेकर सत्तारह

भिरंतरं वज्जवेदव्याजो । पुणो जत्थ जिस्से ञ्जोगाहणा समप्पदि तक्काले ठविदोगाहण-
सल्लायासु रुक्कमवणेदव्वं, हेड्डिल्लोगाहणाहि सई देडा भिरंतरमांगंतूण उवरि गमणाभावादो ।
पुणो जत्थ जत्थ जहण्णोगाहणाओ पंदति तत्थ तत्थ पुव्वट्टविदसल्लायासु रुक्कं पक्खिविदव्वं,
हेड्डिल्लोगाहणविपप्पसल्लायासु एदिस्से णत्थि ति' । सेस जाणिय वत्तन्वं ।

एदाओ एक्कारस उक्कस्सोगाहणाओ उवरिमाओ णिव्वत्तिअपज्जत्ताणमुक्कस्साओ ।
एदाओ कस्स हवंति' ? से काले पज्जत्तो होहदि ति द्विदस्स हेंति । लद्धिअपज्जत्तयस्स
उक्कस्सोगाहणा किण्ण गहिदो' ? ण, लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाओ णिव्वत्ति-
अपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए विसेसाहियमावेण विणा असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो ।
हेड्डिमाओ सुहुमणिगोदाओ' णिव्वत्तिपरंपरपज्जत्तीए पज्जत्तयदाणं धेतत्वाओ । ताओ कत्थ
होंति ति उते पज्जत्तयपदमसमए वट्टमाणस्स जहण्णउववाद-एयंताणुवट्ठिजोगेहि आगंतूण
जहण्णपरिणामजोगे जहण्णोगाहणाए च वट्टमाणस्स' एक्कारस वि होंति । पुणो णिव्वत्ति-

अवगाहनाओंको प्रवेश अधिक कमसे निरन्तर बढ़ाना चाहिये । फिर जहां जिसकी
अवगाहना समाप्त होती है उस कालमें स्थापित अवगाहनाशलाकाओंमेंसे एक रूपको
कम करना चाहिये, क्योंकि, अधस्तन अवगाहनाओंके साथ नीचे निरन्तर आकर
ऊपर गमनका अभाव है । फिर जहां जहां अधन्य अवगाहनायें पड़ती हैं वहां वहां
पूर्व स्थापित शलाकाओंमें एक रूपको मिलाना चाहिये, क्योंकि, अधस्तन अवगाहनाके
विकल्पभूत शलाकाओंमें इसकी शलाका नहीं है । शेष जानकर कहना चाहिये ।

ये उपरिम ग्यारह उत्कृष्ट अवगाहनायें निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट हैं ।

शंका—ये किसके होती हैं ?

समाधान—जो अध अनन्तर कालमें पर्याप्त होनेवाला है उसके वे अवगाहनायें
होती हैं ।

शंका—लघ्व्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहनाको क्यों नहीं ग्रहण किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, लघ्व्यपर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहनासे निर्वृत्त्य-
पर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिकताके बिना असंख्यातगुणी पायी जाती है ।

सूक्ष्म भिगोसे लेकर अधस्तन [ग्यारह अधन्य अवगाहनायें] निर्वृत्ति-
पर्याप्तकी पर्याप्तसे पर्याप्त रूप जीवोंकी ग्रहण करना चाहिये ।

शंका—वे अवगाहनायें कहाँपर होगी हैं ?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि जो पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें
वर्तमान है तथा अधन्य उपपाद्योग और अधन्य एकान्तानुवृत्तियोगसे आकर अधन्य
परिणामयोग व अधन्य अवगाहनामें रहनेवाला है उसके वे ग्यारह ही अवगाहनायें
होती हैं ।

१ ताप्तौ 'हेड्डिल्लोगाहणादि-सह' इति पाठः । २ त्रित्यु 'एदिस्से णत्थि' ; ताप्तौ 'एदिस्से ति' इति पाठः ।
३ समर्थेयमेषम् । त्रित्यु 'इयदि', ताप्तौ 'इयदि (होति)' इति पाठः । ४ ताप्तौ 'लद्धिदा' इति
पाठः । ५ ताप्तौ 'भिगोदायो (न)' इति पाठः । ६ ताप्तौ 'वट्टमाणस्स' इति पाठः ।

पञ्जत्ताणं हेट्ठिमाओ एक्कारस उक्कस्सओगाहणाओ उक्कस्सजोगिस्स उक्कस्सओगाह-
णाए^१ वट्ठमाणस्स परंपरपञ्जतीए पञ्जत्तयदस्स होति । एदाओ ओगाहणाओ अप्पण्णो
जहण्णाओ उक्कस्साओ विसेसाहियाओ होति । सुहुमणिगोदल्लिअपञ्जत्तजहण्णोगाहण-
प्पहुडि सच्चजहण्णुक्कस्सोगाहणाओ जाव बादरबणप्पदिकाइयपत्तेयसरीरपञ्जत्तजहण्णो-
गाहणं पावेति ताव अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीयो । बीहंदियादिपञ्जत्ताणं जहण्णो-
गाहणाओ अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तीयो^२ । बीहंदियपञ्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा
अणुधरिम्हि होदि । तीहंदियपञ्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा कुंशुम्हि होदि । चतुरिंदियपञ्जत्त-
यस्स जहण्णोगाहणा काणमच्छियाए । पंचिंदियपञ्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा सित्थमच्छिम्हि
होदि^३ । तीहंदियपञ्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा तिण्णिगाउअप्पमाणा । सा कम्हि होदि ?
गोम्हिम्हि । चतुरिंदियपञ्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा चत्तारिगाउअप्पमाणा । सा कत्थ ?
भमरम्मि । बीहंदियस्स पञ्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा बारस जोगणणि । सा कत्थ ?
संखम्मि । एहंदियउक्कस्सोगाहणा संखेज्जाणि जोगणणि । सा कत्थ ? जोगणसहस्तायाम-

निर्वृत्तिपर्याप्तकोंकी अधस्तन स्वारह उत्कृष्ट अवगाहनायें उत्कृष्ट अवगाहनायें
वर्तमान व परम्परा पर्याप्तसे पर्याप्त हुए उत्कृष्ट योगवाले जीवके होती हैं । ये अवगाह-
नायें अपने अपने जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक होती हैं ।

सूक्ष्म निगोद लब्धपर्याप्तकी जघन्य अवगाहनासे लेकर सब जघन्य व
उत्कृष्ट अवगाहनायें जब तंक बादर वनस्पतिकाविक प्रत्येकक्षरीर पर्याप्त जीवकी
जघन्य अवगाहनाको प्राप्त होती हैं तब तक अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र
रहती हैं । द्वीन्द्रियादिक पर्याप्त जीवोंकी जघन्य अवगाहनायें अंगुलके संख्यातवें
भाग प्रमाण हैं । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना अनुधरकी होती है ।
त्रीन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना कुंशुके होती है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकी
जघन्य अवगाहना कानमक्षिकाके होती है । पंचेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना
सिक्थ मत्स्यके होती है ।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना तीन गव्यूति प्रमाण है । वह
किसके होती है ? वह गोग्हीके होती है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना
चार गव्यूति प्रमाण है । वह कहांपर होती है ? वह भमरके होती है । त्रीन्द्रिय
पर्याप्तकी उत्कृष्ट अवगाहना बारह योजन प्रमाण है । वह कहांपर होती है ?
वह शंखके होती है । एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यात योजन प्रमाण है ।
वह कहां होती है ? वह एक हजार योजन आबाम और एक योजन विस्तार-

१ ताम्रती 'ओगाहणाओ' इति पाठः । २ ताम्रती 'असंखेज्जदिभागमेत्तीयो' इति पाठः । ३ वि-सि-प-
पुण्णजहणं अणुधरी-कुंशु-काणमपणीह । सिक्थमच्छे निंदंशुलसंखं संखयणिदम्मा ॥ गो. जी. ९९.

जोयणविविक्खंमपउमग्गि । पंचेदियउक्कत्सोगाहणा संखेज्जाणि जोयणसहस्साणि । सा कत्थं ?
पंचजोयणसदुस्सेह-तदद्दविविक्खंम-जोयणसहस्सायाममच्छग्गिम् । एदेसिमपज्जत्ताणं तप्पहि-
भागो हेदि ।

आठे एवमे होती है । पंचेन्द्रियकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यात हजार योजन है ।
वह कहाँ होती है ? वह पाँच सौ योजन प्रमाण उत्सेध, इससे आधे विस्तार और
एक हजार योजन आबामसे युक्त मत्स्यके होती है । इनके अपर्याप्तोंकी अवगाह-
नायें एक प्रमाणके प्रतिभाग मात्र होती हैं ।

१ साहियसहस्समेकं वारं बोएणमेकमेवकं च । जोयणसहस्सदीहं पम्मे वियळे महामण्णे ॥ गो. जी. ९५.



६ वेयणकालविहाणे

वेयणकालविहाणे त्ति । तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोग-
हाराणि णादव्वाणि भवंति ॥ १ ॥

एत्थ कालो सत्तविहो— णामकालो ठवणकालो दव्वकालो सामाचारकालो अद्दा-
कालो पमाणकालो भावकालो चेदि । तत्थ णामकालो णाम कालसो । ठवणकालो सो
एसो त्ति बुद्धीए एगत्तं काऊण ठविददव्वं । दव्वकालो दुविहो— आगमदव्वकालो नोआगम-
दव्वकालो चेदि । कालपाहुडजाणवो अणुवत्ततो आगमदव्वकालो । तत्थ नोआगमदव्व-
कालो तिविहो— जाणुगसरीरणोआगमदव्वकालो भवियणोआगमदव्वकालो जाणुगसरीर-
भवियतव्वदिरित्तणोआगमदव्वकालो चेदि । जाणुगसरीर-भवियणोआगमदव्वकालो सुयमा ।
तव्वदिरित्तणोआगमदव्वकालो दुविहो— पहाणो अप्पहाणो चेदि । तत्थ पहाणदव्वकालो
णाम लोगागासपदेसपमाणो सेसपंचदव्वपरिणमणहेदुभूदो रयणरासि व्व पदेसपंचविविहोयो
अमुत्तो अणाइणिहणो । उत्तं च—

कालो परिणाममवो परिणामो दव्वकालसंभूदो ।

दोणं एस सहाओ कालो खणमंगुरो णियदो' ॥ १ ॥

वेदनकालविधान अनुयोगद्वार प्रारम्भ होता है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार
जानने योग्य हैं ॥ १ ॥

यहां काल सात प्रकार है— नामकाल, स्थापनाकाल, द्रव्यकाल, सामा-
चारकाल, अद्दाकाल, प्रमाणकाल और भावकाल । उनमें 'काल' शब्द नामकाल
कहा जाता है । 'वह यह है' इस प्रकार बुद्धिसे अभेद करके स्थापित द्रव्य
स्थापनाकाल है । द्रव्यकाल दो प्रकार है— आगमद्रव्यकाल और नोआगमद्रव्यकाल ।
कालप्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यकाल है । नोआगमद्रव्य-
काल तीन प्रकार है— ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यकाल, भावी नोआगमद्रव्यकाल
और ज्ञायकशरीर-भाविव्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकाल । इनमें ज्ञायकशरीर
और भावी नोआगमद्रव्यकाल ये दोनों सुगम हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगम-
द्रव्यकाल दो प्रकार है— प्रधान और अप्रधान । उनमें जो प्रवेशोंकी अपेक्षा लोकके
बराबर है, शेष पांच द्रव्योंके परिवर्तनमें कारण है, रत्नराशिके समान प्रवेशप्रत्यक्षसे
रहित है, अमूर्त व अनादिनिघन है; वह प्रधान द्रव्यकाल है । कहा भी है—

समयादि रूप व्यवहारकालं भूँकि जीव व पुद्गलके परिणमनसे जाना जाता
है, अतः वह उससे उत्पन्न कहा जाता है; और जीव व पुद्गलका परिणाम भूँकि
द्रव्यकालके होनेपर होता है, अत एव वह द्रव्यकालसे उत्पन्न कहा जाता है । यह
उन दोनों अर्थात् व्यवहार और निश्चय कालका स्वभाव है । इनमें व्यवहारकाल
क्षणक्षयी और निश्चयकाल अभिनम्बर है ॥ १ ॥

ण य परिणमइ सयं सो ण य परिणमइ अप्पमण्णेसि ।

विबिहपरिणमियाणं इवइ इ हेऊ सयं कालो ॥ २ ॥

लोगमासपदेसे एक्केक्के जे द्विया इ एक्केक्का ।

रयणार्ण रासी इव ते कालाणू मुण्येव्वा ॥ ३ ॥

कालो सि य क्वएसो सम्भावपरुवओ इवइ णिच्चो ।

उप्पण्णयद्वंसी अवरो दीहंतरद्दार् ॥ ४ ॥ चि ।

अप्यहाणद्वकालो तिविहो— सच्चित्तो अच्चित्तो मिस्सओ चेदि । तन्म सच्चित्तो— जहा दंसकालो मसयकालो इच्चेवमादि, दंस-मसयार्ण चेव उवयारेण कालत्त-विहाणादो । अचित्तकालो— जहा धूलिकालो चिक्खल्लकालो उण्हकालो बरिसाकालो सीदकालो इच्चेवमादि । मिस्सकालो— जहा सदंस-सीदकालो इच्चेवमादि । सामाचार-कालो द्विविहो— लेइओ लोउत्तरीयो चेदि । तत्थ लोउत्तरीओ सामाचारकालो— जहा वंदणकालो णियमकालो सन्धयकालो ज्ञाणकालो इच्चेवमादि । लेगियसामाचारकालो— जहा कसणकालो लुणणकालो ववणकालो इच्चेवमादि । आदावणकालो रुवस्समूलकालो बाहिरसयणकालो इच्चादीणं कालाणं लोउत्तरीयसामाचारकाले अंतस्मावो कायव्वो, किरिया-

वह काल न स्वयं परिणमता है और न अन्य पदार्थको अन्य स्वरूपसे परिणमता है । किन्तु स्वयं अनेक पर्यायोंमें परिणत होनेवाले पदार्थोंके परिणमनमें वह उदासीन निमित्त मात्र होता है ॥ २ ॥

लोकाकाशके एक एक प्रदेशपर जो रत्नराशिके समान एक एक स्थित हैं उन्हें कालाणु जानन चाहिये ॥ ३ ॥

‘काल’ यह नाम निश्चयकालके अस्तित्वको प्रगट करता है, जो द्रव्य स्वरूपसे निश्चय है । दूसरा व्यवहार काल यद्यपि उत्पन्न होकर नष्ट होनेवाला है, तथापि वह [समयसन्तापकी अपेक्षा व्यवहार नयसे आवली व पश्य आदि स्वरूपसे] दीर्घ काल तक स्थित रहनेवाला है ॥ ४ ॥

अप्रधान द्रव्यकाल तीन प्रकार है—सचित्त, अचित्त और मिश्र । उनमें ईशकाल, महाकाल इत्यादि सचित्त काल हैं, क्योंकि, इनमें दंश व महाकके ही उपचारसे कालका विधान किया गया है । धूलिकाल, कर्दमकाल, उष्णकाल, वर्षाकाल एवं शीतकाल इत्यादि सब अचित्तकाल हैं । सर्वश शीतकाल इत्यादि मिश्रकाल है ।

सामाचारकाल दो प्रकार है—लौकिक और लोकोत्तरीय । उनमें बन्धनाकाल, नियमकाल, स्वाध्यायकाल व ध्यानकाल इत्यादि लोकोत्तरीय सामाचारकाल हैं । कर्षणकाल, लुप्तकाल व वपनकाल इत्यादि लौकिक सामाचारकाल हैं । आतापन-काल, वृक्षमूलकाल व बाह्यशयनकाल, इत्यादिक कालोंका लोकोत्तरीय सामाचारकालमें अन्तर्भाव करना चाहिये, क्योंकि, कृषिकालके प्रति कोई भेद नहीं है अर्थात्

कालत्वं पडि विसेसामावादो ।

अद्वाकालो ति विहो— अदीदो अणागओ वट्टमाणो चेदि । पमाणकालो पल्लेवम-
सागरोवम-उत्सप्पिणी-ओसप्पिणी-कप्पादिभेदेण बहुप्पयारो । भावकालो दुविहो— आगमदो
ओआगमदो चेदि । तत्थ कालपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावकालो । ओआगमभावकालो
ओदइयादिपंचणं मावाणं सगरूवं । एदेसु कालेसु पमाणकालेण पयदं । कालस्स विद्धानं
कालविद्धानं, वेयणाए कालविद्धानं वेयणाकालविद्धानं । तत्थ इमाणि तिणिण अणियोग-
हाराणि भवंति । कुदो ? संखा-गुणयार-ट्ठाण-जीवसमुदाहार-ओज जुम्माणियोगहारणमेत्थेव
अंतम्भावदंसणादो । ताणि काणि त्ति उत्ते उत्तरसुचमागयं —

पदमीमांसा-सामित्तमप्पाबहुए त्ति ॥ २ ॥

तिसु अणियोगहारेसु पदमीमांसा चेव पढं किमडुं उच्चदे ? ण, पदेसु अणवगएसु
पदसामित्त-पदप्पाबहुआणं परूवणोवायामावादो । तदणंतरं सामित्तपरूवणं किमडुं कीरदे ?
ण, पमाणे अणवगए पदप्पाबहुगाणुववत्तीदो । तम्हा एसो चेव अणियोगहारकमो होदि,
णिरवज्जत्तादो ।

क्रियाकालकी अपेक्षा इनमें कोई विशेषता नहीं है ।

अद्वाकाल तीन प्रकार है—अतीत, अनागत और वर्तमान । प्रमाणकाल
पक्षोपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी और कल्पादिके भेदसे बहुत प्रकार है ।
भावकाल दो प्रकार है—आगमभावकाल और नोआगमभावकाल । उनमें कालप्राप्तका
जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावकाल है । नोआगमभावकाल औदधिक आदि
पाँच भावों स्वरूप है ।

इन कालोंमें प्रमाणकाल प्रकृत है । कालका जो विधान है वह कालविधान है,
वेदनाका कालविधान वेदनाकालविधान कहा जाता है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार
हैं, क्योंकि संख्या, गुणकार, स्थान, जीवसमुदाहार, भोज और युग्म, इन अनुयोग-
द्वारोंका उक्त तीनों अनुयोगद्वारोंमें अन्तर्भाव देखा जाता है । ये तीन अनुयोगद्वार
कीनसे हैं, ऐसा पृष्ठनेपर उत्तर स्रज प्राप्त होता है—

पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये वे तीन अनुयोगद्वार हैं ॥ २ ॥

शंका—इन तीन अनुयोगद्वारोंमें पहिले पदमीमांसाका ही निर्देश किसलिये
किया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पदोंके अज्ञात होनेपर पदस्वामित्व और पद-
अल्पबहुत्वकी प्ररूपणाका कोई उपाय नहीं है ।

शंका—पदमीमांसाके पश्चात् स्वामित्वप्ररूपणा किसलिये की जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, प्रमाणका ज्ञान न होनेपर पदोंका अल्पबहुत्व
बन नहीं सकता । इस कारण यही अनुयोगद्वारक्रम ठीक है, क्योंकि, उसमें कोई
दोष नहीं है ।

**पदमीमांसाए णाणावरणीयवेयणा कालदो किमुक्कस्सा किम-
णुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा ? ॥ ३ ॥**

एत्थ णाणावरणग्गहणं सेसकम्मपडिसेहफलं । कालणिदेसो दव्व-खेत्त-भावपडिसेह-
फले । एदं पुच्छासुत्तं जेण देसामासियं तेण अण्णाओ नव पुच्छाओ सूचेदि । णाणावरणीय-
वेयणा किमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया किमणादिया किं
धुवा किमडुवा किमोजा किं जुग्मा किमोमा किं विसिद्धा किं गोम-गोविसिद्धा ति । पुणो
एदेणेव सुत्तेण अण्णाओ तेरस पदविसयपुच्छाओ सूचिदाओ । काओ ति पुच्छिदे उच्चदे—
उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा किमणुक्करसा किं जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया किमणा-
दिया किं धुवा किमडुवा किमोजा किं जुग्मा किमोमा किं विसिद्धा किं गोम-गोविसिद्धा ति
उक्कस्सपदमि बारस पुच्छाओ । एवं सेसपदाणं पि पादेक्कं बारस पुच्छाओ वत्तव्वाओ ।
एत्थ सम्बपुच्छासमासो एगूणसत्तरिसदमेत्तो । १६९ । तम्हा एदं देसामासियसुत्तं तेरस-
सुचप्पयं । एदेसिं सुत्ताणं परूवणा उत्तरदेसामासियसुत्तेण कीरदे—

उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा ॥ ४ ॥

पदमीमांसा अधिकारमे ज्ञानावरणीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा क्या उत्कृष्ट
है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है और क्या अजघन्य है ? ॥ ३ ॥

सूत्रमें ज्ञानावरण पदका ग्रहण शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेके लिये किया है ।
कालका निर्देश द्रव्य, क्षेत्र व भावका प्रतिषेध करनेवाला है । यह पृच्छासूत्र चूंकि देशा-
मर्शक है, अतः वह सूत्रोक्त चार पृच्छाओंके अतिरिक्त नौ दूसरी पृच्छाओंको भी सूचित
करता है । ज्ञानावरणीयवेदना क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या
अजघन्य है, क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या भुव है, क्या अभुव है, क्या भोज
है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, और क्या नोम-नोविशिष्ट है ?
इसके अतिरिक्त इसी सूत्रके द्वारा दूसरी तरह पदविषयक पृच्छायें सूचित की गई हैं । वे
कौनसी हैं, ऐसा पृच्छापर उत्तर देते हैं—उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना क्या अनुत्कृष्ट है,
क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या भुव है, क्या अभुव
है, क्या भोज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, और क्या नोम-
नोविशिष्ट है, ये बारह पृच्छायें उत्कृष्ट पदके विषयमें हैं । इसी प्रकार शेष पदोंमेंसे
भी प्रत्येक पदके विषयमें बारह पृच्छाओंको कहना चाहिये । यहां सब पृच्छाओंका
योग एक सौ उनत्तर (१६९) मात्र है । इस कारण यह देशामर्शक सूत्र तरह सूत्रों
स्वरूप है । इन सूत्रोंकी प्रकृपणा भगले देशामर्शक सूत्रके द्वारा की जाती है ।

उक्त ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट भी है, अनुत्कृष्ट भी है, जघन्य
भी है और अजघन्य भी है ॥ ४ ॥

एदं पि देसामासियसुचं । तेणेत्थ सेसणवपदाणि वत्तव्वणि । देसामासियसुचो वेय
सेसतेरसमुत्ताणमेत्थ अंतम्भावो वत्तव्वो । एत्थ ताव पदमसुत्तरूवणा कीरदे । तं जह्वा—
णाणावरणीयवेयणा कालदो सिया उवकस्सा सिया अणुकस्सा सिया जहण्णा सिया अज-
हण्णा । सिया सादिया, पज्जवट्टियणए अवलंबिज्जमाणे णाणावरणीयसव्वट्टिदीण सादि-
सुवलंभादो । सिया अणादिया, दव्वट्टियणए अवलंबिज्जमाणे अणादिसदंसणादो । सिया
धुवा, दव्वट्टियणए अवलंबिज्जमाणे णाणावरणीयकालवेयणाए विणासाणुवलंभादो । सिया
अजुवा, पज्जवट्टियणयप्पणाए अजुवत्तदंसणादो । सिया ओजा, कत्थ वि कालविसेसे
कलि-तेजोअसंखाविसेसाणमुवलंभादो । सिया जुम्मा, कत्थ वि कालविसेसे कद-बादर-
जुम्माणं संखाविसेसाणमुवलंभादो । सिया ओमा, कत्थ वि कालविसेसे परिहाणिदंसणादो ।
सिया विसिद्धा, कत्थ वि वट्ठिदंसणादो । सिया गोम-णोविसिद्धा, कत्थ वि बंधवसेण
कालस्स अवट्ठाणदंसणादो । [१३] ।

संपहि विदियसुत्तस्सत्थो तुच्चदे । तं जह्वा— उवकस्सणाणावरणीयवेयणा जहण्णा
अणुकस्सा च ण होदि, पडिवक्खत्तादो । सिया अजहण्णा, जहण्णादो उवरिमासेस-

यह भी देशामर्शक सूत्र है । इसलिये यहां शेष नी पर्वोंको और कहना चाहिये ।
देशामर्शक होनेसे ही शेष तरह सूत्रोंका इसमें अन्तर्भाव बतलाना चाहिये । उनमें यहाँ
पहिले प्रथम सूत्रकी प्रकृपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणीयवेदना कालकी
अपेक्षा कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् अजघन्य और कथंचित् अजघन्य
है । वह कथंचित् सादि भी है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर
ज्ञानावरणीयकी सभी स्थितियां सादि पायी जाती हैं । कथंचित् वह अनादि भी
है, क्योंकि द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर ज्ञानावरणीयकी वेदनामें
अनादिता देखी जाती है । कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक
नयका अवलम्बन करनेपर ज्ञानावरणीयकी कालवेदनाका विनाश नहीं पाया जाता
है । कथंचित् वह अणुव है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर उसकी
अस्थिरता देखी जाती है । कथंचित् वह ओज है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें
कालोअज और तेजोअ संख्याविशेष पाये जाते हैं । कथंचित् वह युग्म है,
क्योंकि, किसी कालविशेषमें कृतयुग्म और बादरयुग्म संख्याविशेष पाये जाते
हैं । कथंचित् वह ओम है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें हानि देखी जाती है ।
कथंचित् वह विशिष्ट है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें वृद्धि देखी जाती है । कथंचित्
वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर बन्धके बन्धसे कालका अवस्थान देखा जाता
है । [इस प्रकार ज्ञानावरणीयकालवेदना तरह (१३) पद स्वरूप है] ।

अब द्वितीय सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय-
वेदना अजघन्य और अनुत्कृष्ट नहीं होती, क्योंकि, ये उससे बिरुद्ध हैं । कथंचित् वह
अजघन्य है, क्योंकि, अजघन्यके ऊपरके समस्त कालविकल्पोंमें अवस्थित अजघन्य

कालवियप्पावट्टिदे अजहण्णे उक्कस्सस्स वि संभवादो । सिया सादिया, अणुक्कस्स-
कालदो उक्कस्सकालुप्पीए । धुवपदं गत्थि, उक्कस्सट्ठिदीए सव्वकालमवट्ठाणाभावादो ।
दव्वट्ठियणए अवलंबिदे' वि ण धुवपदमात्थि, चटुसु वि गदीसु कयाइं उक्कस्सपदस्स
संभवादो । सिया अट्ठुवा, उक्कस्सपदस्स सव्वकालमवट्ठाणाभावादो । सिया कदडुम्मा,
उक्कस्सकालम्मि बादरडुम्म-कलि-तेजो-जसंखाविसेसाणमभावादो । सिया गोम-गोमविसिद्धा,
वट्ठिदे हाइदे च उक्कस्सचविरोहादो । एवमुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा पंचपदप्पिया ॥५॥

अणुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा सिया जहण्णा, उक्कस्सं मोत्तूण हेडिमसेसवियप्पे
अणुक्कस्से जहण्णस्स वि संभवादो । सिया अजहण्णा, अणुक्कस्सस्स अजहण्णाविणाभावि-
त्तादो । सिया सादिया, उक्कस्सादो अणुक्कस्सुप्पीए अणुक्कस्सादो वि अणुक्कस्स-
विसेसुप्पत्तिदंसणादो च । सिया अणादिया, दव्वट्ठियणए अवलंबिदे अणुक्कस्सपदस्स
पंचाभावादो । सिया धुवा, दव्वट्ठियणए अवलंबिदे अणुक्कस्सपदस्स विणासाभावादो ।
सिया अट्ठुवा, पज्जवट्ठियणए अवलंबिदे अणुक्कस्सपदस्स धुवत्ताभावादो । सिया
ओजा, कत्थ वि अणुक्कस्सपदविसेसे दुविहविसमसंखुवलंभादो । सिया जुम्मा, अणुक्कस्स-

पदमें उत्कृष्ट पद भी सम्भव है । कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट कालसे
उत्कृष्ट काल उत्पन्न होता है । ध्रुव पद नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिका सब कालमें
अवस्थान नहीं रहता । द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर भी ध्रुव पद सम्भव
नहीं है, क्योंकि, वारों ही गतियोंमें उत्कृष्ट पद कदाचित् ही सम्भव होता है । कथं-
चित् वह अध्रुव है, क्योंकि, उत्कृष्ट पदका सब कालमें अवस्थान नहीं रहता । कथंचित्
वह कृतयुग्म है, क्योंकि, उत्कृष्ट कालमें बादरयुग्म, कलिभोज और तेजो-ज संख्या-
विशेषोंका अभाव है । कथंचित् वह 'गोम-नोविशष्ट है, क्योंकि, वृद्धि व हानिके होनेपर
उत्कृष्टपदका विरोध है । इस प्रकार उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना पांच (५) पद रूप है ।

अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अघन्य है, क्योंकि, उत्कृष्टको छोड़कर
अपस्तन समस्त विकल्पों रूप अनुत्कृष्ट पदमें अघन्य पद भी सम्भव है ।
कथंचित् वह अजघन्य है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट पद अजघन्य पदका अविनाशायी है ।
कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, उत्कृष्ट पदसे अनुत्कृष्ट पद उत्पन्न होता है,
तथा अनुत्कृष्टसे भी अनुत्कृष्टविशेषकी उत्पत्ति देखी जाती है । कथंचित् वह
अनादि है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर अनुत्कृष्ट पदका बन्ध
नहीं होता । कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर
अनुत्कृष्ट पदका विनाश नहीं होता । कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, पदार्थार्थिक-
नयका अवलम्बन करनेपर अनुत्कृष्ट पद ध्रुव नहीं है । कथंचित् वह ओज है,
क्योंकि, किसी अनुत्कृष्ट पदविशेषमें दोनों प्रकारकी विषम संख्यायें देखी जाती
हैं । कथंचित् वह युग्म है, क्योंकि, किसी अनुत्कृष्ट पदविशेषमें दोनों प्रकारकी

पदविसेसे दुविहसमसंखदंसणादो । सिया ओमा, कत्थ वि हाणीदो समुप्पणअणुककस्सपदु-
बलंभादो । सिया विसिद्धा, कत्थ वि वड्ढीदो अणुककस्सपदुप्पत्तीए । सिया गोम-गोविसिद्धा,
अणुककस्सजहणम्मि अणुककस्सपदविसेसे वा अप्पिदे वड्ढि-हाणीणमभावादो । एवं जाणावर-
णाणुककस्सवेयणा एककारसपदप्पिया [११]। एवं तदियसुत्तपरूवणा कदा ।

संपहि चउत्थसुत्तपरूवणा कीरदे । तं जहा— जहण्णजाणावरणीयवेयणा सिया
अणुककस्सा, अणुककस्सजहण्णस्स ओघजहण्णेण एगत्तदंसणादो । सिया सादिया, अज-
हण्णादो जहण्णपदुप्पत्तीए । सिया अणादिया ति गत्थि, सुहुमसांपराइयचरिमसमय-
बंधम्मि चरिमसमयखीणकसायसंतम्मि य दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे वि अणादिताणुब-
लंभादो । सिया अद्भुवा । सिया कलिओजा, खीणकसायचरिमसमयट्ठिदिग्गहणादो । सिया
गोम-गोविसिद्धा । एवं जहण्णकालेवेयणा पंचपयारा सरूवेण छपयारा वा [५] । एवं
चउत्थसुत्तपरूवणा कदा ।

संपहि पंचमसुत्तपरूवणा कीरदे । तं जहा— अजहण्णा जाणावरणीयवेयणा सिया
उक्कस्सा, अजहण्णुककस्सस्स ओघुककस्सादो पुघत्ताणुबलंभादो । सिया अणुककस्सा, तद-

सम संख्यायें देखी जाती हैं । कथंचित् वह ओम है, क्योंकि, कहींपर हानिले
उत्पन्न हुआ अनुत्कष्ट पद पाया जाता है । कथंचित् वह विशिष्ट है, क्योंकि,
कहींपर वृत्तिले अनुत्कष्ट पद उत्पन्न होता है । कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है,
क्योंकि, अनुत्कष्टमूल जघन्य पदकी अथवा अन्य अनुत्कष्ट पदविशेषकी विवक्षा करनेपर
वृत्ति और हानिका अभाव रहता है । इस प्रकार ज्ञानावरणकी अनुत्कष्टवेदना ग्यारह
(११) पद स्वरूप है । इस प्रकार तीसरे सूत्रकी प्ररूपणा की गई है ।

अब चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—जघन्य ज्ञानावरणीय-
वेदना कथंचित् अनुत्कष्ट है, क्योंकि, अनुत्कष्ट जघन्यकी ओघजघन्यसे एकता देखी जाती
है । कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, अजघन्यसे जघन्य पद उत्पन्न होता है । कथंचित्
अनादि यह पद नहीं है, क्योंकि, सूक्ष्मसांपराधिकके अन्तिम समय सम्बन्धी बन्ध और
खीणकपायके अन्तिम समय सम्बन्धी सत्त्वमें द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर भी
अनादिपना नहीं पाया जाता । कथंचित् वह अद्भुत है । कथंचित् वह कलिओज है,
क्योंकि, खीणकपायके अन्तिम समय सम्बन्धी स्थितिका ग्रहण किया गया है । कथंचित्
वह नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार जघन्य काळवेदना पांच (५) प्रकार अथवा
अपने साथ छह प्रकार भी है । इस प्रकार चतुर्थ सूत्रकी प्ररूपणा की गई है ।

अब पांचवें सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—अजघन्य
ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कष्ट है, क्योंकि, अजघन्य उत्कष्ट ओघ उत्कष्टसे
पृथक् नहीं पाया जाता है । कथंचित् वह अनुत्कष्ट है, क्योंकि, वह उसका

विणाभावित्तादो । सिया सादिया, पदंतरपल्लट्टणेण दि० अजहण्णपदविसेसाणमवट्ठाणा-
मावादो । सिया अणादिया, दब्बट्टियणए अवलंबिदे बंधामावादो । सिया धुवा,
दब्बट्टियणए अवलंबिदे अजहण्णपदस्स विणासाभावो । सिया अद्धुवा, पज्जवट्टियणए
अवलंबिदे धुवताभावो । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा ।
सुगमं । सिया गोम-गोविसिट्ठा, गिरुद्धपदविसेमत्तादो । एवमजहण्णा एवकारसभंगा [११] ।
एसो पंचमसुत्तथो ।

सादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा,
सिया अजहण्णा, सिया अद्धुवा । धुवा ण हेदि, सादियस्स अणादिय-धुवत्तविरोहादो ।
सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिट्ठा, सिया गोम-गोविसिट्ठा । एवं
सादियवेदणाए दसभंगा [१०] । एसो छट्सुत्तथो ।

अणादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा,
सिया अजहण्णा, सिया सादिया । कथमणादियवेयणाए सादियत्तं ? ण, वेयणास.मण्णा-
वेक्खाए अणादियम्म उक्कस्सादिपदोवेक्खाए सादियत्तं पडि विरोहामावादो । सिया धुवा,

अविनाभावी है । कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, दूसरे पदोंके पलटनेके विना
अजघन्य पदविशेष रहते नहीं है । कथंचित् वह अनादि है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक
नयका अवलम्बन करनेपर इस पदका बन्ध नहीं होता । कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि,
द्रव्यार्थिक नयका अगलम्बन करनेपर अजघन्य पदका विनाश नहीं होता । कथंचित्
वह अध्रुव है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर उसके ध्रुवपना
नहीं पाया जाता । कथंचित् वह ओज है, कथंचित् युग्म है, कथंचित् आम है,
और कथंचित् वह विशिष्ट है । यह सब सुगम है । कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट
है, क्योंकि, पदविशेषकी विवक्षा है । इस प्रकार अजघन्य वेदनाके ग्यारह (११)
भंग होते हैं । यह पांचवें सूत्रका अर्थ है ।

सादि ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित्
अजघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, और कथंचित् अध्रुव है । वह ध्रुव नहीं है, क्योंकि,
सादि पदका अनादि और ध्रुव पदके साथ विरोध है । वह कथंचित् ओज है,
कथंचित् युग्म है, कथंचित् आम है, कथंचित् विशिष्ट है, और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट
है । इस प्रकार सादिवेदनाके दस (१०) भंग होते हैं । यह छठे सूत्रका अर्थ है ।

अनादि ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित्
अजघन्य, कथंचित् अजघन्य और कथंचित् सादि है ।

शंका—अनादि वेदना सादि कैसे हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वेदनासामान्यकी अपेक्षा उसके अनादि होनेपर भी
उत्कृष्ट आदि पदोंकी अपेक्षा उसके सादि होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

बेयणासामणस्स विणासामावादो । सिया अद्घुवा, पदविसेसस्स विणासदंसणादो । अणा-
दियत्तम्मि सामणविवक्खाए समुप्पणम्मि कधं पदविसेससंमवो ? ण, संगतोखित्तवसेस-
विसेसम्मि सामणम्मि अप्पिदे तदविरोहादो । सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया
विसिद्धा, सिया गोम-णोविसिद्धा । एवमणादियपदस्स बारस भंगा [१२] । एसो सत्तमसुत्तयो ।

धुवणाणावरणीयेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया
अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया अद्घुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा,
सिया ओमा, सिया विसिद्धा, सिया गोम-णोविसिद्धा । एवं धुवपदस्स बारस भंगा [१२] ।
एसो अट्ठमसुत्तयो ।

अद्घुवणाणावरणीयेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा,
सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया ओजा, सिया जुम्मा, सिया ओमा, सिया विसिद्धा,
सिया गोम-णोविसिद्धा । एवमद्घुवपदस्स दस भंगा [१०] । एसो णवमसुत्तयो ।

ओजणाणावरणीयेयणा उक्कस्सा ण होदि, उक्कस्सट्ठिदीए कदजुम्मे अवट्ठणादो ।
सिया अणुक्कस्सा, सिया जहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया । सिया अणादिया,
सामणविवक्खादो । सिया धुवा, सिया अद्घुवा, विसेसविवक्खाए । सिया ओमा, सिया

कथंचित्त वह धुव है, क्योंकि, वेदनासामान्यका कभी विनाश नहीं होता ।
कथंचित्त वह अधुव है, क्योंकि, पदविशेषका विनाश देखा जाता है ।

शंका— सामान्य विवक्षासे अनादिताणे रधीकार करनेपर उसमें पदविशेषकी
सम्भावना कैसे हो सकती है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अपने भीतर समस्त विशेषोंको रखनेवाले सामान्यकी
विवक्षा करनेपर उसमें कोई विरोध नहीं है ।

वह कथंचित्त ओज, कथंचित्त युग्म, कथंचित्त ओम, कथंचित्त विशिष्ट और
कथंचित्त नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार अनादि पदके बारह (१२) भंग होते हैं ।
यह सातवें सूत्रका अर्थ है ।

धुव ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित्त उत्कृष्ट, कथंचित्त अनुत्कृष्ट, कथंचित्त जघन्य,
कथंचित्त अजघन्य, कथंचित्त सादि, कथंचित्त अनादि, कथंचित्त अधुव, कथंचित्त
ओज, कथंचित्त युग्म, कथंचित्त ओम, कथंचित्त विशिष्ट और कथंचित्त नोम-नोविशिष्ट
है । इस प्रकार धुव पदके बारह भंग होते हैं । यह आठवें सूत्रका अर्थ है ।

अधुव ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित्त उत्कृष्ट, कथंचित्त अनुत्कृष्ट, कथंचित्त
जघन्य, कथंचित्त अजघन्य, कथंचित्त सादि, कथंचित्त ओज, कथंचित्त युग्म, कथंचित्त
ओम, कथंचित्त विशिष्ट और कथंचित्त नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार अधुव पदके
दस (१०) भंग होते हैं । यह नौवें सूत्रका अर्थ है ।

ओज ज्ञानावरणीयवेदना उत्कृष्ट नहीं होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिका
अवस्थान कृतयुग्ममें है । वह कथंचित्त अनुत्कृष्ट, कथंचित्त जघन्य, कथंचित्त अजघन्य,
य कथंचित्त सादि है । सामान्यकी विवक्षासे वह कथंचित्त अनादि है । वह कथंचित्त
धुव है । वह कथंचित्त अधुव है, क्योंकि, विशेषकी विवक्षा है । वह कथंचित्त ओम,

विसिद्धा, सिया नोम-नोविसिद्धा । एवमोजपदस्स दस मंगा [१०] । एसो दसमसुत्तथो ।

जुम्मणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओमा, सिया विसिद्धा, सिया नोम-नोविसिद्धा । एवं जुम्मपदस्स दस मंगा [१०] । एसो एक्कारसमसुत्तथो ।

ओमणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवमोमपदस्स अट्ठ मंगा [८] । एसो बारसमसुत्तथो ।

विसिद्धणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवं विसिद्धपदस्स अट्ठमंगा [८] । एसो तेरसमसुत्तथो ।

नोम-नोविसिद्धणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सिया, सिया अणुक्कस्सिया, सिया अजहण्णा, सिया अजहण्णा, सिया सादिया, सिया अणादिया, सिया धुवा, सिया अद्धुवा, सिया ओजा, सिया जुम्मा । एवं दस मंगा [१०] । एसो चोदसमसुत्तथो ।

एदेस्सि मंगाणमकविण्णासो एसो—१३|५|११|५|११|१०|१२|१५|१०|१०|१०|८|८|१०|

कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार ओज पदके दस (१०) अंग होते हैं । यह दसवें सूत्रका अर्थ है ।

युग्म ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुकृष्ट, कथंचित् अजघ्न्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओम, कथंचित् विशिष्ट और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है । इस प्रकार युग्म पदके दस (१०) अंग होते हैं । यह ग्यारहवें सूत्रका अर्थ है ।

ओम ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुकृष्ट, कथंचित् अजघ्न्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार ओम पदके आठ (८) अंग होते हैं । यह बारहवें सूत्रका अर्थ है ।

विशिष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुकृष्ट, कथंचित् अजघ्न्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार विशिष्ट पदके आठ (८) अंग होते हैं । यह तेरहवें सूत्रका अर्थ है ।

नोम-नोविशिष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुकृष्ट, कथंचित् अजघ्न्य, कथंचित् अजघ्न्य, कथंचित् सादि, कथंचित् अनादि, कथंचित् ध्रुव, कथंचित् अध्रुव, कथंचित् ओज और कथंचित् युग्म है । इस प्रकार उसके दस (१०) अंग होते हैं । यह चौदहवें सूत्रका अर्थ है ।

इन अंगोंके अंकोंका विन्यास यह है— १३ + ५ + ११ + ५ + ११ + १० + १५ + १० + १० + १० + ८ + ८ + १० = १३५ ।

एवं सत्तणं कम्माणं ॥ ५ ॥

जहा णाणावरणीयस्स पदमीमांसा कदा तहा सत्तणं कम्माणं कायव्वा, विसेसा-
मावादे । एवमंतोकयओजाणियोगदाग पदमीमांसा चि समत्तमणियोगहारं ।

सामित्तं दुविहं जहण्णपदे उक्कस्सपदे ॥ ६ ॥

तत्थ जहणं चउव्विहं— णाम डुवणा-दव्व-भावजहणं चेदि । णामजहणं डुवणा-
जहणं च सुगमं । दव्वजहणं दुविहं— आगमदव्वजहणं णोआगमदव्वजहणं चेदि । तत्थ
जहणपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वजहणं । णोआगमदव्वजहणं तिविहं
जाणुगसरीरं-भविय-तव्वदिरित्तणोआगमदव्वजहणमेण । जाणुगसरीरं भविय गदं । तव्व-
दिरित्तणोआगमदव्वजहणं दुविहं— ओघजहणमादेसजहणं चेदि । तत्थ ओघजहणं चउ-
व्विहं— दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वजहणमेगो परमाणु । खेत्त-
जहणमेगो आगासपदेसो । कालजहणमेगो समओ । भावजहणं परमाणुमिह एगो
णिद्धत्तगुणे । आदेसजहणं पि दव्व-खेत्त-काल-भावमिह चउव्विहं । तत्थ दव्वदो आदेस-
जहणं उच्चदे । तं जहा— तिपदेसियक्खंधं दट्ठण दुपदेसियक्खंधो आदेसदो दव्व-

इसी प्रकार शेष सातों कर्मोंके उत्कृष्ट आदि पदोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥५॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणकी पदमीमांसा की गई है उसी प्रकार शेष सात
कर्मोंकी पदमीमांसा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है । इस
प्रकार ओजानुयोगद्वारगर्भित पदमीमांसा नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

स्वामित्व दो प्रकार है—जघन्य पदमें और उत्कृष्ट पदमें ॥ ६ ॥

उनमेंसे जघन्य पद चार प्रकार है—नामजघन्य, स्थापनाजघन्य, द्रव्यजघन्य
और भावजघन्य । इनमें नामजघन्य और स्थापनाजघन्य सुगम हैं । द्रव्यजघन्य
दो प्रकार है— आगमद्रव्यजघन्य और नोआगमद्रव्यजघन्य । उनमें जघन्य प्राभूतका
ज्ञानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यजघन्य है । नोआगमद्रव्यजघन्य तीन
प्रकार है— ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यजघन्य, भावी नोआगमद्रव्यजघन्य और
तद्द्रव्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यजघन्य । इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्य-
जघन्य ध्वित हैं । तद्द्रव्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यजघन्य दो प्रकार है ओघजघन्य और
आदेशजघन्य । उनमें द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षासे ओघजघन्य चार प्रकार
है । इसमेंसे एक परमाणुको द्रव्यजघन्य कहा जाता है । एक आकाशप्रवेश क्षेत्रजघन्य
है । कालजघन्य एक समय है । परमाणुमें रहनेवाला एक स्निग्धत्व गुण भावजघन्य है ।

आदेशजघन्य भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है ।
इनमें द्रव्यसे आदेशजघन्यकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— तीन प्रवेश-

जहणं । एवं सेसेसु वि णेयव्वं । तिपदेसोगाढद्वं दट्ठण दुपदेसोगाढद्वं खेत्तदे । आदेस-
जहणं । एवं सेसेसु वि णेयव्वं । तिसमयपरिणदं दट्ठण दुसमयपरिणदं दव्वमादेसदे
कालजहणं । एवं सेसेसु वि णेयव्वं । तिगुणपरिणदं दव्वं दट्ठण दुगुणपरिणदं दव्वं भावदे
आदेसजहणं । भावजहणं दुविहं— आगमभावजहणं णोआगमभावजहणं चेदि । तत्थ
जहणपाहुडजाणगे उवजुतो आगमभावजहणं । सुहुमणिगादलद्धिअपज्जतयस्स जं मव्व-
जहणं णाणं तं णोआगमभावजहणं । एत्थ ओघजहणकालेण पयदं, सव्वजहणद्धिदीए
अहियारादे ।

उक्कस्सं चउव्विहं णाम-डुवणा-दव्व-भावउक्कस्सभेएण । तत्थ णाम डुवणुक्क-
स्साणि सुगमाणि । दव्वुक्कस्सं दुविहमागमदव्वुक्कस्सं णोआगमदव्वुक्कस्सं चेदि । तत्थ
उक्कस्सपाहुडजाणओ अनुवजुतो आगमदव्वुक्कस्सं । णोआगमदव्वुक्कस्सं तिविहं जाणुग-
सरीर-भविष्य-तव्वदिरित्तणोआगमदव्वुक्कस्सभेएण । जाणुगसरीर-भविष्येणोआगमदव्वुक्क-
स्साणि सुगमाणि । तव्वदिरित्तणोआगमदव्वुक्कस्सं दुविहं— आणुक्कस्समादेसुक्कस्सं चेदि ।
तत्थ आणुक्कस्सं चउव्विहं— दव्वदे खेत्तदे कालदे भावदे चेदि । तत्थ दव्वदे उक्कस्सं
महाखेदे । खेत्तदे उक्कस्समागासं । कालदे उक्कस्सं सव्वकालं । भावदे उक्कस्सं

वाले स्कन्धकी अपेक्षा दो प्रदेशवाला स्कन्ध आदेशद्रव्यजघन्य है । इसी प्रकार दोष
प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये । तीन प्रदेशोंमें अवगाहन करनेवाले द्रव्यकी अपेक्षा
दो प्रदेशोंमें अवगाहन करनेवाला द्रव्य क्षेत्रमें आदेशजघन्य है । इसी प्रकार दोष
प्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये । तीन समयोंमें परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो समयोंमें
परिणत द्रव्य आदेशसे कालजघन्य है । इसी प्रकार दोष समयोंमें भी ले जाना चाहिये ।
तीन गुणोंमें परिणत द्रव्यकी अपेक्षा दो गुणोंमें परिणत द्रव्य भावसे आदेशजघन्य है ।

भाषजघन्य दो प्रकार है— आगमभाषजघन्य और नोआ-मभाषजघन्य ।
उनमें जघन्य प्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभाषजघन्य है । सूक्ष्म निगोड
लब्धपर्याप्तकका जो सबसे जघन्य ज्ञान है वह नोआगमभाषजघन्य है । यहाँ ओघ
जघन्यकाल प्रकृत है, क्योंकि, यहाँ सर्वजघन्य स्थितिका अधिकार है ।

नाम, स्थापना, द्रव्य और भावके भेदसे उत्कृष्ट चार प्रकार है । उनमें नाम-
उत्कृष्ट और स्थापनाउत्कृष्ट सुगम हैं । द्रव्य उत्कृष्ट दो प्रकार है— आगमद्रव्य उत्कृष्ट
और नोआगमद्रव्य उत्कृष्ट । उनमें उत्कृष्ट प्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव
आगमद्रव्यउत्कृष्ट है । नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट तीन प्रकार है— शायकशरीर, भावी
और तदव्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट । इनमें शायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्य-
उत्कृष्ट सुगम हैं । तदव्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यउत्कृष्ट दो प्रकार है— ओघउत्कृष्ट और
आदेशउत्कृष्ट । उनमें ओघउत्कृष्ट द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है ।
उनमें द्रव्यकी अपेक्षा उत्कृष्ट महा स्कन्ध है । क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट आकाश है ।
कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट सर्व काल है । भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट सर्वोत्कृष्ट वर्ण, गन्ध, रस
और स्पर्शसे युक्त द्रव्य है ।

सव्वकस्सवण्ण-गंध-रस-फासदव्वं । आदेसुक्कस्सं चउव्विहं — दव्वदो खेत्तदो कालदो भावदो चेदि । तत्थ दव्वदो एगपरमाणुं ददट्ठण दुपदेसिओ खंधो आदेसुक्कस्सं । दुपदेसियं खंधं ददट्ठण तिपदेसियक्खंधो वि आदेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि नेयय्वं । खेत्तदो एयक्खेत्तं ददट्ठण दोखेत्तपंदसा आदेसदो उक्कस्सखेत्तं । एवं सेसेसु वि नेयय्वं । कालदो एगसमयं ददट्ठण दोसमहयं आदेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि नेयय्वं । भावदो एगगुणजुत्तं ददट्ठण दुगुणजुत्तं दव्वमादेसुक्कस्सं । एवं सेसेसु वि नेयय्वं । भावुक्कस्सं दुविहं — आगम-णोआगमभावुक्कस्समेएण । तत्थ उक्कस्सपाहुडजाणओ उव्वजुत्तो आगमभावुक्कस्सं । णोआगम-भावुक्कस्सं केवलणाणं । एत्थ ओघकालुक्कस्सण अहियारो । एत्थ कालदो ओघुक्कस्सं सव्वकालो नि भणिदं, तस्सेत्थ गहणं ण कायव्वं; कम्मट्ठिदीए तदसंभवादो । जहणपदे एगं सामित्तं अण्णगमुक्कस्सपदे, एवं सामित्तं दुविहं चैव होदि; अण्णस्सासंभवादो ।

**सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीयवेयणा कालदो उक्क-
स्सिया कस्स ? ॥ ७ ॥**

उक्कस्सपदधिदो जहणपदपडिसेहफलो । णाणावरणधिदो सेसकम्मपडिसेहफलो ।

आदेशउत्कृष्ट द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा चार प्रकार है । उनमें एक परमाणुकी अपेक्षा दो प्रदेशवाला स्कन्ध द्रव्यकी अपेक्षा आदेशउत्कृष्ट है । दो प्रदेशवाले स्कन्धकी अपेक्षा तीन प्रदेशवाला स्कन्ध भी द्रव्यसे आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष प्रदेशोंके विषयमें ले जाना चाहिये । एक प्रदेश रूप क्षेत्रकी अपेक्षा दो क्षेत्रप्रदेश क्षेत्रसे आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष क्षेत्रप्रदेशोंमें भी ले जाना चाहिये । एक समयकी अपेक्षा दो समय परिणत द्रव्य कालसे आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष समयोंमें भी ले जाना चाहिये । एक गुण युक्त द्रव्यकी अपेक्षा दो गुण युक्त द्रव्य भावसे आदेशउत्कृष्ट है । इसी प्रकार शेष गुणोंमें भी ले जाना चाहिये ।

भावउत्कृष्ट आगमभावउत्कृष्ट और नोआगमभावउत्कृष्टके भेदसे दो प्रकार है । उनमें उत्कृष्ट प्राभुक्ता जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावउत्कृष्ट है । नोआगम-भावउत्कृष्ट केवलज्ञान है । यहाँ ओघउत्कृष्ट कालका अधिकार है । यहाँ कालकी अपेक्षा ओघउत्कृष्ट सब काल कहा गया है, उसका यहाँ ग्रहण नहीं करना चाहिये; क्योंकि, कर्मस्थितिमें उसकी सम्भावना नहीं है । एक स्वामित्व जघन्य पदमें और दूसरा एक उत्कृष्ट पदमें, इस प्रकार स्वामित्व दो प्रकार ही है; क्योंकि, इनके अतिरिक्त और दूसरे स्वामित्वकी सम्भावना नहीं है ।

स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके होती है ? ॥ ७ ॥

सूत्रमें उत्कृष्ट पदका निर्देश जघन्य पदके प्रतिषेधके लिये किया गया है । ज्ञानावरण पदका निर्देश शेष कर्मोंके प्रतिषेधके लिये है । कालका निर्देश क्षेत्र आविधा

काळगिरेसो खेत्तादिपडिसहफलो । कसेसि ति किं देवस्स किं णेरइयस्स किं मणुस्सस्स किं तिरिक्खस्सेसि पुच्छा ।

अण्णदरस्स पंचिंदियस्स सण्णिस्स मिच्छाइट्टिस्स सन्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्स कम्मभूमियस्स अकम्मभूमियस्स वा कम्मभूमिपडिभागस्स वा संखेज्जवासाउअस्स वा असंखेज्जवासाउअस्स वा देवस्स वा मणुस्सस्स वा तिरिक्खस्स वा णेरइयस्स वा इत्थिवेदस्स वा पुरिमवेदस्स वा णउंसयवेदस्स वा जलचरस्स वा थलचरस्स वा खगचरस्स वा सागार-जागार-सुदोवजोगजुत्तस्स उक्कस्सियाए ट्ठिदिए उक्कस्सट्ठिदिसंकिलेसे वट्टमाणस्स, अधवा ईसिमज्झमपरिणामस्स तस्स णाणावरणीयवेयणा कालदो उक्कस्स ॥८॥

अण्णदरस्सेसि ति गिरेसो ओगाहणादीणं पडिउहाभावपदुग्गायणफलो । पंचिंदियस्सेसि ति गिरेसो त्रिगर्लिंदियपडिसहफलो ? णाणावरणीयस्स उक्कस्सिये ट्ठिदिं पंचिंदिया चेव बंधांत, जो विगर्लिंदिया इदि जं वुत्तं होदि । ते च पंचिंदिया दुविहा — सण्णो अस-

प्रतिषेध करनेवाला है । 'किसके होती है' इससे वह क्या देवके होती है, क्या नारकीके होती है, क्या मनुष्यके होती है, और क्या तिर्यक्के होती है, इस प्रकार पुच्छा की गई है ।

अन्यतर पंचेन्द्रिय जीवके— जो संज्ञी है, मिथ्यादृष्टि है, सप्त पर्याप्तियोंसे पर्याप्त है; कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज अथवा कर्मभूमिप्रतिभागेत्यन्न है; संख्यातवर्षायुष्क अथवा असंख्यातवर्षायुष्क है; देव, मनुष्य, तिर्यक् अथवा नारकी है; स्त्रीवेद, पुरुषवेद अथवा नपुंसकवेदमेंसे किसी भी वेदसे संयुक्त है; जलचर, थलचर अथवा नमचर है; साकार उपयोग-वाला है, जाग्रत है, श्रुतोपयोगसे युक्त है, उत्कृष्ट स्थिति के बन्ध योग्य उत्कृष्ट स्थिति-संकलेशमें वर्तमान है, अथवा कुछ मध्यम संकलेश परिणामसे युक्त है, उसके ज्ञानावरणीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ ८ ॥

सुखमें अन्यतर पदका निर्वेश अवगाहना आदिकोंके प्रतिषेधके अभावको सूचित करता है । पंचेन्द्रिय पदका निर्वेश विकलेन्द्रियका प्रतिषेध करता है । इससे यह कथित होता है कि ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थितिको पंचेन्द्रिय जीव ही बांधते हैं, विकलेन्द्रिय नहीं बांधते । ये पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं— संज्ञी और असंज्ञी

णिणो चेदि । तत्थ असण्णिणो उक्कस्सियं द्विदिं ण बंधंति सि जाणावणं सण्णिस्से ति णिहिंदं । ते च सण्णिपंचिंदिया गुणद्वाणेषण चोइसविहा । तत्थ सासणादओ उक्कस्सियं द्विदिं ण बंधंति ति जाणवणं मिच्छाइडिस्से ति णिहिंदं । ते च मिच्छाइडिणो पज्जत्तयदा अपज्जत्तयदा चेदि दुविहा । तत्थ अपज्जत्तयदा उक्कस्सियं द्विदिं ण बंधंति ति जाणावणं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्से ति भणिदं । पंचिंदियपज्जत्तमिच्छाइडिणो कम्मभूमा अकम्मभूमा चेदि दुविहा । तत्थ अकम्मभूमा उक्कस्सिद्विदिं ण बंधंति, पण्णारसकम्मभूमीसु उत्पण्णा चेव उक्कस्सिद्विदिं बंधंति ति जाणावणं कम्मभूमियस्स वा ति भणिदं । भोगभूमीसु उत्पण्णाणं व देव-णेइयाणं सयंपदण्णेंदपव्वदस्स बाहिरभागप्पहुडि जाव सयंभूरमणससुदो ति एत्थ कम्मभूमिपडिभागम्मि उत्पण्णतिरिक्खाणं च उक्कस्सिद्विदिबंधपडिसेहे पत्ते तण्णिराकरणं अकम्मभूमिस्स वा कम्मभूमिपडिभागस्स वा ति भणिदं । अकम्मभूमिस्स वा ति उत्ते देव-णेइया घेत्त्वा । कम्मभूमिपडिभागस्स वा ति उत्ते सयंपदण्णेंदपव्वदस्स बाहिरे भणि समुत्पण्णाणं गहणं । संखेज्जवासाउअस्स वा ति उत्ते अङ्गाइज्जदीव-समुद्दुत्पण्णरस कम्मभूमिपडिभागुत्पण्णस्स च गहणं । असंखेज्जवासाउअस्स वा ति उत्ते देव-णेइयाणं गहणं, ण समयाहियपुव्वकोटिणहुडि-उवरिमआउअतिरिक्ख-मणुराणं गहणं, पुव्वसुत्तेण तेसिं विहिदपडिसेहत्तादो । देव-

उनमें अंशही पंचेन्द्रिय उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ संज्ञी पदका निर्देश किया है । ये संज्ञी पंचेन्द्रिय गुणस्थानोंके भेदसे चौदह प्रकार हैं । उनमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदिक उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश किया है । ये मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो प्रकार हैं । उनमें अपर्याप्तक उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ 'सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ' ऐसा कहा है । पंचेन्द्रिय पर्याप्त मिथ्यादृष्टि कर्मभूमिज और अकर्मभूमिज इस तरह दो प्रकारके हैं । उनमें अकर्मभूमिज उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, किन्तु पन्द्रह कर्मभूमियोंमें उत्पन्न हुए जीव ही उत्कृष्ट स्थितिको बांधते हैं; इस बातके ज्ञापनार्थ 'कर्मभूमिज' पदका निर्देश किया है । भोगभूमियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके समान देव-नारकियोंके तथा स्वयंप्रभ पर्वतके बाह्य भागसे लेकर स्वयंभूरमण समुद्र तक इस कर्मभूमिप्रतिभागमें उत्पन्न हुए तिर्यचोंके भी उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका प्रतिषेध प्राप्त होनेपर उसका निराकरण करनेके लिये 'अकर्मभूमिजके अथवा कर्मभूमिप्रतिभागोत्पन्न जीवके' ऐसा कहा है । अकर्मभूमिज पदसे देव-नारकियोंका ग्रहण करना चाहिये । कर्मभूमिप्रतिभाग पदका निर्देश करनेपर स्वयंप्रभ पर्वतके बाह्य भागमें उत्पन्न हुए जीवोंका ग्रहण किया गया है । 'संख्यात-वर्षायुष्क' कहनेपर अर्द्धाई बीप-समुद्रोंमें उत्पन्न हुए तथा कर्मभूमिप्रतिभागमें उत्पन्न हुए जीवका ग्रहण करना चाहिये । 'असंख्यातवर्षायुष्क' से देव-नारकियोंका ग्रहण किया गया है । इस पदसे एक समय अधिक पूर्वकोटि आदि उपरिम आयुधिकत्वासे संयुक्त तिर्यचों व मनुष्योंका ग्रहण नहीं करना चाहिये, क्योंकि, पूर्व सूत्रसे उनका

गेरइयसु संखेज्जवासाउअत्तमिदि भणिदे सच्चं ण ते असंखेज्जवासाउआ, किंतु संखेज्ज-
वासाउआ चेव; समयाहियपुव्वकोटिप्पहुडिउवरिमआउअवियप्पाणं असंखेज्जवासाउअत्त-
ब्भुवगमादो। कथं समयाहियपुव्वकोटीए संखेज्जवासाए असंखेज्जवासत्तं ? ण, रायस्सखो व
रुद्धिवलेण परिचत्तसगट्टस्स असंखेज्जवस्ससरस्स^१ आउअविसेसग्गि वट्टमाणस्स गहणादो।

चउग्गइसण्णिपंचिदियपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणं उक्कस्सट्ठिदिबंधपडिसेहो णत्थि ति
जाणावणट्ठं देवस्स वा मणुस्सस्स वा तिरिक्खस्स वा गेरइयस्स वा ति उत्तं। तिसु
वि वेदेसु उक्कस्सट्ठिदिबंधपडिसेहो णत्थि ति जाणावणट्ठमित्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा
णउंसवेदस्स वा ति भणिदं। चरणविसेसाभावपदुप्पायणट्ठं जलचरस्स वा थलचरस्स वा खग-
चरस्स वा ति भणिदं। तत्थ मच्छ-कच्छवादओ जलचरा, सीह-वय-वग्गादओ थलचरा,
गद्ध-डेंक-सेणादओ खगचरा। दंसणोवजोगजुत्ता उक्कस्सट्ठिदि ण बंधंति, णाणोवजोगजुत्ता
वेव बंधंति ति जाणावणट्ठं सागारणिहेसो कदो। सुतो उक्कस्सट्ठिदि ण बंधदि, जगंतो

प्रतिषेध किया जा चुका है।

शंका—देव व नारकी तो संख्यातवर्षायुष्क ही होते हैं, फिर यहां उनका
ग्रहण असंख्यातवर्षायुष्क पदसे कैसे सम्भव है ?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि सचमुचमें वे असंख्यातवर्षायुष्क
नहीं हैं, किन्तु संख्यातवर्षायुष्क ही हैं; परन्तु यहां एक समय अधिक पूर्वकोटिको आदि
लेकर आगेके आयुविकल्पोंको असंख्यातवर्षायुष्के भीतर स्वीकार किया गया है।

शंका—एक समय अधिक पूर्वकोटिके संख्यातवर्षरूपता होते हुए भी
असंख्यातवर्षरूपता कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, राजवृक्ष (वृक्ष विशेष) के समान 'असंख्यातवर्ष' शब्द
कहि वंश अपने अर्थको छोड़कर आयुविशेषमें रहनेवाला यहां ग्रहण किया गया है।

चारों गतियोंके संज्ञा पंचेन्द्रिय पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके उत्कृष्ट स्थितिके
बन्धका प्रतिषेध नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थ देवके, मनुष्यके, तिर्यचके अथवा
नारकीके, ऐसा कहा है। तानों ही वेदोंमें उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका प्रतिषेध नहीं
है, इस बातके ज्ञापनार्थ 'खंविर्इकि, पुरुषवेदीके अथवा नपुंसकवेदीके' ऐसा कहा
है। चरण अर्थात् गमनविशेषका अभाव बतलानेके लिये 'जलचरके, थलचरके
अथवा नभचरके' ऐसा कहा है। उनमें मत्स्य और कच्छप आदि जीव जलचर,
सिंह, शुक और बाघ आदि थलचर, तथा गृध्र, डेंक और श्येन आदि नभचर जीव हैं।
दर्शनोपयोगसे सहित जीव उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, किन्तु ज्ञानोपयोग
युक्त जीव ही उसे बांधते हैं। इस बातके जललानेके लिये 'साकार' पदका निर्देश किया
गया है। सोया हुआ जीव उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बांधता है, किन्तु जाग्रत जीव ही

१ तापतिभाष्येऽप्य । श्रौतु 'समाहि' इति पाठः । २ श्रौतु '— सदस्स', ताप्रती 'सद (र) स्स' इति पाठः ।

३ तापतिभाष्येऽप्य । अ-कप्रत्योः 'जलचरा सीह-'; अप्रती 'जलचरासि सीह-' इति पाठः ।

‘वेव बंधदि ति जाणावणं जागतग्गहणं कदं । सुदोवजोगजुत्तो चेव उक्कस्सड्ढिदि बंधदि, ण मदिउवजोगजुत्तो ति जाणावणं सुदोवजोगजुत्तसे ति भणिदं ।

उक्कस्सियाए हिदीए बंधपाओग्गसंकिलेसद्वाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि अत्थि । तत्थ चरिमसंकिलेसद्वाणेण उक्कस्सड्ढिदि बंधदि ति जाणावणं उक्कस्सड्ढिदीए उक्कस्सड्ढिसंकिलेसे’ वट्ठमाणस्से ति भणिदं । उक्कस्सड्ढिदिबंधपाओग्गसंसंकिलेसद्वाणेहि उक्कस्सड्ढिदिबंधस्स पडिसेहे पत्ते तेहि वि बंधदि ति जाणावणं ईसिमज्झिमपरिणामस्से ति उचं । अथवा, उक्कस्सड्ढिदिबंधपाओग्गअसंखेज्जलोगमेत्तसंकिलेसद्वाणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागमेत्तखंडाणि काट्ठण तत्थ चरिमखंडस्स उक्कस्सड्ढिसंकिलेसो णाम । तत्थ वट्ठमाणस्स उक्कस्सड्ढिदिबंधो होदि । सेसदुचरिमादिखेडेहि उक्कस्सड्ढिदिबंधपडिसेहे पत्ते तेहि वि उक्कस्सड्ढिदिबंधो होदि ति जाणावणं ईसिमज्झिमपरिणामस्से ति उचं । एवं-विहेण जीवेण णाणावरणीयस्स तीसंसामरोवमकोडाकोडिडिदिबंधे पवडे तस्स णाणावरणीय-वेयणा कालदेो उक्कस्सा ।

तत्त्वदिरित्तमणुक्कस्सा ॥ ९ ॥

उसे बांधता है; इस बातके ज्ञापनार्थ ‘जायुत’ पदका ग्रहण किया है। श्रुतोपयोग युक्त जीव ही उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है, न कि मतिउपयोग युक्त जीव; इस बातके ज्ञापनार्थ ‘श्रुतोपयोग युक्त जीवके’ ऐसा कहा है।

उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध योग्य संक्लेशस्थान असंख्यात लोक प्रमाण हैं। उनमेंसे अन्तिम संक्लेशस्थानके द्वारा उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है, इस बातके ज्ञापनार्थ ‘उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध योग्य उत्कृष्ट स्थितिसंक्लेशमें वर्तमान’ ऐसा कहा है। अब इससे उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध योग्य शेष संक्लेशस्थानोंके द्वारा उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका निषेध प्राप्त होनेपर उनसे भी उक्त स्थितिको बांधता है, इस बातको जतलानेके लिये ‘कुछ मध्यम परिणामोंसे युक्त जीवके’ ऐसा कहा गया है। अथवा, उत्कृष्ट स्थितिके बन्ध योग्य असंख्यात लोक प्रमाण संक्लेशस्थानोंके पत्योपपत्तेके असंख्यातवें भाग मात्र खण्ड करके उनमें अन्तिम खण्डका नाम उत्कृष्ट स्थितिसंक्लेश है। इस अन्तिम खण्डमें रहनेवाले जीवके उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध होता है। अब इससे शेष द्विचरम आदिक खण्डोंके द्वारा उत्कृष्ट स्थितिके बन्धका प्रतिषेध प्राप्त होनेपर उनसे भी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध होता है, इस बातके ज्ञापनार्थ ‘कुछ मध्यम परिणामोंसे युक्त जीवके’ ऐसा कहा है। उपर्युक्त विशेषणोंसे विशिष्ट जीवके द्वारा ज्ञानावरणीयके तीस कोडा-कोडि सागरोपम प्रमाण स्थितिवन्धके बांधनेपर उसके ज्ञानावरणीयकी वेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है।

उससे भिन्न अनुत्कृष्ट वेदना होती है ॥ ९ ॥

तदो वदिरिच्चं तव्वदिरित्तं, उक्कस्सट्ठिदिबंधवदिरिता' अणुक्कस्सट्ठिदिवेयणा होदि त्ति उच्चं होदि । सा च अणेष्यप्यारा त्ति तिस्से सामिणो वि अणेष्यविद्वा होति । तेस्सि परूवणं कस्सामो । तं जहा— तिण्णिवारुसहस्समाबाधं कादण तीसंसागरोवमकोडाकोडि-ट्टिदीए पवद्धाए उक्कस्सट्ठिदी होदि । पुणा अण्णेण जीवेण समज्जणतीसंसागरोवमकोडा-कोडीसु बद्धासु पढमणुक्कस्सट्ठानं होदि । एत्थ उक्कस्सट्ठिदिपमाणं संदिट्ठीए चत्तालीस-रूवाहियदुसदमेत्तं । २४० । अणुक्कस्सुक्कस्सट्ठिदीए गुणचालीसरूवाहियदुसदमेत्ता । २३९ । तदो अण्णेण जीवेण दुसमज्जणुक्कस्सट्ठिदीए पवद्धाए बिदियमणुक्कस्सट्ठानं होदि । तस्स पमाणमेदं । २३८ । एदेण कमेण आवाधाकंदएणूण उक्कस्सट्ठिदीए पवद्धाए अण्णमणुक्कस्सट्ठानं होदि । एत्थ आवाधाकंदयपमाणं तीसरूवाणि । ३० । एदम्मि उक्कस्सट्ठिदिम्मि सेहिदे तदित्थट्ठिदिबंधट्ठानमेत्तियं होदि । २९० ।

संघिह उक्कस्सावाहा समज्जणा होदि । कुदो ? आवाहाचरिमसमए पढमणिसेय-णिवादादो । संदिट्ठीए उक्कस्सावाधपमाणमड्डु ८ । पुणा समयाहियआवाधाकंदएणूण-उक्कस्सट्ठिदीए पवद्धाए सो अण्णो अणुक्कस्सट्ठानावियप्पो होदि । २०९ । एदेण कमेण दोआवाधाकंदएहि जणुक्कस्सट्ठिदीए पवद्धाए सो अण्णो अणुक्कस्सट्ठिदिवियप्पो । १८० ।

उससे व्यतिरिक्त अर्थात् उत्कृष्ट स्थितिवन्धसे भिन्न अनुत्कृष्ट स्थितिबेदना होती है, यह सूत्रका अर्थ है । वह चूंकि अनेक प्रकारकी है, अतः उसका स्वामी भी अनेक प्रकारके हैं । उनकी प्ररूपणा करने हैं । वह इस प्रकार है—तीन हजार वर्ष आबाधा करके तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र स्थितिके बांधनेपर उत्कृष्ट स्थिति होती है । फिर अन्य जीवके द्वारा एक समय कम तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिके बांधनेपर प्रथम अनुत्कृष्ट स्थान होता है । यहाँपर उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण संहट्टिमें दो सौ चालीस (२४०) अंक है । अनुत्कृष्ट उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण दो सौ उनतालीस (२३९) अंक है । उससे अन्य जीवके द्वारा दो समय कम उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर द्वितीय अनुत्कृष्ट स्थान होता है । उसका प्रमाण यह है—२३८ । इस क्रमसे आवाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर अन्य अनुत्कृष्ट स्थान होता है । यहाँ आवाधाकाण्डकका प्रमाण तीस अंक (३०) है । इसको उत्कृष्ट स्थितिमेंसे घटा, देनेपर वहाँका स्थितिवन्धस्थान इतना होता है—२४० - ३० = २१० ।

अब उत्कृष्ट आवाधा एक समय कम हो जाती है, क्योंकि, आवाधाके अन्तिम समयमें प्रथम निषेक निर्जोण हो चुका है । संहट्टिमें उत्कृष्ट आवाधाका प्रमाण आठ (८) है । पश्चात् एक समय अधिक आवाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर वह अन्य अनुत्कृष्ट स्थानविकल्प होता है — २४० - (३० + १) = २०९ । इस क्रमसे दो आवाधाकाण्डकोंसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर वह अन्य अनुत्कृष्ट स्थिति-विकल्प होता है — २४० - ६० = १८० । इस प्रकार इसी क्रमसे एक समय कम दो

पुणो बिदिओ जीवो समऊणुक्कीरणद्धाए अहियसमयाहियधुवडिदीए सह एइंदिएसु उववण्णो । तदो अण्णो तदिओ जीवो समऊणुक्कीरणद्धाए अहियदुसमयाहियधुवडिदीए सह एइंदिएसु उववण्णो । पुणो चउत्थो जीवो समऊणुक्कीरणद्धाए अहियतिसमयाहियधुवडिदीए सह एइंदिएसु उववण्णो । पुणो अण्णो जीवो समऊणुक्कीरणद्धाए चदुसमयाहियधुवडिदीए च एइंदिएसु उववण्णो । एवं समऊणुक्कीरणद्धाए एगेगसमयाहियधुवडिदीए च ताव उप्पादे-दव्वं जाव समऊणुक्कीरणद्धाए एगसगलट्टिदिखंडएण च अब्भहियधुवडिदीए एइंदिएसु पविट्ठो ति । एवं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवा एगसमएण एइंदिएसु पवेसिदव्वा ।

पुणो एदेसु रूवाहियट्टिदिकंदयमेत्तजीवेसु ट्टिदिघादं करमाणेसु धुवडिदीए हेड्डा ट्टिदिसंतट्ठाणुप्पचीए भण्णमाणए समऊणुक्कीरणद्धाए अहियधुवडिदीए सह एइंदिएसु उप्पण्णेण पढमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । एदं ट्टिदिसंतट्ठाणं पुणरुत्तं, धुवडिदीए उवीर समुप्पत्तीदो । पुणो बिदियफालिपदिदसमए चेव उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तं चेव । एवं^१ णेदव्वं जाव ट्टिदिखंडयचरिमफालि-मपादिय उक्कीरणद्धाए चरिमसमयं धेरदूण ट्टिदो ति । पुणो एदमेवं^२ चेव इविय समऊणु-

एकेन्द्रियोंमें प्रविष्ट हुआ । फिर दूसरा जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक और एक समयसे अधिक भ्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ । उससे अन्य तीसरा जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक और वो समयोंसे अधिक भ्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ । पुनः चतुर्थ जीव एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक और तीन समयोंसे अधिक भ्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ । पुनः अन्य जीव एक समय कम उत्कीरणकाल और चार समय अधिक भ्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुआ । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल और एक एक समय अधिक भ्रुवस्थितिके साथ एक समय कम उत्कीरणकाल और एक सम्पूर्ण स्थितिकाण्डकेसे अधिक भ्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें प्रविष्ट होने तक उत्पन्न कराना चाहिये । इस प्रकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र जीवोंको एक समयसे एकेन्द्रियोंमें प्रविष्ट कराना चाहिये ।

पुनः एक अधिक स्थितिकाण्डक मात्र इन जीवोंके द्वारा स्थितिघात करते रहनेपर भ्रुवस्थितिके नीचे स्थितिसत्त्वस्थानोंकी उत्पत्तिका कथन करते समय एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक भ्रुवस्थितिके साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवके द्वारा प्रथम फालिके पतित करायें जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह स्थितिसत्त्वस्थान पुनरुक्त है, क्योंकि, उसकी भ्रुवस्थितिके ऊपर उत्पत्ति है । पुनः द्वितीय फालिके पतित होनेके समयमें ही उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी स्थान पुनरुक्त ही है । इस प्रकार स्थितिकाण्डकी अन्तिम फालिको पतित न कराकर उत्कीरणकालके अन्तिम समयको लेकर स्थित जीव तक ले जाना चाहिये ।

क्कीरणद्धाए समलेगडिदिखंडएण च अहियधुवडिदीए एइंदिएसु उप्पण्णजीवेण पढमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । एदं ड्ढिदिसंतट्ठाणं पुणरुत्तं होदि, धुवडिदीदो अहियत्तादो । बिदियफालिपदिदसमए चेव उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि ट्ठाणं पुणरुत्तं चेव । तदियफालिपदिदसमए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि । ड्ढिदि-संतट्ठाणं पुणरुत्तं होदि । एवं नेदव्वं जाव अंतोमुहुत्तमेत्तड्ढिदिउक्कीरणसमयाणं दुचरिम-समओ ति । पुणो ड्ढिदिउक्कीरणकालचरिमसमए गलिदे पढमड्ढिदिखंडयस्स चरिमफाली पददि । एदमपुणरुत्तट्ठाणं होदि, धुवडिदि पेक्खिदूण समउणट्ठाणादो ।

पुणो समउण्णक्कीरणद्धाए समउण्णड्ढिदिखंडएण च अहियधुवडिदीए सह एइंदिएसु उप्पण्णजीवेण पढमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । एदं ट्ठाणं पुणरुत्तं होदि । बिदियफालीए सह उक्कीरणद्धाए बिदियसमए गलिदे वि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । तदियफालीए सह उक्कीरणद्धाए तदियसमए गलिदे वि पुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं नेदव्वं जाव समउण्णक्कीरणद्धामेत्तफालीओ पदिदाओ ति ।

पुणो ड्ढिदिकंडयचरिमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदम-पुणरुत्तट्ठाणं होदि । कुदो ? ड्ढिदिकंदयचरिमफालीए पादिदाए सेसड्ढिदिसंत समउणधुव-

फिर इसको इसी प्रकार ही स्थापित करके एक समय कम उत्कीरणकाल और सम्पूर्ण एक स्थितिकाण्डकसे अधिक भुवस्थितिके साथ एकत्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवके द्वारा प्रथम फालिके पतित करनेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह स्थितिसत्त्वस्थान पुनरुक्त है, क्योंकि, वह भुवस्थितिके अधिक है । द्वितीय फालिके पतित होनेके समयमें ही उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी स्थान पुनरुक्त ही है । तृतीय फालिके पतित होनेके समयमें उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थितिके उत्कीरणकालके समयोंमें द्विचरम समय तक ले जाना चाहिये । पश्चात् स्थितिउत्कीरणकालके अन्तिम समयके गलनेपर प्रथम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालि पतित हो चुकती है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, भुवस्थितिकी अपेक्षा यह स्थान एक समय कम है ।

पुनः एक समय कम उत्कीरणकालसे और एक समय कम स्थितिकाण्डकसे अधिक भुवस्थितिके साथ उत्पन्न हुए जीवके द्वारा प्रथम फालिके पतित करनेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह स्थान पुनरुक्त है । द्वितीय फालिके साथ उत्कीरणकालके द्वितीय समयके गलनेपर भी पुनरुक्त स्थान होता है । तृतीय फालिके साथ उत्कीरणकालके तृतीय समयके गलनेपर भी पुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल मात्र फालियोंके पतित होने तक ले जाना चाहिये ।

तत्पश्चात् स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतित होनेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके पतित होनेपर शेष स्थितिसत्त्व एक समय कम भुवस्थिति प्रमाण होकर फिर

ट्टिदिमेत्तं होदूण पुणो उक्कीरणद्धाए चरिमसमए गलिदे उवगयदुसमऊणधुवट्टिदितादो ।

पुणो तदियजीवेण समऊणुक्कीरणद्धाए दुरूऊणट्टिदिकंदएण च अब्भहियधुवट्टिदि-
संतकम्मिएण पढमट्टिदिकंदयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलिदि ।
एसो अणुक्कस्सट्टिदिवियप्पो पुणरुत्तो होदि । पुणो तेणव बिदियफालीए अवणिदाए
ट्टिदिखंडयउक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलिदि । [एदं] ट्टिदिट्ठाणं पुणरुत्तं होदि । तेणव
जीवेण पुणो तस्सेव ट्टिदिखंडयस्स तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ
गलिदि । एवमेदेण कमेण समऊणुक्कीरणद्धामेत्तसमएसु गलिदेसु तेत्तियमेत्ताओ चैव फालीओ
पदंति पुणरुत्तट्ठाणाणि च उत्पज्जंति । पुणो एदेणव जीवेण पढमट्टिदिखंडयस्स चरिमुक्कीरण-
समएण सह चरिमफालीए अवणिदाए अपुणरुत्तट्ठाणं हेदि । कुदो ? सेसट्टिदिसंतकम्मस्स ति-
रूवूणधुवट्टिदिपमाणत्तदंसणादो ।

पुणो चउत्थजीवेण समऊणुक्कीरणद्धाए तिरूऊणट्टिदिखंडएण अहियधुवट्टिदि-
संतकम्मिएण पढमट्टिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ
गलिदि, पुणरुत्तट्टिदिट्ठाणमुपज्जदि । पुणो तेणव तरस बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरण-
द्धाए तदियसमओ गलिदि । एदं पि ट्ठाणं पुणरुत्तमेव । एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तपुणरुत्त-

उत्कीरणकालके अन्तिम समयके गल जानेपर दो समय कम ध्रुवस्थिति पायी जाती है ।

पुनः एक समय कम उत्कीरणकाल और दो रूप कम स्थितिकाण्डकसे अधिक
ध्रुवस्थितिसत्त्व संयुक्त तृतीय जीवके द्वारा प्रथम स्थितिकाण्डक सम्बन्धी प्रथम फालिके
अलग करनेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह अनुत्कृष्ट स्थितिविकल्प
पुनरुक्त है । पश्चात् उसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके अलग करनेपर स्थितिकाण्डक-
उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह स्थितिस्थान पुनरुक्त है । उक्त
जीवके द्वारा फिरसे उसी स्थितिकाण्डककी तीसरी फालिके अलग किये जानेपर
उत्कीरणकालका तीसरा समय गलता है । इस प्रकार इस क्रमसे एक समय कम
उत्कीरणकाल प्रमाण समयोंके गल जानेपर उतनी ही फालियाँ पतित होती हैं और
पुनरुक्त स्थान उत्पन्न होते हैं । पश्चात् इसी जीवके द्वारा प्रथम स्थितिकाण्डकके
अन्तिम समयके साथ अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर अपुनरुक्त स्थान होता
है, क्योंकि, शेष स्थितिसत्त्व तीन रूपोंसे हीन ध्रुवस्थिति प्रमाण देखा जाता है ।

पुनः चतुर्थ जीवके द्वारा एक समय कम उत्कीरणकालसे और तीन समय
कम स्थितिकाण्डकसे अधिक ध्रुवस्थितिसत्त्वकर्मिक होकर प्रथम स्थितिकाण्डककी
प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है और
पुनरुक्त स्थितिस्थान उत्पन्न होता है । पश्चात् उसी जीवके द्वारा उक्त स्थितिकाण्डककी
द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह
भी स्थान पुनरुक्त ही है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त

हाणिसु उत्पण्णेषु पुणो पढमट्टिदिकंदयरस चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिम-
समथो गलदि । ताधे अपुणरुत्तङ्गाणमुपज्जदि । कुदे ? वादिदसेसट्टिदिसंतकम्मस्स चहु-
रुवणधुवट्टिदिपमाणत्तुवलमादो । एवमेदेण कमेण ट्टिदिखंडयमेत्तअपुणरुत्तङ्गाणि उप्पादिय
पुणो उक्कीरणदाए चरिमसमएण सह चरिमफालिं धरेदूण ट्टिदजीवेण चरिमफालीए अव-
णिदाए अण्णमपुणरुत्तङ्गाणं होदि । कुदे ? वादिदसेसट्टिदिसंतकम्मस्स रूवाहियट्टिदिखंडएण-
धुवट्टिदिपमाणत्तदंसणादो । एवं कदे रूवाहियट्टिदिखंडयमेत्ताणि चैव अपुणरुत्तङ्गाणि
लद्धाणि हवन्ति । वादिदसेससव्वजहण्णट्टिदिसंतकम्मं पेक्खिदूण पढमट्टिदिखंडयं वादिय
ट्टिविदसेसुक्कस्सट्टिदिसंतकम्मं ट्टिदिकंदयमेत्तेण अहियं होदि । पुणो एवं ट्टिदिसंतकम्म-
ट्टाणाणं विदियट्टिदिकंदयमस्सिदूण अपुणरुत्तङ्गाणुप्पत्तिं वचइस्सामो । तं जहा— एवे-
समउत्तरकमेण ट्टिदिसंतं धरेदूण ट्टिदरूवाहियकंदयमेत्तजीवेषु सव्वजहण्णट्टिदिसंतकम्म-
एण विदियट्टिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमथो गलदि ।
ताधे अपुणरुत्तङ्गाणं उपज्जदि, पुव्वित्तट्टिदिसंतकम्मादो एदस्स ट्टिदिसंतकम्मस्स सम-
ज्जत्तदंसणादो । पुणो एदेणैव विदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए विदिवसक्को
गलदि । एदं पि अपुणरुत्तङ्गाणं होदि । एवं समज्जुक्कीरणद्धामेत्तफालीओ पादिय लक्-

स्थानोंके उत्पन्न होनेपर पुनः प्रथम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । तब अपुनरुत्त स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि, उस समय घातनेसे शेष रहा स्थितिसन्तकर्म चार रूपोंसे कम भुवस्थिति प्रमाण पाया जाता है । इस प्रकार इस क्रमसे स्थितिकाण्डक प्रमाण अपुनरुत्त स्थानोंको उत्पन्न कराके पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयके साथ अन्तिम फालिको लेकर स्थित जीवके द्वारा अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर अन्य अपुनरुत्त स्थान होता है, क्योंकि, घातनेसे शेष रहा स्थितिसन्तकर्म एक अधिक स्थितिकाण्डकसे हीन भुवस्थिति प्रमाण देखा जाता है । ऐसा करनेपर एक अधिक स्थितिकाण्डकके बराबर ही अपुनरुत्त स्थान प्राप्त होते हैं । घातनेसे शेष रहे समस्त जघन्य स्थितिसन्तकर्मकी अपेक्षा प्रथम स्थितिकाण्डकका घात करके स्थापित किया हुआ शेष उत्कृष्ट स्थितिसन्तकर्म स्थितिकाण्डक मात्रसे अधिक होता है ।

अब इस प्रकारसे स्थितिसन्तकर्मस्थानोंके द्वितीय स्थितिकाण्डकका आश्रय करके अ पुनरुत्त स्थानोंकी उत्पत्तिको कहते हैं । यथा—एक एक समयकी अधिकताके क्रमसे स्थिति-
सर्वको लेकर स्थित एक अधिक स्थितिकाण्डक मात्र जीवोंमेंसे सर्वजघन्यस्थितिसन्त-
कर्मिक जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्की-
रणकालका प्रथम समय गलता है । उस समय अपुनरुत्त स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि, पूर्वके स्थितिसन्तकर्मकी अपेक्षा यह स्थितिसन्तकर्म एक समय कम देखा जाता है । फिर इसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी अपुनरुत्त स्थान होता है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल

उज्ज्वलकीरणद्वामेताणि चैव अपुनरुत्तङ्गाणि उप्पादेदन्वाणि । पुणो उक्कीरणद्वारे चरिम-
समएण बिदियट्टिदिखंडयचरिमफालिं घरेदूण ट्टिदं जीवमेवं चैव डुविय पुणो एदेसु जीवेसु
सञ्चुक्कस्सट्टिदिसंतकम्मिएण बिदियट्टिदिखंडयस्स पढमफालिए अवणिदाए पढमसमओ
गलदि । एदं ठाणं पुनरुत्तं होदि । बिदियफालिए अवणिदाए उक्कीरणद्वारे बिदिय-
समओ गलदि । एदं पि पुनरुत्तमेव । एवं समउज्ज्वलकीरणद्वामेत्तफालीओ जाव पदंति
ताव पुनरुत्ताणि चैव ट्ठाणाणि उप्पजंति । पुणो एदेणेव बिदियट्टिदिखंडयस्स चरिम-
फालिए अवणिदाए उक्कीरणद्वारे चरिमसमओ गलदि । एदमपुनरुत्तङ्गाणं होदि ।
कुदो ? पुच्चं उविदूणागदट्टिदिसंतकम्मं पेक्खिदूण एदस्स ट्टिदिसंतकम्मस्स समउज्ज-
दंसणादो । पुणो एदम्हादो बिदियजीवेण बिदियट्टिदिखंडयस्स पढमफालिए अवणिदाए
उक्कीरणद्वारे पढमसमओ गलदि । एदं पुनरुत्तङ्गाणं होदि । बिदियफालिए अवणिदाए
उक्कीरणद्वारे बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुनरुत्तमेव । एवं समउज्ज्वलकीरणद्वारे
मेत्तफालीसु पदमाणियासु पुनरुत्ताणि चैव ट्ठाणाणि उप्पजंति । पुणो एदेणेव बिदिय-
ट्टिदिखंडयस्स चरिमफालिए पादिदाए उक्कीरणद्वारे चरिमसमओ गलदि । एवं

प्रमाण फालियोंको अलग करके एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण ही अपुनरुक्त
स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये । पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयमें द्वितीय
स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिको लेकर स्थित जीवको इसी प्रकार स्थापित करके
फिर इन जीवोंमेंसे सर्वोत्कृष्ट स्थितिसत्कर्मिक जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी
प्रथम फालिके अलग किये जानेपर प्रथम समय गलता है । यह स्थान पुनरुक्त है ।
द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है ।
यह भी स्थान पुनरुक्त ही है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण
फालियां जब तक अलग होती हैं तब तक पुनरुक्त ही स्थान उत्पन्न होते हैं ।
फिर इसी जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके अलग
किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान
है, क्योंकि, पहिले स्थापित करके आये हुए स्थितिसत्कर्मिकी अपेक्षा यह स्थिति-
सत्कर्म एक समय कम देखा जाता है ।

तत्पश्चात् इस जीवकी अपेक्षा द्वितीय जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी
प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह
पुनरुक्त स्थान होता है । द्वितीय फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय
समय गलता है । यह भी स्थान पुनरुक्त ही है । इस प्रकार एक समय कम
उत्कीरणकाल प्रमाण फालियोंके अलग होने तक पुनरुक्त ही स्थान उत्पन्न
होते हैं । पश्चात् इसी जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके अलग
किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । इस प्रकार अन्तिम समयके

[चरिमसमए] गलिदे एदमपुणरुत्तङ्गाणं होदि, चरिमफालीए पादिदाए पुब्बित्ठजीविद्विदिसंतेण सेसङ्घिसंतं समाणं^१ होदण पुणो उक्कीरणद्दाए चरिमसमए गलिदे ततो समऊणं होदि चि। एदमत्थपदं उवरि सव्वत्थ वत्तव्वं।


पुणो ततो तदियजीवेण बिदियद्विदिसंढयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्दाए पढमसमओ गलिदि। गलिदे पुणरुत्तङ्गाणं होदि। बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्दाए बिदियसमओ गलिदि। एदं पि पुणरुत्तङ्गाणं होदि। पुणो तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्दाए तदियसमओ गलिदि। एदं पि पुणरुत्तङ्गाणं होदि। एवं समऊणक्कीरणद्दामेत्तफालीओ जाव पदंति ताव पुणरुत्तङ्गाणाणि वेव उप्पज्जन्ति। पुणो एदेवेव चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्दाए चरिमसमओ गलिदि। एदमपुणरुत्तङ्गाणं होदि। कुदो? चरिमफालीए पदिदाए पुब्बित्ठजीविदिसंतकम्मेण सरिसत्तं पत्तस्स सेसङ्घिसंतकम्मस्से उक्कीरणद्दाए चरिमसमयगलेणेण समऊणत्तदंसणादो।

पुणो ततो अउत्थजीवेण बिदियद्विदिकंदयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्दाए पढमसमओ गलिदि। बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्दाए [बिदियसमओ गलिदि। पुणो तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्दाए] तदियसमओ गलिदि। एदं पि पुणरुत्तङ्गाणं होदि।

गलनेपर यह अपुनरुक्क स्थान होता है, क्योंकि, अन्तिम फालिके अलग होनेपर पूर्वोक्त जीवके स्थितिसत्त्वसे शेष स्थितिसत्त्व समान हो करके पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयके गलनेपर उससे एक समय कम हो जाता है। यह अर्थपद आगे सब जगह कहना चाहिये।

तत्पश्चात् उससे तीसरे जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। उसके गलनेपर पुनरुक्क स्थान होता है। द्वितीय फालिके नष्ट होनेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी पुनरुक्क स्थान है। फिर तृतीय फालिके नष्ट होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है। यह भी पुनरुक्क स्थान है। इस प्रकार जब तक एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालियां पतित होती हैं तब तक पुनरुक्क स्थान ही उत्पन्न होते हैं। पश्चात् इसी जीवके द्वारा अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्क स्थान है, क्योंकि, अन्तिम फालिके पतित होनेपर पहिले जीवके स्थितिसत्त्वकर्मसे समानताको प्राप्त हुआ शेष स्थितिसत्त्वकर्म उत्कीरणकालके अन्तिम समयके गलनेसे एक समय कम देखा जाता है।

पुनः उससे चतुर्थ जीवके द्वारा द्वितीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका [द्वितीय समय गलता है। पश्चात् तृतीय फालिके विघटित

१ प्रतिपु 'सेसङ्घिसंतसमाणं' इति पाठः। २ प्रतिपु 'वरिसर्प'  पि तस्सेसङ्घिसंतकम्मस्स^३,
तामसो 'वरिसर्प' पत्तसङ्घिसंतकम्मस्स^३ इति पाठः।

एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्तफालीओ जाव पदंति ताव पुणरुत्ताणि चेव द्वाणाणि उप्पज्जंति । पुणो चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाणं होदि । कुदो ? चरिमफालीए अवणिदाए पुव्विल्लड्ढिदिसंतकम्मणे सरिसत्तमुवगयस्स सेसड्ढिदिसंतकम्मस्स उक्कीरणद्धाचरिमसमयगलणेण समऊणुत्तदंसणादो । एवमेदेण कमेण ड्ढिदिकंदयमेत्ताणि समऊणुक्कीरणद्धाए अहियाणि अपुणरुत्तड्ढिदिसंतद्वाणाणि उप्पाइय पुणो पच्छा पुव्विल्लड्ढिविदजीवादो अपुणरुत्तद्वाणुप्पत्ती वत्तवा । तं जहा — तेण पुव्वणिरुद्धजीवेण चरिमफालीए अवणिदाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाणं होदि । कुदो ? चरिमफालीए पदिदाए पुव्विल्लड्ढिदिसंतकम्मणे सरिसत्तमुवगयस्स ड्ढिदिसंतकम्मस्स अषड्ढिदिसंतकम्मणेण समऊणुत्तदंसणादो । एवं बिदियपरिवाडी गदा ।

संपहि तदियपरिवाडिं वत्तइस्सामो । तं जहा — एदेसु रुवाहियाड्ढिदिकंदयमेत्तजीवेसु सम्बज्जहणुड्ढिदिसंतकम्मिण तदियाड्ढिदिकंदयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाणं होदि, अषड्ढिदिसंतकम्मणेण पुव्विल्लड्ढिदि पढुच्च समऊणुत्तदंसणादो । चरिमफालिं मोत्तूण सेसफालीहिंतो णापुणरुत्तद्वाणं उप्पज्जदि,

किये जानेपर उत्कीरणकालका] तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण फालियां जब तक पतित होती हैं तब तक पुनरुक्त स्थान ही उत्पन्न होते हैं । पश्चात् अन्तिम फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, अन्तिम फालिके विघटित होनेपर पूर्व स्थितिसत्कर्मसे समानताको प्राप्त हुआ शेष स्थितिसत्कर्म उत्कीरणकाल सम्बन्धी अन्तिम समयके गलनेसे एक समय कम देखा जाता है । इस प्रकार इस क्रमसे स्थितिकाण्डक प्रमाण व एक समय कम उत्कीरणकालसे अधिक अपुनरुक्त स्थितिसत्त्वस्थानोंको उत्पन्न कराकर फिर पश्चात् पहिले स्थापित जीवकी अपेक्षा अपुनरुक्त स्थानोंकी उत्पात्ति कही जाती है । यथा — एक विवक्षित पूर्व जीवके द्वारा अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, अन्तिम फालिके विघटित होनेपर पहिलेके स्थितिसत्कर्मसे समानताको प्राप्त हुआ स्थितिसत्कर्म अर्धस्थितिके गलनेसे एक समय देखा जाता है । इस प्रकार द्वितीय परिपाटी समाप्त हुई ।

अब तृतीय परिपाटीको कहते हैं । यथा — इन एक अधिक स्थितिकाण्डक प्रमाण जीवोंमेंसे सर्वप्रथमस्थितिसत्कर्मिक जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, अर्धस्थितिके गलनेसे पूर्वोक्त स्थितिकी अपेक्षा यह स्थिति एक समय कम देखा जाती है । अन्तिम फालिको छोड़ शेष फालियोंसे अपुनरुक्त

तत्थ द्विदिणमायामस्स घादाभावादो । पुणो तेणेव बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरण-
द्धाए बिदियसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तङ्गाणं होदि । तदियफालीए अवणिदाए उक्की-
रणद्धाए तदियसमओ गलदि । एदं अपुणरुत्तङ्गाणं होदि । एवं समऊणुक्कीरणद्धामेत्ताणि
चेव द्वाणाणि अपुणरुत्ताणि उत्पादेदच्चाणि ।

पुणो उक्कीरणद्धाचरिमसमएण द्विदिक्कंदयचरिमफालिं तथा चेव हविय पुणो
एदेसु अपिदजीवेसु सच्चुक्कस्सद्विदिसंतकम्मियजीवेण तदियद्विदिक्कंदयपढमफालीए अवणि-
दाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । एदं पुणरुत्तङ्गाणं होदि । बिदियफालीए
अवणिदाए उक्कीरणद्धाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तङ्गाणं । तदियफालीए
अवणिदाए उक्कीरणद्धाए तदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तङ्गाणं होदि । एवं
समऊणुक्कीरणद्धामेत्ताणि पुणरुत्तङ्गाणाणि गच्छंति । पुणो तदियद्विदिक्कंदयस्स चरिम-
फालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तङ्गाणं होदि । कुरो ?
चरिमफालीए अवणिदाए सेसद्विदिसंतकम्मस्स पुच्चिल्लद्विदिसंतकम्मेण सरित्तं पत्तस्स
अवद्विदिगलणेणं समऊणत्तदंसणादो ।

पुणो एदम्हादो बिदियजीवेण तदियद्विदिक्कंदयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्की-

स्थान नहीं उत्पन्न होता, क्योंकि, उनमें स्थितियोंके आयामका घात सम्भव नहीं है।
पश्चात् उसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका
द्वितीय समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है। तृतीय फालिके अलग होनेपर
उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है। इस प्रकार
एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण ही अपुनरुक्त स्थानोंको उत्पन्न कराना चाहिये।

अब उत्कीरणकालके अन्तिम समयमें स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिको
उसी प्रकार स्थापित करके फिर इन विचक्षित जीवोंमेंसे सर्वोत्कृष्टस्थितिसत्कर्मिक
जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर
उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है। यह पुनरुक्त स्थान है। द्वितीय फालिके
विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है। यह भी पुनरुक्त
स्थान है। तृतीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है।
यह भी पुनरुक्त स्थान है। इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकालके बराबर पुनरुक्त
स्थान जाते हैं। पश्चात् तृतीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित होनेपर
उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है। यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि,
अन्तिम फालिके विघटित होनेपर शेष स्थितिसत्कर्म पूर्वके स्थितिसत्कर्मसे समानताको
प्राप्त स्थितिसत्कर्म अर्थात्स्थितिके गलनेसे एक समय कम देखा जाता है।

तत्पश्चात् इससे दूसरे जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके

रणद्वाए [पढमसमओ गलदि । एदं पुणरुत्तङ्गाणं होदि । बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए] बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तङ्गाणं होदि । तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए तदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तङ्गाणं होदि । एवं समऊणुक्कीरणद्वामेत्तेसु पुणरुत्तङ्गाणिसु । पुणो एदेणेव तदियड्ढिदिखंडयस्स चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तङ्गाणं होदि ।

पुणो तदियजीवेण तदियड्ढिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए पढमसमओ गलदि । एदं पुणरुत्तङ्गाणं होदि । पुणो बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तङ्गाणं होदि । एदेणेव तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए तदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तं होदि । एवं समऊणुक्कीरणद्वामेत्तेसु पुणरुत्तङ्गाणिसु गदेसु तदो तदियकंदयचरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तङ्गाणं होदि । कारणं सुगमं ।

पुणो चउत्थजीवेण तदियड्ढिदिखंडयस्स पढमफालीए [अवणिदाए] पढमसमओ गलदि । एदं पुणरुत्तङ्गाणं होदि । बिदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए बिदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तङ्गाणं होदि । तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए तदियसमओ गलदि । एदं

अलग किये जानेपर उत्कीरणकालका [प्रथम समय गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका] द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । तृतीय फालिके अलग होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । यही क्रम एक समय कम उत्कीरण काल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंमें खाल् रहता है । पश्चात् इसी जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है ।

पुनः तृतीय जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । पश्चात् द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । इसी जीवके द्वारा तृतीय फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके चितनेपर फिर तृतीय स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । इसका कारण सुगम है ।

तत्पश्चात् चतुर्थ जीवके द्वारा तृतीय स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । तृतीय फालिके

पि' पुणरुत्तद्वाणं होदि । एवं ताव पुणरुत्तद्वाणणि उप्यज्जंति जाव समऊणुक्कीरणद्वा-
मेत्तफालीओ पदिदाओ चि । पुणो चरिमफालीए [अवणिदाए] उक्कीरणद्वाए चरिमसमओ
गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाणं होदि । कारणं सुगमं । एवं जाणिदूण रूवूणुक्कीरणद्वाए
अहियहिदिखंडमेत्तद्वाणणि [णेदव्वाणि] । पुणो अंतिमजीवेण पुच्चं ठविदूणागदचरिम-
फालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाणं होदि । एवं
तदियपरिवाडी परूविदा । एवं धुवडिदीदो समुप्पज्जमाणपलिदोवमस्स असंखेज्जिद-
भागमेत्तद्दिखंडयाणि अस्सिदूण णिरंतरद्वाणपरूवणा कादव्वा ।

संपहि संपुणुक्कीरणद्वाए एगड्ढिदिखंडएण च अहियएइंदियड्ढिदिखंडमेत्तद्दिद-
संतकम्मिएण पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए एगो समओ गलदि । एदमपुणरुत्त-
द्वाणं होदि । विदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए विदियसमओ गलदि । एदं पि
अपुणरुत्तद्वाणं होदि । तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए तदियसमओ गलदि ।
एदं पि अपुणरुत्तद्वाणं होदि । एवं रूवूणुक्कीरणद्वामेत्तसु अपुणरुत्तद्वाणेसु समुप्पण्णेसु ।
एदमेव चैव डुविय पुणो एदेसु णिरुद्धजीवेसु सच्चुक्कस्सड्ढिदिसंतकम्मिएण अपिद-
ड्ढिदिखंडयस्स पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए पढमसमओ गलदि । एदं पुणरुत्त-

विघटित होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है ।
इस प्रकार तब तक पुनरुक्त स्थान उत्पन्न होते हैं जब तक एक समय कम
उत्कीरणकाल प्रमाण फालियाँ विघटित नहीं हो जातीं । पश्चात् अन्तिम फालिके
[विघटित होनेपर] उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त
स्थान है । इसका कारण सुगम है । इस प्रकार जानकर एक कम उत्कीरणकालसे
अधिक स्थितिकाण्डक प्रमाण स्थानोंको [ले जाना चाहिये] । तत्पश्चात् अन्तिम जीवके
द्वारा पूर्वमे स्थापित करके आया हुई अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर
उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । इस प्रकार तृतीय
परिपाटीकी प्ररूपणा की है । इस प्रकार भ्रूयस्थितिसे उत्पन्न होनेवाले पन्थोपमके
असंख्यातवै भाग मात्र स्थितिकाण्डकोंका आश्रय करके निरन्तर स्थानोंकी प्ररूपणा
करना चाहिये ।

अब सम्पूर्ण उत्कीरणकालसे और एक स्थितिकाण्डकसे अधिक एकेगिम्बय
स्थितिबन्धके बराबर स्थितिसत्कर्म युक्त जीवके द्वारा प्रथम फालिके विघटित किये
जानेपर उत्कीरणकालका एक समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । द्वितीय
फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी
अपुनरुक्त स्थान है । तृतीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय
गलता है । यह भी अपुनरुक्त स्थान है । यही कम एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण
अपुनरुक्त स्थानोंके उत्पन्न होने तक चालू रहता है । अब इसे यों ही स्थापित करके
पश्चात् इन विवक्षित जीवोंमेंसे सर्वोत्कृष्टस्थितिसत्कर्मिक जीवके द्वारा विवक्षित
स्थितिकाण्डककी प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय

द्वान् होदि । एदेणेव विदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए विदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तद्वान् होदि । तदियफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए तदियसमओ गलदि । एदं पि पुणरुत्तद्वान् होदि । एवं समऊणुक्कीरणद्वामेत्तेसु पुणरुत्तद्वान् गदेसु । पुणो अप्पिद्विदिसंढयस्स चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वान् होदि, चरिमफालीए गदाए पुण्वल्लअपुणरुत्तद्विदिसंतेण समाणत्तमुव-
गयस्स द्विदिसंतस्स अधिद्विदिलणेण ततो समऊणत्तदंसणादो ।

पुणो विदियजीवेण पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए पढमसमओ गलदि । विदियफालीए अवणिदाए तिस्से विदियसमओ गलदि । तदियफालीए अवणिदाए तदिय-
समओ गलदि । एवं समऊणुक्कीरणद्वामेत्तेसु पुणरुत्तद्वान् गदेसु चरिमफालीए अवणि-
दाए उक्कीरणद्वाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वान् होदि । कारणं पुण्वं व वत्तवं ।

पुणो तदियजीवेण पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्वाए पढमसमओ गलदि । विदियफालीए अवणिदाए तिस्से विदियसमओ गलदि । तदियफालीए अवणिदाए तिस्से
तदियसमओ गलदि । एवं दुसमयूणउक्कीरणद्वामेत्तेसु पुणरुत्तद्वान् गदेसु पुणो एदेणेव

गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । इसी जीवके द्वारा द्वितीय फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका द्वितीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । तृतीय फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका तृतीय समय गलता है । यह भी पुनरुक्त स्थान है । यही कम एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके बीतने तक चालू रहता है । फिर विवक्षित स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित होनेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, अन्तिम फालिके बीतनेपर पूर्वके अपुनरुक्त स्थितिसंस्थसे समानताको प्राप्त हुआ यह स्थितिसंस्थ अधःस्थितिके गलनेसे उसकी अपेक्षा एक समय कम देखा जाता है ।

तत्पश्चात् द्वितीय जीवके द्वारा प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरण-
कालका प्रथम समय गलता है । द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उसका द्वितीय
समय गलता है । तृतीय फालिके विघटित होनेपर उसका तृतीय समय गलता है ।
इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके बीतनेपर जब
अन्तिम फालि विघटित की जाती है तब उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है ।
यह अपुनरुक्त स्थान है । इसके कारणका कथन पहिलेके ही समान करना चाहिये ।

पुनः तृतीय जीवके द्वारा प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका
प्रथम समय गलता है । द्वितीय फालिके विघटित किये जानेपर उसका द्वितीय समय
गलता है । तृतीय फालिके विघटित किये जानेपर उसका तृतीय समय गलता है ।
इस प्रकार दो समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके बीतनेपर फिर

चरिमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाणं होदि । कारणं सुगमं ।


पुणो चउत्थजीवेण पढमफालीए अवणिदाए उक्कीरणद्धाए पढमसमओ गलदि । एदं पुणरुत्तद्वाणं होदि । बिदियाए फालीए अवणिदाए तिस्से बिदियसमओ गलदि । तदियाए अवणिदाए तिस्से तदियसमओ गलदि । एदेणेव कमेण रुवूणुक्कीरणद्धामेसेसु पुणरुत्तद्वाणेसु उप्पण्णेसु पुण पच्छा एदेणेव चरिमफालीए पादिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि । एदमपुणरुत्तद्वाणं होदि । कारणं सुगमं ।

एवं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवे अस्सिदूण रुवूणुक्कीरणद्धाए अहिय-
कंदयमेत्तअपुणरुत्तद्वाणाणि उप्पाइय पुणो पुव्विल्लंतिमद्विविदजीवमस्सिदूण अपुणरुत्त-
द्वाणुप्पत्ति वत्तइस्सामो । तं जद्दा— अंतिमजीवेण अप्पिद्विद्विदखंडयस्स चरिमफालीए
अवणिदाए उक्कीरणद्धाए चरिमसमओ गलदि जं सेसमंइदियउक्कस्सद्विदिसंतकमं
होदि । एदमपुणरुत्तद्वाणं, पुव्वमणुप्पण्णत्तादो । एत्थ एइदियद्विदी णाम संदिद्वीए दो

इसी जीवके द्वारा अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । इसका कारण सुगम है ।

पुनः चतुर्थ जीवके द्वारा प्रथम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका प्रथम समय गलता है । यह पुनरुक्त स्थान है । द्वितीय फालिके विघटित होनेपर उसका द्वितीय समय गलता है । तृतीय फालिके विघटित होनेपर उसका तृतीय समय गलता है । इसी क्रमसे एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण पुनरुक्त स्थानोंके उत्पन्न हो जानेपर फिर पीछे इसी जीवके द्वारा अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है । यह अपुनरुक्त स्थान है । इसका कारण सुगम है ।

इस प्रकार एत्थोपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण जीवोंके आश्रयसे एक कम उत्कीरणकालसे अधिक स्थितिकाण्डक प्रमाण अपुनरुक्त स्थानोंको उत्पन्न कराके फिर पूर्वमें स्थापित अन्तिम जीवका आश्रय करके अपुनरुक्त स्थानोंकी उत्पत्तिका कथन करते हैं । यथा— अन्तिम जीवके द्वारा विघटित स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित किये जानेपर उत्कीरणकालका अन्तिम समय गलता है जो कि एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट स्थितिमें शेष होता है । यह अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि, उसकी उत्पत्ति पूर्वमें नहीं हुई है । यहां संछट्टिमें (मूलमें देखिये) एकेन्द्रियस्थितिके लिये दो

बिंदु, अन्धेण पुण  सागरोवमस्स तिण्णि सत्तमागा । पुणो एदम्हादो द्विदि-
संतादो एइंदिय-
जहा— वादरे-
पुणरुत्तट्ठाणं होदि ।
००
००
००००
००००

बंघमस्सिदूण अणुक्कस्सिद्विदिवियप्पा उप्पादेदव्वा । तं
इंदियपज्जत्तएण समऊणुक्कस्सिद्विदीए पबद्धाए अण्णम-
दुसमऊणाए पबद्धाए अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसम-
ऊणाए पबद्धाए अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं चदु-पंचसमऊणादिकमेण ओदारेदव्वं जाव
वादरेइंदियपज्जत्तएण सव्वविसुद्धेण बद्धजहण्णसंतसमाणाद्विदि ति ।

संपहि एइंदिएसु लद्धसव्वट्ठाणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि चेव ।
कुदो ? तत्थ वीचारट्ठाणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि चेव होंते ति गुरूव-
देसादो । पुणो एदिस्से द्विदीए हेट्ठा खवगसेडिमस्सिदूण अण्णाणि अंतोमुहुत्तट्ठाणाणि
लब्धंति । तं जहा— एगो जीवो खवगसेडिं चडिय अनियट्ठिखवगो जादो ।
तदो अनियट्ठिअद्धाए संखेज्जेसु भागेषु गदेषु असण्णिट्ठिदिबंघेण सरिसं संतकम्मं
कुणदि । पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण चदुरिंदियट्ठिदिबंघेण सरिसं संतकम्मं कुणदि । पुणो
अंतोमुहुत्तं गंतूण तेइंदियट्ठिदिबंघेण सरिसं संतकम्मं कुणदि । तदो अंतोमुहुत्तं
गंतूण वेइंदियट्ठिदिबंघेण सरिसं द्विदिसंतकम्मं कुणदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण एइंदियट्ठिदि-

बिन्दु हैं, जो कालकी अपेक्षा सागरोपमके तीन बटे सात भाग (३) के सूचक
हैं । इस स्थितिसत्त्वसे एकेन्द्रियके स्थितिबंधका आश्रय करके अनुत्कृष्ट स्थिति-
बिचक्षणोंको उत्पन्न कराना चाहिये । यथा— वादर एकेन्द्रिय जीवके द्वारा एक
समय कम उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है ।
दो समय कम उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है ।
तीन समय कम उत्कृष्ट स्थितिके बांधनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है ।
इस प्रकार चार-पांच आदि समयोंकी हीनताके कमसे सर्वथिशुद्ध वादर एकेन्द्रिय
पर्याप्तक जीवके द्वारा बांधी गई जघन्य स्थितिके सर्व समान स्थितिके
होने तक उतारना चाहिये ।

अब एकेन्द्रियोंमें प्राप्त सब स्थान पल्लोपमके असंख्यातवै भाग मात्र ही हैं,
क्योंकि “उनमें बीजास्थान पल्लोपमके असंख्यातवै भाग मात्र ही होते हैं” ऐसा गुरुका
उपदेश है । इस स्थितिके नीचे क्षपकश्रेणिका आश्रय करके अन्य अन्तर्मुहूर्त मात्र
स्थान प्राप्त होते हैं । यथा— एक जीव क्षपकश्रेणिपर आरुढ़ होकर अनिवृत्तिकरण क्षपक
हुआ । पश्चात् अनिवृत्तिकरणकालक संख्यात बहुभ.गोंके वीतनेपर वह अंसर्वा जीवके
स्थितिबन्धके समान स्थितिसत्त्वको करता है । तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त काल बिताकर
चतुरिन्द्रियके स्थितिबन्धके समान स्थितिसत्त्वको करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्त काल
बिताकर वह त्रीन्द्रिय जीवके स्थितिबन्धके समान स्थितिसत्त्वको करता है । पश्चात्
अन्तर्मुहूर्त काल जाकर वह द्वीन्द्रिय जीवके स्थितिबन्धके समान स्थितिसत्त्वको करता
है । तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्तके वीतनेपर एकेन्द्रिय जीवके स्थितिबन्धके समान स्थिति-

बंघेण सरिसं डिदिसंतकम्मं कुणदि । एवमेदाणि खवमसेडिम्हि भणिदूणागदसव्वडिदिसंत-
कम्महाणाणि पुणरुत्ताणि चेव, एहिदियजहणुणबंधं पेक्खिदूण एदासिं डिदीणं बहुपुवलेमादो ।

पुणो एहिदियडिदिसंतकम्ममि पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तडिदिखंडय-
मागाएदि । तं जाव पददि ताव अंतोमुहुत्तहाणाणि अधडिदिगलणेण लभंति । ताणि पुण-
रुत्ताणि, एहिदिसु लद्धहाणेषु पवेसादो । पुणो आगाइदकंदयस्स चरिमफालीए पदिदाए
एहिदियकीचारहाणेहिंतो असंखेज्जगुणमेसरिदूण अणमपुणरुत्तहाणं होदि । पुणो विदिय-
समए अणं डिदिखंडयमागाएदि । तस्स डिदिखंडयस्स उक्कीरणकालमि एगसमए
गलिदे अणमपुणरुत्तहाणं होदि । विदियसमए गलिदे विदियमपुणरुत्तहाणं होदि । तदिय-
समए गलिदे तदियमपुणरुत्तगिरंतरहाणं होदि । एवं गिरंतरहाणाणि ताव लभंति जाव
उक्कीरणकालदुचरिमसमओ ति । पुणो चरिमफाली पददि । तीए पदिदाए पलिदोवमस्स
संखेज्जदिभागमेत्तरियूण अणमपुणरुत्तहाणं होदि । पुणो अणं डिदिदिकंदयमागाएदि । तस्स
डिदिदिकंदयस्स उक्कीरणकालमि एगसमए गलिदे अणमपुणरुत्तगिरंतरहाणं होदि ।
विदियसमए गलिदे अणमपुणरुत्तगिरंतरहाणं होदि । एवं समउणुक्कीरणद्धमेत्ताणि
अपुणरुत्तगिरंतरहाणाणि लभंति । पुणो उक्कीरणकालचरिमसमए गलिदे चरिमफालि-

सत्त्वको करता है । इस प्रकार क्षपकंधणिमें कहकर आये हुए ये सभी स्थितिसरवस्थान
पुनरुक्त ही हैं, क्योंकि, एकेन्द्रिय जीवके जघन्य बन्धकी अपेक्षा ये स्थितियां बहुत
पायी जाती हैं ।

पुनः एकेन्द्रियके स्थितिसरवमेंसे पद्योंपमके संख्यातबे भाग मात्र
स्थितिकाण्डको ग्रहण करता है । बड़ा जब तक विघटित होता है
तब तक अन्तःस्थितिके गलनेसे अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थान प्राप्त होते हैं ।
वे पुनरुक्त हैं, क्योंकि, वे एकेन्द्रियोंमें प्राप्त स्थानोंके अन्तर्गत हैं । पश्चात्
ग्रहण किये गये स्थितिकाण्डकी अन्तिम फालिके विघटित होनेपर एकेन्द्रिय
सम्बन्धी धीचारस्थानोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणा हटकर दूसरा अपुनरुक्त स्थान
होता है । तत्पश्चात् द्वितीय समयमें दूसरे स्थितिकाण्डको ग्रहण करता है ।
उस स्थितिकाण्डके उत्कीरणकालमेंसे एक समयके गलनेपर दूसरा अपुनरुक्त
स्थान होता है । द्वितीय समयके गलनेपर द्वितीय अपुनरुक्त स्थान होता है ।
तृतीय समयके गलनेपर तृतीय अपुनरुक्त निरन्तर स्थान होता है । इस प्रकार
उत्कीरणकालके द्विचरम समय तक निरन्तर स्थान पाये जाते हैं । फिर अन्तिम
फालि विघटित होती है । उसके विघटित हो जानेपर पद्योंपमके संख्यातबे भाग
मात्र अन्तर करके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । तत्पश्चात् अन्य स्थितिकाण्डको
ग्रहण करता है । उस स्थितिकाण्डके उत्कीरणकालमेंसे एक समयके गलनेपर
अन्य अपुनरुक्त निरन्तर स्थान होता है । द्वितीय समयके गलनेपर अन्य अपुनरुक्त
निरन्तर स्थान होता है । इस प्रकार एक समय कम उत्कीरणकाल प्रमाण
अपुनरुक्त निरन्तर स्थान पाये जाते हैं । पश्चात् उत्कीरणकालके अन्तिम समयके

मेतद्वाण्यणि अंतरिदूण अपुनरुत्तद्वाणं उपपञ्चदि । एवं गिरंतर-सांतरकमेण द्वाणाणि ताव लभंति जाव खीणकसायकालस्स संखेज्जा भागा गदा ति । तदो खीणकसायचरिम-
द्विद्विखंडयस्स चरिमफाडीए पदिदाए खीणकसायकालस्स संखेज्जदिभागमेताणि उदय-
कखेएण गिरंतरअपुनरुत्तद्वाणाणि लभंति जाव खीणकसायचरिमसमओ ति । एत्थ
खवगसेहिंदि लद्धगिरंतरद्वाणाणि अंतोमुहुत्तमेताणि, रूवूणुककीरणदं संखेज्जसहस्सरूवेहि
मुधिदे खवगसेहिंसमुपपण्णसव्वगिरंतरद्वाणुप्पत्तीदो । सांतरद्वाणाणि पुण संखेज्जाणि चेव,
खवगसेडीसु संखेज्जाणि चेव द्विद्विखंडयाणं पदणोवलंभादो । संखेज्जपल्लिदोवममेत्तद्वाणाणि
ण लद्धाणि । एदेसु अलद्धद्वाणेसु कम्मद्विद्विहि सोहिदेसु जं सेसं तेनियमेत्ता अणु-
ककस्सद्वाणवियप्पा ।

एदेसि द्वाणाणं सामिणो जे जीवा तेसिं छदि अणियोगद्दारेहि परूवणं कस्सामो ।
तं जहा — एत्थ ताव तसजीवे अस्सिदूग भण्णमाणे जहण्णए द्वाणे अत्थि जीवा । एवं
पेयव्वं जावुककस्सद्वाणे ति । एवं परूवणा गदा ।

ओघजहण्णद्वाणे जहण्णेण एगो, उक्कस्सेण अट्टुत्तरसदजीवा । एवं खवगसेडीए
लद्धसव्वद्वाणेसु जीवपमाणं वत्तव्वं । सण्णपंचिदियमिच्छाद्विजहण्णद्विदीए जीवा पदरस्स

गलनेपर अन्तिम फालि प्रमाण स्थानोंका अन्तर करके अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न
होता है । इस प्रकार निरन्तर और सान्तर क्रमसे स्थान तब तक पाये जाते
हैं जब तक क्षीणकषाय गुणस्थानके कालका संख्यात बहुभाग बीतता है । पश्चात्
क्षीणकषाय जीवके अन्तिम स्थितिकाण्डककी अन्तिम फालिके विघटित होनेपर
क्षीणकषायके अन्तिम समय तक क्षीणकषायकालके संख्यातवें भाग मात्र उदयक्षयसे
निरन्तर अनुनक्त स्थान पाये जाते हैं । वहां क्षपकश्रेणिमें प्राप्त निरन्तर स्थान
अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होते हैं, क्योंकि, एक कम उत्कीरणकालको संख्यात हजार रूपोंसे
गुणित करनेपर क्षपकश्रेणिमें उत्पन्न समस्त निरन्तर स्थान प्राप्त होते हैं । परन्तु
सान्तर स्थान संख्यात ही हैं, क्योंकि, क्षपकश्रेणिमें संख्यात ही स्थितिकाण्डकोंका
विघटन पाया जाता है । संख्यात पन्योपम प्रमाण स्थान यहां नहीं पाये जाते ।
यहां न प्राप्त होनेवाले इन स्थानोंको कर्मस्थितिमेंसे कम कर देनेपर जो शेष रहता
है उतना अनुल्लष्ट स्थानके विकल्पोंका प्रमाण होता है ।

जो जीव इन स्थानोंके स्वामी हैं उनकी छह अनुयोगद्वारोंके द्वारा प्ररूपणा
करते हैं । यथा — यहां पहिले त्रस जीवोंका आश्रय करके प्ररूपणा
करनेपर जघन्य स्थानमें जीव हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थान तक ले जाना चाहिये । इस
प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई ।

ओघ जघन्य स्थानमें जघन्यसे एक और उत्कर्षसे एक औ भाठ जीव पाये जाते
हैं । इस प्रकार क्षपकश्रेणिमें प्राप्त सभी स्थानोंमें जीवोंका प्रमाण कहना चाहिये । खंडी
पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टिकी जघन्य स्थितिमें जीव प्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

असंखेज्जदिभागमेता । विदियाए वि द्विदीए पदरस्स असंखेज्जदिभागमेता । एवं वेद्वं जाव उक्कस्सिद्विदि ति ।

संक्षिपरूपणा दुविद्वा— अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरोवणिधाए सादस्स चउट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स बिट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा च जीवा णाणावरणीयस्स सग-सगजहणियाए द्विदीए थोवा । विदियाए द्विदीए विसेसाहिया । केत्तिप्रमेत्तेण ? पल्लोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तेण । तदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव जवमज्जं । तेण परं विसेसहीणा । एवं विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सागरोवमसदपुचत्तं । सादस्स बिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीए थोवा । विदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया । तदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोवमसदपुचत्तं । तेण परं विसेसहीणा । एवं विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सादस्स असादस्स [य] उक्कस्सिया द्विदि ति । एवमणंतरोवणिधा समत्ता । परंपरोवणिधाए सादस्स चउट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स बिट्ठाणबंधा

द्वितीय स्थितिमें भी वे प्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये ।

अणिप्ररूपणा दो प्रकार है— अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा । उनमें अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा सातावेदनीयके खतुःस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक जीव तथा असातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी अपनी अपनी जघन्य स्थितिमें स्तोक हैं । द्वितीय स्थितिमें उनसे विशेष अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? पदयोपमके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर उसमेंसे वे एक खण्डसे अधिक हैं । उनसे तृतीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार वे यद्यन्य तक विशेष अधिक विशेष अधिक होते गये हैं । उसके आगे वे विशेष हीन हैं । इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व तक वे विशेष हीन विशेष हीन हैं । सातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक और असातावेदनीयके खतुःस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिमें स्तोक हैं । द्वितीय स्थितिमें उनसे विशेष अधिक जीव हैं । तृतीय स्थितिमें उनसे विशेष अधिक जीव हैं । इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण स्थिति तक वे उत्तरोत्तर विशेष अधिक विशेष अधिक हैं । इससे आगेकी स्थितिमें वे उत्तरोत्तर विशेष हीन हैं । इस प्रकार साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति तक वे विशेष हीन विशेष हीन हैं । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा सातावेदनीयके खतुःस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक तथा असातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी

तिष्ठाणवंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीए जीवेहितो तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणवत्तिदा जाव जवमज्जं । तेण परं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणा । एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव सागरोवमसदपुचत्तं । सादस्स षिष्ठाणवंधा जीवा असादस्स चउट्टाणवंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीए जीवेहितो तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणवत्तिदा । एवं दुगुणवत्तिदा दुगुणवत्तिदा जाव सागरोवमसदपुचत्तं । तेण परं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणा । एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव सादस्स असादस्स य उक्कस्सिया द्विदि ति । एयजीवदुगुणवत्ति-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पलिदोवमवगमूलाणि । णाणाजीवदुगुणवत्ति-हाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवगमूलस्स असंखेज्जदिभागो । णाणाजीवदुगुणवत्ति-हाणिट्ठाणंतराणि भोवाणि । एयजीवदुगुणवत्ति-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । एवं परंपराविणधा समत्ता ।

जहणट्ठाणजीवपमाणेण सव्वजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? असंखेज्जगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जंति । विदियट्ठाणजीवपमाणेण सव्वजीवा असंखेज्जगुणहाणिमेतेण कालेण अवहिरिज्जंति । एवं णेद्वं जाव जवमज्जे ति । जवमज्जजीवपमाणेण सव्वजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? किंचूणतिणिगुणहाणिट्ठाण-

अध्व स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा उससे पर्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर यवमध्य तक दुगुणी वृद्धिको प्राप्त हैं । उसके आगे पर्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर वे दुगुणी हानिको प्राप्त हैं । इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व तक वे दुगुणे हीन दुगुणे हीन हैं । सातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव और असातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी अध्व स्थिति सम्बन्धी जीवोंकी अपेक्षा उनसे पर्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते हैं । इस प्रकार सागरोपमशतपृथक्त्व तक वे दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते गये हैं । इससे आगे पर्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर वे दुगुणी हानिको प्राप्त हैं । इस प्रकार साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति तक वे दुगुणे-दुगुणे हीन हैं । एकजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर पर्योपमके असंख्यात वर्गमूल प्रमाण है । नानाजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर पर्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । नानाजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर स्तोक हैं । एकजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर उनसे असंख्यातगुणा है । इस प्रकार परंपरोपनिधा समाप्त हुई ।

अध्व स्थान सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे समस्त जीव कितने कालसे अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे असंख्यात-गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होते हैं । द्वितीय स्थान सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे वे समस्त जीव असंख्यात गुणहानि मात्र कालसे अपहृत होते हैं । इस प्रकार यवमध्य तक ले जाना चाहिये । यवमध्यके जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने काल द्वारा अपहृत होते हैं ? कुछ कम

तरेण कालेण अवहिरिज्जति । एवं जवमज्झादो उवरीं पि जाणिदूण वत्तव्वं । एवमवहा-
परूवणा गदा ।

जहण्णए द्वाणे जीवा सव्वट्ठाणजीवाणं केवडिब्बो भागो ? असंखेज्जदिमागो । एवं
सव्वट्ठाणजीवाणं जाणिदूण भागाभागपरूवणा कायव्वा ।

सव्वत्थोवा जवमज्झाणं उवकस्सए द्वाणे जीवा । जहण्णए द्वाणे जीवा असं-
खेज्जगुणा । गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो । जवमज्झजीवा असंखेज्जगुणा ।
को गुणगारो ? जवमज्झादो हेट्ठिमअण्णोण्णम्मत्थरासी । जवमज्झादो हेट्ठिमजहण्णट्ठाण-
जीवेहिंतो उवरिमत्तव्वजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? किंचूणदिववु [गुणहाणीओ]
गुणगारो । जवमज्झादो हेट्ठिमजीवा विसेसाहिया । जवमज्झादो उवरिमजीवा विसेसाहिया ।
सव्वजीवा विसेसाहिया । एवमप्पावहुगपरूवणा गदा ।

एवमेइंदिय-विगलिट्ठियाणं पि परूवेदव्वं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागमेत्तएइंदिय-
वीचारद्वाणेषु तस्सेव संखेज्जदिभागमेत्तविगलिट्ठियवीचारद्वाणेषु च । णवरि सादासादाणं
विट्ठाणजवमज्झं चेव, तत्थ तिट्ठाण-चउट्ठाणाणुमागाणं बंधामावादो । किंतु सण्णिभिं-
दियगुणहाणिसलगाहिंतो तत्थतणगुणहाणिसलगाओ असंखेज्जगुणहीणाओ संखेज्जगुणहीणाओ

तीन गुणहानिस्थानान्तरकालसे वे अवद्वत होते हैं । इसी प्रकार यक्षमध्यके भागे
भी जानकर कहना चाहिये । इस प्रकार अवहारप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अधन्य स्थानमें स्थित जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं । वे उनके
असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । इस प्रकार सब स्थानोंके जीवोंको जानकर भागा-
भागकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

यक्षमध्योंके उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे स्तोके हैं । उनसे अधन्य स्थानमें
जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार पत्तोपमका असंख्यातवें भाग है । उनसे यक्षमध्य-
के जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? यक्षमध्यसे नीचेकी अन्योन्याभ्यस्त
राशि गुणकार है । यक्षमध्यसे नीचेके अधन्य स्थान सम्बन्धी जीवोंकी अपेक्षा
ऊपरके सब जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार कुछ कम डेढ़
गुणहानियाँ हैं । यक्षमध्यसे नीचेके जीव उनसे विशेष अधिक हैं । उनसे यक्षमध्य-
के उपरिम जीव विशेष अधिक हैं । उनसे सब जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार
अवश्वत्त्वप्ररूपणा समाप्त हुई ।

इसी प्रकार पत्तोपमके असंख्यातवें भाग मात्र एकेन्द्रियके वीचारस्थानोंमें
और उसके ही संख्यातवें भाग प्रमाण विकलेन्द्रियके वीचारस्थानोंमें एकेन्द्रिय
एवं विकलेन्द्रिय जीवोंकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि
साता व असाता वेदनीयके त्रिस्थानसम्बन्धी यक्षमध्य ही है, क्योंकि, वहां
त्रिस्थान और चतुःस्थान अनुभागोंका बन्ध नहीं होता । किन्तु संघी
पंचेन्द्रियकी गुणहानिशलाकाओंसे वहाँकी गुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी हीन

च । प्रमाणं पुन एइंदिया अणंता । सण्णिपंचिदियधुवडिदीदो हेड्डिमाणं असण्णिपंचिदिय-
उक्कस्सडिदीदो उवरिमाणं संतट्टाणाणं जीवसमुदाहारो काहुं ण सक्किज्जेदे, उवदेसाभावादे ।

एवं छण्णं कम्माणं ॥ १० ॥

जहा णाणावरणीयस्स उक्कस्साणुक्कस्ससामित्तं परूविदं तहा सेसछक्कम्माणं
परूवेद्वं । जवरि मोहणीयस्स उक्कस्सडिदी सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेत्ता । अणुक्कस्स-
सामित्ते अण्णमाणे सण्णिपंचिदियमिच्छाड्डिप्पहुडि जाव चरिमसमयसुहुमसांपराइयो ताव
सामित्ते ति वत्तवं । णामा-गोदाणं उक्कस्सडिदी वीसंसागरोवमकोडाकोडिमेत्ता । एदेसि-
मणुक्कस्सडिदिसामित्ते भण्णमाणे सण्णिपंचिदियमिच्छाड्डिप्पहुडि जाव चरिमसमयअजोमि
ति वत्तवं । एवं वेयणीयस्स वि परूवणा कायव्वा । जवरि उक्कस्सडिदी तीसं
सागरोवमकोडाकोडिमेत्ता ।

**सामित्तेण उक्कस्सपदे आउअवेयणा कालदो उक्कस्सिया
कस्स ? ॥ ११ ॥**

सुगमं ।

व संख्यातगुणी हीन हैं । प्रमाण— एवेन्द्रिय जीव अनन्त हैं । संज्ञा पंचेन्द्रियकी
धुवस्थितिले नीचेके और असंज्ञी पंचेन्द्रियकी उत्कृष्ट स्थितिले ऊपरके स्वस्थानोंका
जीवसमुदाहार करनेके लिये शक्य नहीं है, क्योंकि, उसका उपदेश प्राप्त नहीं है ।

ज्ञानावरणीयके समान ही शेष छह कर्मोंके उत्कृष्ट स्वामित्वकी प्ररूपणा करना
चाहिये ॥ १० ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मके उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट स्वामित्वकी प्ररूपणा
की है उसी प्रकार शेष छह कर्मोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि
मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है । अनुत्कृष्ट स्वामित्व-
का कथन करते समय संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टिले लेकर अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्म-
सागरोपम तक स्वामी हैं, ऐसा कहना चाहिये । नाम व गोत्र कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति
वीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है । इनकी अनुत्कृष्ट स्थितिके स्वामित्वका कथन
करते समय संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टिले लेकर अन्तिम समयवर्ती अयोगकवली तक
स्वामी हैं ऐसा कहना चाहिये । इसी प्रकार वेदनीय कर्मकी भी प्ररूपणा कहना चाहिये ।
विशेष इतना है कि उसकी उत्कृष्ट स्थिति तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है ।

स्वामित्वकी अपेक्षा उत्कृष्ट पदमें आयुर्कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट
किस्से होती है ? ॥ ११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अण्णदरस्स मणुस्सस्स वा पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स वा सण्णिस्स सम्माद्विट्ठिस्स वा [मिच्छाद्विट्ठिस्स वा] सब्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदस्स कम्मभूमियस्स वा कम्मभूमिपडिभागस्स वा संखेज्ज-वासाउअस्स इत्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा णउंसयवेदस्स वा जलचरस्स वा थलचरस्स वा सागार-जागार-तप्पाओग्गसंकि-लिट्ठस्स वा [तप्पाओग्गविसुद्धस्स वा] उक्कस्सियाए आवाधाए जस्स तं देव-णिरयाउअं पढमसमए बंधंतरस्स आउअवेयणा कालदो उक्कस्सा ॥ १२ ॥

ओगाहण-कुल-जादि-वण्ण-विण्णार्स-संठाणादिभेदेहि विसैसाभावपरुवणद्धमण्णदरस्से ति भणिदं । देवाणमुक्कस्साउअस्स मणुसा चेव बंधया, णेरइयाणं उक्कस्साउअस्स मणुस्सा सण्णिपंचिंदियतिरिक्खा वा बंधया ति जाणावणद्धं मणुस्सस्स वा पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियस्स वा सण्णिस्से ति भणिदं । देवाणं उक्कस्साउअं सम्मादिट्ठिणो चेव बंधंति, णेरइयाणं उक्कस्साउअं मिच्छाद्विट्ठिणो चेव बंधंति ति जाणावणद्धं सम्मादिट्ठिस्स वा मिच्छादिट्ठिस्स वा ति णिदिद्धं । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदा चेव णेरइयाणं उक्कस्साउअं

जो कोई मनुष्य या पंचेन्द्रिय तिर्यंच संज्ञी है, सम्यग्दृष्टि [अथवा मिथ्यादृष्टि] है, सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त है, कर्मभूमि या कर्मभूमिप्रतिभागमें उत्पन्न हुआ है, संख्यात वर्षकी आयुवाला है; स्त्रीवेद, पुरुषवेद या नपुंसकवेदसे संयुक्त है; जलचर अथवा थलचर है, साकार उपयोगसे सहित है, जागरुक है, तत्प्रायोग्य संकलेश [अथवा विगुद्धि] से संयुक्त है, तथा जो उत्कृष्ट आवाधाके साथ देव व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको बांधनेवाला है, उसके बांधनेके प्रथम समयमें आयु कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है ॥ १२ ॥

अवगाहना, कुल, जाति, वर्ण, विन्यास और संख्याय आदिके भेदोंसे निर्मित विशेषताका अभाव बतलानेके लिये सूत्रमें 'अण्णदरस्स' यह कहा है । देवोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धक मनुष्य ही होते हैं तथा नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धक मनुष्य अथवा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच होते हैं, यह जतलानेके लिये "मणुस्सस्स वा पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियस्स वा सण्णिस्स" ऐसा कहा है । देवोंकी उत्कृष्ट आयुको सम्यग्दृष्टि ही बांधते हैं तथा नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको मिथ्यादृष्टि ही बांधते हैं, यह प्रगट करनेके लिये "सम्मादिट्ठिस्स वा मिच्छादिट्ठिस्स वा" ऐसा निर्देश किया गया है । जो छह पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो चुके हैं वे ही नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको बांधते

बंधंति ति जाणावण्डं सन्वाहि पज्जसीहि पज्जत्तयदस्से ति मणिदं । देवाणं उक्कस्साउअं पण्णारसकम्मभूमीसु चैव वज्झइ, णेरइयाणं उक्कस्साउअं पण्णारसकम्मभूमीसु कम्मभूमिपडिभागसु च वज्झइ ति जाणावण्डं कम्मभूमियस्स वा कम्मभूमिपडिभागस्स वा ति परुविदं । देव-णेरइयाणं उक्कस्साउअमसंखेज्जवासाउवतिरिक्ख-मणुस्सा ण बंधंति, संखेज्जवासाउवा चैव बंधंति ति जाणावण्डं संखेज्जवासाउअस्से ति परुविदं । देव-णेरइयाणं उक्कस्साउअबंधस्स तीहि वेदेहि विरोहो णत्थि ति जाणावण्डं इत्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा णवुंसयवेदस्स वा ति मणिदं ।

एत्थ भाववेदस्स ग्रहणमण्णहा दब्बित्थिवेदेण वि णेरइयाणमुक्कस्साउअस्स बंधण-संगादो । ण च तेण सह तस्स बंधो, आ पंचमी ति सीहा इत्थीओ जंति^१ छट्ठिपुढवि ति एदेण सुत्तेण सह विरोहादो । ण च देवाणं उक्कस्साउअं दब्बित्थिवेदेण सह वज्झइ, गियमा गिगंयलिंगेणे ति सुत्तेण सह विरोहादो । ण च दब्बित्थीणं गिगंयत्तमत्थि, चेलादिपरिच्चाएण विणा तासिं भावगिगंयत्तामावादो । ण च दब्बित्थि-

हैं, यह जतलानेके लिये “सन्वाहि पज्जसीहि पज्जत्तयदस्स” यह कहा है। देवोंकी उत्कृष्ट आयु पद्मह कर्मभूमियोंमें ही बंधती है तथा नारकियोंकी उत्कृष्ट आयु पद्मह कर्मभूमियों और कर्मभूमिप्रतिभागोंमें भी बांधी जाती है, यह बतलानेके लिये “कम्मभूमियस्स कम्मभूमिपडिभागस्स वा” ऐसा कहा है। देवों व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको असंख्यातवर्षायुक्त तिर्यक् या मनुष्य नहीं बांधते हैं, किन्तु संख्यात-वर्षायुक्त ही बांधते हैं, यह जतलानेके लिये ‘संखेज्जवासाउअस्स’ ऐसा निर्देश किया है। देवों व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धका तीनों वेदोंके साथ विरोध नहीं है, यह जतलानेके लिये “इत्थिवेदस्स वा पुरिसवेदस्स वा णवुंसयवेदस्स वा” ऐसा कहा है।

यहाँ भाववेदका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, द्रव्यवेदका ग्रहण करनेपर द्रव्य स्त्रीवेदके साथ भी नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धका प्रसंग आता है। परन्तु इसके साथ नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुका बन्ध होता नहीं है, क्योंकि “पांचवीं पृथिवी तक सिंह और छठी पृथिवी तक स्त्रियां जाती हैं” इस सूत्रके साथ विरोध आता है। देवोंकी भी उत्कृष्ट आयु द्रव्य स्त्रीवेदके साथ नहीं बंधती, क्योंकि, अन्वयात् “[अभ्युत कल्पसे ऊपर] नियमतः निर्ग्रन्थ लिंगसे ही उत्पन्न होते हैं” इस सूत्रके साथ विरोध होता है। और द्रव्य स्त्रियोंके निर्ग्रन्थता सम्भव नहीं है, क्योंकि, चेलादिपरित्यागके बिना उनके भाव निर्ग्रन्थताका अभाव है। द्रव्य स्त्रीवेदी व ननुंसकवेदी वस्त्रादिकका त्याग करके निर्ग्रन्थ लिंग धारण

१ अ-अ-अभिष्टु ‘आ पंचमी ति सीहा इत्थीओ जति छट्ठी’ इति पाठः । २ मूलचर १२-११२.
३ मूलचर १२-११४, ति. प. ८, ५५१-५१.

मनुंसयवेदाणं चेलादिचाणे अत्थि, छेदसुत्तेण सह विरोहादो । देवाणं उक्कस्साउअस्स मनुस्सा संज्झा यलचारिणे बंधया, गेरइयाणं उक्कस्साउअस्स यलचारिमणुसमिच्छाइट्ठिणे जल-यलचारिसिग्णिपंधिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिणे वा बंधया ति जाणावण्डं जलचरस्स वा यलचरस्स वा ति भणिंदं । खगचारिणे देव-गेरइयाणं उक्कस्साउअं किण्ण बंधंति ? न, पक्खीणं सत्तमपुढविणेरइएसु अणुत्तरविमाणवासियदेवेसु वा उप्पज्जं पडि सत्तीए अमावादो । न विज्जाहराणं खगचरत्तमत्थि, विज्जाए विणा सहावदो चेव गगणमण-समत्थेसु खगयरत्तप्पसिद्धीदो ।

दंसणोवजोगे वट्ठताणं उक्कस्साउअबंधो न होदि, किंतु णाणोवजोगे बट्ठताणं एवे ति जाणावण्डं सागारणिहेसो कदो । सुत्ताणमाउअस्स उक्कस्सबंधो न होदि ति जाणावण्डं जागारणिहेसो कदो । जहा सेसकम्माणं उक्कस्सट्ठिदीओ उक्कस्ससंकिलेसेण वज्जंति, तहा आउअस्स उक्कस्सट्ठिदी उक्कस्सविसोहीए उक्कस्ससंकिलेसेण वा न वज्जदि ति जाणावण्डं तप्पाओग्गसंकिलिडुस्स वा तप्पाओग्गविसुद्धस्स वा ति भणिंदं ।

कर सकते हैं, ऐसी आशंका करना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा स्वीकार करनेपर छेदसूत्रके साथ विरोध होता है ।

देवोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धक स्थलचारी संयत मनुष्य, तथा नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुके बन्धक स्थलचारी मिथ्यादृष्टि मनुष्य एवं जलचारी व स्थलचारी संबंधी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि हैं, इसके ज्ञापनार्थ "जलचरस्स वा यलचरस्स वा" ऐसा कहा है ।

शंका— आकाशचारी जीव देव व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको क्यों नहीं बांधते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पक्षियोंके सप्तम पृथिवीके नारकियों अथवा अनुत्तर बिमलवासी देवोंमें उत्पन्न होनेकी सामर्थ्य नहीं है । यदि कहा जाय कि विद्याधर भी तो आकाशचारी हैं, वे वहां उत्पन्न हो सकते हैं; तो ऐसा कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, विद्याकी सहायताके बिना जो स्वभावसे ही आकाशगमनमें समर्थ हैं उनमें ही खगचरत्वकी प्रसिद्धि है ।

दर्शनोपयोगमें वर्तमान जीवोंके उत्कृष्ट आयुका बन्ध नहीं होता, किन्तु ज्ञानोपयोगमें वर्तमान जीवोंके ही उसका बन्ध होता है, यह जललानेके लिये 'साकार' पक्का निर्देश किया है । सोचें हुए जीवोंके उत्कृष्ट आयुका बन्ध नहीं होता, यह बतलानेके लिये 'जागर' पक्का प्रयोग किया है । जिस प्रकार शेष कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितियां उत्कृष्ट संकलशसे बंधती हैं वैसे आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति उत्कृष्ट विभुक्ति अथवा उत्कृष्ट संकलशसे नहीं बंधती, यह जललानेके लिये "तप्पाओग्गसंकिलिडुस्स वा तप्पाओग्गविसुद्धस्स वा" ऐसा कहा है । उत्कृष्ट आकाशके बिना उत्कृष्ट स्थिति

उक्कस्सिआवाए विणा उक्कस्सिदिदी ण होदि ति जाणावण्डं उक्कस्सियाए आवाहाए
इदि भण्दि । विदियादिसमएसु आवाहा उक्कस्सिया ण होदि ति पुव्वकोडिसिभाग-
मावाहं काऊण देव-भेरइयाणं उक्कस्साउअं वंधमाणपढमसमए चैव उक्कस्साउअवेयणा
होदि ति भण्दि ।

तव्वदिरित्तमणुकस्सा ॥ १३ ॥

तदो उक्कस्सादो वदिरित्तं तव्वदिरित्तं, सा अणुकस्सा । एसा अणुकस्सकालवेयणा
असंखेज्जवियप्पा । तेण तिस्से सामित्तं पि असंखेज्जवियप्पं । तं जहा — पुव्वकोडिसिभाग-
मावाहं काऊण तेतीससागरोवमाउअं जेण बद्धं सो उक्कस्सकालसामी । जेण समऊणं पवद्धं
सो अणुकस्सकालसामी । जेण [दुसमऊणं पवद्धं सो वि अणुकस्सकालसामी । जेण] ति-
समऊणं पवद्धं सो वि अणुकस्सकालसामी । एवमसंखेज्जभागहाणी होदूण ताव गच्छदि
जाव जहणपरित्तासंखेज्जेण उक्कस्साउड्डिदि खंडिदूण तत्थ एगखंडं परिहीणो ति । पुणो
उक्कस्साउअं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडेदूण तत्थ एगखंडपरिहीणे असंखेज्जभागहाणीए
परिसमत्ती संखेज्जभागहाणीए आदी च होदि । एवं संखेज्जभागहाणी होदूण ताव
गच्छदि जाव उक्कस्साउअस्स अद्धं समऊणं परिहीणं ति ।

नहीं होती है, यह आपन करानेके लिये 'उक्कस्सियाए आवाहाए' ऐसा कहा है ।
चूंकि द्वितीयादिक समयोंमें आवाधा उत्कृष्ट होती नहीं है, अतः पूर्वकोटिके तृतीय
भागको आवाधा करके दोनों व नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको बांधनेवाले जीवके
बन्धके प्रथम समयमें ही उत्कृष्ट आयुवेदना होती है, ऐसा कहा है ।

उससे भिन्न अनुत्कृष्ट वेदना होती है ॥ १३ ॥

उससे अर्थात् उत्कृष्टसे विपरीत आयु कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा अनुत्कृष्ट
वेदना होती है । यह अनुत्कृष्ट कालवेदना असंख्यात भेद स्वरूप है । इसीलिये
उसके स्वामी भी असंख्य प्रकार हैं । यथा — पूर्वकोटिके तृतीय भागको आवाधा
करके तेतीस सागारोपम प्रमाण आयुको जिसने बांधा है वह कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट
वेदनाका स्वामी है । जिसने एक समय कम उत्कृष्ट आयुको बांधा है वह अनु-
त्कृष्ट कालवेदनाका स्वामी है । जिसने [दो समय कम उत्कृष्ट आयुको बांधा है
वह भी अनुत्कृष्ट कालवेदनाका स्वामी है । जिसने] तीन समय कम उत्कृष्ट आयुको
बांधा है वह भी अनुत्कृष्ट कालवेदनाका स्वामी है । इस प्रकार असंख्यातभागहानि
होकर तब तक जाती है जब तक जन्म्य परित्तासंख्यातसे उत्कृष्ट आयुस्थितिको
खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण हानि नहीं हो जाती । पश्चात् उत्कृष्ट
आयुको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करके उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण हानिके हो
जानेपर असंख्यातभागहानिकी समाप्ति और संख्यातभागहानिका प्रारम्भ होता
है । इस प्रकार संख्यातभागहानि होकर तब तक जाती है जब तक उत्कृष्ट आयुका
एक समय कम अर्ध भाग हानि नहीं हो जाता ।

पुणो उक्कस्सावाहं काऊण उक्कस्साउअस्स अदे पवदे संखेज्जगुणहाणी होदि । पुणो समऊणे अदे पवदे वि संखेज्जगुणहाणी चेव । एवं संखेज्जगुणहाणी ताव गच्छदि जाव उक्कस्साउअं जहणपरित्तसंखेज्जेण खंडेदूण तत्थ एगखंडं रुवहियं सेसं ति । एतो प्पहुडि असंखेज्जगुणहाणी चेव होदूण गच्छदि । एवं ताव नेदव्वं जाव पुव्वकोटि-तिभागमावाहं काऊण देवेसु दसवस्ससइस्साउअं भंधिदूण डिरो ति । पुणो एदेण आउएण समाणमणुस्साउअं घेतूण समऊण-दुसमऊणादिकमेण अधडिदिगल्लेण नेदव्वं जाव भवत्तिदियचरिमसमओ ति । एवं कदे पुव्वकोटित्तिभोगेणभहियसमऊणतेतीस-सागरोवममेतट्ठाणवियप्पा सामिच्चवियप्पा च लद्धा होंति ।

संपदि एत्थ जीवसमुदाहारो छहि अणियोगहोरहि उच्चदे । तं जहा — उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा अत्थि । तदणंतरहेट्ठिमट्ठाणे वि जीवा अत्थि । एवं नेदव्वं जाव अणुक्कस्स-जहणट्ठाणे ति ।

आउअस्स उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा असंखेज्जा, नेरइयउक्कस्साउअं भंधमाण-जीवाणमसंखेज्जाणमुवलंभादो । एवं सव्वत्थ नेदव्वं । णवरि एइंदियपाओमाट्ठाणेषु एक्केक्केसु जीवा अणंता । ततो हेट्ठिमेसु खवगसेडीए चेव लब्भमाणेषु संखेज्जा ।

पुनः उत्कृष्ट आवाधाको करके उत्कृष्ट आयुके अर्ध भागको बांधनेपर संख्यातगुणहानि होती है । प्रश्नात् एक समय कम अर्ध भागके बांधनेपर भी संख्यातगुणहानि ही होती है । इस प्रकार संख्यातगुणहानि तब तक जाती है जब तक कि उत्कृष्ट आयुको अघन्य परीतासंख्यातसे कथित करनेपर उसमेंसे एक अधिक एक खण्ड दोष रहता है । अब यहांसे असंख्यातगुणहानि ही होकर जाती है । इस प्रकार तब तक ले जाना चाहिये जब तक पूर्वकोटिके तृतीय भागको आवाधा करके देवोंमें दस हजार वर्ष प्रमाण आयुको बांधकर स्थित नहीं होता ।

पश्चात् इस आयुके समान मनुष्यायुको ग्रहणकर एक समय कम दो समय कम इत्यादि क्रमसे अघःस्थितिके गल्लेसे भवसिद्धिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये । ऐसा करनेपर पूर्वकोटिके तृतीय भागसे अधिक व एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण स्थानविकल्प और स्वामित्वविकल्प प्राप्त होते हैं ।

अब यहां छह अनुयोगद्वारोंके द्वारा जीवसमुदाहारको कहते हैं । यथा — उत्कृष्ट स्थानमें जीव हैं । उससे अनन्तर नीचेके स्थानमें भी जीव हैं । इस प्रकार अनुत्कृष्ट-अघन्य स्थान तक ले जाना चाहिये ।

आयुके उत्कृष्ट स्थानमें असंख्यात जीव हैं, क्योंकि, नारकियोंकी उत्कृष्ट आयुको बांधनेवाले असंख्यात जीव पाये जाते हैं । इसी प्रकार सब स्थानोंमें जानना चाहिये । विशेषता इतनी है कि एकेग्रिह्यके योग्य स्थानोंमेंसे एक एक स्थानमें अनन्त जीव हैं । उससे नीचेके क्षपकभेजिमें ही पाये जानेवाले स्थानोंमें संख्यात जीव हैं ।

सेही ण सक्कदे णेदुं, विसिदुवएसाभावादो ।

उक्कस्सद्वाणजीवपमाणेण सव्वद्वाणजीवा केवडिएण कालेण अवहिरिज्जन्ति ? अणंतेण कालेण । एवं तसकाइयपाओग्गसव्वद्वाणजीवाणं वत्तवं । एइंदियपाओग्गद्वाणजीवपमाणेण सव्वजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जन्ति ? अंतोमुहुत्तेण । एवं सव्वत्थ णेदवं ।

उक्कस्सए द्वाणे जीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? अणंतिमभागो । एवं तसपाओग्गसव्वद्वाणेसु वत्तवं । वणप्फदिकाइयपाओग्गेसु द्वाणेसु सव्वद्वाणजीवाणमसंखेज्जदिभागो । एवं सव्वत्थ वणप्फदिपाओग्गद्वाणेसु वत्तवं ।

सव्वत्थोवा जहण्णए द्वाणे जीवा । उक्कस्सए द्वाणे जीवा असंखेज्जगुणा । अजहण्णअणुक्कस्सएसु द्वाणेसु जीवा अणंतगुणा । अणुक्कस्सए द्वाणे जीवा विसेसाहिया । अजहण्णएसु द्वाणेसु जीवा विसेसाहिया । सव्वेसु द्वाणेसु जीवा विसेसाहिया । एवमुक्कस्ससामित्तं समत्तं ।

सामित्तेण जहण्णपदे णाणावरणीयवेदणा कालदो जहणिया कस्स ? ॥ १४ ॥

अणिप्रकृपणा करना शक्य नहीं है, क्योंकि, उसके सम्बन्धमें विशिष्ट उपदेशका अभाव है ।

उत्कृष्ट स्थान सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे सब स्थानोंके जीव कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे अनन्त कालके द्वारा अपहृत होते हैं । इसी प्रकार त्रसकायिक प्रायोग्य सब स्थानोंके जीवोंकी प्रकृपणा करना चाहिये । एकेन्द्रिय प्रायोग्य स्थानों सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने काल द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा अपहृत होते हैं । इसी प्रकार सर्वत्र ले जाना चाहिये ।

उत्कृष्ट स्थानमें जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके अनन्तवें भाग प्रमाण हैं । इसी प्रकार त्रस प्रायोग्य सब स्थानोंमें कहना चाहिये । वनस्पतिकायिक प्रायोग्य स्थानोंमें सब स्थानोंके जीवोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । इसी प्रकार सर्वत्र वनस्पतिकायिक प्रायोग्य स्थानोंमें कहना चाहिये ।

जघन्य स्थानमें सबसे स्तोक जीव हैं । उत्कृष्ट स्थानमें उनसे असंख्यातगुणे जीव हैं । अजघन्यअनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव उनसे अनन्तगुणे हैं । अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव उनसे विशेष अधिक हैं । अजघन्य स्थानोंमें जीव उनसे विशेष अधिक हैं । सब स्थानोंमें जीव उनसे विशेष अधिक हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें ज्ञानावरणीयकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है ? ॥ १४ ॥

जहणपदे इदि पुव्वुत्तअहियारसंमालणइं गिरिइं । सेसकम्मपडिसेहइो जाणावरणीय-
णिइसो । कालणिइसो खेत्तादिपडिसेहफलो । पुव्वाणुपुव्विकमं' मोचूण पच्छाणुपुव्वीए
जहणसामित्तपरूवणं किमइं कीरेदं ? ण, तीहि वि आणुपुव्वीहि परूविदे दोसो णत्थि
त्ति जाणावणइं तहापरूवणादो । अथवा, जहणट्ठाणादो उक्कस्सट्ठाणं संगहिदसिस्सट्ठाण-
वियप्पसादो पहाणमिदि जाणावणइं पुव्वमुक्कस्सट्ठाणपरूवणा कदा । सेसं सुगमं ?

**अण्णदरस्स चरिमसमयछदुमत्थस्स तस्स जाणावरणीयवेयणा
कालदो जहणा ॥ १५ ॥**

ओगाहणादिभेदेहि' जहणकालविरोहाभावपरूवणइमण्णदरस्से त्ति भणिदं । छदुमं
णाम आवरणं, तम्हि चिट्ठिदि त्ति छदुमत्थो, तस्स छदुमत्थस्से त्ति णिइसेण केवलिपडि-
सेहो कदो । चरिमसमयछदुमत्थस्से त्ति णिइसो दुचरिमादिछदुमत्थपडिसेहफलो । स्त्रीण-
कसायदुचरिमसमय किण्ण जहणसामित्तं दिज्जेदं ? ण, तत्थ जाणावरणीयस्स दुसमइयडिदि-

'अधम्य पदमे' यह निर्देश पूर्वोक्त अधिकारका स्मरण करानेके लिये कहा
है । शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेके लिये 'ज्ञानावरणीय' पदका निर्देश किया है । कालके
निर्देशका प्रयोजन श्रेयादिकोंका प्रतिषेध करना है ।

शंका — पूर्वाणुपूर्वीकमको छोड़कर पश्चादानुपूर्वीसे अधम्य स्वामित्वकी प्ररूपणा
किसलिये की जा रही है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, तीनों ही आनुपूर्वियोंसे प्ररूपणा करनेपर कोई दोष
नहीं होता, यह जतलानेके लिये यहां पश्चादानुपूर्वीकमसे प्ररूपणा की गई है । अथवा
अधम्य स्थानकी अपेक्षा समस्त स्थानभेदोंका संग्रहकर्ता होनेसे उत्कृष्ट स्थान प्रधान
है, यह ज्ञात करानेके लिये पहिले उत्कृष्ट स्थानकी प्ररूपणा की गई है ।

शेष कथन सुगम है ।

जो कोई भी जीव छद्मस्थ अवस्थाके अन्तिम समयमें वर्तमान है उसके कालकी
अपेक्षा ज्ञानावरणीय कर्मकी अधम्य वेदना होती है ॥ १५ ॥

अवगाहनादिक भेदोंसे अधम्य कालवेदनाके होनेमें कोई विरोध नहीं है,
यह बतलानेके लिये सूत्रमें 'अम्यतर' पदका उपादान किया गया है । छद्म
शब्दका अर्थ आवरण है, उसमें जो स्थित है वह छद्मस्थ कहा जाता है ।
उक्त छद्मस्थका निर्देश करनेसे केवलीका प्रतिषेध किया गया है । 'अन्तिम समय-
वर्ती छद्मस्थ' इस निर्देशका फल द्विचरम-त्रिचरम आदि समयोंमें वर्तमान
छद्मस्थोंका प्रतिषेध करना है ।

शंका — स्त्रीणकथाय गुणस्थानके द्विचरम समयमें अधम्य वेदनाका स्वामित्व
क्यों नहीं दिया जाता है ?

इंसबादो । एवं तिचरिमादिछद्मत्थेसु वि जहण्णसामित्ताभावो जाणिदूण वत्तव्वो । तम्हा खीणकसायचरिमसमए एगसमइयडिदिणाणावरणकम्मकखंधे जहण्णसामित्तं होदि ति वेत्तव्वं ।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ १६ ॥

एदम्हादो जं वदिरित्तं तमजहण्णा कालवेयणा होदि । तं च अणेयवियप्पं । तेण तम्हेदपरूवणादुवारेण तेसिं द्वाणाणं सामित्तपरूवणं कत्तामो । तं जहा— एगो खवगो कम्माणि परिवाडीए खविय चरिमसमयखीणकसाई जादो । तस्स खीणकसायस्स चरिमसमए एगा डिदि एगसमयकालपमाणा अच्छिदा । तस्स णाणावरणीयवेयणा कालदो जहण्णा । एसो जहण्णकालसामी । पुणो अण्णेगो जीवो पुव्वविधाणेणांगंतूण दुचरिमसमय-खीणकसाई जादो । सो अजहण्णकालसामी । एदं विदियद्वाणं । पुणो अण्णो जीवो तिचरिमसमयखीणकसाई जादो । एसो वि अजहण्णकालसामी । तं तदियं द्वाणं । एवं चउत्थादिकमेण ओदारेदव्वं जाव खीणकसायद्वाए संखेज्जदिभागो ति । एदे णिरंतरद्वाण-सामिणो होति ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, वहां ज्ञानावरणीयकी दो समय प्रमाण स्थिति देखी जाती है ।

इसी प्रकार त्रिचरम आदि छद्मस्थानोंमें भी जघम्य वेदनाके स्वामित्वका जमाव जानकर कहना चाहिये । इसीलिये क्षीणकषायके अन्तिम समयमें ज्ञानावरण कर्मस्कन्धकी एक समयवाली स्थिति युक्त जीव जघम्य वेदनाका स्वामी होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

जघम्य वेदनासे भिन्न अजघम्य वेदना होती है ॥ १६ ॥

इस जघम्य वेदनासे जो भिन्न है वह कालकी अपेक्षा अजघम्य वेदना है । वह अनेक भेद रूप है । इसलिये उसके भेदोंकी प्ररूपणा करते हुए उन स्थानोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— कोई एक क्षणक परिपाटीसे कर्मोंका क्षण करके क्षीण-कषायके अन्तिम समयवर्ती हुआ । उस जीवके क्षीणकषाय होनेके अन्तिम समयमें एक समय काल प्रमाण एक स्थिति रहती है । उसके ज्ञानावरणीयकी वेदना कालकी अपेक्षा जघम्य होती है । यह जघम्य कालवेदनाका स्वामी है । पुनः एक दूसरा जीव पूर्व विधिसे आ करके क्षीणकषायके त्रिचरम समयवर्ती हुआ । यह अजघम्य कालवेदनाका स्वामी है । यह द्वितीय स्थान है । पुनः एक और जीव क्षीणकषायके त्रिचरम समयवर्ती हुआ । यह भी अजघम्य कालवेदनाका स्वामी है । वह तिसरा स्थान है । इसी प्रकार चतुर्थ पंचम आदिके क्रमसे क्षीणकषाय-कालके संख्यातवें भाग तक उतारना चाहिये । ये सब निरन्तर स्थानोंके स्वामी होते हैं ।

पुणो अण्णो जीवो पुव्वविहाणेनागंतुण पुव्वणिरुद्धिदीए तदणंतरहेहिमखीण-
कसाई जादो । एदं सांतरमपुणरुत्तङ्गाणं, पुव्विल्लङ्गाणं पेक्खिदूण अंतोसुमुच्चमेत्तहिदीहि
अंतरिदूणप्पणसावो । तं कथं णव्वदे ? एत्थ चरिमहिदिखंडयचरिमफालीए उवलंमावो,
उवरिमहिदिमि तदणुवलंमावो । एतो प्पहुडि हेड्डा समज्जुणक्कीरणद्धमिचिणंतरङ्गाणेसु
समुप्पण्णेषु सइं सांतरङ्गाणमुप्पज्जदि । कुदो ? अप्पिद-अप्पिदहिदिखंडयस्स चरिमफालि-
मेत्तमंतरिदूणप्पसीदो । एवमोदोरेदव्वं जाव अणियट्ठिअद्दाए संखेज्जदिमागो ति । तत्थ-
तणअणियट्ठिदिदिसंतादो बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णाणावरणजहण्णट्ठिदिसंतं विसेसाहियं पल्लो-
वमस्स असंखेज्जदिमागेण ।

पुणो एदमणियट्ठिदिदिसंतं मोत्तूण बादरेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिसंतं वेसूण
समउत्तरं वड्ढिदूण पव्वे णिरंतरमण्णमपुणरुत्तङ्गाणं उप्पज्जदि । पुणो एदं काए वड्ढीए
वड्ढिदे ति उत्ते असंखेज्जभागवड्ढीए । एदस्स वड्ढिदसमयस्स आगमणहं को भागहारो ।
बादरेइंदियधुवड्ढिदी । कुदो ? बादरेइंदियधुवड्ढिदीए बादरेइंदियधुवड्ढिदिमवहरिय लद्धमेन-

पश्चात् दूसरा एक जीव पूर्व विधिते आकर पूर्वकी विवक्षित स्थितिसे
तदनन्तर अघस्तन क्षीणकषायी हुआ । यह सान्तर अपुनरुक्त स्थान है, क्योंकि,
पूर्वके स्थानकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थितियोंके अन्तरसे यह स्थान उत्पन्न हुआ है ।

शंका—वह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि, यहाँ अन्तिम स्थितिकाण्डकी अन्तिम फालि पायी
जाती है, परन्तु ऊपरकी स्थितिमें वह नहीं पायी जाती ।

यहाँसे प्रारम्भ होकर नीचे एक समय कम उत्कीरणकालके बराबर निरन्तर
स्थानोंके उत्पन्न होनेपर एक बार सान्तर स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि,
विवक्षित विवक्षित स्थितिकाण्डकी अन्तिम फालि प्रमाण अन्तर करके वह
उत्पन्न हुआ है । इस प्रकार अनिवृत्तिकरणकालके संख्यातवें भाग तक उतारना
चाहिये । वहाँके अनिवृत्तिकरणके स्थितिसत्त्वसे बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवके
ज्ञानावरणका अघन्य स्थितिसत्त्व पत्योपमके असंख्यातवें भागसे विशेष अधिक है ।

पुनः इस अनिवृत्तिकरणके स्थितिसत्त्वको छोड़कर और बाहर एकेन्द्रिय
पर्याप्तके अघन्य स्थितिसत्त्वको ग्रहण करके एक एक समय बढ़कर बाँधनेपर दूसरा
निरन्तर अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है ।

शंका—यह कौनसी वृद्धि द्वारा वृद्धिगत हुआ है ?

समाधान—वह असंख्यातभागवृद्धिके द्वारा वृद्धिगत हुआ है ।

शंका—इस बड़े हुए समयके निकालनेके लिये भागहार क्या है ?

समाधान—इसके लिये भागहार बाहर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थिति है, क्योंकि, बाहर
एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिका बाहर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर जो एक

समयं तस्मिन्नेव ध्रुवद्विदिं पडिरासिय पक्खित्ते वट्टमाणवट्ठिठाणुप्पत्तीदो' । दुसमउत्तरं वट्ठिदूणं बंधमाणस्स वि असंखेज्जभागवट्ठिठाणं चेव । कुदो ? पुव्विल्लभागहारस्स दुभागेण ध्रुवद्विदीए ओवट्ठिदाए दोण्णं समयाणमागमणदंसणादो । तिसमयउत्तरं वट्ठिदूणं बंधमाणस्स वि असंखेज्जभागवट्ठि चेव, ध्रुवद्विदीए तिभागेण ध्रुवद्विदिमोवट्ठिदे तिण्णं वट्ठिदुसमयाणमागमणदंसणादो । चदुसमयउत्तरं वट्ठिदूणं बंधमाणस्स असंखेज्जदिभागवट्ठि चेव, ध्रुवद्विदीए चदुम्भागेण ध्रुवद्विदीए ओवट्ठिदाए वट्ठिदचदुरूवाणमागमणदंसणादो । एवं बादरेइंदियध्रुवद्विदीए उवरि बादरेइंदियध्रुवद्विदीए जत्तियाओ पलिदोवमसलागाओ अत्थि, तत्तियमेत्तेसु समएसु वट्ठिदेसु वि असंखेज्जभागवट्ठि चेव होदि, पलिदोवमेण ध्रुवद्विदीए ओवट्ठिदाए वट्ठिदध्रुवद्विदिपलिदोवमसलागमेत्तसमयाणमागमणदंसणादो । पुणो एगसमयं वट्ठिदूणं बंधमाणस्स वि असंखेज्जभागवट्ठि चेव, किंचूणपलिदोवमेण ध्रुवद्विदीए भागे हिदाए रुवाहियपलिदोवमसलागमेत्तसमयाणमागमणदंसणादो । ध्रुवद्विदिपलिदोवमसलागासु दुगुणमेत्तासु वट्ठिदासु वि असंखेज्जभागवट्ठि चेव होदि, पलिदोवमदुभागेण ध्रुवद्विदीए ओवट्ठिदाए दुगुणध्रुवद्विदिपलिदोवमसलागाणमागमणुवलंभादो' । एवं पलिदोवमगुण-

समय लब्ध होता है उसे ध्रुवस्थितिको प्रतिराशि करके मिला देनेपर वर्तमान वृद्धिका स्थान उत्पन्न होता है ।

उत्तरोत्तर दो-दो समय बढ़कर बांधनेवाले जीवके भी असंख्यातभागवृद्धि-स्थान ही होता है, क्योंकि, पूर्व भागहारके द्वितीय भागका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर दो समय आते देखे जाते हैं । उत्तरोत्तर तीन-तीन समय बढ़कर बांधनेवालेके भी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, ध्रुवस्थितिके तृतीय भागका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर वृद्धिगत तीन समयोंकी प्राप्ति देखी जाती है । चार-चार समय उत्तरोत्तर बढ़कर बांधनेवालेके असंख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, ध्रुवस्थितिके चतुर्थ भागका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर वृद्धिमाप्त चार वर्षोंकी उपलब्धि देखी जाती है । इस प्रकार बादर एकस्मिन्वर्षकी ध्रुवस्थितिके ऊपर बादर एकस्मिन्वर्षकी ध्रुवस्थितिमें जितनी पल्योपमशलाकायें हैं उतने मात्र समयोंकी वृद्धि हो चुकनेपर भी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, पल्योपमका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर ध्रुवस्थितिकी पल्योपमशलाकाओं प्रमाण वृद्धिगत समयोंकी उपलब्धि देखी जाती है । तत्पश्चात् एक समयकी वृद्धि होकर बांधनेवालेके भी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, कुछ कम पल्योपमका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर एक अधिक पल्योपमशलाकाओं प्रमाण समयोंकी उपलब्धि देखी जाती है । ध्रुवस्थितिमें जितनी पल्योपमशलाकायें हैं उनसे दूनी वृद्धिके होनेपर भी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, पल्योपमके अर्ध भागका ध्रुवस्थितिमें भाग देनेपर दूनी ध्रुवस्थितिकी पल्योपमशलाकायें प्राप्त होती हैं । इस प्रकार पल्योपमकी

१ ताम्रती 'वट्टमाणवट्ठिठाणुप्पत्तीदो' इति पाठः । २ अ-काप्रसोः 'भागमुखलंभादो' इति पाठः ।

गारसलागमेत्तपढमवग्गमूलाणि वड्ढिदूण बंधमाणस्स वि असंखेज्जभागवड्ढिहाणं चेव होदि । कुदो ? पल्लिदोवमवग्गमूलेण धुवड्ढिदीए ओवड्ढिदाए धुवड्ढिदिपल्लिदोवमसलागमेत्तपल्लिदोवमपढमवग्गमूलाणमागमुवलंभादो । एवं बादरधुवड्ढिदीए मागहारो पल्लिदोवमविदियवग्गमूलं होदूण, पुणो कमेण हाइदूण तदियवग्गमूलं होदूण, पुणो आवलियं होदूण जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जं पत्तो त्ति ताव वड्ढावेदव्वो । एवं वड्ढिदे वि असंखेज्जभागवड्ढि चेव । कुदो ? जहण्णपरित्तासंखेज्जेण बादरेइंदियधुवड्ढिदीए ओवड्ढिदाए वड्ढिरुवाणमुवलंभादो । बादरेइंदियवीचारहाणाणि पेक्खिदूण एदे वड्ढिदसमया असंखेज्जगुणा होंति, पल्लिदोवमस्स संखेज्जदिभागत्तादो, आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पल्लिदोवमे भागे द्विदे बादरेइंदियवीचारहाणाणं पमाणुप्पत्तीदो; बादरेइंदियउक्कस्सड्ढिदीए उवरि समउत्तरादिकमेण बंधो ण लब्भदि त्ति ।

संपहि ड्ढिदिघादमस्सिदूण उवरिमहाणाणमुप्पत्ती परूवेदव्वो । तं जहा— बादरेइंदियउक्कस्सड्ढिदीदो समउत्तरं घादिदूण ड्ढिविदे असंखेज्जभागवड्ढि होदि । उवरिमड्ढिदि पुणो घादिदूण बादरेइंदियउक्कस्सड्ढिदिबंधादो दुसमउत्तरं कादूण ड्ढिविदे तमण्णमपुणरुत्तमसंखेज्जभागवड्ढिहाणं होदि । तिसमउत्तरं कादूण ड्ढिविदे अण्णमपुणरुत्त-

गुणकारभूत शालाकाओं प्रमाण पट्योपम-प्रथमवर्गमूलोंकी वृद्धि होकर बांधनेवालेके मी असंख्यातभागवृद्धिका ही स्थान होता है, क्योंकि, पट्योपमके वर्गमूलका भुज-स्थितिमें भाग देनेपर भुजस्थितिकी पट्योपमशालाकाओं प्रमाण पट्योपम-प्रथम-वर्गमूलोंकी उपलब्धि पायी जाती है । इस प्रकार बादर एकेन्द्रियकी भुजस्थितिका भागहार पट्योपमका द्वितीय वर्गमूल होकर, फिर क्रमसे हीन होकर तृतीय वर्गमूल होकर, फिर आवली होकर, जब तक अघन्य परीतासंख्यात प्राप्त नहीं होता तब तक बढ़ाना चाहिये । इस प्रकार भागहारके बढ़नेपर भी असंख्यातभागवृद्धि ही होती है, क्योंकि, अघन्य परीतासंख्यातका बादर एकेन्द्रियकी भुजस्थितिमें भाग देनेपर वृद्धिप्राप्त अंक उपलब्ध होते हैं । ये वृद्धिगत समय बादर एकेन्द्रियके वीचारस्थानोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, वे पट्योपमके संख्यातवै भाग प्रमाण हैं, आवलीके असंख्यातवै भागका पट्योपममें भाग देनेपर बादर एकेन्द्रियके वीचारस्थानोंका प्रमाण उत्पन्न होता है तथा बादर एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट स्थितिके ऊपर एक समयादिककी अधिकताके क्रमसे बन्ध नहीं पाया जाता ।

अब स्थितिघातका आश्रय करके उपरिम स्थानोंकी उत्पत्तिकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—बादर एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट स्थितिमेंसे एक-एक समय घात करके स्थापित करनेपर असंख्यातभागवृद्धि होती है । पञ्चत् उपरिम स्थितिकी फिरसे घातकर बादर एकेन्द्रियके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे दो-दो समय अधिक करके स्थापित करनेपर वह दूसरा अपुनरुक्त असंख्यातभागवृद्धिका स्थान होता है । तीन-तीन समय अधिक करके स्थापित करनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस

द्वानं होदि । एवं गेदत्वं जाव बादरेइंदियधुवडिदिं जहणपरित्तासंखेज्जेण खंडेदण एगखंडमेत्तेण वडिदणच्छिदद्विदिं' ति । पुणो एदस्सुवरि द्विदिधादेण समउत्तरं वडिदि वि असंखेज्जभागवड्डी होदि ।

एदस्स छेदभागहारो । तं जहा— जहणपरित्तासंखेज्जं विरेलदण बादरेइंदिय-धुवडिदिं समखंडं कादण दिण्णे विरलणरूवं पडि जहणपरित्तासंखेज्जेण खंडिदेगखंड-भागच्छदि । पुणो एदं समयाहियमिच्छामो ति एत्थ एगरूवधरिदं हेट्ठा विरलिय तं चेव समखंडं कादण दिण्णे एगरूवस्स वडिपमाणं पावदि । पुणो एदं उवरि दादण समकरणं करिय रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्ठिय लद्धमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागमुवरिमविरलणाए

अच्छेदनस्य राशेः रूपं छेदं वदन्ति गणितज्ञाः ।

अंशाभावे नाशं छेदस्याहुस्तदन्वेव ॥ ५ ॥

प्रकार बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करके एक खण्ड भागसे वृद्धिगत होकर स्थितिके स्थित होने तक ले जाना चाहिये । पश्चात् इसके ऊपर स्थितिघातसे उत्तरोत्तर एक एक समय बढ़नेपर भी असंख्यातभागवृद्धि होती है ।

इसके छेदभागहारको कहते हैं । यथा— जघन्य परीतासंख्यातका विरलन करके ऊपर बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको समखण्ड करके देनेपर एक एक विरलन अंकके प्रति जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करनेपर एक खण्ड प्राप्त होता है । फिर चूंकि इसे एक समय अधिक चाहते हैं, अतः एक अंकके प्रति प्राप्त राशिका नीचे विरलन करके ऊपर उसको ही समखण्ड करके देनेपर एक रूपका वृद्धिप्रमाण प्राप्त होता है । फिर इसको ऊपर देकर समकरण करके एक अधिक नीचेके विरलन प्रमाण स्थान जाकर उसको ही समखण्ड करके देनेपर एक रूपका वृद्धिप्रमाण प्राप्त होता है । इसको ऊपर देकर समकरण करके एक अधिक नीचेकी विरलन राशिके बराबर स्थान जाकर यदि एक रूपकी हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनके बराबर स्थान जाकर कितनी हानि प्राप्त होगी, इस प्रकार फल राशिसे गुणित इच्छा राशिमें प्रमाण राशिका भाग देनेपर जो एक रूपका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है उसको ऊपरकी विरलन राशिमेंसे—

जब राशिमें कोई छेद नहीं होता तब गणितज्ञ उसका छेद एक मान लेते हैं (जैसे $३ = \frac{३}{१}$) । और जब अंशका अभाव हो जाता है तब छेदोंका भी नाश समझना चाहिये ($\frac{१०}{१०} - \frac{१०}{१०} = \frac{१०-१०}{१०} = \frac{०}{१०} = ०$) ॥ ५ ॥

एदेण लक्खणेण सरिसछेदं कादूण सेहिदे सुद्धसेसमुक्कस्ससंखेज्जेमगरूवस्स असंखेज्जा भागा च भागहारो होदि । एदेण बादरधुवट्ठिदीए ओवट्ठिदाए इच्छिदङ्गाणस्स वट्ठिसमया आगच्छन्ति । पुणो द्विदिघादेण दुसमउत्तरं द्विदि घरेदूण द्विदस्स वि असंखेज्ज-भागवट्ठिदीए अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एत्थ वि छेदभागहारो चेव । तिसमउत्तरं घरेदूण द्विदस्स असंखेज्जभागवट्ठिदीए अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं ताव छेदभागहारो होदूण गच्छदि जाव बादरेइंदियधुवट्ठिदिं जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडेदूण तत्थ एगखंडस्सुवरि तं चेव उक्कस्ससंखेज्जेण खंडेदूण तत्थ एगखंडं रूऊणं वट्ठिदं ति । पुणो संपुण्णं वट्ठिदे समभागहारो होदि । कुदो ? उक्कस्ससंखेज्जेण रूवाहिण जहण्णपरित्तासंखेज्जे भागे हिदे उवरिमविरलणाए अवणेदुमेगरूवुवलंमादे । एत्थ संखेज्जभागवट्ठिदीए आदी असंखेज्ज-भागवट्ठिदीए परिसमती च जादा ।

पुणो एदस्सुवरि अण्णो जीवो द्विदिघादं करेमाणो समउत्तरद्विदि घरेदूण द्विदो । एत्थ वि संखेज्जभागवट्ठिदी चेव । एदिस्से वट्ठिदी छेदभागहारो होदि । तं जहा— उवरि-मेगरूवधरिदं हेट्ठा विरलेदूण तं चेव समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स एगेगो समओ पावदि । पुणो एदं उवरिमरूवधरिदेसु पक्खिविय समकरणे कीरमाणे परिहीन-

इस नियमके अनुसार समखण्ड करके घटा देनेपर अवशिष्ट उत्कृष्ट संख्यात व एक रूपका असंख्यात बहुभाग भागहार होता है । इसका बादर एकेन्द्रियकी भुवस्थितिमें भाग देनेपर अभीष्ट स्थानके वृद्धिगत समय प्राप्त होते हैं । फिर स्थितिघातसे उत्तरोत्तर दो समयोंकी अधिकताको प्राप्त स्थितिको ग्रहणकर स्थित हुए जीवके भी असंख्यातभागवृद्धिका अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । यहाँ भी छेदभागहार ही होता है । तीन तीन समय अधिक स्थितिको ग्रहणकर स्थित जीवके असंख्यात भागवृद्धिका अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार तब तक छेदभागहार होकर जाता है जब तक कि बादर एकेन्द्रियकी भुवस्थितिको जघन्य परीतासंख्यातसे क्षण्डित कर उसमेंसे एक खण्डके ऊपर उसको ही उत्कृष्ट संख्यातसे क्षण्डित करके उसमेंसे एक अंक कम एक खण्डकी वृद्धि नहीं हो जाती । तत्पश्चात् पूरे खण्ड प्रमाण वृद्धि हो जानेपर समभागहार होता है, क्योंकि, जघन्य परीतासंख्यातमें एक अधिक उत्कृष्ट संख्यातका भाग देनेपर ऊपरकी विरलन राशिमेंसे कम करनेके लिये एक रूप उपलब्ध होता है । अब यहाँ संख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ और असंख्यातभागवृद्धिकी समाप्ति हो जाती है ।

इसके ऊपर अन्य जीव स्थितिघातको करता हुआ एक-एक समय अधिक स्थितिको लेकर स्थित हुआ । यहाँ भी संख्यातभागवृद्धि ही होती है । इस वृद्धिका छेदभागहार होता है । यथा— ऊपरके एक एक अंकोंके ऊपर स्थित राशिका नीचे विरलन करके ऊपर उसको ही समखण्ड करके देनेपर हर एक अंकोंके प्रति एक एक समय प्राप्त होता है । फिर इसको ऊपरके अंकोंपर स्थित राशियोंमें मिलाकर

रूपायं पमाणं उत्तरे— रूवाहियहेडिमविरलणमेत्तद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लम्भदि तो उवरिमविरलणमि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स असंखेज्जभागो भागच्छदि । एदमुक्कस्ससंखेज्जमि सोहिदे एगरूवस्स असंखेज्जा भागा रूवूणुक्कस्ससंखेज्जं च भागहारो होदि । पुणो दुसमउत्तरं वट्ठिदे संखेज्जभागवट्ठिद्वाणं होदि । एदस्स वि छेदभागहारो । तिसमउत्तरं वट्ठिदे वि संखेज्ज-भागवट्ठि चेव । एवं ताव छेदभागहारो होदण गच्छदि जाव बादरेइंदियधुवट्ठिदिं उक्कस्ससंखेज्जेण खंडेदूण पुणो तत्थेगखंडं रूवूणुक्कस्ससंखेज्जेण खंडेदूण तत्थेगखंडं रूवूणं वट्ठिदे त्ति । संपुण्णं वट्ठिदे समभागहारो होदि । तं च कथं ? रूवूणुक्कस्ससंखेज्जं विरलेदूण उवरिमेगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे वट्ठिपमाणं होदि । एदमुवरिमरूव-धरिदेसु हादूण समकरणे कीरमाणे रूवाहियहेडिमविरलणमेत्तद्वाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी होदि त्ति रूवाहियहेडिमविरलणाए उवरिमविरलणाए ओवट्टिदाए एगरूवभागच्छदि । तम्मि उवरिमविरलणाए सोहिदे रूवूणुक्कस्ससंखेज्जं भागहारो होदि । पुणो एदेण

समकरण करते हुए हीन रूपोंके प्रमाणको कहते हैं— एक अधिक नीचेकी विरलन राशि प्रमाण अध्वान जाकर यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है तो ऊपरकी विरलन राशिमें वह कितनी प्राप्त होगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छा राशिमें प्रमाण राशिका भाग देनेपर एक रूपका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है । इसको उत्कृष्ट संख्यातमेंसे कम करनेपर शेष एक रूपका असंख्यात बहुभाग और एक कम उत्कृष्ट संख्यात भागहार होता है । आगे दो-दो समय बढ़नेपर संख्यातभाग-वृद्धिका स्थान होता है । इसका भी छेदभागहार है । तीन-तीन समय बढ़नेपर भी संख्यातभागवृद्धि ही होती है । इस प्रकार तब तक छेदभागहार होकर जाता है जब तक कि बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करके फिर उसमेंसे एक खण्डको एक कम उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करनेपर उसमेंसे एक कम एक खण्ड प्रमाण वृद्धि नहीं हो जाती । सम्पूर्ण खण्ड प्रमाण वृद्धि हो चुकनेपर समभागहार होता है ।

शंका— वह कैसे ?

समाधान— एक कम उत्कृष्ट संख्यातका विरलन कर उपरिम विरलनके एक रूपपर रखी हुई राशिको समखण्ड करके देनेपर वृद्धिका प्रमाण होता है । इसको उपरिम रूपोंपर रखी हुई राशियोंके ऊपर देकर समकरण करते हुए एक अधिक नीचेकी विरलनराशि प्रमाण अध्वान जाकर चूंकि एक अंककी हानि होती है, अतः एक अधिक नीचेकी विरलन राशिका ऊपरकी विरलन राशिमें भाग देनेपर एक अंक जाता है । उसको उपरिम विरलन राशिमेंसे कम करनेपर एक कम उत्कृष्ट संख्यात भागहार होता है ।

बादरधुवट्टिदीए ओवट्टिदाए संखेज्जभागवत्तिसमया लब्धंति । एवं छेदभागहार-समया-
होरेहि द्विदिघादमस्सिदूण पेदब्बं जाव धुवट्टिदिभागहारो दोरूवपमाणो पत्तो सि ।

पुणो अण्णो जीवो द्विदिघादं करोमाणो समउत्तराए द्विदीए आगदो । तमणं संखेज्ज-
भागवत्तुट्ठाणं होदि । पुणो एदस्स छेदभागहारो । तं जहा— उवरिमएगरूवधरिदं
विरलेदूण तं चेव समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्करस रूवस्स एगेगसमयपमाणं पावदि ।
पुणो एत्थ एगरूवधरिदं वेत्तूण उवरिमएगरूवधरिदमि दादूण समकरणे कीरमाणे रूवा-
दियेहेहिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी होदि सि रूवाहियेहेहिमविरलणाए
उवरिमविरलणाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । एवं सरिसछेदं
कादूण दोरूवेषु सोहिदे एगरूवस्स असंखेज्जा भागा सगलमेगखं च भागहारो होदि ।
पुणो एदेण बादरधुवट्टिदिमोवट्टिय लद्धमेत्ते वट्ठाविदे अणमपुणरुत्तं संखेज्ज-
भागवत्तुट्ठाणं होदि । पुणो दुसमउत्तरं वट्ठिदे वि संखेज्जभागवत्तुट्ठाणं होदि ।
एदस्स वि छेदभागहारो होदि । एदेण कमेण छेदभागहारो ताव गच्छदि जाव
बादरधुवट्टिदि दोहि रूवेहि खंडेदूण पुणो तत्थ एगखंडं रूऊणं दोहि रूवेहि अवहिरिय

फिर इसका बादर एकेन्द्रियकी भुवस्थितिमें भाग देनेपर संख्यातभागवृद्धिके
समय प्राप्त होते हैं । इस प्रकार छेदभागहार और समभागहारके द्वारा स्थिति-
घातका आश्रय करके भुवस्थितिभागहारके दो अंक प्रमाण प्राप्त होने तक छे
जाना चाहिये ।

पुनः दूसरा जीव स्थितिघातको करता हुआ उत्तरोत्तर एक-एक समय अधिक
स्थितिके साथ आया । वह संख्यातभागवृद्धिका अन्य स्थान होता है । अब इसके
छेदभागहारको कहते हैं । यथा— ऊपरके एक अंकके प्रति प्राप्त राशिका विरलन
करके उसे ही समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति एक एक समय
प्रमाण प्राप्त होता है । फिर इसमेंसे एक अंकके ऊपर रखी हुई राशिको ग्रहण कर
उसे उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त राशिमें देकर समकरण करते हुए एक अधिक
अधस्तन विरलन प्रमाण स्थान जाकर खूँकि एक रूपकी हानि होती है, अतः
एक अधिक अधस्तन विरलनका उपरिम विरलनमें भाग देनेपर एक रूपका
असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है । इसको समानखण्ड करके दो रूपोंमेंसे बड़ा
देनेपर एक रूपका असंख्यात बहुभाग और एक पूर्ण रूप भागहार होता है । फिर
इससे बादर भुवस्थितिको अपवर्तित करनेपर जो लब्ध हो उतना बहुनेपर संख्यात-
भागवृद्धिका अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । पुनः दो दो समय अधिक बहुनेपर भी
संख्यातभागवृद्धिका स्थान होता है । इसका भी छेदभागहार होता है । इस क्रमसे
छेदभागहार तथा तक जाता है जब तक बादर एकेन्द्रियकी भुवस्थितिको दो रूपोंसे
संख्यित करके उसमेंसे एक खण्डको एक कम करके पुनः दो रूपोंसे संख्यित करनेपर

लङ्गरूपमेतं वृद्धिं त्ति । संपुण्णे वृद्धिदे समभागहारो होदि । तं जहा—एगरूपं विरलेद्गुण उवरीमेगरूपवधिरिं दादूण समकरणं करिय रूवाहियेद्विगुणविरलणाए उवरीमविरलणाए ओवडिदाए एगरूपमागच्छदि । तम्मि दोसु रूपेसु सोहिदे एगरूपं भागहारो होदि । एदेणोवडिदबादरधुवडिदीए बादरधुवडिदीए उवरी पक्खित्ताए संखेज्जगुणवड्डीए आदी होदि, दोरूपेहि बादरधुवडिदीए गुणिदाए उप्पण्णत्तादो । एदम्सुवरी समउत्तरं वृद्धिदे छेदगुणगारो होदि । दोण्णं रूवाणं उवरी एगरूपवड्ढिणिमित्तपक्खेवो उच्चदे । तं जहा—धुवडिदीए वड्ढमाणे जदि एगरूपगुणगारो लम्भदि तो एगसमयस्स किं लभामो ति धुवडिदीए एगरूपे ओवडिदे पक्खेवपमाणं होदि ।

एस्थ धुवडिदि ति सिंदिहीए चत्तारि ४ रूवाणि । एदस्स गुणगारो एसिओ होदि १ । पुणो एदेण बादरधुवडिदीए गुणिदाए रूवाहियेद्विगुणवड्ढिदाणं होदि ९ ।

पुणो दुसमउत्तरं वृद्धिदे वि छेदगुणगारो होदि । एत्थ पुवं व तेरासियकमेण छेदगुणगारो साहियव्वो । तस्स पमाणमेदं २ । एदेण बादरधुवडिदीए गुणिदाए दुसमउत्तरद्विगुणवड्ढि

ओ प्राप्त हो उसमेंसे एक कम करनेपर प्राप्त राशि प्रमाण वृद्धि नहीं हो जाती । पूर्ण लब्ध प्रमाण वृद्धिके होनेपर समभागहार होता है । यथा—

एक रूपका विरलन करके ऊपर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको देकर समकरण करके एक अधिक अघस्तन विरलनका उपरिम विरलनमें भाग देनेपर एक रूप प्राप्त होता है । उसको दो रूपोंमेंसे कम कर देनेपर एक रूप भागहार होता है । इससे अपवर्तित बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको उसकी ध्रुवस्थितिके ऊपर प्रक्षिप्त करनेपर संख्यातगुणवृद्धिका प्रारम्भ होता है, क्योंकि, यह बादर एकेन्द्रियकी ध्रुवस्थितिको दो अंकोंसे गुणित करनेपर उत्पन्न हुई है । इसके ऊपर उत्तरोत्तर एक एक समयकी वृद्धि होनेपर छेदगुणकार होता है । अब दो रूपोंके ऊपर वृद्धिके निमित्तभूत प्रक्षेपको कहते हैं । यथा—ध्रुवस्थिति प्रमाण वृद्धिके होनेपर यदि एक रूप गुणकार प्राप्त होता है तो एक समयकी वृद्धिमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार ध्रुवस्थितिसे एक रूपको अपवर्तित करनेपर प्रक्षेपका प्रमाण होता है ।

यहां संदृष्टिमें ध्रुवस्थितिके लिये ४ अंक है । इसका गुणकार इतना (३) है । इससे बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर एक अधिक पूर्वी वृद्धिका स्थान होता है— $४ \times ३ = १२$ $४ \times १ + १$ । दो समय अधिक वृद्धिके होनेपर भी छेदगुणकार होता है । यहां पहिलेके समान ही त्रैराशिक क्रमसे छेदगुणकारको सिद्ध करना चाहिये । उसका प्रमाण यह है—३ । इससे बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर दो समय अधिक

होदि [१०] । एदेण कमेण छेदगुणगारो होदण ताव गच्छदि जाव अण्णेरूवूणधुवड्ढिदि-
मेत्तं वड्ढिदे ति । पुणो संपुण्णधुवड्ढिदीए वड्ढिदाए तिगुणवड्ढी होदि, बादरधुवड्ढिदिमेत्त-
समयाणं जदि एगा गुणगारसलागा लब्भदि तो बादरधुवड्ढिदीए किं लभामो ति पमाणेण
फलगुणिदिच्छाए ओवड्ढिदाए एगगुणगारसलागुवलंभादे । पुणो एदं सलागं दोसु रूवेसु
पक्खिविय बादरधुवड्ढिदीए गुणिदाए तिगुणवड्ढिदाणं होदि । तस्स पमाणमेदं [१२] । पुणो
एदस्सुवरि समउत्तरं वड्ढिदे छेदगुणगारो होदि । तं जहा — धुवड्ढिदिमेत्तसमयाणं जदि एगरूवं
गुणगारो लब्भदि तो एगसमयस्स किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवड्ढिदाए
एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि [१४] । एदम्मि तिसु रूवेसु पक्खित्ते एत्थियं होदि
[१३] । एदेण बादरधुवड्ढिदीए गुणिदाए समयादियतिगुणवड्ढिदाणं होदि [१३] । पुणो दुसम-
उत्तरं वड्ढिदे छेदगुणगारो होदि । एत्थ गुणगार उप्पाइज्जमाणे पुव्विल्लमंसं दुगुणिय तिसु
रूवेसु पक्खेवो कायव्वो । १ । २ । तिसमयउत्तरं वड्ढिदे छेदगुणगारो होदि । एत्थ पुव्व-
४

दुगुणी वृद्धि होती है— $४ \times ३ = १० = ४ \times २ + २$ । इस क्रमसे छेदगुणकार होकर तब
तक जाता है जब तक कि अन्य एक अंकसे कम भुवस्थिति प्रमाण वृद्धि नहीं हो
जाती । पश्चात् सम्पूर्ण भुवस्थिति प्रमाण वृद्धिके हो जानेपर तिगुणी वृद्धि होती
है । कारण यह है कि बादर एकेन्द्रियकी भुवस्थिति प्रमाण समयोंके यदि एक
गुणकारशलाका पायी जाती है तो बादर भुवस्थितिमें कितनी गुणकारशलाकाये प्राप्त
होगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाण राशिका भाग देनेपर एक गुणकारशलाका
पायी जाती है । इस शलाकाको दो रूपोंमें मिलाकर उससे बादर भुवस्थितिको
गुणित करनेपर तिगुनी वृद्धि होती है । उसका प्रमाण यह है— $(२ + १) \times ४ = १२$ ।
इसके ऊपर एक समय अधिक बढ़नेपर छेदगुणकार होता है । यथा— भुवस्थिति
प्रमाण समयोंका यदि एक अंक गुणकार प्राप्त होता है तो एक समयका कितना गुणकार
प्राप्त होगा, इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाण राशिका भाग देनेपर एक रूपका
असंख्यातवां भाग आता है— $\frac{१ \times १}{४} = \frac{१}{४}$ । इसको तीन रूपोंमें मिलानेपर इतना
होता है— $३ + \frac{१}{४} = \frac{१३}{४}$ । इसके द्वारा बादर भुवस्थितिको गुणित करनेपर एक
समय अधिक तिगुणी वृद्धिका स्थान होता है— $४ \times \frac{१३}{४} = १३ = ४ \times ३ + १$ । पश्चात् दो
समय अधिक वृद्धिके होनेपर छेदगुणकार होता है । यहां गुणकारको उत्पन्न कराते
समय पूर्वके अंशको दुगुणित कर उसे तीन रूपोंमें मिलाना चाहिये । $\frac{१}{४} \times २$ ।
तीन समय अधिक बढ़नेपर छेदगुणकार होता है । यहां पूर्वके अंशको तीनसे गुणित

संसो तिसुणेदब्बो । १ । ३ । एदं गुणगारो होदण ताव गच्छदि जाव पुब्बिल्लंसो

रूवणधुवट्ठिदीए गुणेदण तिसु रूवेसु पक्खितो ति । पुणो एत्थ वि पुब्बिल्लंसं पुण्णधुवट्ठिदीए गुणिय तिसु रूवेसु पक्खिते चत्तारिगुणगाररूवाणि होति । तेहि धुवट्ठिदीए गुणिदाए चट्ठगुणवक्खी होदि । १६ । एवं छेद-सम-गुणगारकमेण बंध-संते अस्सिदण पेदव्वं जाव सण्णिपंचिदियधुवट्ठिदि ति । तिस्से पमाणं संदिट्ठिदी अट्ठावीस । २८ । पुणो एदिस्से उवरि समउत्तरं पबद्धे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एदस्स गुणगारपमाणमेदं $\left[\begin{array}{c} ७ \\ १ \\ ४ \end{array} \right]$ । एदेण धुवट्ठिदीए गुणिदाए सण्णिपंचिदियस्स

समयाहियधुवट्ठिदिट्ठाणं होदि । २९ । एवं छेद-समगुणगारसरूवेण पेदव्वं जाव बादरधुव-ट्ठिदीए उक्कस्सगुणगारसलागाओ रूवणाओ पविट्ठाओ ति । एदमण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । २२८ । पुणो एदिस्से उवरि समउत्तरं वट्ठिदूण बद्धे' अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एदस्स छेदगुणगारो । तं जहा— बादरधुवट्ठिदिमेत्तसमएसु वट्ठिदेसु जदि एगा गुणगारसलागा लम्पदि तो एगसमए वट्ठिदे किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छमोवट्ठिय लद्धे

करना चाहिये $\frac{१}{४} \times ३$ । इस प्रकार छेदगुणकार होकर तब तक जाता है जब तक कि पूर्वका अंश एक कम ध्रुवस्थितिसे गुणित होकर तीन रूपोंमें प्रक्षिप्त नहीं हो जाता । फिर यहाँ भी पूर्वके अंशको पूर्ण ध्रुवस्थितिसे गुणित कर तीन रूपोंमें मिला देनेपर गुणकार चार अंक होते हैं । उससे ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर चौगुणी वृद्धि होती है— $४ \times ४ = १६$ । इस प्रकार छेदगुणकार और समगुणकारके क्रमसे बन्ध ब सत्त्वका आश्रय करके संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवकी ध्रुवस्थिति तक ले जाना चाहिये । उसका प्रमाण संदष्टिमें अट्ठाईस २८ है । फिर इसके ऊपर एक समयकी वृद्धि होनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । उसके गुणकारका प्रमाण यह है— $७\frac{१}{४}$ । इससे ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवकी एक समयसे अधिक ध्रुव-स्थितिका स्थान होता है— $\frac{१}{४} \times ३\frac{१}{४} = २९$ । इस प्रकार छेदगुणकार और समगुणकार स्वरूपसे बादर ध्रुवस्थितिमें एक कम उत्कृष्ट गुणकारशलाकाओंके प्रविष्ट होने तक ले जाना चाहिये । यह अन्य अपुनरुक्तस्थान होता है २२८ ।

इसके ऊपर एक समय अधिक बढ़ करके बन्ध होनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इसका छेदगुणकार होता है । यथा— बादर ध्रुवस्थिति प्रमाण समयोंके बढ़नेपर यदि एक गुणकारशलाका प्राप्त होती है तो एक समयके बढ़नेपर कितनी गुणकारशलाकाएं प्राप्त होगी, इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाण राशिका भाग

पुविल्लरूवेसु पक्खित्तेसु गुणगारो होदि त्ति $\left[\begin{smallmatrix} ५७ \\ १ \\ ४ \end{smallmatrix} \right]$ । पुणो एदेण बादरधुवड्ढिदीए गुणि-

दाए संपदियट्ठाणं होदि [२२९] । दुसमउत्तरं वड्ढिदूण षडे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि ।
एत्थ पुव्वुत्तंसं दुगुणिय सगलरूवेसु पक्खेवो कायव्वो । १ । २ । एदम्मि पुव्विल्लरूवेसु
४

पक्खित्ते एत्तियं होदि $\left[\begin{smallmatrix} ५७ \\ १ \\ २ \end{smallmatrix} \right]$ । एदेण बादरधुवड्ढिदीए गुणिदाए दुसमउत्तरट्ठाणं होदि

[२३०] । तिसमउत्तरं वंविदूणागदस्स अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुव्वत्तंसं तिगुणिय $\left[\begin{smallmatrix} ११३ \\ ४ \end{smallmatrix} \right]$ ।

पुव्वुत्तगुणगाररूवेहि सह मेलाविदे एत्तियं होदि $\left[\begin{smallmatrix} ५७ \\ ३ \\ ४ \end{smallmatrix} \right]$ । पुणो एदेण बादरधुवड्ढिदीए

गुणिदाए इच्छिदवड्ढिट्ठाणं होदि [२३१] । एवं छेदगुणगारो होदूण ताव गच्छदि जाव
पुव्वुत्तंसस्स रूवूणबादरधुवड्ढिदी गुणगारो जादो त्ति । पुणो समउत्तरं वड्ढिदूण षडे
समगुणगारो होदि । तस्स पमाणमट्ठवंचास [५८] । पुणो एदेण बादरधुवड्ढिदीए गुणिदाए
चरिमसंखेज्जगुणवड्ढिट्ठाणं होदि । तं च एवं [२३२] । एवं णाणावरणीयस्स तीहि
वड्ढीहि अजहण्णपरूपणा बादरधुवड्ढिदिमस्सिदूण कदा । जहण्णड्ढिदिमस्सिदूण पुण

वेनेपर जो लब्ध हो उसे पूर्व रूपोंमें मिलानेपर गुणकार होता है— $५७\frac{१}{४}$ । इससे
बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर साम्प्रतिक स्थान होता है— $\frac{२३१}{४} \times \frac{१}{४} = २२९$ ।
पश्चात् दो समय अधिक बढ़कर बन्ध होनेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है ।
यहां पूर्वोक्त अंशको दुगुणित करके समस्त रूपोंमें मिलाना चाहिये— $\frac{१}{२} \times २ = १$ ।
इसको पूर्व रूपोंमें मिलानेपर इतना होता है— $५७ + १ = ५८$ । इससे बादर
ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर दो समय अधिक वृद्धिका स्थान होता है—
 $\frac{१}{४} \times \frac{१}{४} = २३०$ । तीन समय अधिक बढ़कर आये हुए जीवके अन्य अपुनरुक्त
स्थान होता है । पूर्वोक्त अंशको तिगुणा करके $(\frac{१}{४} \times ३)$ पूर्वोक्त गुणकार रूपोंके
साथ मिलानेपर इतना होता है— $५७\frac{३}{४}$ । इससे बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर
इच्छित वृद्धिस्थान होता है— $\frac{२३१}{४} \times \frac{१}{४} = २३१$ । इस प्रकार पूर्वोक्त अंशका गुणकार
एक कम ध्रुवस्थितिके होने तक छेदगुणकार होकर जाता है । पश्चात् एक समय
अधिक बढ़कर बन्ध होनेपर समगुणकार होता है । उसका प्रमाण अट्ठावन ५८ है ।
इससे बादर ध्रुवस्थितिको गुणित करनेपर संख्यात गुणवृद्धिका अन्तिम स्थान
होता है । वह यह है— $५८ \times ४ = २३२$ । इस प्रकार बादर एकेन्द्रिय जीवकी
ध्रुवस्थितिका आश्रय करके तीन वृद्धियोंके द्वारा ज्ञानावरणीयकी अजघन्य स्थितिके
स्थापितकी प्ररूपणा की है ।

संखेज्जगुणवृद्धि-असंखेज्जगुणवृद्धि ति दो चेव वड्ढीओ होंति, ओघजहणण्डिदिं पेक्सिदूण
ओघुक्कस्सड्ढिदीए असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । एवं संखेज्जगुणलदोवेमहि उण तीससागरोवम-^१
कोढाकोडिमेत्तअजहण्णङ्गाणवियप्पा णाणावरणीयस्स परूविदा । एत्थ जीवसमुदाहारपरूपणा
अहा अणुक्कस्सङ्गाणेसु परूविदा तहा परूवेदवा ।

एवं दंसणावरणीय-अंतराहयाणं ॥ १७ ॥

जहा णाणावरणीयस्स जहण्णाजहण्णड्ढिसामित्तरूपवणा कदा तहा दंसणा-
वरणीय-अंतराहयाणं पि कायव्वा, विसेसाभावोदो ।

**सामित्तेण जहण्णपदे वेयणीयवेयणा कालदो जहणिया
कस्स ? ॥ १८ ॥**

सुगममेदं ।

**अण्णदरस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स तस्स वेयणीयवेयणा
कालदो जहण्णा ॥ १९ ॥**

परन्तु जघन्य स्थितिका भाक्ष्य करके संख्यातगुणवृद्धि और असंख्यातगुणवृद्धि
ये दो ही वृद्धियां होती हैं, क्योंकि, ओघजघन्य स्थितिकी अपेक्षा ओघउत्कृष्ट स्थिति
असंख्यातगुणी पायी जाती है । इस प्रकार संख्यात पद्योंपमोंसे हीन तीस
कोडाकोडि सागरोपम मात्र ज्ञानावरणीयके अजघन्य स्थानभेदोंकी प्ररूपणा
की है । यहां जीवसमुदाहारकी प्ररूपणा जैसे अनुत्कृष्ट स्थानोंमें की गई है वैसे
ही करनी चाहिये ।

इसी प्रकार दर्शनावरणीय एवं अन्तराय कर्मोंकी जघन्य व अजघन्य स्थितिके
स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ १७ ॥

जैसे ज्ञानावरणीय कर्मकी जघन्य व अजघन्य स्थितिके स्वामित्वकी प्ररूपणा
की है वैसे ही दर्शनावरणीय और अन्तराय की भी करना चाहिये, क्योंकि, उसमें
कोई विशेषता नहीं है ।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें वेदनीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य
किसके होती है ? ॥ १८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जो कोई जीव भव्यसिद्धिकालके अन्तिम समयमें स्थित है उसके वेदनीयकी
वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है ॥ १९ ॥

भोगाहण-संठाणादीहि विसेसो णत्थि ति अण्णदरस्से ति उच्चं । भवसिद्धिओ णाम अजोगिमहारओ । तस्स चरिमसमए एगा द्विदी एगसमयकाला होदि चि भवसिद्धिय-चरिमसमए जहण्णसामित्तं उच्चं । दुचरिमादिसमएसु जहण्णसामित्तं किण्ण भण्णदे ? ण, तत्थ वेयणीयस्स एगसमयद्विदीए अणुवलंभादो ।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ २० ॥

तदो जहण्णादो वदिरित्तं तव्वदिरित्तं, सा अजहण्णा द्विदिवेयणा होदि । एत्थ जहा णाणावरणीयस्स अजहण्णट्ठाणपरूवणा कदा तद्वा कायव्वा । णवरि अजोगिचरिम-समयादो ताव णिरंतरट्ठाणपरूवणा कायव्वा जाव अजोगिपढमसमओ ति । पुणो सजोगि-चरिमसमए द्विदस्स सांतरमजहण्णट्ठाणं होदि । कुदो ? तत्थ चरिमफालीए अंतोमुहुत्तमेत्तीए दंसणादो । पुणो हेट्ठा रूवणुक्कीरणद्धामेत्तणिरंतरट्ठाणेसु उप्पण्णेसु सइं सांतरट्ठाणमुप्प-ज्जदि, तत्थंतोमुहुत्तट्ठाणंतरदंसणादो । एवं णेदत्वं जाव लोगपूरणं करिय द्विदसजोगि-केवलि ति । तदो पदरगदकेवलिन्निह अण्णमपुणरुत्तसांतरट्ठाणं । कुदो ? लोगपूरणगद-केवलिद्विदिसंतादो पदरगदकेवलिद्विदिसंतस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । तदो कवाडगद-

अवगाहना व संस्थान आदिकोंसे कोई विशेषता नहीं होती, यह जललानेके लिये सूत्रमें 'अन्यतर' पदका प्रयोग किया है । भव्यसिद्धिकसे अयोगकेवली भट्टारक विवक्षित हैं । उनके अन्तिम समयमें चूँकि एक समय कालवाली एक स्थिति होती है, अतः भव्यसिद्धिकके अन्तिम समयमें अजघ्न्य स्वामित्व बतलाया गया है ।

शंका—अयोगकेवलीके द्विचरमादिक समयोंमें अजघ्न्य स्वामित्व क्यों नहीं बतलाया जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उक्त समयोंमें वेदनीयकी एक समयवाली स्थिति नहीं पायी जाती ।

उससे भिन्न अजघ्न्य स्थितिवेदना होती है ॥ २० ॥

उससे अर्थात् अजघ्न्य स्थितिवेदनासे जो भिन्न वेदना है वह अजघ्न्य स्थिति-वेदना है । यहाँ जैसे ज्ञानावरणीयके अजघ्न्य स्थानोंकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही वेदनीयके भी करना चाहिये । विशेष इतना है कि अयोगकेवलीके अन्तिम समयसे लेकर अयोगकेवलीके प्रथम समय तक निरन्तर स्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । फिर सयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समयमें स्थित जीवके सास्तर अजघ्न्य स्थान होता है, क्योंकि, वहाँ अन्तिम फालि अन्तर्मुहूर्त प्रमाण देखी जाती है । पुनः नीचे एक कम उत्कीरणकाल प्रमाण निरन्तर स्थानोंके उत्पन्न होनेपर एक बार सास्तर स्थान उत्पन्न होता है, क्योंकि, वहाँ अन्तर्मुहूर्त स्थानान्तर देखा जाता है । इस प्रकार लोकपूरण समुद्घातको करके स्थित सयोगकेवली तक ले जाना चाहिये । पश्चात् प्रतरसमुद्घातगत केवलीमें अन्य अपुनरुक्त सास्तर स्थान होता है, क्योंकि, लोकपूरण समुद्घातगत केवलीके स्थितिसंस्वसे प्रतरसमुद्घात-गत केवलीका स्थितिसंस्व असंख्यातगुणा पाया जाता है । पश्चात् कपांडसमुद्घातगत

केवलिम्हि अण्णं सांतरमपुणरुत्तङ्गाणं, पदरगदकेवलिङ्घिसंतादो कवाडगदकेवलिङ्घिसंतस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । तदो दंडगदकेवलिम्हि सांतरमण्णमपुणरुत्तङ्गाणं, कवाडगदकेवलिङ्घिसंतादो दंडगदकेवलिङ्घिसंतस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । दंडाहि-मुदकेवलिम्हि अण्णं सांतरमपुणरुत्तङ्गाणं, दंडगदकेवलिङ्घिसंतादो एदम्हि असंखेज्जगुण-ङ्घिसंतदंस्सणादो । एत्तो ण्हुडि हेडा णिरंतरङ्गाणाणि ताव उप्पज्जंति जाव खीणकसाय-चरिमसमओ चि । कुदो ? एत्थंतरे ङ्घिकंदयाभावादो । एत्तो हेडा णिरंतर-सांतरकमेण णाणावरणीयविहाणेण अजहण्णङ्गाणपरूवणा कायन्वा, विसेसाभावादो ।

एवं आउअ-जामागोदाणं ॥ २१ ॥

जहा वेयणीयस्स जहण्णाजहण्णसामित्तपरूवणा कदा तहा एदेसिं पि जहण्णा-जहण्णसामिचं वत्तं, विसेसाभावादो । णवरि आउअस्स अजहण्णसामित्तपरूवणम्मि ओ विसेसो तं वत्तइस्सामो । तं जहा— भवसिद्धियदुचरिमसमए एगमजहण्णङ्गाणं । पुणो तिचरिमसमए भिदियमजहण्णङ्गाणं । पुणो चदुचरिमसमए तदियमजहण्णङ्गाणं । एत्थ

केवलीमें अन्य सान्तर अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, प्रतरगत केवलीके स्थितिसत्त्वसे कपाटगत केवलीका स्थितिसत्त्व असंख्यातगुणा पाया जाता है । पश्चात् दण्डसमुद्घात-गत केवलीमें अन्य सान्तर अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, कपाट-समुद्घातगत केवलीके स्थितिसत्त्वसे दण्डसमुद्घातगत केवलीका स्थितिसत्त्व असंख्यातगुणा पाया जाता है । दण्डसमुद्घातक अभिमुख हुए केवलीमें अन्य सान्तर अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, दण्डसमुद्घातगत केवलीके स्थितिसत्त्वसे उसके अभिमुख हुए केवलीमें असंख्यातगुणा स्थितिसत्त्व देखा जाता है । यहाँसे लेकर नीचे क्षीणकषायके अन्तिम समय तक निरन्तर स्थान उत्पन्न होते हैं, क्योंकि, इस बीचमें स्थितिकाण्डकका अभाव है । इसके नीचे निरन्तर और सान्तर क्रमसे ब्रह्मावरणीयके विधानके अनुसार अजघन्य स्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उनमें कोई विशेषता नहीं है ।

इसी प्रकार आयु, नाम और गोत्र कर्मोंके जघन्य एवं अजघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा है ॥ २१ ॥

जैसे वेदनीय कर्मके जघन्य व अजघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही इन तीनों कर्मोंके जघन्य व अजघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है । विशेष इतना है कि आयु कर्मके अजघन्य स्वामित्वकी प्ररूपणामें जो कुछ विशेषता है उसे कहते हैं । यद्वा— भव्यसिद्धि रहनेके शिचरम समयमें एक अजघन्य स्थान होता है । पश्चात् शिचरम समयमें द्वितीय अजघन्य स्थान होता है । तृतीय अजघन्य स्थान होता है । यहाँ पुण्यो नुद्धि

दुगुणवृद्धी होदि । एत्तो प्पहुडि संखेज्जगुणवृद्धी होदूण ताव गच्छदि जाव उक्कस्स-
संखेज्जगुणगारसरूवेण दोण्णं समयाणं पविट्ठं ति । पुणे एदस्सुवारे एगसमए वड्ढिदे
संखेज्जगुणवृद्धी चेव, अद्धरूवेणम्महियउक्कस्ससंसंखेज्जमेत्तगुणगारुवलंभादो । पुणे
तदणंतरहेट्ठिमसमयम्मि असंखेज्जगुणवृद्धी होदि, तत्थ दोण्णं समयाणं जहणपरित्तासंखेज्ज-
गुणगारुवलंभादो । एत्तो प्पहुडि असंखेज्जगुणवृद्धीए ताव ओदारेदव्वं जाव समयाहिय-
छम्मासो ति । पुणे एदेणारुएण सरिसं आउअबंधेण विणा ट्ठिदसव्वट्ठसिद्धिदेवाउअं
तेत्तीससागरोवमाणि समयाहियछम्मासूणाणि गालिय ट्ठिदं होदि । पुव्विल्लं भोत्तूण इमं
धेत्तूण समउत्तरादिकमेण गिरंतरं वड्ढाविय गेयव्वं जाव सव्वट्ठसिद्धिसमुपपण्णदेवपढमसमओ
ति । पुणे तेत्तीसाउअं बंधिय चरिमसमयमणुस्सो होदूण ट्ठिदसंजदस्मि अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं ।
मणुसदुचरिमसमयट्ठिदसंजदस्मि अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं । एवमसंखेज्जगुणवृद्धीए ताव
ओदारेदव्वं जाव पुव्वकोट्ठितिभागपढमसमयट्ठिदसजदो ति । एत्थ जीवसमुदाहारो
जाणिय वत्तव्वो ।

सामित्तेण जहणपदे मोहणीयवेयणा कालदो जहणिया
कस्स ? ॥ २२ ॥

होती है । यहाँसे संख्यातगुणवृद्धि प्रारम्भ होकर तब तक जाती है जब तक कि उत्कृष्ट
संख्यात गुणकार स्वरूपसे दो समय प्रविष्ट नहीं हो जाते । पश्चात् इसके ऊपर
एक समयकी वृद्धि होनेपर संख्यातगुणवृद्धि ही रहती है, क्योंकि, वहाँ अर्ध
रूपसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण गुणकार पाया जाता है । तत्पश्चात् उससे
अनन्तर अधस्तन समयमें असंख्यातगु वृद्धि होती है, क्योंकि, वहाँ दो समयोंका
जघन्य परीतासंख्यात गुणकार पाया जाता है । इसके आगे एक समय अधिक
छह मास स्थिति तक असंख्यातगुणवृद्धिके द्वारा उतारना चाहिये । पश्चात् आयु-
बन्धसे रहित होकर स्थित सर्वार्थसिद्धिस्थ देवकी एक समय अधिक छह
मासोंसे कम तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुको गलाकर स्थित हुए जीवकी आयु
इस आयुके सदृश होती है । पूर्वोक्त जीवको छोड़कर और इसे ग्रहण करके एक
एक समयकी अधिकताके क्रमसे निरन्तर बढ़ाकर सर्वार्थसिद्धिमें उत्पन्न हुए
देवकी उत्पत्तिके प्रथम समय तक ले जाना चाहिये । पुनः तेतीस सागरोपम प्रमाण
आयुको बांधकर मनुष्य भवके अन्तिम समयमें स्थित संयतके अन्य अपुनरुक्त
स्थान होता है । मनुष्य भवके द्विचरम समयमें स्थित संयतके अन्य अपुनरुक्त
स्थान होता है । इस प्रकार पूर्वकोटिभागके प्रथम समयमें स्थित संयत तक
असंख्यातगुणवृद्धिके द्वारा उतारना चाहिये । यहाँ जीवसमुदाहारको जानकर
कहना चाहिये ।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें मोहनीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य
किसके होती है ? ॥ २२ ॥

सुगममेदं ।

**अण्णदरस्स खवगस्स चरिमसमयसकसाइयस्स मोहणीय-
वेयणा कालदो जहण्णा ॥ २३ ॥**

उवसामगपडिसेहफलो खवगस्से त्ति णिदेसो । खीणकसायादिपडिसेहफलो सकसाइ-
यस्से त्ति णिदेसो । दुचरिमादिसकसाइयपडिसेहद्वं चरिमसमएण सकसाई विसेसिदो ।
चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स मोहणीयवेयणा कालदो जहण्णिया होदि त्ति उत्तं होदि ।

तव्वदिरित्तमजहण्णा ॥ २४ ॥

एदस्सयेो णाणावरणअजहणसुत्तस्सेव परूवेदव्वा । एवं सामितं सगंतोक्खित्त-
ट्ठाण-संखा-जीवसमुदाहाराणिओगहारं समत्तं ।

**अप्पाबहुए त्ति । तत्थ इमाणि तिणिण अणिओगद्वाराणि—
जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥ २५ ॥**

तिणिण चेव अणिओगद्वाराणि एत्थ होंति त्ति कथं णव्वेद ? जहण्णुक्कस्सपदेसु
एम-दुसओगेण तिणिण भंगे मोक्षूण एत्तो अहियमंगुप्पत्तीए अणुवलंभादो ।

यह सूत्र सुगम है ?

जो कोई क्षपक सकपाय अवस्थाके अन्तिम समयमें स्थित है उसके मोहनीय
कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है ॥ २३ ॥

सूत्रमें क्षपक पदके निर्देशका प्रयोजन उपशामकका प्रतिषेध करना है । सकपाय
पदके निर्देशका फल क्षीणकपाय आदिकोंका प्रतिषेध करना है । द्विचरम सकपायी
आदिकोंका प्रतिषेध करनेके लिये सकपायीको 'चरम समय' विशेषणसे विशेषित
किया गया है । अभिप्राय यह कि सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें
स्थित जीवके मोहनीयकी वेदना कालकी अपेक्षा जघन्य होती है ।

उससे भिन्न अजघन्य वेदना होती है ॥ २४ ॥

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके अजघन्य स्वाभित्वकी प्ररूपणा करनेवाले
सूत्रके समान करना चाहिये । इस प्रकार स्थान, संख्या एवं जीवसमुदाहारसे गर्भित
स्वाभित्व अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अब अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारका अधिकार है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं—
जघन्य पदमें, उत्कृष्ट पदमें और जघन्य-उत्कृष्ट पदमें ॥ २५ ॥

शंका—इस अधिकारमें तीन ही अनुयोगद्वार हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्यूँकि जघन्य व उत्कृष्ट पदमें एक व दोके संयोगसे होनेवाले तीन
भंगोंकी छोड़कर इनसे अधिक भंगोंकी उत्पत्ति नहीं देखी जाती है, अतः इसीसे जाना
जाता है कि उसमें तीन ही अनुयोगद्वार हैं ।

जहणपदेण अट्ठणं पि कम्माणं वेयणाओ कालदो जहणि-
याओ तुल्लाओ ॥ २६ ॥

कुदो ? एगाए द्विदीए एगसमयकालए अट्ठणं पि कम्माणं जहणकालवेयणाए
गहणादो । परमाणुभेदेण कालभेदो एत्थ किण्ण गहिदो ? ण, कालं मोत्तूण एत्थ पदेसाणं
विवक्खामावादो । समयभावेण एगत्तमावणसमयविसेसग्गि परमाणुपवेसादो वा । जेणेदाओ
अट्ठ वि कालवेयणाओ तुल्लाओ तेण जहणपदप्पाबहुत्वं णत्थि ति भावत्थो ।

उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवा आउअवेयणा कालदो उक्कस्सिया
॥ २७ ॥

पुध्वकोडिदिम गहिदयेत्तीससागरोवमपमाणत्तादो ।

णामा-गोदेवेयणाओ कालदो उक्कस्सियाओ दो वि तुल्लाओ
संखेज्जगुणाओ ॥ २८ ॥

कुदो ? वीससागरोवमकोडाकोडिपमाणत्तादो । गुणगारो संखेज्जा समय । एग-

जघन्य पदकी अपेक्षा आठों ही कर्मोंकी कालसे जघन्य वेदनायें तुल्य हैं ॥ २६॥
कारण यह कि आठों ही कर्मोंकी एक एक समय कालवाली एक स्थितिको
जघन्य कालवेदना ग्रहण किया गया है ।

शंका - परमाणुभेदसे यहां कालके भेदको क्यों नहीं ग्रहण किया गया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि कालको छोड़कर यहां प्रवेशोंकी विचक्षा नहीं की
गई है । अथवा, समय स्वरूपसे अभेदको प्राप्त हुए समयविशेषमें परमाणुओंका
प्रवेश होनेसे कालभेदको ग्रहण नहीं किया गया ।

चूंकि ये आठों ही कालवेदनायें परस्पर समान हैं, अतः जघन्य अल्पबहुत्व
नहीं है; यह भावार्थ है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा कालसे उत्कृष्ट आयु कर्मकी वेदना सबसे स्तोक है ॥ २७॥
कारण यह कि वह पूर्वकोटिके तृतीय भागसे अधिक तेतीस सागरोपम
प्रमाण है ।

उससे नाम व गोत्र कर्मकी कालसे उत्कृष्ट वेदनायें दोनों ही तुल्य व
संख्यातगुणी हैं ॥ २८ ॥

कारण यह कि ये बीस कोड़ाकोडि सागरोपम प्रमाण हैं । गुणकार यहां संख्यात

रूवस्स असंखेज्जदिभागम्महियेतत्तीससागरोवमपलिदोषमसलागाहि वीससागरोवमकोडाकोडि-
पलिदोषमसलागासु खंडिदासु तत्थ एगमागो गुणमारो हेदि चि उत्तं हेदि ।

णाणावरणीय--दंसणावरणीय--वेयणीय -- अंतराहयवेयणाओ
कालदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥२९॥

कुदो ? वीससागरोवमकोडाकोडीहितो तीससागरोवमकोडाकोडीणं दुमागाहियत्त-
दंसणादो ।

मोहणीयस्स वेयणा कालदो उक्कस्सिया संखेज्जगुणा ॥३०॥

कुदो ? तीससागरोवमकोडाकोडीहितो सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीणं सत्तिभागदोरूव-
गुणमारुत्तुवलंभादो । एवं उक्कस्सेवेयणा समत्ता ।

जहण्णुक्कस्सपदे अट्टण्णं^१ पि कम्माणं वेयणाओ कालदो
जहणियाओ तुल्लाओ थोवाओ ॥ ३१ ॥

कुदो ? एगसमयत्तादो ।

समय है । अभिप्राय यह कि एक रूपके असंख्यातवें भागसे अधिक तेतीस सागरोपमोंकी
पत्त्योपमशलाकाओंका बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंकी पत्त्योपमशलाकाओंमें भाग देनेपर
ओ एक भाग लब्ध होता है वह यहाँ गुणकार है ।

उनसे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय कर्मकी कालसे उत्कृष्ट
वेदनायें चारों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं ॥ २९ ॥

कारण कि बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंसे तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम द्वितीय
भाग (२) से अधिक देखे जाते हैं ।

उनसे मोहनीय कर्मकी कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना संख्यातगुणी है ॥ ३० ॥

कारण कि तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंसे सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंका
एक तृतीय भाग सहित दो अंक गुणकार देख जाता है । इस प्रकार उत्कृष्ट वेदना
समाप्त हुई ।

जघन्य-उत्कृष्ट पदमें कालकी अपेक्षा आठों ही कर्मोंकी जघन्य वेदनायें परस्पर
तुल्य व स्तोक हैं ॥ ३१ ॥

कारण कि उनका कालप्रमाण एक समय है ।

• आउअवेयणा कालदो उक्कस्सिया असंखेज्जगुणा ॥ ३२ ॥

कुदो ? एगसमयं पेक्खिदूण पुव्वकोडित्तिमागाहियतेतीससागरोवमेसु असंखेज्जगुण-
सुवलंभादो ।

णामा-गोदवेयणाओ कालदो उक्कस्सियाओ दो वि तुल्लाओ
असंखेज्जगुणाओ ॥ ३३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समयो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

णाणावरणीय--दंसणावरणीय--वेयणीय --अंतराइयवेयणाओ
कालदो उक्कस्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥ ३४ ॥

कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

मोहणीयवेयणा कालदो उक्कस्सिया संखेज्जगुणा ॥ ३५ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समयो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवमप्पाबहुगाणि-
योगहारं संगतोक्खित्तगुणगाराहियारं समत्तं ।

उत्तरे आयु कर्मकी कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना असंख्यातगुणी है ॥ ३२ ॥

कारण कि एक समयकी अपेक्षा पूर्वकोटिके तृतीय भागसे अधिक तृतीय सागरो-
पम असंख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

उत्तरे कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट नाम व गोत्र कर्मकी वेदनार्ये दोनों ही तुल्य व
असंख्यातगुणी हैं ॥ ३३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है । इसका कारण पहिलेके ही
समान बतलाना चाहिये ।

उत्तरे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय कर्मकी कालकी अपेक्षा
उत्कृष्ट वेदनार्ये चारों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं ३४ ॥

इसका कारण पहिलेके ही समान कहना चाहिये ।

इन्से मोहनीय कर्मकी कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट वेदना संख्यातगुणी है ॥ ३५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है । इसका कारण पहिलेके ही
समान बतलाना चाहिये ।

इस प्रकार गुणकाराधिकारगर्भित अष्टपदद्वैतानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

(चूलिया)

एतो मूलपयडिट्टिदिबन्धे पुवं गमणिज्जे तत्थ इमाणि चत्तारि अणियोगद्वाराणि— ट्टिदिबन्धट्टाणपरूवणा णिसेयपरूवणा आवाधाकंदयपरूवणा अप्पाबहुए ति ॥ ३६ ॥

पद्मीमांसा सामित्पाबहुए ति तीहि अणियोगहोरेहि कालविधानं परूविदं । तं च समत्तं, तिण्णेव अणियोगद्वाराणि कालविधाने सुत्तस्सादीए होंति ति परूविदत्तादे । अह ण समत्ते, कालविधाने तिण्णि चेव अणियोगद्वाराणि होंति ति भणिदसुत्तस्स अणत्थयत्तं पसज्जेज्ज । ण च सुत्तमणत्थयं होदि, विरोहादे । तदो कालविधानं समत्तं चेव । एवं समत्ते उवरिमसुत्तांमो अणत्थओ ति ? एत्थ परिहारो उच्चदे— तीहि अणियोगहोरेहि कालविधानं परूविय समत्तं चेव । किंतु तस्स समत्तस्स वेयणाकालविधानस्स उवरिगंथेण चूलिया उच्चदे । चूलिया णाम किं ? कालविधानेण सूचिदत्थाणं विवरणं चूलिया । जाए अत्थपरूवणाए कदाए पुव्वपरूविदत्थम्भि सिस्साणं णिच्छओ उप्पज्जदि सा चूलिया ति भणिदं होदि । तम्हा उवरिमगंथावयारो संबद्धो ति धेतत्त्वो ।

आमे मूलप्रकृतिस्थितिबन्ध पूर्णमें ज्ञातव्य है । उसमें ये चार अनुयोगद्वार हैं— स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणा, निषेकप्ररूपणा, आवाधाकाण्डकप्ररूपणा और अल्पबहुत्व ॥ ३६ ॥

शंका—पद्मीमांसा, स्वामित्र और अल्पबहुत्व, इन तीन अनुयोगद्वारोंके द्वारा कालविधानकी प्ररूपणा की जा चुकी है, वह समाप्त भी हो चुकी; क्योंकि, कालविधानमें सूत्रके प्रारम्भमें 'तीन ही अनुयोगद्वार होते हैं' ऐसा कहा गया है । फिर भी यदि उसको समाप्त न माना जाय तो फिर "कालविधानमें तीन ही अनुयोगद्वार हैं" इस प्रकार वहां कहे गये सूत्रके अनर्थक होनेका प्रसंग आवेगा । किन्तु सूत्र अनर्थक होता नहीं है, क्योंकि, इसमें विरोध होता है । इस कारण कालविधानको समाप्त ही मानना चाहिये । इस प्रकार उसके समाप्त हो जानेपर आगे सूत्रका प्रारम्भ करना अनर्थक है ?

समाधान—इस शंकाका परिहार करते हैं । तीन अनुयोगद्वारोंके द्वारा उसकी प्ररूपणा हो चुकनेपर वह समाप्त ही हो गया है । किन्तु आगेके ग्रन्थसे समाप्ति-को प्राप्त हुए उस कालविधानकी चूलिका कही जाती है ।

शंका—चूलिका किसे कहते हैं ?

समाधान—कालविधानके द्वारा सूचित अर्थोंका विशेष वर्णन करना चूलिका कहलाती है । जिस अर्थप्ररूपणाके किये जानेपर पूर्वमें वर्णित पदार्थके विषयमें शिष्योंको निश्चय उत्पन्न हो उसे चूलिका कहते हैं, यह अभिप्राय है । अत एव अभिप्रम ग्रन्थका अन्ततार सम्बद्ध ही है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

मूलपयडिद्विदिबंधे ति मिहसेण उत्तरपयडिद्विदिबंधवुदासो कदो । उत्तरपयडि-
द्विदिबंधवुदासो किमडं कदो ? ण, मूलपयडिद्विदिबंधावगमादो तदवगमो होदि ति
तवुदासकरणादो । पुव्वसदो' कारणवाचओ किरियाविसेसणभावेण घेतव्वो । ण च पुव्व-
सदो' कारणत्यभावेण अप्सिद्धो, यदिपुव्वं सुदमिचेत्य कारणे वट्ठमाणपुव्वसद्वलंमादो ।
तीहि अनियोगहारोहि पुव्वं परुविदत्थविसयबोहस्स' पुव्वं कारणं होदूण गमणिज्जे मूल-
पयडिद्विदिबंधे इमाणि अनियोगहाराणि होति ति मणिदं होदि । अथवा, मूलपयडिद्विदि-
बंधो कालविहाणे पुव्वं पदमभेव गमणिज्जो', द्विदिअद्धाच्छेदादिसु अणवगदेसु सामि-
त्तादिअणिओगहाराणमवगमोवायामावादो । तत्थ इमाणि अनियोगहाराणि होति ति
मणिदं होदि ।

अणुवकस्स अजहण्णाद्विदिहाणाणि पुव्वं परुविदाणि । तेसु हाणसु कम्हि कम्हि
जीवसमासे तत्थ केत्तियाणि बंधहाणाणि केत्तियाणि वा संतहाणाणि कस्स जीवसमासस्स
बंधहाणेहिंतो कस्स वा बंधहाणाणि समाणि अहियाणि ऊणाणि ति पुच्छिदे तरस्स णिच्छयु-
प्पायणडं' द्विदिबंधहाणपरुवणा आगदा । अज्झमाणकम्मपेदसविण्णासो किं पदमसमयप्पहुडि

‘मूलप्रकृतिबन्धस्थान’ इस निर्देशसे उत्तर प्रकृतियोंके स्थितिवन्धका निवेध
किया गया है ।

शंका — उत्तर प्रकृतियोंके स्थितिवन्धका प्रतिषेध किसलिये किया जाता है ?

समाधान — नहीं, चूंकि मूलप्रकृति-स्थितिवन्धके ज्ञात हो जानेपर उसका ज्ञान
हो जाता है, अतः उसका प्रतिषेध किया गया है ।

यहां पूर्व शब्दको क्रियाविशेषण स्वरूपसे कारण अर्थका वाचक प्रयुक्त करना
चाहिये । पूर्व शब्द कारण अर्थका वाचक अप्रसिद्ध भी नहीं है, क्योंकि, “मतिपूर्वं
भुतम्” इस सूत्रमें कारण अर्थमें वर्तमान पूर्व शब्द देखा जाता है । तीन अनुये.ग-
हारोंसे पूर्वमें प्रकृतित् स्थितिवन्धमें ये अनुयोगहार होते हैं, यह उसका अभिप्राय है । अथवा, मूल-
प्रकृति-स्थितिवन्ध कालविधानमें पूर्वमें अर्थात् पहिले ही ज्ञातव्य है, क्योंकि, स्थितिअर्थ-
च्छेदादिकोंके अज्ञात होनेपर स्वामित्व आदि अनुयोगहारोंके जाननेका कोई उपाय नहीं
रहता । उसमें ये अनुयोगहार हैं, यह उक्त कथनका निष्कर्ष है ।

अनुरुद्ध-अजघन्यस्थितिस्थान पूर्वमें कहे जा चुके हैं । अब स्थानोंमेंसे किस
किस जीवसमासमें वहां कितने बन्ध स्थान हैं व कितने सत्त्वस्थान, किस जीवसमासके
बन्धस्थानोंसे किसके बन्धस्थान समान, अधिक अथवा कम हैं, ऐसा पृच्छनेपर
उसका निश्चय उत्पन्न करानेके लिये स्थितिवन्धस्थानप्रकरण प्राप्य हुई है ।

१ अ-आ-आप्रयोः ‘पुवं सवो’ इति पाठः । २ प्रति ‘वितयज्जदस्स’ इति पाठः । ३ अ-आ-आप्रियु
‘गमणिज्जा’; ताप्रतौ ‘गमणिजे’ इति पाठः । ४ प्रियु ‘तिसु’ इति पाठः । ५ अ-आ-आप्रियु
‘अट्ठहाणाणि’ इति पाठः । ६ अप्रतौ ‘णिच्छयप्पायणडं’; आप्रतौ ‘णिच्छयप्पायणडं’ इति पाठः ।

आहो अण्णहा होदि सि पुच्छिदे एवं होदि सि आवाधपमाणपरूवणं णिसिचमाणकम्म-
पदेसाणं णिसेगक्कमपरूवणं च णिसेयपरूवणा आगदा । एगमावाधं कादूण किमेवकं चेव
ट्टिदिबंघट्टाणं बंधदि, आहो अण्णहा बंधदि सि पुच्छिदे एक्काए आवाधाए एसियाणि
ट्टिदिबंघट्टाणाणि बंधदि, अवराणि ण बंधदि सि जाणावणट्टमावाधकंदयपरूवणा आगदा ।
आवाधानं आवाधकंदयाणं च योववहुत्तजाणावणट्टमप्पावहुगपरूवणा अगदा । एवमेत्थ
चत्तारि चेव अणियोगहाराणि हंति अण्णेसिमेत्थेवं अंतन्मावादो ।

**ट्टिदिबंघट्टाणपरूवणदाए सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स
ट्टिदिबंघट्टाणाणि ॥ ३७ ॥**

एदमप्पावहुअसुत्तं देसामासियं, सूदट्टिदिट्टाणपरूवणा पमणाणिओगहारत्तादो । ण
च अत्थित्त-पमाणेहि अणवगयाणं ट्टिदिबंघट्टाणाणमप्पावहुगं संभवदि, विरोहादो । तम्हा
ट्टिदिबंघट्टाणपरूवणदाए परूवणा पमाणप्पावहुगं चेदि तिणिण अणियोगहाराणि । तत्थ
परूवणदाए अत्थि चोइसणं जीवसमासाणं पुघ पुघ ट्टिदिबंघट्टाणाणि । एत्थ ट्टिदिबंघ-
ट्टाणाणि सि उते केसि गहणं ? बध्यत इति बन्धः । स्थितरेव बन्धः स्थितिवन्धः ।

बध्मान कर्मप्रदेशोंका त्रिग्यास क्या प्रथम सप्रयसे लेकर होता है, अथवा अन्य
प्रकारसे होता है, ऐसा पूछनेपर वह इस प्रकारसे होता है, इस प्रकार आवाधा-
प्रमाणकी प्ररूपणाके लिये तथा निसिचमान कर्मप्रदेशोंके निषेकक्रमकी प्ररूपणाके
लिये निषेकप्ररूपणा प्राप्त हुई है । एक आवाधाको करके क्या एक ही स्थितिवन्धस्थान
बंधता है अथवा अन्य प्रकारसे बंधता है, ऐसा पूछनेपर एक आवाधामें इतने
स्थितिवन्धस्थानोंको बांधता है, इतर स्थानोंको नहीं बांधता है; यह ज्ञात करानेके लिये
आवाधाकाण्डकप्ररूपणा प्राप्त हुई है । आवाधाओं और आवाधाकाण्डकोंके अरूप-
बहुत्वको बतलानेके लिये अरूपबहुत्वप्ररूपणा प्राप्त हुई है । इस प्रकार इसमें चार ही
अनुयोगहार हैं, क्योंकि, अन्य अनुयोगहारोंका इन्हींमें अन्तर्भाव हो जाता है ।

स्थितिवन्धस्थानप्ररूपणाकी अपेक्षा सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिवन्धस्थान
सबसे स्तोत्र है ॥ ३७ ॥

यह अरूपबहुत्वस्वप्न देशामर्शक है, क्योंकि, वह स्थितिस्थानोंके प्ररूपणानुयोगहार
और प्रमाणानुयोगहारका सूचक है । इन अनुयोगहारोंकी आवश्यकता यहाँ इसलिये
है कि इनके बिना अस्तित्व और प्रमाणसे अज्ञात स्थितिस्थानोंका अरूपबहुत्व सम्भव
नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है । इस कारण स्थितिवन्धस्थानप्ररूपणामें
प्ररूपणा, प्रमाण और अरूपबहुत्व ये तीन अनुयोगहार हैं । उनमेंसे प्ररूपणाकी
अपेक्षा बौद्ध जीवसमासोंके पृथक् पृथक् स्थितिवन्धस्थान हैं ।

श्रीका — यहाँ स्थितिवन्धस्थान ऐसा कहनेपर किनका ग्रहण किया गया है ?

स्थितिबंधरस स्थानमवस्थाविशेष इति यावत् । एदेसिं द्विदिबंधविसेसाणं गहणं । जहण्ण-
द्विदिमुक्कस्सद्विदीए सोद्विय एगरूवे पक्खित्ते द्विदिबंधहाणाणि होति, तेसिं गहणमिदि
उत्तं होदि । परूवणा गदा ।

सव्वएइंदियाणं द्विदिबंधहाणाणि पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? अप्पण्णो
जहण्णाबाहाए समऊणाए अप्पण्णो समऊणजहण्णद्विदीए ओवट्ठिदाए एगमाबाधाकंदय-
मागच्छदि । पुणो एदमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तआबाधाहाणेहि गुणिय एगरूवे अवणिदे
एइंदिएसु द्विदिबंधहाणविसेसो उप्पज्जदि, तत्थ एगरूवे पक्खित्ते द्विदिबंधहाणुप्पसीदो । विगलि-
दिएसु द्विदिबंधहाणाणं पमाणं पत्तिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । कुदो ? सग-सगउक्कस्सा-
बाहाए सग-सगउक्कस्सद्विदीए ओवट्ठिदाए एगमाबाहकंदयमागच्छदि । पुणो एदमाबाह-
हाणेहि आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्तेहि गुणिदे पत्तिदोवमस्स संखेज्जदिभागद्विदिबंधहाणु-
प्पत्तिदंसणादो । सण्णिपंचिंदियअपज्जत्तयस्स द्विदिबंधहाणाणि अंतोकोडाकोडिसागरोवम-
मेत्ताणि । कुदो ? सगुक्कस्साबाहाए सगुक्कस्सद्विदीए ओवट्ठिदाए एगमाबाहाकंदयमा-

समाधान— जो बांधा जाता है वह बन्ध कहा जाता है । स्थिति ही बन्ध,
स्थितिवन्ध इस प्रकार यहाँ कर्मधारय समास है । स्थितिवन्धका स्थान अर्थात्
अवस्थाविशेष, इस प्रकार यहाँ तत्पुरुष समास है । इन स्थितिवन्धविशेषोंका ग्रहण
किया गया है । अर्थात् जघन्य स्थितिको उत्कृष्ट स्थितिमेंसे घटा देनेपर जो शेष रहे
उसमें एक अंकका प्रक्षेप करनेपर स्थितिवन्धस्थान होते हैं, उनका यहाँ ग्रहण किया
है, यह उक्त कथनका अभिप्राय है । प्ररूपणा समास हुई ।

समस्त एकेन्द्रिय जीवोंके स्थितिवन्धस्थान पर्योपमके संख्यातवें भाग प्रमाण
हैं, क्योंकि, एक समय कम अपनी अपनी आवाधाका अपनी अपनी एक समय कम
जघन्य स्थितिमें भाग देनेपर एक आवाधाकाण्डकका प्रमाण आता है । फिर इसको
आवलीके संख्यातवें भाग प्रमाण आवाधारस्थानोंसे गुणित करके उसमेंसे एक अंकको
घटा देनेपर एकेन्द्रिय जीवोंमें स्थितिवन्धस्थानविशेष उत्पन्न होता है । उसमें एक
अंक मिलानेपर स्थितिवन्धस्थान उत्पन्न होता है ।

विकलेन्द्रिय जीवोंमें बन्धस्थानोंका प्रमाण पर्योपमका संख्यातवें भाग है ।
इसका कारण यह है कि अपनी अपनी उत्कृष्ट आवाधाका अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें
भाग देनेपर एक आवाधाकाण्डक आता है । इसको आवलीके संख्यातवें भाग मात्र
आवाधास्थानोंसे गुणित करनेपर पर्योपमके संख्यातवें भाग प्रमाण स्थितिस्थानोंकी
उत्पत्ति देखी जाती है ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिवन्धस्थान अन्तःकोडाकोडि सागरोपम
प्रमाण हैं । इसका कारण यह है कि अपनी उत्कृष्ट आवाधाका अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें
भाग देनेपर एक आवाधाकाण्डक आता है । फिर इसको जघन्य आवाधाकी अपेक्षा

गच्छति । पुनो एहं हि संखेज्जावलिमेतत्तथावाधाद्वाणेहि जहण्णावाधादो संखेज्जगुणेहि गुणेदे संखेज्जसागरोवमेतत्तद्विदिवंधद्वाणुप्पत्तीदो । सण्णिपंचिदियपज्जत्तयस्स द्विदिवंधद्वाणाणि गाणावरणादीणं सग-सगसमऊणधुवद्विदीए परिहीणसग सगुत्तरसग-सगमेत्ताणि । एवं पमाणपरूवणा गदा ।

संपहि बंधद्वाणाणं अप्पावहुगं उच्चदे । तं जहा — सध्वत्येत्ता सुहमेइंदिय-अपज्जत्तयस्स द्विदिवंधद्वाणाणि, पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स द्विदिवंधद्वाणाणि संखेज्जगुणाणि

॥ ३८ ॥

कुदो ? सुहमेइंदियअपज्जत्तयस्स द्विदिवंधद्वाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जत्तयसु सुहमे-इंदियअपज्जत्तपढमचरिमिद्विदिवंधद्वाणादो हेद्वा उवरिं च संखेज्जगुणवीचारद्वाणाणमुवलंभादो ।

सुहमेइंदियपज्जत्तयस्स द्विदिवंधद्वाणाणि संखेज्जगुणाणि

॥ ३९ ॥

कुदो ? बादरेइंदियअपज्जत्तजहणुक्कस्सद्विदीहिंतो हेद्वा उवरिं च बादरेइंदिय-अपज्जत्तद्विदिवंधद्वाणेहिंतो संखेज्जगुणद्विदिवंधद्वाणाणं सुहमेइंदियपज्जत्तयसु उवलंभादो ।

संख्यातगुणे संख्यात आवली मात्र आवाधास्थानोंसे गुणित करनेपर संख्यात सागरोपम प्रमाण स्थितिवन्धस्थान उत्पन्न होते हैं ।

संज्ञी एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवके ज्ञानावरणादिकोंके स्थितिवन्धस्थान अपनी अपनी एक समय कम ध्रुवस्थितिसे रहित अपने अपने क्रमसे अपनी अपनी स्थिति प्रमाण होते हैं । इस प्रकार प्रमाणप्रकृपणा समाप्त हुई ।

अब बन्धस्थानोंका अल्पबहुत्व कहा जाता है । यथा — सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवके स्थितिवन्धस्थान सध्वसे स्तोक हैं, क्योंकि, वे पदार्थापमके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

उनके बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुण हैं ॥ ३८ ॥

इसका कारण यह है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिवन्धस्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके प्रथम व चरम स्थितिवन्धस्थानसे नीचे व ऊपर संख्यातगुण वीचारस्थान पाये जाते हैं ।

उनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुण हैं ॥ ३९ ॥

इसका कारण यह कि बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी अघन्य व उत्कृष्ट स्थितिसे नीचे व ऊपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिवन्धस्थानोंसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें संख्यातगुणे स्थितिवन्धस्थान पाये जाते हैं ।

बादरेइंदियपज्जत्तयस्स द्विदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४०॥

कारणं पुब्बं व वत्तव्वं ।

वीइंदियअपज्जत्तयट्ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥४१॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । कुदो ? वीइंदिय-अपज्जत्तयस्स वीचारट्ठाणाणि पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि । एइंदियाणं पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पलिदोवमे खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्ताणि । जेण एत्थ हेट्ठिम-रासिणा उवरिमरासीए ओवट्ठिदाए आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो आगच्छदि तेण सो गुणगारो होदि त्ति अवगम्मदे ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स द्विदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४२॥

कुदो ? विसोदीए संकिलेसेण च हेट्ठोवरि-मज्झिमट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंते संखेज्जगुण-द्विदिविसेसेसु वीचारदंसणादो ।

तीइंदियअपज्जत्तयस्स द्विदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४३॥

कारणं सुगमं । जहा सुहुमेइंदियअपज्जत्त-बादरेइंदियअपज्जत्तार्ण' द्विदिबंधट्ठाणे-

उनसे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४० ॥

इसका कारण पहिलेके ही समान कहना चाहिये ।

उनसे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ४१ ॥

गुणकार क्या है ? वह आबलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग है, क्योंकि, द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके वीचारस्थान पर्योपपन्नके संख्यातवें भाग प्रमाण हैं । परन्तु एकेन्द्रियके वीचारस्थान पर्योपपन्नमें आबलीके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो लब्ध हो उतने मात्र हैं । चूंकि यहां नीचेकी राशिका ऊपरकी राशिमें भाग देनेपर आबलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग आता है, अतः वह गुणकार होता है, ऐसा प्रतीत होता है ।

उनसे उसीके पर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४२ ॥

इसका कारण यह है कि विशुद्धि और संकलेशसे नीचे, ऊपर और मध्यके स्थितिस्थानोंसे संख्यातगुणे स्थितिविशेषोंमें वीचार देखा जाता है ।

उनसे त्रीन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४३ ॥

इसका कारण सुगम है ।

हिंतोः सुहृदभिरिन्द्रियपञ्चत्वायं द्विदिबन्धट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि, तथा सम्बन्धिरिन्द्रिय-
पञ्चत्वादिद्विदिबन्धट्टाणेहिंतोः वीरिन्द्रियपञ्चत्वादिद्विदिबन्धट्टाणाणि किञ्च संखेज्जगुणाणि ? न,
मिण्णत्तादितादो मिण्णत्तादितादो च ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स द्विदिबन्धट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४४॥
सुगममेवं ।

चवरीरिन्द्रियपञ्चत्तयस्स द्विदिबन्धट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४५॥
मज्झिमद्विदिबन्धट्टाणेहिंतो हेट्ठा उवरि च संखेज्जगुणाणं वीचारट्टाणाणमेत्थुवल्लमादो ।
तस्सेव पज्जत्तयस्स द्विदिबन्धट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४६॥
एत्थ कारणं पुब्बं व वत्तन्वं ।

असण्णिपंचिन्द्रियपञ्चत्तयस्स द्विदिबन्धट्टाणाणि संखेज्ज-
गुणाणि ॥ ४७ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स द्विदिबन्धट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥४८॥
कारणं सुगमं ।

शंका— जैसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकों तथा बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके
स्थितिवन्धस्थानोंसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं, वैसे
ही सब विकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके स्थितिवन्धस्थानोंसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके स्थिति-
वन्धस्थान संख्यातगुणे क्यों नहीं हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उनकी जाति व स्थिति उनसे भिन्न है ।

उनसे उसके ही पर्याप्तके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उन्से चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४५ ॥

क्योंकि, यहाँ मध्यम स्थितिविशेषोंसे नीचे व ऊपर संख्यातगुणे बीवार-
स्थान पाये जाते हैं ।

उनसे उसीके पर्याप्तके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४६ ॥

यहाँ कारण पहिलेके ही समान बतलाना चाहिये ।

उनसे असेञ्जी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार यहाँ संख्यात समय है ।

उनसे उसीके पर्याप्तके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४८ ॥

इसका कारण सुगम है ।

संख्यपंचिदियअपज्जत्तयस्स द्विदिबंघट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ ४९ ॥

कुदो ? पत्तिदोवमस्स संखेज्जदिमाममेत्तअसंखिणपंचिदियद्विदिबंघट्टाणेहि भंत्तो-
कोडाकोडिमेत्तसंखिणपंचिदियअपज्जत्तयस्स द्विदिबंघट्टाणेसु भागे हिदेसु संखेज्जरूवोवत्तमादो ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स द्विदिबंघट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ ५० ॥

कारणं सुगमं । संपहि जेणेसो अब्बोगाढअप्पाबहुगदंढओ देसामासिओ तेनेत्थं
अंतभूदं चउवियप्पमप्पाबहुगं भणिस्सामो । तं जहा — एत्थ अप्पाबहुगं दुविहं मूलपबि-
अप्पाबहुगं अब्बोगाढअप्पाबहुगं चेदि । तत्थ अब्बोगाढअप्पाबहुगं दुविहं सत्थाण-परत्थाण-
भेदेण । तत्थ सत्थाणं वत्तइस्सामो । तं जहा — सव्वत्थोवो सुहुमेइदियअपज्जत्तयस्स
द्विदिबंघट्टाणविसेसो । द्विदिबंघट्टाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । जहण्णओ द्विदिबंघो
संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंघो विसेसाहियो । एवं सुहुमेइदियअपज्जत्त-नादरेइदिय-
पज्जत्तापज्जत्ताणं पि वत्तव्वं । मेइदियअपज्जत्तयस्स सव्वत्थोवो द्विदिबंघट्टाणविसेसो ।
द्विदिबंघट्टाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । जहण्णओ द्विदिबंघो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ
द्विदिबंघो विसेसाहियो ।

उनसे संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ४९ ॥

इसका कारण यह है कि पचोपमके संख्यातवें भाग मात्र असंखी पंचेन्द्रियके
स्थितिवन्धस्थानोंका अन्त-कोडाकोडि मात्र संखी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिवन्ध-
स्थानोंमें भाग देनेपर संख्यात रूप प्राप्त होते हैं ।

उनसे उसीके पर्याप्तकके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ५० ॥

इसका कारण सुगम है । अब चूंकि यह अब्बोगाढअप्यबहुत्वस्वरूपका
वैशामर्शक है, अतः इसमें अन्तभूत चार प्रकारके अप्यबहुत्वको कहते हैं ।
यह इस प्रकार है— यहाँ अप्यबहुत्व मूलप्रकृतिअप्यबहुत्व और अब्बोगाढअप्यबहुत्वके
भेदसे दो प्रकार है । उनमें अब्बोगाढअप्यबहुत्व स्वरूपान और परस्थानके भेदसे दो प्रकार
है । उनमें स्वरूपानमप्यबहुत्वको कहते हैं । यथा— सूक्ष्म पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका
स्थितिवन्धस्थानविशेष सबसे श्लोक है । उससे स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष
अधिक हैं । उनसे अचण्व स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उससे उत्कृष्ट स्थितिवन्ध
विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार सूक्ष्म पंचेन्द्रिय पर्याप्त और बादर पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
जीवोंके भी कहना चाहिये । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिवन्धस्थानविशेष सबसे श्लोक
है । उससे स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे अचण्व स्थितिवन्ध
संख्यातगुणा है । उससे उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ।

एवं भेईदियपञ्जत्त-तेईदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपञ्जत्तापञ्जत्तानं च वत्तव्वं । सण्णिपंचिंदियअपञ्जत्तयस्स सव्वत्थोवो जइण्णओ ढिदिबंधो । ढिदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । ढिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कत्तसओ ढिदिबंधो विसेसाहियो । एवं सण्णिपञ्जत्तयस्स वि वत्तव्वं । एवं सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं ।

परत्थाणप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा — सव्वत्थोवो सुहुमेईदियअपञ्जत्तयस्स ढिदिबंधाणविसेसो । ढिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरेईदियअपञ्जत्तयस्स ढिदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । ढिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । सुहु-मेईदियपञ्जत्तयस्स ढिदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । ढिदिबंधाणाणि विसेसाहियाणि एगरूवेण । बादरेईदियपञ्जत्तयस्स ढिदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । ढिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । भेईदियअपञ्जत्तयस्स ढिदिबंधाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ढिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पञ्जत्तयस्स ढिदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । ढिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तेईदियअपञ्जत्तयस्स ढिदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । ढिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पञ्जत्तयस्स ढिदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । ढिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि ।

इसी प्रकार त्रीन्द्रिय पर्याप्त तथा त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंखी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके भी कहना चाहिये । संखी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिवन्ध सबसे स्तोक है । उससे स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उससे स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे उरुष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार संखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके भी कहना चाहिये । इस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

परस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं । यथा — सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिवन्धस्थानविशेष सबसे स्तोक है । उससे उसीके स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उससे उसीके स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उससे उसीके स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उससे उसीके स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिवन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । उससे उसीके स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे उसीके पर्याप्तकका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उससे उसीके स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उससे उसीके स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे उसीके पर्याप्तकका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उससे उसीके स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे

यस्य उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसा-
 हिओ । चउरिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स
 जहण्णट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।
 तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ
 ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव
 अपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधो
 विसेसाहिओ । सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्ज-
 तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधाणविसेसो
 संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसे-
 साहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधाणाणि
 एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवमव्वोगाढ-
 अप्पाबहुगं समत्तं ।

मूलपयडिअप्पाबहुगं सत्थाण-परत्थाणभेदेण दुविहं । तत्थ सत्थाणप्पाबहुगं वत्त-
 इस्सामो । तं जहा— सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स आउअस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो ।

विशेष अधिक है । उससे उसीके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ।
 उससे क्षुत्तिन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उससे उसीके
 अपर्याप्तका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उससे उसीके अपर्याप्तका उत्कृष्ट
 स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उससे उसीके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष
 अधिक है । उससे उसीके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उससे
 असंखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उससे उसीके
 अपर्याप्तका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उससे उसीके अपर्याप्तका
 उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उससे उसीके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध
 विशेष अधिक है । उससे संखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा
 है । उससे उसीके अपर्याप्तका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उससे उसीके
 अपर्याप्तका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उससे उसीके स्थितिवन्धस्थान
 एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे उसीका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ।
 उससे उसीके पर्याप्तका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उससे उसीके
 स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे उसीका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध
 विशेष अधिक है । इस प्रकार अव्वोगाढअप्यबहुत्वं समाप्त हुआ ।

मूलप्रकृतिअप्यबहुत्वं स्थान और परस्थानके भेदसे दो प्रकार है । उनमेंसे
 स्थानअप्यबहुत्वंको कहते हैं । यथा— सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी आयुका
 जघन्य स्थितिवन्ध सबसे लोक है । उससे स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है ।

ट्टिदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्टिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्क-
स्सओ ट्टिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव णामा-गोदाणं ट्टिदिबंधाणविसेसो असंखेज्जगुणो ।
ट्टिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चटुण्णं कम्माणं ट्टिदिबंधाणविसेसो विसे-
साहिओ । ट्टिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्टिदिबंधाण-
विसेसो संखेज्जगुणो । ट्टिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ
ट्टिदिबंधो असंखेज्जगुणो । उक्कस्सट्टिदिबंधो विसेसाहिओ । चटुण्णं कम्माणं जहण्ण-
ट्टिदिबंधो विसेसाहिओ । उक्कस्सट्टिदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्टिदि-
बंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्टिदिबंधो विसेसाहिओ ।

एवं सुहुंभेइदियपज्जत्तयस्स बादरेइदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च पत्तेयं पत्तेयं सत्थाणप्पा-
बहुगं वत्तवं । बेहंदियअपज्जत्तयस्स सव्वत्थोवो आउअस्स जहण्णओ ट्टिदिबंधो । ट्टिदि-
बंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्टिदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ
ट्टिदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं ट्टिदिबंधाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्टिदिबंध-
ाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चटुण्णं कम्माणं ट्टिदिबंधाणविसेसो विसेसाहिओ ।

उससे स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे उत्कृष्ट स्थितिवन्ध
विशेष अधिक है । उससे उसीके नाम व गोत्र कर्मका स्थितिवन्धस्थानविशेष
असंख्यातगुणा है । उससे स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे
चार कर्मोंका स्थितिवन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । उससे स्थितिवन्धस्थान एक
रूपसे विशेष अधिक हैं । उससे मोहनीयका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है ।
उससे स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे नाम व गोत्र कर्मका
अधन्य स्थितिवन्ध असंख्यातगुणा है । उससे उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ।
उससे चार कर्मोंका अधन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उससे उत्कृष्ट स्थितिवन्ध
विशेष अधिक है । उससे मोहनीयका अधन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उससे
उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक व
अपर्याप्तकमेंसे प्रत्येकके स्वस्थान अव्यबहुत्व कहना चाहिये । प्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके
आयु कर्मका अधन्य स्थितिवन्ध सबसे स्तोक है । उससे स्थितिवन्धस्थानविशेष
संख्यातगुणा है । उससे स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे उत्कृष्ट
स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्र कर्मका स्थितिवन्धस्थानविशेष
असंख्यातगुणा है । उससे स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उनसे चार
कर्मोंका स्थितिवन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । उससे स्थितिवन्धस्थान एक

द्विदिबन्धद्वाणामि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबन्धद्वाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबन्धद्वाणामि एगरूवेण विसेसाहियाणि । णामा-गोदानं' जहण्णओ द्विदिबन्धो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबन्धो विसेसाहियो । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबन्धो विसेसाहियो । उक्कस्सओ द्विदिबन्धो विसेसाहियो । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबन्धो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबन्धो विसेसाहियो ।

एवं बेहंदियपज्जत्तयस्स तेहंदिय-चउरिंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं असण्णिपंचिंदिय-अपज्जत्ताणं च सस्थाणप्पावहुगं कायव्वं । असण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स सव्वत्थोवो आउअस्स जहण्णओ द्विदिबन्धो । द्विदिबन्धद्वाणविसेसो असंखेज्जगुणो । कारणं उवरि उन्विहिदि' । द्विदिबन्धद्वाणामि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबन्धो विसेसाहियो । णामा गोदानं द्विदिबन्धद्वाणविसेसो असंखेज्जगुणो । द्विदिबन्धद्वाणामि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं द्विदिबन्धद्वाणविसेसो विसेसाहियो । द्विदिबन्धद्वाणामि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबन्धद्वाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबन्धद्वाणामि एगरूवेण विसेसाहियाणि । णामा-गोदानं जहण्णओ द्विदिबन्धो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबन्धो विसेसाहियो । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबन्धो विसेसाहियो । उक्कस्सओ द्विदिबन्धो विसेसाहियो । मोहणीयस्स जहण्णओ

रूपसे विशेष अधिक हैं । उससे मोहनीय कर्मका स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणा है । उससे स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उससे नाम व गोत्र कर्मका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उससे उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उससे चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उससे उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उससे मोहनीयका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उससे उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार ईन्द्रिय पर्याप्तक, अन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक तथा असंखी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके भी स्वस्थान अल्पवहुत्वका कथन करना चाहिये । असंखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके आयु कर्मका जघन्य स्थितिवन्ध सबसे स्तोको है । उससे स्थितिवन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । कारण आगे कहेंगे । उससे स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्र कर्मका स्थितिवन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका स्थितिवन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीय कर्मका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । नाम व गोत्र कर्मका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । मोहनीय कर्मका

ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ठिदिबंधो विसेसाहियो ।

सण्णिपंचिदियपज्जत्तयस्स सव्वत्थोवो आउअस्स जहण्णओ ठिदिबंधो । ठिदिबंध-
ट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ
ठिदिबंधो विसेसाहियो । णामा-गोदाणं जहण्णओ ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । चटुण्णं कम्माणं
जहण्णओ ठिदिबंधो विसेसाहियो । मोहणीयस्स जहण्णओ ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ।
णामा-गोदाणं ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि ।
उक्कस्सओ ठिदिबंधो विसेसाहियो । चटुण्णं कम्माणं ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहियो ।
ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ठिदिबंधो विसेसाहियो ।
मोहणीयस्स ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि ।
उक्कस्सओ ठिदिबंधो विसेसाहियो ।

एवं सण्णिपंचिदियअपज्जत्तयस्स वि सत्थाणप्पाबहुगं वत्तवं । णवरि आउअस्स ठिदिबंध-
ट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ ठिदिबंधो
विसेसाहियो । णामा-गोदाणं जहण्णओ ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । उवरि पुवं व । एवं
सत्थाणप्पाबहुगं समत्तं ।

अधन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके आयु कर्मका अधन्य स्थितिबन्ध सबसे स्तोक है ।
स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं ।
उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्र कर्मका अधन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा
है । चार कर्मोंका अधन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका अधन्य स्थितिबन्ध
संख्यातगुणा है । नाम व गोत्र कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थिति-
बन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार
कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष
अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष
संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध
विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके भी स्वस्थानअल्पबहुत्व कहना चाहिये ।
विशेष इतना है कि आयु कर्मका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्ध-
स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्र
कर्मका अधन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । आगे पूर्वके समान ही कहना चाहिये ।
इस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समस्त हुआ ।

१ साम्प्रदायतः प्राक् [उक्क० ठिदिबंधो विसेसाहियाणि] इत्यधिकः पाठः कोष्ठस्थः समुपक्रम्यते ।

एतो अट्टणं कम्माणं चोदसजीवसमासेसु परत्याणप्पाबहुयं वतइस्सामो । तं जहा—
सन्वत्थोवो^१ चोदसणं जीवसमासाणं आउअस्स जहण्णयो द्विदिबंधो । बारसण्हं जीवसमासाणं
आउअस्स द्विदिबंधाणाणिवेसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि ।
उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । असण्णिपंचिदियपज्जत्तयस्स आउअस्स द्विदिबंधाण-
विसेसो असंखेज्जगुणो । कुदो ? असण्णिपंचिदियपज्जत्तयस्स णिरय-देवाउआणमुक्कस्सेण पलिदो-
वमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तद्विदिबंधुवलंमादो । द्विदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि ।
उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं द्विदिबंधाणविसेसो
असंखेज्जगुणो । द्विदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंध-
ट्टाणविसेसो विसेसाहियो । द्विदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव मोहणीयस्स
द्विदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरएइंदिय-
अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं द्विदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधाणाणि एगरूवेण
विसेसाहियाणि । तस्सेव चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधाणविसेसो विसेसाहियो । द्विदिबंध-
ट्टाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव मोहणीयस्य द्विदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो ।
द्विदिबंधाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं द्विदिबंध-

अब यहाँसे आगे चौदह जीवसमासोंमें आठ कर्मोंके परस्थान अल्पबहुत्वको कहते
हैं । यथा—चौदह जीवसमासोंके आयु कर्मका अधन्य स्थितिवन्ध सबसे स्तोक है । बारह
जीवसमासोंके आयु कर्मका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान
एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । असंखी पंचेन्द्रिय
पर्याप्तके आयुका स्थितिवन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है, क्योंकि, असंखी पंचेन्द्रिय
पर्याप्तोंमें नारकायु और वेवायुका स्थितिवन्ध उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र
पाया जाता है । उससे स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थिति-
वन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम व गोत्र कर्मका स्थितिवन्ध-
स्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसी
जीवके बार कर्मोंका स्थितिवन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिवन्धस्थान एक
रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके मोहनीयका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है ।
स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम व
गोत्रका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष
अधिक हैं । उसीके बार कर्मोंका स्थितिवन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिवन्ध-
स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके मोहनीयका स्थितिवन्धस्थानविशेष
संख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म
एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम व गोत्र कर्मका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा

[illegible][illegible]

चटुण्णं कम्माणं उक्कत्तसओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । असण्णिपंचिदियपज्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो संखेजगुणो । तस्सेव अपज्तयत्तस्स मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्तयत्तस्स मोहणीयस्स उक्कत्तसओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । सण्णिपंचिदियपज्तयत्तस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो संखेजगुणो । तस्सेव पज्तयत्तस्स चटुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्तयत्तस्स मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो संखेजगुणो । तस्सेव अपज्तयत्तस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो संखेजगुणो । तस्सेव अपज्तयत्तस्स चटुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्तयत्तस्स मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो संखेजगुणो । तस्सेव अपज्तयत्तस्स णामा-गोदाणं द्विदिबंधद्वाणविसेसो संखेजगुणो । द्विदिबंधद्वाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कत्तसओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्तयत्तस्स चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधद्वाणविसेसो विसेसाहिओ । द्विदिबंधद्वाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कत्तसओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्तयत्तस्स मोहणीयस्स द्विदिबंधद्वाणविसेसो संखेजगुणो । द्विदिबंधद्वाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कत्तसओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्तयत्तस्स णामा-गोदाणं द्विदिबंधद्वाणविसेसो संखेजगुणो । द्विदिबंधद्वाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कत्तसओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्तयत्तस्स चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधद्वाणविसेसो विसेसाहिओ । द्विदिबन्ध-

[illegible]

१ प्रतिषु 'पञ्चस्तयस्त' इति पाठः ।

द्वाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कसओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । तस्सेव पज्जसयस्स मोहणीयस्स द्विदिबंधद्वाणविसेसो संखेज्जुणो । द्विदिबंधद्वाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जसयस्स मोहणीयस्स उक्कसओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । संपहि एदेण सुत्तेण सुद्धचउव्विहमप्पाबहुगं परूविदं ।

बध्यत इति बन्धः, स्थितिश्चासौ बन्धश्च स्थितिबन्धः, तस्स स्थानं विशेषः स्थितिबन्ध-स्थानं आबाधस्थानमित्यर्थः । अथवा बन्धनं बन्धः, स्थितेर्बन्धः स्थितिबन्धः, सोऽस्मिन् तिष्ठतीति स्थितिबन्धस्थानम् । तदो आबाधाद्वाणपरूवणाए वि द्विदिबंधद्वाणपरूवणसण्णा होदि त्ति कट्ठु आबाधाद्वाणपरूवणं परूवणा-पमाणप्पाबहुएहि कस्सामो^१ । तं जहा—चोहसण्हं जीवसमासाण-मत्थि आबाधाद्वाणाणि । आबाधाद्वाणं नाम किं? जहण्णावाहुक्कस्साबाहादो सोहिय मुद्धसेसेभिं एगरूवे पक्खित्ते आबाधाद्वाणं । एसत्थो सव्वत्थ परूवेदब्बो । परूवणा गदा ।

चटुण्णमेइंदियजीवसमासाणमाबाधाद्वाणपमाणंमावलियाए असंखेज्जदिभागो । अट्टणं

अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इस प्रकार इस सूत्रसे सूचित चार प्रकारके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की है ।

जो बांधा जाता है वह बन्ध कहलाता है । 'स्थितिबन्धसौ बन्धश्च स्थितिबन्धः' इस कर्मचारव समासके अनुसार स्थितिको ही यहां बन्ध कहा गया है । उसके स्थान अर्थात् विशेषका नाम स्थितिबन्धस्थान है । अभिप्राय यह कि यहां स्थितिबन्धस्थानसे आबाधास्थानको लिया गया है । अथवा बन्धन क्रियाका नाम बन्ध है, 'स्थितिका बन्ध स्थितिबन्ध' इस प्रकार यहां तत्पुरुष समास है । वह स्थितिबन्ध जहां रहता है वह स्थितिबन्धस्थान कहा जाता है । इसीलिये आबाधास्थानप्ररूपणाकी भी स्थितिबन्धस्थान-प्ररूपणा संज्ञा है । अत एव प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व इन तीन अनुयोगद्वारोंके द्वारा आबाधास्थानप्ररूपणाको करते हैं । यथा—जौवह जीवसमासोंके आबाधास्थान हैं ।

शंका—आबाधास्थान किसे कहते हैं ?

समाधान—उत्कृष्ट आबाधामेंसे जघन्य आबाधाको घटाकर जो शेष रहे उसमें एक अंकको मिला देनेपर आबाधास्थान होता है ।

इस अर्थकी प्ररूपणा सभी जगह करना चाहिये । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

चार एकेन्द्रिय जीवसमासोंके आबाधास्थानोंका प्रमाण आबलीके असंख्यातवें

१ अ-आ-काप्रतिपु 'आबाधे' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'परूवणा (पमाण) मप्पाबहुए त्ति कस्सामो' इति पाठः । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिपु 'मुद्धवैतम्मि', ताप्रतौ 'मुद्धवे (ते) वम्मि' इति पाठः । ४ प्रतिपु 'समाण' इति पाठः ।

विगर्लिदियाणमाबाधाट्टाणपमाणमावळियाए संखेज्जदिभागो । सण्णिपंचिदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्टाणपमाणं संखेजावळियाओ । ते च अंतोसुहुत्तं । तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाधाट्टाणं संखेजाणि वाससइस्साणि । एवं पमाणं गदं ।

अप्पाबहुगं दुविहं अव्वोगाढप्पाबहुगं मूलपयडिअप्पाबहुगं चेदि । तत्थ अव्वोगाढ-
अप्पाबहुगं पि दुविहं सत्याणप्पाबहुगं परत्याणप्पाबहुगं चेदि । तत्थ सत्याणप्पाबहुगं
वत्तइस्सामो— सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्टाणविसेसो । आबाधाट्टाणाणि
एगरूवेण विसेसाहियाणि । जहणिया आबाधा असंखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाधा
विसेसाहिया । एवं सुहुमेइंदियपज्जत्त-बादरेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च वत्तव्वं । सव्वत्थोवो
वेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्टाणविसेसो । आबाधाट्टाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि ।
जहणिया आबाधा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाधा विसेसाहिया । एवं वेइंदियपज्जत्त-
तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च सत्याणप्पाबहुगं वत्तव्वं । सण्णि-
पंचिदियअपज्जत्तयस्स सव्वत्थोवा जहणिया आबाधा । आबाधाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो ।
आबाधाट्टाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाधा विसेसाहिया । एवं

भाग मात्र है । आठ विकलेन्द्रियोंके आबाधास्थानोंका प्रमाण आबलीके संख्यातवें भाग
है । संधी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तके आबाधास्थानोंका प्रमाण संख्यात आबलियां है । वह
अन्तर्मूर्तके बराबर है । उसीके पर्याप्तके आबाधास्थान संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है ।
इस प्रकार प्रमाणप्रकरण समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्व दो प्रकार है—अव्वोगाढअल्पबहुत्व और मूलप्रकृतिअल्पबहुत्व ।
इनमें अव्वोगाढअल्पबहुत्व भी दो प्रकार है—स्वस्थान अल्पबहुत्व और परस्थान
अल्पबहुत्व । इनमें स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका
आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं ।
अधन्य आबाधा असंख्यातशुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त तथा बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त एवं अपर्याप्त
जीवोंके भी कहना चाहिये । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है ।
आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । अधन्य आबाधा संख्यातशुणी है । उत्कृष्ट
आबाधा विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त तथा त्रिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, एवं असींधी पंचेन्द्रिय
पर्याप्त व अपर्याप्तके भी स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । संधी पंचेन्द्रिय
अपर्याप्तकी अधन्य आबाधा सबसे स्तोक है । आबाधास्थानविशेष संख्यातशुणी है ।
आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । इसी

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-प्रतिषु 'पंचिदियअपज्जत्तापज्जत्तयस्स', ताप्रतौ 'पंचिदियअपज्जत्त-
पज्जत्ताणं' इति पाठः ।

[एवं सण्णिपंचिदिय-] पञ्जत्तस्स वि वत्तव्वं । सत्याणं गदं ।

परत्यागे सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो । आबाधाट्ठाणाणि एगस्सवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगस्सवेण विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदियपज्जत्तस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगस्सवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगस्सवेण विसेसाहियाणि । बेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगस्सवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगस्सवेण विसेसाहियाणि । तेइंदियअपज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगस्सवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगस्सवेण विसेसाहियाणि । एवं चउरिंदिय-असण्णिपंचिदियपज्जत्तापज्जत्ताणं च गेदव्वं ।

तदो बादरेइंदियपज्जत्तयस्स जहणिया आबाधा संखेज्जगुणा । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहणिया आबाधा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स जहणिया आबाधा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स जहणिया आबाधा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाधा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाधा विसेसाहिया ।

प्रकार संक्षी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके भी कहना चाहिये । स्वस्थान अत्यबहुत्व समाप्त हुआ ।

परस्थानकी अपेक्षा सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोफ है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार चतुरिन्द्रिय और अस्सी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक तथा अपर्याप्तकके भी ले जाना चाहिये ।

उससे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरणइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बेइंदियपज्जत्तयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहणिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कसिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तेइंदियपज्जत्तयस्स जहणिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहणिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । एवं चउरिंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं पि गेदव्वं । तदो असणिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहणिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कसिया आबाहा विसेसाहिया । तदो सणिपंचिंदियपज्जत्तयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपज्जत्तयस्स आबाधाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्टाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स आबाधाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । एवमव्वोगाढमप्पाबहुगं समत्तं ।

अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । इसी प्रकार चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक व अपर्याप्तकके भी ले जाना चाहिये ।

इससे आगे अर्संधी पंचेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उससे अर्संधी पंचेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तककी आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तककी आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । इस प्रकार अव्वोगाढमव्वबहुत्वं समाप्त हुआ ।

मूलपयडिअप्याचहुगं दुविहं सत्याणं परत्याणं चेदि । तस्य सत्याणे पयदं—सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपजत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाधाट्ठाणविसेसो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाधाट्ठाणविसेसो विसेसाहियो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । आउअस्स जहणिया आबाहा असंखेज्जगुणा । आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।

एवं सुहुमेइंदियपजत्त-बादरेइंदियअपजत्ताणं पि वत्तव्वं । बादरेइंदियपजत्ताणसु सव्व-त्थोवो णामा-गोदाणमाबाधाट्ठाणविसेसो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाधाट्ठाणविसेसो विसेसाहियो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । आउअस्स जहणिया आबाहा असंखेज्जगुणा । णामा-गोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहणिया

मूलप्रकृति अल्पबहुत्व दो प्रकार है—स्वस्थान अल्पबहुत्व और परस्थान अल्पबहुत्व । उनमें यहाँ स्वस्थान अल्पबहुत्वका प्रकरण है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोत्र है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । आयु कर्मकी जघन्य आबाधा असंख्यातगुणी है । आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीय कर्मकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ।

इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक और बाह्य एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके भी कहना चाहिये । बाह्य एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोत्र है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । आयुकी जघन्य आबाधा असंख्यातगुणी है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उनकी उत्कृष्ट

आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाधाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।

बेइंदियअपजत्तयस्स सव्वत्थोवो णामा-गोदाणमाबाधाट्टाणविसेसो । आबाधाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । चटुण्णं कम्माणमाबाधाट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाधाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । आउअस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चटुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । एवं तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिदियअपजत्ताणं पि णेद्व्वं ।

सव्वत्थोवो बेइंदियअपजत्तयस्स णामा-गोदाणं आबाहाट्टाणविसेसो । आबाधाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । चटुण्णं कम्माणमाबाधाट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाधाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाधाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो ।

आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ।

झीन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । आबाधास्थान विशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । इसी प्रकार झीन्द्रिय, वतुरिन्द्रिय और अस्सी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके भी ले जाना चाहिये ।

झीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थान-

आबाधाद्वाणानि एगरूवेण विसेसाहियाणि । आउअस्स जहणिया आबाधा संखेज्जगुणा ।
 णामा-गोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जगुणो । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।
 चटुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।
 मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।
 आउअस्स आबाहाद्वाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाद्वाणानि एगरूवेण विसेसाहियाणि ।
 एवं तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं पि णेदच्चं ।

सन्वत्थोवा सण्णिपंचिंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स जहणिया आबाहा । णामा-गोदाणं
 जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । चटुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया ।
 मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । णामा-गोदाणमाबाधाद्वाविसेसो संखेज्जगुणो ।
 आबाहाद्वाणानि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चटुण्णं
 कम्माणमाबाधाद्वाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाधाद्वाणानि एगरूवेण विसेसाहियाणि ।
 उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आबाहाद्वाणविसेसो संखेज्जगुणो ।
 आबाहाद्वाणानि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स
 आबाहाद्वाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाद्वाणानि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया
 आबाहा विसेसाहिया ।

विशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । आयुकी जघन्य
 आबाधा संख्यातगुणी है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट
 आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट
 आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा
 विशेष अधिक है । आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक
 रूपसे विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और अस्ती पंचेन्द्रिय
 पर्याप्तके भी ले जाना चाहिये ।

संकी पंचेन्द्रिय पर्याप्तके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है । नाम व
 गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक
 है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष
 संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष
 अधिक है । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे
 विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष
 संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष
 अधिक है । आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे
 विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ।

१. अ-आ-कामप्रतिषु 'णामागोदाणं.....संखेज्जगुणा' इति पाठो नास्ति, ताप्रतौ त्वस्ति सः ।

सण्णिपंचिदियअपजत्तयस्स आउअस्स सव्वत्थोवा जहणिया आबाहा । आबाहाट्ठाण-
विसेसो संखेज्जुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा
विसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जुणा । चदुण्णं कम्माणं जहणिया
आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जुणा । णामा-गोदाणमा-
बाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया
आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहियो । आबाहा-
ट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स
आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया
आबाहा विसेसाहिया । एवं सत्याणप्पावहुगं समत्तं ।

परत्याणे पयदं—सव्वत्थोवो सुहुमेइदियअपजत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो ।
आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसे-
साहियो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो
संखेज्जुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरेइदियअपजत्तयस्स णामा-
गोदाणमाबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । चदुण्णं

संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है । आबाधा-
स्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट
आबाधा विशेष अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । चार
कर्माँकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है ।
नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष
अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्माँका आबाधास्थानविशेष विशेष
अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक
है । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष
अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । इस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व
समाप्त हुआ ।

अब परस्थान अल्पबहुत्वका प्रकरण है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व
गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक
हैं । चार कर्माँका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे
विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक
रूपसे विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष
संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्माँका आबाधास्थान-

१ ताम्रश्री 'बह० आबाहा । [आबाहा] ट्ठाण-' इति पाठः ।

[illegible]

विशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म एकैन्द्रिय पर्याप्तके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कमौका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थान-विशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है। बादर एकैन्द्रिय पर्याप्तके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधा-स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कमौका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थान-विशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष असंख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कमौका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा हैं। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कमौका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है। आबा-धास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यात-

[illegible][illegible]

आबाहाट्टाणाणि एगस्त्वेण विसेसाहियाणि^१ । चटुण्णं कम्माणमाबाहाट्टाणविसेसो विसेसाहियो । आबाहाट्टाणाणि एगस्त्वेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्टाण- विसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्त्वेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स गामा- मोदाणमाबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्त्वेण विसेसाहियाणि । चटुण्णं- कम्माणमाबाहाट्टाणविसेसो विसेसाहियो । आबाहाट्टाणाणि एगस्त्वेण विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्त्वेण विसेसाहियाणि । चोइसण्णं जीवसमासाणमाउअस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । सत्तणं पि अपज्जत्त- जीवसमासाणमाउअस्स आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्त्वेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्त्वेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरएइंदियपज्जत्तयस्स गामा-मोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स गामा-मोदाणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । बादरएइंदियपज्जत्तयस्स गामा-मोदाणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदिय- अपज्जत्तयस्स गामा-मोदाणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव गामा-मोदाण-

अधिक हैं । चार कमौका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधा- स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तके नाम व गोत्रका आबाधास्थान- विशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कमौका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चौदह जीवसमासोंके आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । सार्तो ही अपर्याप्तक जीवसमासोंके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ।

१ अप्रतावतोऽप्ये 'मोहणी० आबाहाट्टाणविसेसो संखे० गुणो' इत्यधिकं वाक्यं समुपलभ्यते ।

२ अ-मा-काप्रतिपु 'पज्ज०' इति पाठः । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-मा-काप्रतिपु 'सुहुमेइंदियपज्ज०' इति पाठः । ४ काप्रती 'गामा मोदाणमुक्क०' इति पाठः । ५ ताप्रती 'सुहुमेइंदियपज्ज० गामा मोदाणं जह० आबाहा विसे०' । [बादरएइंदियपज्ज० गामामोदाणं जह० आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदिय० विसे०] । तस्सेव' इति पाठः ।

[illegible][illegible]

असृण्पंचिदियपञ्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपञ्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपञ्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पञ्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । असृण्पंचिदियपञ्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपञ्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहणिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपञ्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पञ्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सृण्पंचिदियपञ्जत्तयस्स गामा-गोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । चदुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपञ्जत्तयस्स गामा-गोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । चदुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपञ्जत्तयस्स गामा-गोदाणमाबाधा-ट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगस्सेव विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणमाबाधाट्ठाणविसेसो विसेसाहियो । आबाधाट्ठाणाणि एगस्सेव विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाधाट्ठाणाणि एगस्सेव विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तेइदियपञ्जत्ताणमाउस्स आबाधाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहा-पंचेन्द्रिय पर्याप्तके चार कर्मोकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । अलंकी पंचेन्द्रिय पर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । अलंकी पंचेन्द्रिय पर्याप्तके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । चार कर्मोकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । चार कर्मोकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तको आर्यका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं ।

१ अ-काश्वोः 'सृण्पंचिदियगामा-', आप्रतो 'सृण्पंचि० गामा-', त्वाप्रतो 'सृण्पंचिदिय [४००] गामा' इति पाठः ।

ट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चउरिंदिय-
पज्जत्तयस्स आउअस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्टाणाणि एगस्वेण
विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बेइंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स
आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया
आबाहा विसेसाहिया । सण्णिपंविंदियपज्जत्तयस्स गामा-गोदाणं आबाहट्टाणविसेसो संखेज्ज-
गुणो । आबाहट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।
तस्सेव पज्जत्तयस्स चटुण्णं कम्माणमाबाहट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्टाणाणि
एगस्वेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पज्जत्तयस्स
मोहणीयस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि ।
उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्ताणमाउअस्स आबाहट्टाणविसेसो
विसेसाहिओ । आबाहाट्टाणाणि एगस्वेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसा-
हिया । सण्णि-असण्णिपज्जत्ताणमाउअस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि
एगस्वेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।

संपहि एदेण सुत्तेण परूविददो वि अप्पाबहुअदंडयाणि जुगवं वत्तइस्सामो । तं पि
उभयदो अप्पाबहुअं दुविहं— अक्वोगाढअप्पाबहुअं मूलपयडिअप्पाबहुअं चेदि । तत्थ
अक्वोगाढअप्पाबहुअं दुविहं— सत्थाणं परत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणे पयदं— सव्वत्थोवो

उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका आबाधास्थानविशेष
संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष
अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधा-
स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । संज्ञी पंचेन्द्रिय
पर्याप्तकके नाम ष गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे
विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका
आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं ।
उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका आबाधास्थानविशेष
संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष
अधिक है । बर एकैन्द्रिय पर्याप्तकोंके आयुका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है ।
आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । संज्ञी ष
असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान
एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ।

अब इस सूत्रसे प्रकटित दोनों ही अल्पबहुत्ववर्णकोंको एक साथ कहते हैं । वह दोनों
प्रकारका अल्पबहुत्व अक्वोगाढअल्पबहुत्व और मूलप्रकृतिअल्पबहुत्वके भेदसे दो प्रकार
है । उनमें अक्वोगाढअल्पबहुत्व दो प्रकार है—स्थान अल्पबहुत्व और परस्थान
अल्पबहुत्व । उनमें स्वस्थान अल्पबहुत्वका प्रकरण है—सूक्ष्म एकैन्द्रिय अपर्याप्तकके

सुहुमेइंदियअपञ्जत्तयस्स आबाहट्टाणाणिविसेसो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । द्विदिबंधट्टाणाणिविसेसो असंखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । जहण्णओ द्विदिबंधो असंखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । एवं सुहुमेइंदियपञ्जत्त-बादरेइंदिय-पञ्जत्तापञ्जत्ताणं च गेदव्वो ।

सन्वत्थोवो बेइंदियअपञ्जत्तयस्स आबाहट्टाणाणिविसेसो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । द्विदिबंधट्टाणाणिविसेसो असंखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । जहण्णओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । एवं बेइंदियपञ्जत्त-तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियपञ्जत्तापञ्जत्ताणं च गेदव्वं ।

सन्वत्थोवा सण्णिपंचिंदियअपञ्जत्तयस्स जहणिया आबाहा । आबाहट्टाणाणिविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । जहण्णओ द्विदिबंधो असंखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणिविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । एवं सण्णिपञ्जत्ताणं पि गेदव्वं ।

आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । जघन्य आबाधा असंख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान विशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तों और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तों व अपर्याप्तोंके भी ले जाना चाहिये ।

द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकके आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्तकों तथा त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व अस्संखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों व अपर्याप्तकोंके भी ले जाना चाहिये ।

संखी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है । आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार संखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके भी जानना चाहिये ।

परत्यागे पयद— सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपजत्तयस्स आबाहाट्टाणविसेसो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियअपजत्तयस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदियअपजत्तयस्स आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियअपजत्तयस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । बेइंदिय-अपजत्तयस्स आबाहट्टाणविसेसो असंखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पजत्तयस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । [तीइंदियअपजत्तयस्स आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि ।] तस्सेव पजत्तयस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । चउरिंदियअपजत्तयस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पजत्तयस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । असण्णिपंचिंदियअपजत्तयस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । तस्सेव पजत्तयस्स आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियअपजत्तयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा- । सुहुमेइंदियअपजत्तयस्स जहण्णिया

अब परस्थान अत्यवहुत्वाका प्रकरण है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थान-विशेष सबसे स्तोक है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष असंख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। अस्तंही पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है। आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। बादर

आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपजत्तयस्स जहणिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपजत्तयस्स जहणिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपजत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपजत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपजत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियअपजत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । वेइंदियअपजत्तयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपजत्तयस्स जहणिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपजत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पजत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । एवं तेइंदिय-चउरिंदियाणं णेद्व्वं । असणिपंचिंदियपजत्ताणं जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । सेसतिणं पदाणं वेइंदियभंगो । सणिपंचिंदियपजत्तयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपजत्तयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपजत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पजत्तयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपजत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । बादरेइंदियअपजत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवेण विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदिय-

एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तककी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंके ले जाना चाहिये ।

आगे असंखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । आगेके शेष तीन पर्वोंका अस्पष्टत्व द्वीन्द्रिय जीवोंके समान है । संखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तककी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तकका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकका आबाधास्थान-विशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं ।

[illegible][illegible]

विसेसाहो । सुहुमेइंदियपञ्जतयस्स उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहो । बादरेइंदिय-
पञ्जतयस्स उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहो । बेइंदियपञ्जतयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो
संखेज्जगुणो । तस्सेव अपञ्जतयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहो । तस्सेव उक्कस्सओ
द्विदिबंधो विसेसाहो । तस्सेव पञ्जतयस्स उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहो ।
तेइंदियपञ्जतयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहो । तस्सेव अपञ्जतयस्स जहण्णओ
द्विदिबंधो विसेसाहो । तस्सेव उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहो । तस्सेव पञ्जतयस्स
उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहो । चउरिंदियपञ्जतयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो
विसेसाहो । सेसतिणिणपदाणं बेइंदियभंगो । असणिणपंचिदियपञ्जतयस्स जहण्णओ
द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । सेसतिणिणपदाणं बेइंदियभंगो । सणिणपंचिदियपञ्जतयस्स जहण्णओ
द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपञ्जतयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव
अपञ्जतयस्स द्विदिबंधट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्वाहियाणि ।
उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहो । तस्सेव पञ्जतयस्स द्विदिबंधट्टाणविसेसो संखेज्ज-
गुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहो ।
एवमव्वोगाढमप्पाबहुअं समत्तं ।

मूलपयडिअप्पाबहुअं दुविहं— सत्याणं परत्याणं चेदि । तत्थ सत्थाणे पयदं—

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध
विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।
द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकका जघन्य
स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके
पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थिति-
बन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।
उसीका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध
विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । शेष तीन
पक्षोंकी प्ररूपणा त्रीन्द्रियके समान है । असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध
संख्यातगुणा है । शेष तीन पक्षोंकी प्ररूपणा त्रीन्द्रियके समान है । संज्ञी पंचेन्द्रिय
पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध
संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थिति-
बन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके
पर्याप्तकका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक
हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इस प्रकार अव्योगाढअव्यवहुत्व समाप्त हुआ ।

मूलप्रकृतिअव्यवहुत्व दो प्रकार है— स्वस्थान अव्यवहुत्व और परस्थान अव्यवहुत्व ।

१ प्रतिपु 'सेस तिणि-' इति पाठः ।

सव्वत्थोवो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्टाणविसेसो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहट्टाणविसेसो विसेसाहियो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । आउअस्स जहणिया आबाहा असंखेज्जगुणा । जहणओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहाविसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहाविसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहाविसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स द्विदिबंधट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । णामा-गोदाणं द्विदिबंधट्टाणविसेसो असंखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणं द्विदिबंधट्टाणविसेसो विसेसाहियो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबंधट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । णामा-गोदाणं जहणओ द्विदिबंधो असंखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । चदुण्णं कम्माणं जहणओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । मोहणीयस्स जहणओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । एवं सुहुमेइंदियपज्जत्त-

इनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वका प्रकरण है— सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । आयुकी जघन्य आबाधा असंख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उनकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका स्थितिवन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका स्थितिवन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवन्ध असंख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार

बादरेहृदियपञ्जसाणं च नेदध्वं ।

सञ्चत्थोवो बादरेहृदियपञ्जतयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो । आबाहट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । चटुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहियो । आबाहट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । आउअस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णओ ण्णिदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं जहणिया आबाहा असंखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चटुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । ण्णिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ण्णिदिबंधट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । उक्कस्सओ ण्णिदिबंधो विसेसाहियो । णामा-गोदाणं ण्णिदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । ण्णिदिबंधट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । चटुण्णं कम्माणं ण्णिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहियो । ण्णिदिबंधट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स ण्णिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ण्णिदिबंधट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ ण्णिदिबंधो असंखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ण्णिदिबंधो विसेसाहियो । चटुण्णं कम्माणं जहण्णओ ण्णिदिबंधो विसेसाहियो ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकों और बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके भी जानना चाहिये ।

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । बार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा असंख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उससे उन्नीकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका स्थितिवन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । बार कर्मोंका स्थितिवन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवन्ध असंख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । बार कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उत्कृष्ट

उक्कस्सओ छिदिबंधो विसेसाहियो । मोहणीयस्स जहण्णओ छिदिबंधो संखेज्जुणो ।
उक्कस्सओ छिदिबंधो विसेसाहियो ।

सन्वत्थोवो बेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहाट्टाणविसेसो । आबाहा-
ट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । चटुण्णं कम्माणमाबाहाट्टाणविसेसो विसेसाहियो । आबाहा-
ट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जुणो । आबाहाट्टाणाणि
एगस्सुवाहियाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जुणा । तस्सेव जहण्णओ छिदिबंधो
संखेज्जुणो । आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि ।
उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जुणा ।
उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चटुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया ।
उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जुणा । उक्कस्सिया
आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स छिदिबंधट्टाणविसेसो संखेज्जुणो । छिदिबंधट्टाणाणि
एगस्सुवाहियाणि । उक्कस्सओ छिदिबंधो विसेसाहियो । णामा-गोदाणं छिदिबंधट्टाणविसेसो
असंखेज्जुणो । छिदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । चटुण्णं कम्माणं छिदिबंधट्टाणविसेसो
विसेसाहियो । छिदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । मोहणीयस्स छिदिबंधट्टाणविसेसो
संखेज्जुणो । छिदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ छिदिबंधो

स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट
स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

दीन्द्रिय अपर्यत्तके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है ।
आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष
अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष
संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । आयुकी जघन्य आबाधा
संख्यातगुणी है । उसीका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । आबाधास्थानविशेष
संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष
अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष
अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष
अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक
है । आयुका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे
अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष
असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । चार कर्मोंका स्थितिबन्ध-
स्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका
स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । नाम
व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

संखेजगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । चदुणं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो संखेजगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । एवं तेइदिय-चउरिदिय-असण्णिपंचि-दियअपज्जत्ताणं पि णेय्व्वं ।

सव्वत्थोवो वेइदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमावाहाट्टाणविसेसो । आवाहाट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । चदुणं कम्माणमावाहट्टाणविसेसो विसेसाहियो । आवाहाट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स आवाहाट्टाणविसेसो संखेजगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । आउस्स जहण्णिया आवाहा संखेजगुणा । जहण्णओ द्विदिबंधो संखेजगुणो । णामा-गोदाणं जहण्णिया आवाहा संखेजगुणा । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । चदुणं कम्माणं जहण्णिया आवाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आवाहा संखेजगुणा । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । आउस्स आवाहाट्टाणविसेसो संखेजगुणो । आवाहाट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया । द्विदिबंधट्टाणविसेसो संखेजगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । णामा-गोदाणं द्विदिबंधट्टाणविसेसो असंखेजगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । चदुणं कम्माणं द्विदिबंधट्टाणविसेसो विसेसाहियो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबंधट्टाणविसेसो

चार कमौका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और अस्की पंचेन्द्रिय अपथोसकोंके भी जानना चाहिये । त्रीन्द्रिय पर्याप्तके नाम व गोत्रका आवाधास्थानविशेष सबसे श्लोक है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । चार कमौका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । आयुकी जघन्य आवाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रकी जघन्य आवाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । चार कमौकी जघन्य आवाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आवाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक हैं । आयुका आवाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक हैं । नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । चार कमौका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष

१ अ-आप्रतिषु 'तेइदिय-असणि', ताप्रती 'तेइदिय [चउरिदिय] असणि' इति पाठः ।

संखेज्जगुणो । द्विदिबंढाणाणि एगरूवाहियाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंढो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंढो विसेसाहियो । चटुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंढो विसेसाहियो । उक्कस्सओ द्विदिबंढो विसेसाहियो । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंढो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंढो विसेसाहियो । एवं तेइदिय-चउरिदियपजत्ताणं पि^१ णेयव्वं ।

सव्वत्थोवो असण्णिपंचिदियपजत्तयस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणविसेसो । आबाहा-ट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । चटुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहियो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णओ द्विदिबंढो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चटुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहाट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । द्विदिबंढाणविसेसो असंखेज्जगुणो । द्विदिबंढाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंढो विसेसाहियो । णामा-गोदाणं द्विदिबंढाण-विसेसो असंखेज्जगुणो । द्विदिबंढाणाणि एगरूवाहियाणि । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंढ-

संख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक हैं । मोहनीयका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार जीन्द्रिय और चतुर्गन्द्रिय पर्याप्तकोंके भी ले जाना चाहिये ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । स्थितिवन्धस्थान विशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका स्थितिवन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान

द्वाणविसेसो विसेसाहियो । द्विदिबंधद्वाणाणि एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबंधद्वाण-
विसेसो संखेज्जुणो । द्विदिबंधद्वाणाणि एगस्वाहियाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो
संखेज्जुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो
विसेसाहियो । [उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो ।] मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो
संखेज्जुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो ।

सन्वत्योवा सण्णिपंचिदियअपज्जतयस्स आउअस्स जहण्णिया आबाहा । जहण्णओ
द्विदिबंधो संखेज्जुणो । आबाहाद्वाणविसेसो संखेज्जुणो । आबाहाद्वाणाणि एगस्वाहियाणि ।
उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जुणो । चदुण्णं
कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जुणो ।
णामा-गोदाणमाबाहद्वाणविसेसो संखेज्जुणो । आबाहाद्वाणाणि एगस्वाहियाणि ।
उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणमाबाहद्वाणविसेसो विसेसाहियो ।
आबाहाद्वाणाणि एगस्वाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स
आबाहद्वाणविसेसो संखेज्जुणो । आबाहाद्वाणाणि एगस्वाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा
विसेसाहिया । आउअस्स द्विदिबंधद्वाणविसेसो संखेज्जुणो । द्विदिबंधद्वाणाणि एगस्वाहि-
याणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो

एक रूपसे अधिक हैं । चार कर्मोंका स्थितिवन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है ।
स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका स्थितिवन्धस्थानविशेष
संबन्धगतगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । नाम व गोत्रका जघन्य
स्थितिवन्ध संबन्धगतगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य
स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । [उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ।] मोहनीयका
जघन्य स्थितिवन्ध संबन्धगतगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है । जघन्य
स्थितिवन्ध संबन्धगतगुणा है । आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक
रूपसे विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य
आबाधा संबन्धगतगुणी है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी
जघन्य आबाधा संबन्धगतगुणी है । नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है ।
आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार
कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक
हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है ।
आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुका
स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं ।
उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवन्ध संबन्धगतगुणा

असंखेज्जगुणो । चटुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-मोदाणं द्विदिबंधट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधट्टाण-विसेसो विसेसाहिओ । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स द्विदिबंधट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवा-हियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ ।

सव्वत्थोवा सण्णिपंचिदियपज्जत्तयस्स आउअस्स जहण्णिया आबाहा । तस्सेव जहण्णओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-मोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । चटुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । णामा-मोदाणमावाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चटुण्णं कम्माणमावाहट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवेण विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसा-हिया । आउअस्स आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । द्विदिबंधट्टाणविसेसो असंखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्सुवाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-मोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो

है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिवन्ध-स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका स्थितिवन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक हैं । मोहनीयका स्थितिवन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ।

संकीर्णचेन्द्रिय पर्याप्तके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है । उसीका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । स्थितिवन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है । स्थितिवन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवन्ध

संखेजगुणो । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो संखेजगुणो । णामा-गोदाणं द्विदिबंधट्ठाणविसेसो संखेजगुणो । द्विदिबंधट्ठाणाणि एगस्सुवाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं द्विदिबंधट्ठाण-विसेसो विससाहिओ । द्विदिबंधट्ठाणाणि एगस्सुवाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स द्विदिबंधट्ठाणविसेसो संखेजगुणो । द्विदिबंधट्ठाणाणि एगस्सुवाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । एवं सत्याणप्पाबहुगं समत्तं ।

परत्यागे पयदं—सव्वथोवो सुहुमेइंदियअपज्जतयस्स णामा-गोदाणमावाहट्ठाण-विसेसो । आवाहाट्ठाणाणि एगस्सुवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमावाहाट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आवाहाट्ठाणाणि एगस्सुवाहियाणि । मोहणीयस्स आवाहाट्ठाणविसेसो संखेजगुणो । आवाहाट्ठाणाणि एगस्सुवाहियाणि । बादरेइंदियअपज्जतयस्स णामा-गोदाण-मावाहट्ठाणविसेसो संखेजगुणो । आवाहट्ठाणाणि एगस्सुवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमावाह-ट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आवाहट्ठाणाणि एगस्सुवाहियाणि । मोहणीयस्स आवाहट्ठाण-विसेसो संखेजगुणो । आवाहट्ठाणाणि एगस्सुवाहियाणि । सुहुमेइंदियअपज्जतयस्स णामा-गोदाणमावाहट्ठाणविसेसो संखेजगुणो । आवाहाट्ठाणाणि एगस्सुवाहियाणि । चदुण्णं कम्माणमावाहट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । आवाहाट्ठाणाणि एगस्सुवाहियाणि । मोहणीयस्स

संख्यातगुणा है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इस प्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब परस्थान अल्पबहुत्वका प्रकरण है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम व गोत्रका आवाधास्थानविशेष सबसे स्तोक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चतुर्दिन्द्रिय अपर्याप्तके नाम व गोत्रका आवाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आवाधास्थान-विशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक है । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम व गोत्रका आवाधास्थानविशेष संख्यातगुणा है । आवाधा-स्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । चार कर्मोंका आवाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आवाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । मोहनीयका आवाधास्थानविशेष

आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । बादएइंदिय-
पञ्तयस्स णामा-गोदानमाबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्वाहियाणि ।
चदुणं कम्माणमाबाहट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्टाणाणि एगस्वाहियाणि ।
मोहणीयस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्वाहियाणि ।
वेइंदियपञ्तयस्स णामा-गोदानमाबाहाट्टाणविसेसो असंखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि
एगस्वाहियाणि । चदुणं कम्माणमाबाहट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्टाणाणि
एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्वा-
हियाणि । तस्सेव पञ्तयस्स णामा-गोदामाबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्टाणाणि
एगस्वाहियाणि । चदुणं कम्माणमाबाहट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । आबाहाट्टाणाणि
एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । आबाहट्टाणाणि
एगस्वाहियाणि । तेइंदियपञ्तयस्स णामा-गोदानमाबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो ।
आबाहट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । चदुणं कम्माणमाबाहट्टाणविसेसो विसेसाहिओ ।
आबाहाट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो ।
आबाहट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । तस्सेव पञ्तयस्स णामा-गोदानमाबाहट्टाणविसेसो
संखेज्जगुणो । आबाहाट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । चदुणं कम्माणमाबाहट्टाणविसेसो

[illegible]

अपञ्चत्यस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पञ्चत्यस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पञ्चत्यस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपञ्चत्यस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पञ्चत्यस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पञ्चत्यस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपञ्चत्यस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपञ्चत्यस्स मोहणीयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सण्णिपंचिदियपञ्चत्यस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव पञ्चत्यस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव पञ्चत्यस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपञ्चत्यस्स णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपञ्चत्यस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपञ्चत्यस्स मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव अपञ्चत्यस्स णामा-गोदाणमाबाहट्ठाण-विसेसो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि एगस्साहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव अपञ्चत्यस्स चदुण्णं कम्माणमाबाहट्ठाणविसेसो विसेसाहियो ।

आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । संखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तके नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उसीके अपर्याप्तके नाम व गोत्रका आबाधास्थानविशेष संख्यातगुण है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंका आबाधास्थानविशेष विशेष अधिक है । आबाधास्थान एक रूपसे विशेष अधिक

विसेसाहिया । भारस्सणं जीवसमासाणमाउअस्स द्विदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । असण्णि-
पंचिदियपज्जत्ताणमाउअस्स द्विदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्ठाणाणि एगस्-
वाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । सुहुमेइदियपज्जत्तयस्स गामा-गोदाणं
द्विदिबंधट्ठाणविसेसो असंखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । चटुण्णं कम्माणं
द्विदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहियो । द्विदिबंधट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स
द्विदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । बादरेइदिय-
अपज्जत्ताणं गामा-गोदाणं द्विदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्ठाणाणि
एगस्वाहियाणि । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहियो । द्विदिबंधट्ठाणाणि
एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्ठाणाणि
एगस्वाहियाणि । सुहुमेइदियपज्जत्ताणं गामा-गोदाणं द्विदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो ।
द्विदिबंधट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहियो ।
द्विदिबंधट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो ।
द्विदिबंधट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । बादरेइदियपज्जत्ताणं गामा-गोदाणं द्विदिबंधट्ठाण-
विसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्ठाणाणि एगस्वाहियाणि । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधट्ठाण-

[illegible]

[illegible]

बन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। श्रीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष असंख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थान-विशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उसीके पर्याप्तकोंके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। श्रीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे

द्विदिबन्धट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबन्धट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । चटुण्णं
कम्माणं द्विदिबन्धट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । तिदिबन्धट्टाणाणि एगस्वाहियाणि ।
मोहणीयस्स तिदिबन्धट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । तिदिबन्धट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । तस्सेव
पज्जत्ताणं णामा-गोदाणं द्विदिबन्धट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । तिदिबन्धट्टाणाणि एगस्वाहियाणि ।
चटुण्णं कम्माणं द्विदिबन्धट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । द्विदिबन्धट्टाणाणि एगस्वाहियाणि ।
मोहणीयस्स द्विदिबन्धट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । तिदिबन्धट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । असग्गि-
पंचेदिअपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं द्विदिबन्धट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । तिदिबन्धट्टाणाणि
एगस्वाहियाणि । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबन्धट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । तिदिबन्धट्टाणाणि
एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबन्धट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । तिदिबन्धट्टाणाणि
एगस्वाहियाणि । तस्सेव पज्जत्ताणं णामा-गोदाणं द्विदिबन्धट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो ।
तिदिबन्धट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबन्धट्टाणविसेसो विसेसाहिओ ।
तिदिबन्धट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबन्धट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो ।
तिदिबन्धट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । बादरएईदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ
द्विदिबन्धो संखेज्जगुणो । सुहुमेईदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबन्धो

[illegible]

विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपजत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियअपजत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । तस्सेव अपजत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपजत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियपजत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । बादरेइंदियपजत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । तस्सेव पजत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियपजत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपजत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियअपजत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । तस्सेव अपजत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । बादरेइंदियअपजत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । सुहुमेइंदियपजत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । बादरेइंदियपजत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ठिदिबंढो विसेसाहिओ । तस्सेव पजत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ठिदिबंढो संखेज्जगुणो । सेसाणि सत्त पदाणि विसेसाहियाणि जेदव्वाणि । बेइंदियपजत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ठिदिबंढो

गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम वा गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम वा गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम वा गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम वा गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम वा गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । शेष सात पद विशेष अधिक कमसे ले जाना चाहिये । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम वा गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तकके नाम वा गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके

१ अत्रतो 'विसेसाहियाणि ति जेदव्वाणि' इति पाठः ।

संखेजगुणो । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स चटुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । एवं सेसाणि तिण्णि पदाणि णेदव्वाणि । तेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । एवं सेसदोपदाणि विसेसाहियकमेण णेदव्वाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स चटुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चटुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चटुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स चटुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । चउरिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ ।

नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार शेष तीन पदोंको ले जाना चाहिये ।

आगे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार शेष दो पदोंको भी विशेषाधिकके क्रमसे ले जाना चाहिये । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । चतुर्निन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । संज्ञी पंचैन्द्रिय पर्याप्तकके आयुका स्थितिवन्ध-

१ वाक्यमिदं-नोपलभ्यत अ-आ-काप्रतिपु । २ ताप्रती 'चटुण्णं क० उक्क० (बह०)' इति पाठः ।

सण्णिपंचिदियपज्जताणमाउअस्स ठ्ठिदिबंघट्टाणविसेसो विसेसाहिओ । ठिदिबंघट्टाणाणि एमरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । चउरिंदियपज्जताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जताणं चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जताणं चउण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । तेइंदियपज्जताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । चउरिंदियपज्जताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । असण्णिपंचिदियपज्जताणं णामा-गोदाणं जहण्णओ ठ्ठिदिबंघो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जताणं णामा-गोदाणं जहण्णओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जताणं णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जताणं णामा-गोदाण-मुक्कस्सओ ठ्ठिदिबंघो संखेज्जगुणो । असण्णिपंचिदियपज्जताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ठ्ठिदिबंघो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ठ्ठिदिबंघो

स्थानविशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । अर्सही पंचेन्द्रिय पर्याप्तके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । उसीके अपर्याप्तके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । अर्सही पंचेन्द्रिय पर्याप्तके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध

संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । तस्सेव पज्जत्ताणं चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधट्टाणविसेसो विसेसाहियो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स द्विदिबंधट्टाणविसेसो संखेज्जगुणो । द्विदिबंधट्टाणाणि एगस्वाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो ।

सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्सं संकिलेसविसोहिट्टाणाणि ॥५१॥

स्थितयो बध्यन्ते अभिरिति करणे घञुत्पत्तेः^१ कर्मस्थितिबन्धकारणपरिणामानां स्थितिबन्ध इति व्यपदेशः । तेषां स्थानानि अवस्थाविशेषाः स्थितिबन्धस्थानानि । संप्रति तेसिं द्विदिबंधकारणपरिणामाणं परूवणा कीरदे । किमट्टमेदेसिं परूवणा कीरदे ? कारणा-वगमदुवारेण कम्मट्ठिदिकजावगमणट्ठं । ण च कारणे अणवगण कजावगमो सम्मतं पडिवज्जे, अणत्थ तहाणुवलंभादो ।

एत्थ परूवणा पमाणमप्पावहुअमिदि तिण्णि अणियोगहाराणि भवन्ति । सुत्ते

अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थान-विशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थिति-बन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके मोहनोयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

मूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संव्लेश-विशुद्धिस्थान सबसे स्तोक हैं ॥ ५१ ॥

‘जिनके द्वारा स्थितियां बंधती हैं’ इस विग्रहके अनुसार करण अर्थमें ‘घञ्’ प्रत्यय होनेसे स्थितिबन्धके कारणभूत परिणामोंको स्थितिबन्ध कहा गया है । उनकी अवस्थाविशेषोंका नाम स्थितिबन्धस्थान हैं । अब स्थितिबन्धके कारणभूत उन परिणामोंकी प्ररूपणा करते हैं ।

शंका—इनकी प्ररूपणा किसलिये की जाती है ?

समाधान—कारणपरिज्ञानपूर्वक कर्मस्थितिके रूप कार्यका परिज्ञान करानेके लिये उनकी प्ररूपणा की जा रही है । कारण कि जबतक कार्योत्पादक हेतुका परिज्ञान नहीं हो जाता, तब तक कार्यका परिज्ञान यथार्थताको प्राप्त नहीं होता, क्योंकि, दूसरी जगह बैसा पाया नहीं जाता है ।

यहां प्ररूपणा, प्रमाण और अत्यवबुद्धि ये तीन अनुयोगद्वार हैं ।

१ अ-आ-काप्रतिषु ‘पज्जत्तयस्स’ इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु ‘घञुत्पत्ते’ इति पाठः ।

अप्याबहुआणियोगहारमेकमेव किमटं परुविदं ? ण एस दोसो, अप्याबहुअपरुवणाए तेसिं दोहं पि अंतम्भावादो । कुदो ? अणवगयमंत-पमाणेसु परिणामेसु अप्याबहुगानुववत्तीदो । तत्थ ताव एगजीवसमासमस्सिदण संकिलेस-विसोहिट्टाणाणं परुवणा कीरदे । तं जहा-जहणियाए ट्टिदीए अत्थि संकिलेसट्टाणाणि । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सट्टिदि ति । एवं विसोहिट्टाणाणं पि परुवणा कायव्वा । णवरि उक्कस्सट्टिदिप्पहुडि परुवेदव्वं । एवं परुवणा गदा ।

जहणियाए ट्टिदीए संकिलेसट्टाणाणं पमाणमसंखेज्जा लोगा । विदियाए ट्टिदीए वि असंखेज्जा लोगा । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सिया ट्टिदि ति । एवं विसोहिट्टाणाणं पि विवरीएण पमाणपरुवणा कायव्वा । एत्थ पमाणाणियोगहारेण सृचिदणं सेडि-अवहार-भागा-भागाणं परुवणं कस्सामो । तत्थ सेडिपरुवणा दुविहा-अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरोवणिधाए जहणट्टिदीए संकिलेसट्टाणेहिंतो विदियाए ट्टिदीए संकिलेसट्टाणाणि विसेसाहियाणि । को पडिमागो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । विदिय-ट्टिदिसंकिलेसट्टाणेहिंतो तदियट्टिदिमंकिलेसट्टाणाणि विसेसाहियाणि । एत्थ पडिमागो

शंका—सूत्रमें एक मात्र अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारकी ही प्ररूपणा किसलिये की गई है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वे दोनों अल्पबहुत्व प्ररूपणाके अन्तर्गत हैं । कारण यह कि सत्त्व और प्रमाणके अज्ञात होनेपर उक्त परिणामोंके विषयमें अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा सम्भव नहीं है ।

उनमें पहिले एक जीवसमासका आश्रय लेकर संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी प्ररूपणा की जाती है । यथा—जघन्य स्थितिमें संक्लेशस्थान हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार विशुद्धिस्थानोंकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि उनकी प्ररूपणा उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर करना चाहिये । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

जघन्य स्थितिके संक्लेशस्थानोंका प्रमाण असंख्यात लोक है । द्वितीय स्थितिके भी संक्लेशस्थानोंका प्रमाण असंख्यात लोक ही है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार विशुद्धिस्थानोंके भी प्रमाणकी प्ररूपणा विपरीत क्रमसे करना चाहिये ।

यहां प्रमाणानुयोगद्वारसे सूचित श्रेणि, अवहार और भागाभागाकी प्ररूपणा करते हैं । उनमें श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा । उनमें अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा—जघन्य स्थितिके संक्लेशस्थानोंसे द्वितीय स्थितिके संक्लेशस्थान विशेष अधिक हैं । प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग पदोपमका असंख्यातबां भाग है । द्वितीय स्थितिके संक्लेशस्थानोंकी अपेक्षा तृतीय स्थितिके संक्लेशस्थान विशेष

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदिसंक्किल्लेसट्टाणाणि ति । एवमणंतरोवणिधा गदा ।

परंपरोवणिधाए जहण्णट्ठिदिसंक्किल्लेसट्टाणेहिंतो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग-
मेत्तद्धाणं गंतुण दुगुणवद्दी होदि । पुणो वि एत्तिवमट्टाणमुवरि गंतुण चदुगुणवद्दी होदि ।
एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदीए संक्किल्लेसट्टाणाणि ति । एत्थ णाणागुणहाणिसलागाओ
धोवाओ । एगगुणहाणिट्टाणंतरमसंखेज्जगुणं । एवं विसोहिट्टाणाणं पि सेडिपस्सव्वणं विवरीद-
कमेण कायव्वं, उक्कस्सट्ठिदिपरिणामेहिंतो हेट्ठिम-हेट्ठिमट्ठिदिपरिणामाणं विसेसाहियतुव-
लंभादो । एवं सेडिपस्सव्वणा गदा ।

अवहारो उच्चदे । तं जहा—सव्वसंक्किल्लेसट्टाणाणि जहण्णट्ठिदिसंक्किल्लेसपमाणेण
अवहिरिज्जमाणे केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति ? असंखेज्जेण कालेण अवहिरिज्जंति ।
एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सियाए ट्ठिदीए संक्किल्लेसट्टाणाणि ति । एवं विसोहिट्टाणाणं पि
वत्तव्वं । अवहारो गदो ।

जहण्णियाए ट्ठिदीए संक्किल्लेसट्टाणाणि सव्वसंक्किल्लेसट्टाणाणं केवडिओ भागो ?
असंखेज्जदिभागो । एवं णदव्वं जाव उक्कस्सियाए ट्ठिदीए संक्किल्लेसट्टाणाणि ति । एवं
विसोहिट्टाणाणं भागाभागपरूवणा कायव्वा । एवं भागाभागपरूवणा गदा ।

अधिक हैं । यहाँ प्रतिभाग पत्तोपमका असंख्यातवां भाग है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिके
संक्लेशस्थानों तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

एतदुपरोपनिधासे अद्य-य स्थितिके संक्लेशस्थानोंकी अपेक्षा पत्तोपमके असंख्यातवें
भाग मात्र अध्वान जाकर दुगुणी वृद्धि होती है । फिर भी इतना मात्र अध्वान आने
जाकर चतुर्गुणी वृद्धि होती है । इस क्रमसे उत्कृष्ट स्थितिके संक्लेशस्थानों तक ले जाना
चाहिये । यहाँ नाना गुणहानिशलाकार्ये स्तोक हैं । एक गुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा
है । इसी प्रकार विशुद्धस्थानोंकी भी श्रेणिप्ररूपणा विपरीत क्रमसे करना चाहिये,
क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिके संक्लेशस्थानोंकी अपेक्षा नीचे नीचेकी स्थितियोंके परिणाम
विशेष अधिक पाये जाते हैं । इस प्रकार श्रेणिप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अवहारकी प्ररूपणा करते हैं । यथा-समस्त संक्लेशस्थानोंको अद्यन्य स्थितिके
संक्लेशस्थानोंके प्रमाणसे अपहृत करनेपर वे कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ?
उक्त प्रमाणसे वे असंख्यात कालके द्वारा अपहृत होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिके
संक्लेशस्थानोंतक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार विशुद्धस्थानोंके भी अवहारका कथन
करना चाहिये । अवहारका कथन समाप्त हुआ ।

अद्यन्य स्थितिके संक्लेशस्थान सब संक्लेशस्थानोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे
सब संक्लेशस्थानोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिके स्थानों
तक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार विशुद्धस्थानोंके भागाभागकी प्ररूपणा करना चाहिये ।
इस प्रकार भागाभागप्ररूपणा समाप्त हुई ।

१ अ-आ-काप्रतिपु ' विसोहिट्टाणाणि ' इति पाठः ।

संपदि अप्पावहुअपस्त्वाण सुतुहिट्ठाए विवरणं कस्सामो—सव्वत्थोवा सुहुमेइंदिय-
अपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि । संपदि संकिलेसट्ठाणाणं विसोहिट्ठाणाणं च को
भेदो ? परियत्तमाणि याणं साद-थिर-सुम-सुभग-सुस्सर-आदेजादीणं सुभपयडीणं बंधकारण-
भूदकसायट्ठाणाणि विसोहिट्ठाणाणि, असाद-अथिर-असुह-दुभग-[दुस्सर-] अणादेजादीणं
परियत्तमाणि याणं सुहपयडीणं बंधकारणकसाउदयट्ठाणाणि संकिलेसट्ठाणाणि त्ति
एसो तेसिं भेदो । वड्डमाणकसाओ संकिलेसो, हायमाणो विसोहि त्ति किण्ण
वेप्पदे ? ण, संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं संखाए समाणत्तपसंगादो । कुदो ?
जहण्णुकस्सपरिणामाणं जहाकमेण विसोहि-संकिलेसणियमदमणादो मज्झिम-
परिणामाणं च संकिलेस-विसोहिपक्खवुत्तिदंसणादो ण च संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं संखाए
समाणत्तमत्थि, संकिलेसट्ठाणेहिंतो विसोहिट्ठाणाणि णिच्छण थोवाणि त्ति एवाइज्जमाण-
गुरूवएसेण सह विरोहादो । उक्कस्सेट्ठिदीए विसोहिट्ठाणाणि थोवाणि जहण्णट्ठिदीए

अथ सूत्रोद्दिष्ट अल्पबहुत्वकी प्ररूपणाका विवरण करते हैं—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्या-
प्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान सबसे स्तोक हैं ।

शंका—यहां संक्लेशस्थानों और विशुद्धिस्थानोंमें क्या भेद है ?

समाधान—रूता, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर और आदेय आदिक परिवर्तमान शुभ
प्रकृतियोंके बन्धके कारणभूत कषायस्थानोंको विशुद्धिस्थान कहते हैं और असाता,
अस्थिर अशुभ, दुर्भग, [दुस्वर] और अनादेय आदिक परिवर्तमान अशुभ प्रकृतियोंके
बन्धके कारणभूत कषायोंके उदयस्थानोंको संक्लेशस्थान कहते हैं, यह इन दोनोंमें भेद है ।

शंका—बहुती हुई कषायको संक्लेश और हीन होनी हुई कषायको विशुद्धि क्यों नहीं
स्वीकार करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वेला स्वीकार करनेपर संक्लेशस्थानों और विशुद्धि-
स्थानोंकी संख्याके समान होनेका प्रसंग आता है । कारण यह कि जघन्य और
उत्कृष्ट परिणामोंके क्रमशः विशुद्धि और संक्लेशका नियम देखा जाता है, तथा मध्यम
परिणामोंका संक्लेश अथवा विशुद्धिके पक्षमें अस्तिस्व देखा जाता है । परन्तु संक्लेश
और विशुद्धि स्थानोंमें संख्याकी अपेक्षा समानता है नहीं, क्योंकि, 'संक्लेशस्थानोंकी
अपेक्षा विशुद्धिस्थान नियमसे स्तोक हैं' इस परम्परासे प्राप्त गुरुके उपदेशसे विरोध
आता है । अथवा, उत्कृष्ट स्थितिमें विशुद्धिस्थान थोड़े और जघन्य स्थितिमें वे बहुत

१ अ-आ-काप्रतिषु 'परियत्तवुजियाणि,' ताप्रती 'परियत्तमाणि' इति पाठः । सार्धं शिराहं
उच्चं ध्रुवमणु दो-दो पणिदि चउरसे । रिह-पसत्थविहायगइ सोल्ल परियत्तसुमवग्गो ॥ पं. सं. १, ८१
२ अ. आ-काप्रतिषु 'परियत्तवुजियाणि' इति पाठः । अस्साय थावरदं नरयवुगं विहगई य अपसत्था ।
पंवेदि-रिसमचउरसगेयरा अल्लमथोल्लिया ॥ पं. सं. १, ८२. ३ म प्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का प्रतिषु
'एकस्स' ताप्रती 'ए (उ) कस्स' इति पाठः ।

बहुवाणि ति गुरुवएसदो वा हायमाणकसाउदयट्टाणाणं विसोहिभावो णत्थि ति णव्वदे । सम्मत्तुप्पत्तीए सादद्धाणपरुवणं कावूण पुणो संक्खिलेस-विसोहीणं परुवणं कुणमाण वाक्खाणाहरिया जाणवेंति जहा हायमाणकसाउदयट्टाणाणि चेव विसोहिसण्णिदाणि ति भणिदे होदु णाम तत्थ तधाभावो, दंसण-चरित्तमोहवखणोवसामणासु पुव्विल्लसमए उदयमागद-अणुभागफइएहिंतो अणंतगुणहीणफइयाणमुदएण जादकसायउदयट्टाणस्स विसो-हित्तमुवगमादो । ण च एस णियमो संसारावत्थाए अत्थि, तत्थ छव्विहवत्ति-हाणीहि कसाउदयट्टाणाणं उत्तत्तिदंसणादो । संसारावत्थाए वि अंतोमुहुत्तमणंतगुणहीणकमेण अणुभाग-फइयाणं उदओ अत्थि ति कुत्ते होदु, तत्थ वि तधाभावं पडुव्व विसोहित्तमुवगमादो । ण च एत्थ अणंतगुणहीणफइयाणमुदएण उप्पण्णकसाउदयट्टाणं विसोहि ति वेप्पदे, एत्थ एवंविहविवक्खाभावादो । किंतु सादबंधपाओग्गकसाउदयट्टाणाणि विसोही, असाद-बंधपाओग्गकसाउदयट्टाणाणि संक्खिलेसो ति वेत्तव्वमण्णहा विसोहिट्टाणाणमुक्कस्सट्ठिदीए

होते हैं, इस गुरुके उपदेशसे जाना जाता है कि हानिको प्राप्त होनेवाली कषायके उदयस्थानोंके विशुद्धता सम्भव नहीं है ।

शंका—सम्यक्त्वोत्पत्तिमें सातावेदनीयके अभ्यासकी प्ररूपणा करके पश्चात् संक्लेश व विशुद्धि की प्ररूपणा करते हुए व्याख्यानार्थ यह ज्ञापित करते हैं कि हानिको प्राप्त होनेवाले कषायके उदयस्थानोंकी ही विशुद्धि संज्ञा है ?

समाधान—ऐसी आशंका होनेपर उत्तर देते हैं कि वहाँपर वैसा कहना ठीक है, क्योंकि, दर्शन और चरित्र मोहकी क्षणता व उपशमनामें पूर्व समयमें उदयको प्राप्त हुए अनुभागस्पर्धकोंकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन अनुभागस्पर्धकोंके उदयसे उत्पन्न हुए कषायोदयस्थानके विशुद्धपना स्वीकार किया गया है । परन्तु यह नियम संसारावस्थामें सम्भव नहीं है, क्योंकि, वहाँ छह प्रकारकी वृद्धि व हानियोंसे कषायोदयस्थानकी उत्पत्ति देखी जाती है ।

शंका—संसारावस्थामें भी अन्तर्मुहुर्त काल तक अनन्तगुणे हीन क्रमसे अनुभाग-स्पर्धकोंका उदय है ही ?

समाधान—संसारावस्थामें भी उनका उदय बना रहे, वहाँ भी उक्त स्वरूपका आश्रय करके विशुद्धता स्वीकार की गई है । परन्तु यहाँ अनन्तगुणे हीन स्पर्धकोंके उदयसे उत्पन्न कषायोदयस्थानको विशुद्धि नहीं ग्रहण किया जा सकता है, क्योंकि, वहाँ इस प्रकारकी विवक्षा नहीं है । किन्तु सातावेदनीयके बन्धयोग कषायोदयस्थानोंको विशुद्धि और असातावेदनीयके बन्धयोग्य कषायोदयस्थानोंको संक्लेश ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, इसके बिना उत्कृष्ट स्थितिमें विशुद्धिस्थानोंकी स्तोक्ताका विरोध है ।

१ प्रतिषु 'सादद्धाणं परुवणं' इति पाठः । २ प्रतिषु 'जाव' इति पाठः । ३ अ-आ-का प्रतिषु 'तथाभावं' इति पाठः । ४ ताप्रती 'एवं विवविक्खाभावादो' इति पाठः ।

योश्चतविरोहादो ति । तदो संकिलेसद्वाणाणि जहण्णट्टिप्पहुडि विसेसाहियवङ्गीए, उक्कत्सट्टिदिप्पहुडि विसोहिट्ठाणाणि विसेसाहियवङ्गीए गच्छंति [ति] विसोहिट्ठाणेहिंतो संकिलेसद्वाणाणि विसेसाहियाणि ति सिद्धं ।

बादरेइंदियअपज्जयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ५२ ॥

सुहुमेइंदियअपज्जयस्स ट्टिदिबंधट्ठाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जयस्स ट्टिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ति सुत्तेहि पस्विदाणि । तदो सुहुमेइंदियअपज्जयस्स संकिलेसविसोहिट्ठाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहि संखेज्जगुणेहि होदव्वं । तेण असंखेज्जगुणाणि ति सुत्तवयणं ण घट्ठे ? एत्थ परिहारो उच्चदे—जदि सम्बट्टिदीणं संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि सरिसाणि चेव होति तो संखेज्जगुणत्तं जुज्जे । ण च सव्वट्टिदि-संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं सरिसत्तमत्थि, जहण्णक्कत्सट्टिदिप्पहुडि संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणम-संखेज्जभागवङ्गीए गमणुवलंभादो । तेण सुहुमेइंदियअपज्जयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणमसंखेज्जगुणत्तं जुज्जेति ति वेत्तव्वं ।

अतएव संक्लेशस्थान जघन्य स्थितिसे लेकर उत्तरोत्तर विशेष अधिकके क्रमसे तथा विशुद्धिस्थान उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर विशेष अधिक क्रमसे जाते हैं, इसीलिये विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा संक्लेशस्थान विशेष अधिक हैं, यह सिद्ध होता है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५२ ॥

शंका—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुण हैं, ऐसा सुत्रों (३७-३८) में कहा जा चुका है । अतएव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धि स्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थान संख्यातगुणे होना चाहिये । इसीलिये ' असंखेज्जगुणाणि ' यह सूत्रवचन घटित नहीं होता है ?

समाधान—इस शंकाका परिहार कहते हैं—यदि सभी स्थितियोंके संक्लेश-विशुद्धिस्थान सदृश ही होते, तो बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेशविशुद्धिस्थानोंको संख्यातगुणा कहना उचित था । परन्तु सब स्थितियोंके संक्लेशविशुद्धिस्थान सदृश होते नहीं हैं, क्योंकि, जघन्य और उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर क्रमशः संक्लेश और विशुद्धि स्थानोंका गमन असंख्यातभागवृद्धिके साथ पाया जाता है । अतएव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश विशुद्धिस्थानोंसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंको असंख्यातगुणा कहना उचित है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

१ कथमेवं गम्यते सर्वत्राप्यसंख्येयगुणानि संक्लेशस्थानानीति चेदुच्यते इह सूक्ष्मस्यापर्याप्तस्य

संपहि जदि वि असंखेजगुणत्तं बुद्धिमंताणं सिस्साणं सुममं तो वि मंदमेहावि-
सिस्साअमणुगाहट्टमसंखेजगुणत्तसाहणं वत्तइस्सामो । तं जहा—सुहुमेइंदियअपजत्तयस्स द्विदि-
बंधाणाणं पल्लिदोवमस्स असंखेजदिभागमेत्ताणं संदिट्ठीए रचणा कायव्वा । पुणो एदेसिं
द्विदिबंधाणाणं दक्खिणदिसाए बादरेइंदियअपजत्तद्विदिबंधाणाणं रचणा कायव्वा ।
तत्थ बादरेइंदियअपजत्तद्विदिबंधाणे सुहुमेइंदियअपजत्तद्विदिबंधाणाणि मोत्तूण सेसहेट्ठिम-
द्विदिबंधाणाणि सुहुमेइंदियअपजत्तद्विदिबंधाणेहिंतो संखेजगुणाणि सुहुमेइंदियअपजत्त-
विसोहीदो बादरेइंदियअपजत्तविसोहीए अणंतगुणत्तुवलंभादो । उवरिमद्विदिबंधाणाणि
ततो संखेजगुणाणि, सुहुमेइंदियअपजत्तउवक्कस्ससंकिलेसादो बादरेइंदियअपजत्त-उवक्कस्स-
संकिलेसस्स अणंतगुणत्तुवलंभादो । एवं च द्विद्विदिबंधाणेसु जहण्णद्विदिबंधाणमादिं
कादूण जावुवक्कस्सद्विदिबंधाणे त्ति ताव पादेक्कमसंखेजलोगमेत्तसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं

अब यद्यपि बुद्धिमान् शिष्योंके लिये असंख्यातगुणत्वका जानना सुगम है, तथापि
मन्दबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहार्थ असंख्यातगुणत्वका साधन कहा जाता है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय
अपर्याप्तके पद्योंपमके असंख्यातबै भाग मात्र स्थितिबन्ध स्थानोंकी संदृष्टिमें रचना करना
आहिये। परन्तु इन स्थितिबन्धस्थानोंकी दक्षिण विष्टामें बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके
स्थितिबन्ध स्थानोंकी रचना करना आहिये। उनमें बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्ध-
स्थानोंमेंसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थानोंको छोड़कर अवशिष्ट नीचेके
स्थितिबन्धस्थान सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थानोंसे संख्यातगुणे हैं,
क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी विशुद्धिसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी विशुद्धि
अनन्तगुणी पायी जाती है। उनसे ऊपरके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं, क्योंकि,
सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके उत्कृष्ट संकलेशसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तका उत्कृष्ट
संकलेश अनन्तगुणा पाया जाता है। इस प्रकार अवस्थित स्थितिबन्धस्थानोंमें जघन्य
स्थितिबन्धस्थानको आवि करके उत्कृष्ट स्थितिबन्धस्थान तक प्रत्येक स्थितिबन्धस्थानके

जघन्यस्थितिबन्धारम्भे यानि संकलेशस्थानानि तेभ्यः समवायिकजघन्यस्थितिबन्धारम्भे संकलेशस्थानानि
विशेषाधिकानि । तेभ्योऽपि द्विसमवायिकजघन्य-स्थितिबन्धारम्भेऽपि विशेषाधिकानि । एवं तावद्वाच्यं
यावत्तत्त्वैवोत्कृष्टा स्थितिः । तदुत्कृष्टस्थितिबन्धारम्भे च संकलेशस्थानानि जघन्यस्थितिसत्संकलेश-
स्थानापेक्षयाऽसंख्येयगुणानि लभ्यन्ते । यदैतदेवं तदा सुतरामपर्याप्तबादरस्य संकलेशस्थानानि अपर्याप्त-
सूक्ष्मसत्संकलेशस्थानापेक्षयाऽसंख्येयगुणानि भवन्ति । तथाहि-४;पर्याप्तसूक्ष्मसत्स्थितिरस्थानापेक्षया
बादरापर्याप्तस्य स्थितिरस्थानानि संख्येयगुणानि । स्थितिरस्थानद्वयो च संकलेशस्थानद्वयः । ततो यदा
सूक्ष्मापर्याप्तस्यापि स्थितिरस्थानेऽतिस्तोकेषु जघन्यस्थितिरस्थानसत्संकलेशस्थानापेक्षया उत्कृष्टे स्थितिरस्थाने
संकलेशस्थानान्यसंख्येयगुणानि भवन्ति, तदा बादरापर्याप्तस्थितिरस्थानेषु सूक्ष्मापर्याप्तस्थितिरस्थानापेक्षयाऽ-
संख्येयगुणेषु सुतरां भवन्ति । क. प्र. (मल्ल.) १, ६८-६९.

आदीदो पडुडि कमेण विसेसाहियाणमसंखेज्जणागुणवत्तिसलागसहियाणं दुगुणदुगुणपक्खे-
वपवेसवसेण अवट्ठिदगुणहाणिपमाणाणं पुष पुष णिव्वग्गणकंडयमेत्तखंडभावं गदाणं रचना
कायव्वा । तत्थ गुणहाणिपमाणेत्ताणं संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं बालजणबुद्धिबल्लवणट्ठ-
मेसा संदिट्ठी—

३२७६८००

२५६००

एसा सुहुमेइंदियअंपजत्त-

१६३८४००

१२८००

संदिट्ठी

८१९२००

किमट्ठं हेट्ठिमगुणहाणिपरिणामेहिंतो अणंतरउवरिमगुणहा-

४०९६००

णिपरिणामा दुगुणा ? ण एस दोसो, जेण हेट्ठिमगुणहाणिजह-

२०४८००

ण्णट्ठाणपरिणामेहिंतो उवरिमाणंतसगुणहाणिजहण्णपरिणामा दुगुणा

१०२४००

एसा बादरेइंदियअंपजत्तसिद्धि

चिदियट्ठाणपरिणामेहिंतो उवरिमगुणहाणि-चिदियट्ठाणपरिणामा

५१२००

दुगुणा, तदियट्ठाणपरिणामेहिंतो [उवरिमगुणहाणि-] तदिय-

२५६००

ट्ठाणपरिणामा दुगुणा, एवं णेदव्वं जाव दोण्णं गुणहाणीणं

१२८००

चरिमट्ठिदिबंघट्ठाणे त्ति; तेण हेट्ठिमगुणहाणिसव्वसंकिलेस-

६४००

विसोहिट्ठाणेहिंतो अणंतरउवरिमगुणहाणिसंकिलेस-विसोहि-

३२००

ट्ठाणाणं दुगुणत्तं ण विरुज्जदे ।

१६००

पढमगुणहाणिसव्वज्जवसाणपुंजादो तदियगुणहाणिसव्वज्ज-

८००

वसाणपुंजो चउगुणो होदि । एत्थ वि कारणं पुव्वं व परुवेदव्वं ।

४००

चउत्थगुणहाणिसव्वज्जवसाणपुंजो अट्ठगुणो (८) । एत्थ वि

२००

कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवं गंतुण जहण्णपरित्तासंखेज्जदणयमे-

१००

त्तगुणहाणीयो उवरि गंतुण ट्ठिदगुणहाणीए सव्वज्जवसाणपुंजो

असंख्यात लोक प्रमाण जो संक्लेशविशुद्धिस्थान आविसे लेकर क्रमशः विशेष अधिक हैं, अत्रंख्यात नानागुणवृद्धिशलाकानोंसे सहित हैं, दूने दूने प्रक्षेपके प्रवेशवशा अवस्थित गुणहानिके बराबर हैं, तथा पृथक् पृथक् निर्बर्णकाकाण्डक प्रमाण खण्ड भावको प्राप्त हैं; उनकी रचना करना चाहिये । उनमें गुणहानि प्रमाण मात्र संक्लेशविशुद्धिस्थानोंकी, बाल जनकोंकी बुद्धिके बढ़ानेके हेतु यह संदृष्टि है (मूलमें देखिये) ।

शंका—अधस्तम गुणहानिके परिणामोंकी अपेक्षा उससे अव्यवहित आगेकी गुणहानिके परिणाम दूने क्यों हैं ?

१ काप्रती ' सुहुमेइंदिय ' इति पाठः । २ काप्रती ' बादरेइंदिय ' इति पाठः । ३ मप्रतिपाठो-
ऽवम् । अ-आ-का प्रतिषु ' पुव्वं परुवेदव्वं ' ताप्रती ' पुव्वं [व] परुवेदव्वं ' इति पाठः ।

जहण्णपरित्तसंखेज्जगुणो, पढमगुणहाणीण एगेगट्ठिदिबंघट्टाणसंकिलेस-विसोहीहिंतो अप्पिद-
गुणहाणीण पढमादिट्ठिदिबंघट्टाणसंकिलेस-विसोहिट्टाणाणं जहाकमेण जहण्णपरित्तसंखे-
ज्जगुणमेत्तगुणमारुवलंभादो । एवमुवरिं पि जाणिदुण गुणमारो साहेय्वो । एवं संदिट्ठिं
ठविय एदिस्से अवट्ठंभवलेण सुहुमेइंदियअपज्जत्तसंकिलेस-विसोहिट्टाणेहिंतो बादरेइंदिय-
अपज्जत्तसंकिलेसविसोहिट्टाणाणमसंखेज्जगुणत्तं भणदे । तं जहा—बादरेइंदियअपज्जत्तणाणा-
गुणहाणिसलागाओ जहण्णपरित्तसंखेज्जछेदणएहि ओवट्ठिय लद्धं विरलेयूण गाणागुण-
हाणिसलागाओ समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि जहण्णपरित्तसंखेज्जछेदणाओ
पावेंति । एत्थ चरिमजहण्णपरित्तसंखेज्जछेदण्यमेत्तगुणहाणीणं सव्वसंकिलेस-विसो

समाधान—बहु कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यतः अधस्तन गुणहानि सम्बन्धी
जघन्य स्थानके परिणामोंसे आगेकी अव्यवहित गुणहानिके जघन्य परिणाम बूने हैं,
अधस्तन गुणहानि सम्बन्धी द्वितीय स्थानके परिणामोंकी अपेक्षा आगेकी गुणहानिके
द्वितीय स्थान सम्बन्धी परिणाम बूने हैं, अधस्तन गुणहानि सम्बन्धी तृतीय स्थानके
परिणामोंसे अग्रिम गुणहानि सम्बन्धी तृतीय स्थानके परिणाम बूने हैं, इस प्रकार दो
गुणहानियोंके अन्तिम स्थितिवन्धस्थान तक ले जाना चाहिये; इसी कारण अधस्तन
गुणहानि सम्बन्धी समस्त संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा उससे अव्यवहित आगेकी
गुणहानि सम्बन्धी संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंके बूने होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

प्रथम गुणहानि सम्बन्धी समस्त अव्यवसानपुंजसे तृतीय गुणहानि सम्बन्धी समस्त
अव्यवसानपुंज चौगुणा है । यहाँ भी पहिलेके ही समान कारण बतलाना चाहिये ।
उससे चतुर्थ गुणहानि सम्बन्धी समस्त अव्यवसानपुंज अठगुणा है । यहाँ भी पहिलेके
ही समान कारण बतलाना चाहिये । इस प्रकार जाते हुए जघन्य परीतासंख्यातके
अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानियाँ आगे जाकर स्थित गुणहानि सम्बन्धी समस्त अव्यवसान-
पुंज प्रथम गुणहानि सम्बन्धी समस्त अव्यवसानपुंजसे जघन्य-परीतासंख्यानगुणा है,
क्योंकि, प्रथम गुणहानि सम्बन्धी एक एक स्थितिवन्धस्थानके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंसे
विशुद्धित गुणहानि सम्बन्धी प्रथमादिक स्थितिवन्धस्थानके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका
गुणकार क्रमशः जघन्य-परीतासंख्यातगुणा मात्र पाया जाता है । इसी प्रकार आगे भी
जानकर गुणकारका कथन करना चाहिये ।

इस प्रकार उपर्युक्त संदृष्टिको स्थापितकर उसके आभयसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके
संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश विशुद्धिस्थानोंका
असंभ्रतगुणत्व बतलाया जाता है ! यथा—बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी नानागुणहानि-
शलाकाओंमें जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंका भाग देकर जो प्राप्त हो उसका विरलन
कर नानागुणहानिशलाकाओंको समकण्ठ करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जघन्य-परीता-
संख्यातके अर्धच्छेद प्राप्त होते हैं । यहाँ जघन्य-परीतासंख्यातके अन्तिम अर्धच्छेद प्रमाण
गुणहानियोंका समस्त संक्लेश-विशुद्धिस्थानपुंज एक कम विरलन राशिसे गुणित जघन्य

द्विहाणपुंजो रूढणविरलणगुणिदजहणपरितासंखेज्जेदणयमेतहेट्ठिमगुणहाणीणं सव्वज्जव-
साणपुंजादो असंखेज्जगुणो, विसेसाहियउक्कस्ससंखेज्जगुणगारदंसणादो । कथमेदं
णज्जेदं ? जुत्तीदो । तं जहा—पढमजहणपरितासंखेज्जेदणयमेतगुणहाणीणं सव्वज्जव-
साणपुंजादो विदियजहणपरितासंखेज्जेदणयमेतगुणहाणीणं सव्वट्ठिदिवंधज्जवसाणट्ठाणाणि
जहणपरितासंखेज्जगुणाणि, हेट्ठिमपढमादिगुणहाणिअज्जवसाणपुंजादो उवरिमपढमादिगुण-
हाणिअज्जवसाणपुंजस्स पुध पुध जहणपरितासंखेज्जगुणतुवलंभादो । तदियजहणपरिता-
संखेज्जेदणयमेतगुणहाणीणं सव्वज्जवसाणपुंजो पढमजहणपरितासंखेज्जेदणयमेतगुणहाणीणं
सव्वज्जवसाणपुंजादो जहणपरितासंखेज्जवग्गगुणो होदि, जहणपरितासंखेज्जेदणए
दुगुणिय विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्मत्थे कदे जहणपरितासंखेज्जवग्गुप्पत्तीदो ।
विदियजहणपरितासंखेज्जेदणयमेतगुणहाणीणं सव्वज्जवसाणपुंजादो जहणपरितासंखेज्ज-
गुणो होदि, हेट्ठिमट्ठिदिपरिणामेहितो उवरिमट्ठिदिपरिणामाणं पुध पुध जहणपरिता-
संखेज्जगुणतुवलंभादो । पुणो हेट्ठिमदोखंडगुणहाणीणं सव्वज्जवमाणेहितो नदियखंडगुण-

परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर अधस्तन गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजसे
असंख्यातगुणा है, क्योंकि, यहाँ गुणकार उत्कृष्ट संख्यातसे विशेष अधिक देखा जाता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—वह युक्तिसे जाना जाता है । यथा—जघन्य परीतासंख्यातके प्रथम
अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजकी अपेक्षा जघन्य परीतासंख्यातके
द्वितीय अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंके समस्त स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान जघन्य-
परीतासंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, अधस्तन प्रथमादिक गुणहानियोंके अध्यवसान पुंजकी
अपेक्षा आगेकी प्रथमादिक गुणहानियोंका अध्यवसानपुंज पृथक् पृथक् जघन्य-परीता-
संख्यातगुणा पाया जाता है । जघन्य परीतासंख्यातके तृतीय अर्धच्छेदके बराबर
गुणहानियोंका समस्त अध्यवसानपुंज जघन्य परीतासंख्यातके प्रथम अर्धच्छेदके बराबर
गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजकी अपेक्षा जघन्य परीतासंख्यातके चर्गेका जो प्रमाण
हो उससे गुणित है, क्योंकि, जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंको दुगुणित करनेपर जो
प्राप्त हो उसका विरलन करके दूनाकर परस्पर गुणित करनेपर जघन्य परीतासंख्यातका
वर्ग उत्पन्न होता है । जघन्य परीतासंख्यातके द्वितीय अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंके
समस्त अध्यवसानपुंजकी अपेक्षा [जघन्य परीतासंख्यातके तृतीय अर्धच्छेद मात्र गुण-
हानियोंका समस्त अध्यवसानपुंज] जघन्य-परीतासंख्यातगुणा है, क्योंकि, अधस्तन
स्थितियोंके परिणामोंसे उपरिम स्थितियोंके परिणाम पृथक् पृथक् जघन्य-परीतासंख्यात-
गुणे पाये जाते हैं । पुनः अधस्तन दो क्षण्ड सम्बन्धी गुणहानियोंके समस्त अध्यवसान-

हाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजो असंखेज्जगुणो होदि, रूवाहियजहणपरित्तासंखेज्जेण जहणपरित्तासंखेज्जयस्स वग्गे भागे हिदे रूवाहियजहणपरित्तासंखेज्जेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगखंडेणभहियउक्कस्ससंखेज्जमेत्तस्सुवल्भादो । पुणो पढमखंडसव्वगुण-
हाणिसव्वज्झवसाणपुंजादो चउत्थखंडसव्वज्झवसाणपुंजो जहणपरित्तासंखेज्जघणगुणो होदि, तिण्णिजहणपरित्तासंखेज्जदेणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थे कदे तिप्पदुप्पणपरित्तासंखेज्जुवल्भादो । विदियखंडज्झवसाणेहिंतो जहणपरित्तासंखे-
ज्जवग्गगुणो होदि, दुगुणिजहणपरित्तासंखेज्जदेणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थे कदे जहणपरित्तासंखेज्जवग्गुप्पत्तीदो । तदियखंडज्झवसाणेहिंतो जहणपरित्तासंखेज्जगुणो, एगजहणपरित्तासंखेज्जदेणयमेत्तगुणहाणीयो उवरि चडिद्वण अवट्टाणादो । हेट्ठिमतिण्णि-
खंडसव्वगुणहाणिसव्वज्झवसाणपुंजादो उवरिमचउत्थखण्डज्झवसाणपुंजो असंखेज्जगुणो होदि, जहणपरित्तासंखेज्जवग्गेण रूवाहियजहणपरित्तासंखेज्जभहिण्ण जहणपरित्तासंखेज्जघणे भागे हिदे एदेण भागहारेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगखंडेणभहियउक्कस्ससंखेज्जमेत्तस्सुवल्भादो ।

स्थानोंसे तृतीय खण्ड सम्बन्धी गुणहानियोंका समस्त अध्यवसानपुंज अस्त्वेत्यातगुणा है, क्योंकि, एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातका जघन्य परीतासंख्यातके वर्गमें भाग देनेपर एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातसे एक अंकको खण्डित करनेपर प्राप्त हुए एक भागसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण अंक पाये जाते हैं । प्रथम खण्ड सम्बन्धी सब गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजसे चतुर्थ खण्ड सम्बन्धी समस्त अध्यवसानपुंज जघन्य परीतासंख्यातका घन करनेपर जो प्राप्त हो उतना गुणा है, क्योंकि, तीन जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंका विरलन करके दुगुणा कर परस्पर गुणा करनेपर तीन बार उत्पन्न परीतासंख्यात अर्थात् उसका घन पाया जाता है । द्वितीय खण्डकी सब गुणहानियोंके परिणामोंकी अपेक्षा चतुर्थ खण्डका सब परिणामपुंज जघन्य परीतासंख्यातका वर्ग करनेपर जो प्राप्त हो उससे गुणित है, क्योंकि, दो जघन्य परीता-
संख्यातके दुगुणे अर्धच्छेदोंका विरलन करके द्विगुणित कर परस्पर गुणा करनेपर जघन्य परीतासंख्यातका वर्ग उत्पन्न होता है । तृतीय खण्डके परिणामोंकी अपेक्षा चतुर्थ खण्डका सब परिणामपुंज जघन्य परीतासंख्यातगुणा है, क्योंकि, एक जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानियाँ ऊपर आकर उसका अवस्थान है । अद्यस्तन तीन खण्ड सम्बन्धी समस्त गुणहानियोंके सब परिणामपुंजकी अपेक्षा आगेका चतुर्थ खण्ड सम्बन्धी परिणामपुंज अस्त्वेत्यातगुणा है, क्योंकि, एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातसे अधिक जघन्य परीतासंख्यातके वर्गका जघन्य परीतासंख्यातके घनमें भाग देनेपर इस भागहारसे एक अंकको खण्डित करनेपर लब्ध हुए एक खण्डसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण अंक पाये जाते हैं ।

एदं पि कथं णव्वदे ? जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स वगं विरलिय तघणं समखंडं करिअणं दिण्णे रूवं पडि जहण्णपरित्तासंखेजं पावदि, तत्थ एगेगरूवे गहिदे जहण्णपरित्तासंखेज्वग्गमेत्त-
रूवोचलद्धी होदि, ताणि रूवाणि पासे विरलिदजहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स समखंडं कावण
दिण्णेषु रूवं पडि जहण्णपरित्तासंखेजं पावदि, पुणो तत्थ रूवधरिदं पडि एगेगरूवे गहिदे
जहण्णपरित्तासंखेजं उप्पज्जदि, पुणो तत्थ एगरूवमवणिय पासे विरलिदएगरूवस्स दिण्णे
उक्कस्ससंखेजं पावदि, पुणो अवणिदएगरूवं एदीण विरलणाए खंडेवण तत्थ एगेगरूवे
रूवं पडि दिण्णे एगरूवस्स असंखेज्जदिमागेणव्महियउक्कस्ससंखेज्जगुणगारो होदि,
तेण णव्वदे ।

संपहि पढमखंडज्जवमाणेहिंतो पंचमखंडज्जवसाणा जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स
वग्गवग्गेण गुणिदमेत्ता होति, चत्तारिजहण्णपरित्तासंखेज्जलेदणाओ विरलिय विगं करिय
अण्णोणव्मत्थे कदे चटुण्णं जहण्णपरित्तासंखेज्जाणमण्णोणव्मत्थरासिसमुप्पतीदो । एवं
सेसखंडाणं पि पुवं व गुणगारो साहेयव्वो । संपहि चटुक्खंडसव्वज्जवासाणेहिंतो

शंका—यह भी कैसे जाना जाता है ?

समाधान—जघन्य परीतासंख्यातके वर्गका विरलन कर उसके घनको समखण्ड
करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जघन्य परीतासंख्यात पाया जाता है । उन
विरलित अंकोंमेंसे एक एक अंकके प्रति प्राप्त राशिघोंमेंसे एक एक अंकको ग्रहण करने
पर जघन्य परीतासंख्यातके वर्ग प्रमाण अंक पाये जाते हैं । उन अंकोंको पासमें विरलित
जघन्य परीतासंख्यातके प्रति समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जघन्य
परीतासंख्यात पाया जाता है । फिर उनमेंसे एक एक अंकके ऊपर रखी हुई प्रत्येक
राशिमेंसे एक एक रूपके ग्रहण करनेपर जघन्य परीतासंख्यात उत्पन्न होता है । पुनः
उनमेंसे एक अंकको कम कर पासमें विरलित एक रूपके प्रति देनेपर उत्कृष्ट संख्यात
प्राप्त होता है । पश्चात् कम किये गये एक अंकको इस विरलन राशिसे खण्डित कर
उनमेंसे एक एक खण्डको प्रत्येक अंकके प्रति देनेपर एक रूपके असंख्यातवें भागसे
अधिक उत्कृष्ट संख्यात गुणकार होता है । इसीसे वह जाना जाता है ।

प्रथम खण्डके परिणामोंकी अपेक्षा पंचम खण्डके परिणाम जघन्य परीतासंख्यातके
वर्गका वर्ग करनेपर जो प्राप्त हो उतने गुणे हैं, क्योंकि, चार जघन्य परीतासंख्यातोंके
अर्धखण्डोंको विरलित कर द्विगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर चार जघन्य परीता-
संख्यातोंकी अन्योन्याम्यस्त राशि उत्पन्न होती है । इसी प्रकार शेष खण्डोंके भी
गुणकारका कथन पहिलेके ही समान करना चाहिये ।

पंचमखंडसव्वज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि, जहणपरित्तसंखेज्जघणेण रूवाहियजहण-
परित्तसंखेज्जसहिदजहणपरित्तसंखेज्जवग्गम्भहिणं जहणपरित्तसंखेज्जयस्स वग्गवग्गे भागे
हिदे एगस्सुवस्स असंखेज्जदिभागेणम्भहियउक्कस्ससंखेज्जमेतत्तुवुवल्हमादो । एत्थ वि कारणं
पुव्वं व वत्तव्वं । एवमुवरिमसव्वखंडेसु एगस्सुवस्स असंखेज्जदिभागेणम्भहियउक्कस्ससंखेज्जमेतो
गुणगारो वत्तव्वो । कुदो ? पुव्विल्लपरूवणाए उवरिमत्तपरूवणं पडि बीजीभूदत्तादो ।
उवरिमगुणगारो अण्णहा किण्ण जायदे ? ण, गुणहाणिअज्झवसाणट्ठाणाणं दुगुणत्तण्णहाणु-
व्वत्तीदो । तेण हेट्ठिमसव्वखण्डज्झवसाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चरिमखंडज्झवसाण-
ट्ठाणाणि णिच्छएण असंखेज्जगुणाणि होति ति सद्देहयव्वं । उक्कस्ससंखेज्जादो सादिरेयस्स
जहणपरित्तसंखेज्जादो किंचूणस्य एदस्य गुणगारस्स कधमसंखेज्जत्तं जुज्जे ? ण, उक्कस्स-
संखेज्जमदिक्कत्तस्य तदविरोहादो । दुगुणजहणपरित्तसंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीहि एगेग-
खंडपमाणं काट्ठण वा असंखेज्जगुणत्तं साधेदव्वं । बादरेइंदियअपज्जत्तयट्ठिदिबंभट्टाणाणाम-
संखेज्जभागाणं संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहिंतो जदि उवरिमअसंखेज्जदिभागस्स संकिलेस-विसोहि

चार खण्डोंके समस्त परिणामोंकी अपेक्षा पांचवें 'खण्डके सब परिणाम असंख्यात-
'गुणे हैं, क्योंकि एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातसे सहित जघन्य परीतासंख्यातका जो
वर्ग है उससे अधिक जघन्य परीतासंख्यातके घनका जघन्य परीतासंख्यातके वर्गके
वर्गमें भाग देनेपर एक अंकके असंख्यातवें भागके साथ उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण अंक प्राप्त
होते हैं । यहीँपर भी पहिलेके ही समान कारण बतलाना चाहिये । इसी प्रकार आगेके सब
खण्डोंमें एक अंकके असंख्यातवें भागसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण गुणकार जानना
चाहिये, क्योंकि, आगेकी अर्थ-प्रकरणोंके प्रति पहिलेकी प्रकरण बीजभूत है ।

शंका—आगेका गुणकार अन्य प्रकार क्यों नहीं होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि इसके बिना गुणहानियोंके अध्यवसानस्थान दुगुणे
बन नहीं सकते ।

इसीलिये अद्यस्तन सब खण्डोंके अध्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा बाहर एकैन्द्रिय
अपर्याप्तके अन्तिम खण्ड सम्बन्धी अध्यवसानस्थान निश्चयसे असंख्यातगुणे हैं, ऐसा
अज्ञान करना चाहिये ।

शंका—उत्कृष्ट संख्यातसे साधिक और जघन्य परीतासंख्यातसे कुछ कम इस
गुणकारको 'असंख्यात' कहना कैसे उचित है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि उत्कृष्ट संख्यातका अतिक्रमण कर जो कोई भी संख्या
हो उसे 'असंख्यात' कहनेमें कोई विरोध नहीं । अथवा, दूने जघन्य परीतासंख्यातके
अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानियोंके द्वारा एक एक खण्ड प्रमाण करके असंख्यातगुणत्वको
सिद्ध करना चाहिये । बाहर एकैन्द्रिय अपर्याप्त सम्बन्धी स्थितिकन्धस्थानोंके असंख्यात

द्वाणाणि असंखेज्जगुणाणि होति तो सुहुमेइंदियअपज्जत्तट्टिदिबंधद्वाणेषु बादरेइंदियअपज्जत्त-
ट्टिदिबंधद्वाणाणं संखेज्जदिभागेषु जाणि संकिलेस-विसोहिद्वाणाणि तेहिंतो बादरेइंदिय-
अपज्जत्तयस्स सब्बसंकिलेस-विसोहिद्वाणाणि णिच्छण्ण असंखेज्जगुणाणि होति ति साहेद्वच्च ।
अथवा अण्णेणं पयाणेण गुणसारो उच्चदे । तं जहा—सुहुमेइंदियअपज्जत्तजहण्णट्टिदिबंध-
द्वाणादो हेट्ठिमबादरेइंदियअपज्जत्तट्टिदिबंधद्वाणगयसंकिलेस-विसोहिद्वाणाणं पाणागुणहाणिस-
लागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्मत्थे कदे जो रासी उप्पज्जदि तेण पढमगुणहाणि-
दव्वे [१००] गुणिदे सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स पढमगुणहाणिदव्वं होदि । पुणो एदम्मिं
सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स पाणागुणहाणिसलागाओ [२]^१ विरलिय विगं करिय अण्णोण्ण-
म्मत्थं काट्ठण रूवमवणिय सेसेण गुणिदे सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिद्वाणाणि
होति । पुणो एदम्मि चव पढमगुणहाणिदव्वे [१००] बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स पाणागुण-
हाणिसलागाओ [१६] विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्मत्थं काट्ठण रूवमवणिय
[६५५३५] सेसेण गुणिदे बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहीए द्वाणाणि होति ।
पुणो एदेसु सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिद्वाणंहि भागे हिंदेसु पल्लिदोवमस्स

बहुभाग मात्र स्थानोंके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा यदि ऊपरके असंख्यातवर्षे भाग
मात्र स्थानोंके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे होते हैं, तो बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके
स्थितिवन्धस्थानोंके संख्यातवर्षेभागमात्र सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिवन्धस्थानोंमें जो
संक्लेश-विशुद्धिस्थान हैं उनकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके समस्त संक्लेश-
विशुद्धिस्थान निम्नयसे असंख्यातगुणे होते हैं, ऐसा सिद्ध करना चाहिये ।

अथवा अन्य प्रकारसे गुणकारका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है—सूक्ष्म
एकेन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य स्थितिवन्धस्थानकी अपेक्षा नीचेके बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके
स्थितिवन्धस्थान सम्बन्धी संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन
कर द्विगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि उत्पन्न होती है उससे प्रथम गुण-
हानिके द्रव्य (२००) को गुणित करनेपर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी प्रथम गुणहानिक
द्रव्य होता है । पश्चात् सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी नानागुणहानिशलाकाओं (२) का
विरलन करके द्वााकर परस्पर गुणा करनेपर जो प्राप्त हो उसमेंसे एक अंक कम कर
अवशिष्ट राशि (३) से उपर्युक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी प्रथम गुणहानिके
द्रव्यको गुणित करनेपर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं
(१२८००×३=३८४००) । पश्चात् बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी नानागुणहानिशलाकाओं
(१६) का विरलन कर दुगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर जो (६५५३६) प्राप्त हो
उसमेंसे एक अंक कम करके अवशिष्ट राशि (६५५३५) से इसी प्रथम गुणहानि सम्बन्धी
द्रव्यको गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं
(६५५३५×१००=६५५३५००) । इनमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका

१ ताम्रपत्र 'अणेण' इति पाठः । २ अ-आ-का प्रतिषु 'एगम्मि', ताम्रपत्र 'एग (६) मि' इति पाठः । ३ प्रतिषु (३) इति पाठः ।

असंखेज्जदिभागो गुणगारो आगच्छदि बादराणमुवरिमगुणहानिसलागाणं किंचूणणोण्णम्भत्थरासिं सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेषु गुणिदेसु बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होति । अथवा सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स द्विदिबंधद्वाणपमाणेण सुहुमेइंदियजहण्णद्विदिबंधद्वाणपमाणबादरेइंदियअपज्जत्तद्विदिबंधद्वाणप्पहुट्ठि उवरिमट्ठाणेषु कदेसु संखेज्जगुणाणि हवंति । संपदि तथ पढमखंडस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणमेत्ताणि होति । एदासिमेगा गुणगारसलागा [१] । पुणो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स अण्णोण्णम्भत्थरासिणा [४] सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेषु गुणिदेसु बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चिदियखंडसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि हवंति । पुणो एदस्स वग्गेण गुणिदेसु तदियखंडस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होति । पुणो एदस्स घणेण गुणिदेसु चउत्थखंडस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होति । पुणो एदस्स वगवग्गेण गुणिदेसु पंचमखंडस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होति । एवं णेद्वं जाव चरिमखंडे ति । सुहुमेइंदियअपज्जत्तजहण्णद्विदिबंधद्वाणादो हेट्ठिमाणं बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं एगस्वस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि, तेसिं सुहुमेइंदियअपज्जत्तसंकिलेसद्वाणाणमसंखेज्जदिभागत्तादो । एदाओ सक्कगुणगारसलागाओ

भाग वेनेपर पत्थोपमका असंख्यातवां भाग गुणकार प्राप्त होता है, क्योंकि उसका प्रमाण बादर जीर्णकी उपरिम गुणहानिशलाकाओंकी कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशिको सूक्ष्म एकेन्द्रियकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणित करके एक अंकसे कम उसीके द्वारा अपवर्तित करनेसे जो प्राप्त हो उतने मात्र है । इस गुणकारसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संकलेश-विशुद्धिस्थानोंको गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संकलेशविशुद्धिस्थान होते हैं -

अथवा, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य स्थितिबन्धस्थानोंके बराबर जो बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान हैं उनको आदि लेकर ऊपरके स्थानोंको सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थानोंके प्रमाणसे करनेपर ये संख्यातगुणे होते हैं । अब उनमें जो प्रथम अण्डके संकलेश-विशुद्धिस्थान सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संकलेश-विशुद्धिस्थानोंके बराबर हैं, इनकी एक (१) गुणकारशलाका है । पुनः सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी अन्योन्याभ्यस्त राशि (४) से सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संकलेश-विशुद्धिस्थानोंको गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके द्वितीय अण्ड सम्बन्धी संकलेश-विशुद्धिस्थान होते हैं । पश्चात् उनको इसके वर्गसे गुणित करनेपर तृतीय अण्डके संकलेश-विशुद्धिस्थान होते हैं । फिर इनके घनसे उनको गुणित करनेपर चतुर्थ अण्डके संकलेश-विशुद्धिस्थान होते हैं । इसके वर्गके घनसे उनको गुणित करनेपर पांचवे अण्डके संकलेश-विशुद्धिस्थान होते हैं । इस प्रकार अन्तिम अण्ड तक ले जाना चाहिये । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य स्थितिबन्धस्थानसे नीचेके बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संकलेश-विशुद्धिस्थानोंका गुणकार एक अंकका असंख्यातवां भाग होता है, क्योंकि, ये सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संकलेश-विशुद्धिस्थानोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । इन सब गुणकारशलाकाओंको मिलाकर उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संकलेश-विशुद्धि-

मेलविय सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेषु गुणिदेसु बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होति । पुणो एदेसु सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहि ओवट्ठिदेसु गुणगारो पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो आगच्छदि ।

एदेसि गुणगाराणं मेलवणविहाणं संदिट्ठिमवलंबिय उच्चदे । तं जहा—सुहुमेइंदिय अपज्जत्तयस्स णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्भत्यं कादूण स्वे अवणिदे एत्तियं होदि [३] । पुणो एदेण अण्णोण्णम्भत्यरासिणा सुहुमउवरिमवादरणाणा-गुणहाणिसलागाओ [७] विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्भत्यरासिम्हि भागे हिंदे भागलद्धमे-त्तियं होदि [१२८।३] । पुणो लद्धे एदम्हि [१२८] सरिसच्छेदं करिय पक्खित्ते एत्तियं होदि [५१२।३] । पुणो एदेण पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिमाणेण सुहुमेइंदियसव्वज्जवसाण-ट्ठाणेषु [३८४००] गुणिदेसु बादरअपज्जत्तज्जवसाणट्ठाणाणि पढमगुणहाणिअज्जवसाण-मेत्तेण अहियाणि होति [६५५३६००] । पुणो एत्तियमेत्तेण [१००] हाइवण इच्छामो त्ति बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स सव्वणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्भत्ये कदे एत्तियं होदि । तं च एदं [६५५३६] । पुणो एदेण पढमगुणहाणिदव्वे गुणिदे पढमगुहाणिअज्जवसाणाहियसव्वज्जवसाणपमाणं होदि । तं च एदं [६५५३६००] ।

स्थानोंको गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेशविशुद्धिस्थान होते हैं । अब इनमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका भाग देनेपर पत्त्योपमका असंब्यातवां भाग गुणकार प्राप्त होता है ।

अब संहतिका आश्रय करके इन गुणकारोंके मिलानेके विधानको कहते हैं । वह इस प्रकार है—सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी नानागुणहानिशालाकाओंका विरलन करके तुगुणाकर परस्पर गुणा करके जो राशि प्राप्त हो उसमेंसे एक कम करनेपर इतना होता है— $१ \times ३ = ४$; $४ - १ = ३$ । अब सूक्ष्म जीवकी अपेक्षा बादर जीवकी आगेकी नानागुणहानि-शालाकाओं (१० से १६ तक ७) का विरलनकर कृता करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि प्राप्त हो उसमें उक्त अम्योन्वाम्यस्त राशिका भाग देनेपर लब्ध इतना होता है— $३ \times ३ = ९$; $९ \times ३ = २७$; $२७ \times ३ = ८१$; $८१ \times ३ = २४३$ । इस लब्ध राशिमें इस (१२८) को समच्छेद करके मिलानेपर इतना होता है— $२४३ - १२८ = ११५$; $११५ + १३५ = २५०$ । इस पत्त्योपमके असंब्यातवें भाग मात्र उस राशिके सूक्ष्म एकेन्द्रियके समस्त अव्यवस्थानोंको गुणित करनेपर बादर अपर्याप्तके अव्यवस्थान प्रथम गुणहानिके अव्यवस्थानस्थानोंसे अधिक होते हैं— $२५० \times ३ \times ३ = २२५०$ । अब चूंकि वे एतने (१००) मात्रसे हीन अभीष्ट हैं, अत एव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी समस्त (१६) गुणहानिशालाकाओंका विरलन कर विशुणा करके परस्पर गुणा करनेपर इतना होता है । वह यह है— ६५५३६ । इससे प्रथम गुणहानिके द्रव्यको गुणित करनेपर प्रथम गुणहानिके अव्यवस्थानस्थानोंसे अधिक समस्त अव्यवस्थानस्थानोंका प्रमाण होता है । वह यह है— $६५५३६ \times १०० = ६५५३६००$ । इस

१ प्रतिषु [५१२] इति पाठः । २ प्रतिषु 'सव्वज्जवसाण' इति पाठः ।

एदस्स रासिस्स जदि एत्तियो [५१२।३] गुणगाररासी लम्बदि, तो एत्तियस्स [१००]^१ किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठिदाए एत्तियं होदि [१।३८४]। पुणो एदस्मि पुविलगुणगाररासीदो [५१२।३] सरिसच्छेदं कावुण अवणिदे गुणगाररासी एत्तियो होदि [६५५३५।३८४]^२। पुणो एदेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सुहुमेइ-दियअपज्जतयस्स सव्वज्जवसाणट्ठाणेसु भेलाविय [३८४००] गुणिदेसु बादरेइदियअपज-तयस्स सव्वज्जवसाणट्ठाणाणि होति। पमाणमेदं [६५५३५००]। एदं गुणगारविहाणं उवरि सव्वत्थं संभविय वत्तवं।

सुहुमेइंदियपज्जतयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ५३ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एत्थं गुणगाराणयणविहाणं पुवं व परुवेदव्वं। कुदो ? सुहुमेइंदियपज्जतो विसुज्जमाणो बादरेइंदियअपज्जतयस्स सव्वट्ठिदिबंध-ट्ठाणोहिंतो संखेज्जगुणाणि ठिदिबंधट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरदि, संकिलेसंतो वि तेहिंतो संखेज्जगुणाणि ठिदिबंधट्ठाणाणि उवरि चडदि ति गुरुवेदेसादो।

(६५५३६००) राशिकी यदि इतनी (५३) मात्र गुणकार राशि पायी जाती है, तो वह इतने (१००) मात्रकी कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर इतना होता है— $\frac{53}{100} \times 6553600 = 3477808 = 3478$ इसको समच्छेद करके पूर्वकी गुणकार राशि ५३ मेंसे घटानेपर इतना होता है— $(3478 - 3478 = 0)$ पश्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र उक्त गुणकार राशिसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके समस्त अध्यवसानस्थानोंको मिलाकर गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके समस्त अध्यवसानस्थान होते हैं। उनका प्रमाण यह है— $(1200 + 25600) \times \frac{53}{100} = 1453500$ । गुणकारकी इस विधिको आगे सब जगह यथासम्भव कहना चाहिये।

उनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके संकलेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुने हैं ॥ ५३ ॥

यहां गुणकार क्या है ? गुणकार पश्योपमका असंख्यातवां भाग है। यहाँ गुणकार कानेकी विधिकी प्ररूपणा पहिलेके ही समान करना चाहिये, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव विशुद्ध होता हुआ बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके सब स्थितिवन्धस्थानोंकी अपेक्षा संख्यातगुने स्थितिवन्धस्थान नीचे डटता है, तथा वहीं संकलेशको प्राप्त होता हुआ उक्त स्थानोंकी अपेक्षा असंख्यातगुने स्थान ऊपर चढ़ता है; ऐसा शुकका उपदेश है।

१ प्रतिपु संखेयं ' लभामो ति ' इत्यतः पश्चादुपलभ्यते। २ प्रतिपु ६५५३५ एवंविधानं संख्या समुपलभ्यते।

**बादरेइंदियपञ्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असंखेज्जगुणाणि ॥ ५४ ॥**

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एत्थ गुणगारसाहणं पुब्बं व वत्तव्वं ।

**बीइंदियअपञ्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असंखेज्जगुणाणि ॥ ५५ ॥**

बादरेइंदियपञ्जत्तयस्स द्विदिबंघट्टाणेहिंतो बीइंदियअपञ्जत्तयस्स पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तद्विदिबंघट्टाणाणि जेण असंखेज्जगुणाणि तेण संकिलेस-विसोहिट्टाणाणं पि असंखेज्जगुणत्तं ण विरुज्जहे । एत्थ गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

**बीइंदियपञ्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असंखेज्जगुणाणि ॥ ५६ ॥**

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? विसोहि-संकिलेसाणं वसेण हेट्ठा उवरिं च अप्पिद्विदिबंघट्टाणेहिंतो संखेज्जगुणद्विदिबंघट्टाणाणसुवलंभादो ।

**तीइंदियअपञ्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असंखेज्जगुणाणि ॥ ५७ ॥**

कथं पञ्जत्तयस्स द्विदिबंघट्टाणेहिंतो अपञ्जत्तयस्स द्विदिबंघट्टाणाणं असंखेज्जगुणत्तं ?

उनसे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पस्योपमका असंख्यातबां भाग है । यहां गुणकारकी सिद्धिका कथन पहिलेके ही समान कहना चाहिये ।

उनसे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५५ ॥

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके पस्योपमके असंख्यातबां भाग मात्र स्थितिबन्धस्थान हैं कि असंख्यातगुणे हैं, अतएव संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंके भी असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है । यहां गुणकार पस्योपमका असंख्यातबां भाग है ।

द्वीन्द्रिय पर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पस्योपमका असंख्यातबां भाग है, क्योंकि, विशुद्धि अथवा संक्लेशके वशसे नीचे व ऊपर विवक्षित स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा संख्यातगुणे स्थितिबन्धस्थान पाये जाते हैं ।

त्रीन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५७ ॥

शंका—पर्याप्तक जीवके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा अपर्याप्तक जीवके स्थिति-बन्धस्थान असंख्यातगुणे कैसे हो सकते हैं ?

१ अ-भा-कामतिपु 'संखेज्जगुणत्तं', ताम्रती '[अ] संखेज्जगुणत्तं' इति पाठः ।

जादिविसेसादो^१ । तेणेव कारणेण संकिलेस-विसोहिट्टाणाणं पि सिद्धमसंखेज्जगुणत्तं । एत्थ वि गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो होदि ।

**तीईदियपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असंखेज्जगुणणि ॥ ५८ ॥**

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं जाणिय वत्तव्वं ।

**चउरिंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असंखेज्जगुणणि ॥ ५९ ॥**

कुदो ? तीईदियपज्जत्तयस्स द्विदिबंधाणेहितो चउरिंदियअपज्जत्तयस्स द्विदिबंध-संखेज्जगुणत्तुवलंभादो । तं पि कथं णव्वदे ? जादिविसेसादो । को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं चित्ति य वत्तव्वं ।

**चउरिंदियपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असंखेज्जगुणणि ॥ ६० ॥**

समाधान—भिन्नजातीय होनेसे उनके संख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है । इसी कारण संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंके भी असंख्यातगुणत्व सिद्ध होता है ।

यहां भी गुणकार पद्योपमका असंख्यातत्वां भाग है ।

त्रिन्द्रिय पर्याप्तके संक्लेशविशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५८ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पद्योपमका असंख्यातत्वां भाग है ? इसका कारण जानकर कहना चाहिये ।

चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५९ ॥

शंका—वे असंख्यातगुणे किस कारणसे हैं ?

समाधान—जुंकि त्रिन्द्रिय पर्याप्तके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे पाये जाते हैं, अतः उसके संक्लेशविशुद्धि-स्थानोंके असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका—वह भी कैसे जाना जाता है ?

समाधान—भिन्न जातीय होनेसे त्रिन्द्रिय पर्याप्तके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं, यह जाना जाता है ।

गुणकार क्या है ? गुणकार पद्योपमका असंख्यातत्वां भाग है । कारण विचार कर कहना चाहिये ।

चतुरिन्द्रिय पर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ६० ॥

कुदो ? विसोहि-संकिलेसवसेण अप्पिद्विदिबंघट्टाणेहिंतो हेट्ठा उवरिं च संखेज्जगुण-
द्विदिबंघट्टाणेसु वीचास्वल्भादो । एत्थ वि गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।
सेसं सुगमं ।

असण्णिपंचिदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असंखेज्जगुणाणि ॥ ६१ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदि भागो । कारणं चित्तिय वत्तव्वं ।

असण्णिपंचिदियपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असंखेज्जगुणाणि ॥ ६२ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदि भागो । कारणं सुगमं ।

सण्णिपंचिदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असंखेज्जगुणाणि ॥ ६३ ॥

जादिविसेसेण संखेज्जगुणद्विदिबंघट्टाणेसु संकिलेस-विसोहिट्टाणाणं पि असंखेज्जगुणत्तं
पडि विरोहाम्भादो । सेसं सुगमं ।

सण्णिपंचिदियपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्टाणाणि
असंखेज्जगुणाणि ॥ ६४ ॥

इसका कारण यह कि विशुद्धि और संक्लेशके बशसे विवक्षित स्थितिवन्धस्थानोंसे
नीचे व ऊपर संख्यातगुणे स्थितिवन्धस्थानोंमें वीचार पाया जाता है । यहाँ भी गुणकार
पन्योपमका असंख्यातवां भाग है । शेष कथन सुगम है ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तिकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ६१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पन्योपमका असंख्यातवां भाग है । कारण विचारकर
कहना चाहिये ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तिकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ६२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पन्योपमका असंख्यातवां भाग हैं । कारण इसका
सुगम है ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तिकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ६३ ॥

क्योंकि, जातिमेवसे संख्यातगुणे स्थितिवन्धस्थानोंमें संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंके
असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है । शेष कथन सुगम है ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तिकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ६४ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्झदिभागो । सेसं सुगमं ।

बन्धते इति बन्धः, स्थितिश्चासौ बन्धश्च स्थितिबन्धः, तस्य स्थानमवस्थाविशेषः स्थितिबंधस्थानम् । एदमत्थपदमस्सिद्वण परूवणद्धमुवरिभसुत्तकलाओ आगदो

सन्वत्थोवो संजदस्स जहण्णओ द्विदिबंधो' ॥ ६५ ॥

जहण्णुक्कस्सट्ठिदिपरूवणा किमट्ठमागदा ? द्विदिबंधाणाणि एत्तियाणि होति त्ति पुब्बं परूविदाणि । संपहि तत्थ एवेगट्ठिदिबंधाणमेत्तिए समए वेत्तूण होदि त्ति परूवणद्धमागदा । एत्थ जहण्णुक्कस्सट्ठिदिपरूवणाए संतपमाणाणियोगहारो भोत्तूण अप्पाबहुगं चेव किमट्ठं परूविदं ? ण एस दोसो, परूवणा-पमाणाणिभावैअप्पाबहुअं त्ति कट्ठु तदपरूवणादो । तम्हा अप्पाबहुअंतम्भदपरूवणा-पमाणाणि वत्तइस्सामो । तं जहा—चोइसण्हं जीवसमासाणमत्थि जहण्णुक्कस्सट्ठिदीयो । परूवणा गदा ।

चदुण्हं पि एइदियाणं मोहजहण्णट्ठिदी सागरोवमं पलिदोवमस्स असंखेज्झदिभागेण ऊगयं । णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं जहण्णट्ठिदी सागरोवमस्स

गुणकार क्या है ? गुणकार पदोपमका असंख्यातवां भाग है । शेष कथन सुगम है ।

जो बांधा जाता है वह बन्ध है । स्थितिस्वरूप जो बन्ध वह स्थितिबन्ध । [इस प्रकार यहां कर्मधारयसमास है ।] उसके स्थान अर्थात् अवस्थाविशेषका नाम स्थितिबन्धस्थान है । इस अर्थपदका आश्रय करके प्ररूपणा करनेके लिये आगेका सूत्रकलाप प्राप्त होता है—संयत जीवका जघन्य स्थितिबन्ध सबसे स्तोक है ॥ ६५ ॥

शंका—जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिकी प्ररूपणाका अवतार किसलिये हुआ है ?

समाधान—स्थितिबन्धस्थान इतने होते हैं, यह पूर्वमें कहा जा चुका है । अब उनमेंसे एक एक स्थितिबन्धस्थान इतने समयोंको ग्रहण करके होता है, यह बतलानेके लिये इस प्ररूपणाका अवतार हुआ है ।

शंका—इस जघन्य-उत्कृष्टस्थितिप्ररूपणामें सत् (प्ररूपणा) और प्रमाण अनु-अनुयोगद्वारोंको छोड़कर एक मात्र अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा किसलिये की गई है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अल्पबहुत्व प्ररूपणा और प्रमाणका अविनाभावी है, ऐसा जानकर उन दोनों अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा यहां नहीं की गई है ।

इसी कारण अल्पबहुत्वके अन्तर्गत होनेसे प्ररूपणा और प्रमाण अनुयोगद्वारोंका कथन करते हैं । यथा—चौदह जीवसमासोंके जघन्य व उत्कृष्ट स्थितियां हैं । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

चारों ही एकेन्द्रियोंके मोहकी जघन्य स्थिति पदोपमके असंख्यातवें भागसे हीन एक सागरोपम प्रमाण है । ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तरायकी जघन्य

१ तत्र सूक्ष्मसांपरायस्य बन्धनस्थितिबन्धः सर्वस्तोकः (१) । क. प्र. (मलय) १, ८०-८१. २ अत्रौ ' पमाणाणिभाविवि ' इति पाठः ।

तिणि-सत्तभागा पल्लिवमस्स असंखेज्जदिभागेण उणया । णामा-गोदाणं [जहण्णट्ठिदी] सागरोवमस्स बे-सत्तभागा पल्लिवमस्स असंखेज्जदिभागेण उणया । आउअस्स जहण्णट्ठिदी खुद्दामवमाहणं ।

एदेसिमुक्कस्सट्ठिदिपमाणं उच्चदे । तं जहाँ—मोहणीयस्स एगं सागरोवमं [१] णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेदणीय-अंतराइयाणं सागरोवमस्स तिणि-सत्त भागा पडिबुण्णा [३।७] णामा-गोदाणं बे-सत्त भागा पडिबुण्णा [२।७] । णवरि सुहुमेइंदियपजत्ता-पजत्त-बादरेइंदियपजत्ताणमुक्कस्सट्ठिदिबंधो बादरेइंदियपजत्तस्सुक्कस्सट्ठिदिबंधादो^१ पल्लिव-मस्स असंखेज्जदिभागेण उणो । आउअस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो पुव्वकोडी सग-सगउक्कस्सा-बाहाए अहिया ।

स्थिति पत्योपमके अस्त्यथातथै भागसे हीन एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे तीन भाग ($\frac{3}{7}$) प्रमाण है । नाम और गोत्रकी जघन्य स्थिति पत्योपमके अस्त्यथातथै भागसे हीन एक सागरोपमके सात भागोंमें दो भाग ($\frac{2}{7}$) प्रमाण है । आयुकी जघन्य स्थिति क्षुद्रभञ्ज प्रहण प्रमाण है ।

अब इन चारों एकेन्द्रियोंके उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण कहते हैं । यथा—मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थिति एक (१) सागरोपम प्रमाण है । ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे परिपूर्ण तीन $\frac{3}{7}$ प्रमाण हैं ।

विशेषार्थ—एकेन्द्रियसे लेकर असंखी पंचेन्द्रिय पर्यन्त जीवोंके आयुको छोड़कर शेष ज्ञानावरणादि कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति मोहनीयके आधारसे निम्न प्रकार त्रैराशिकके द्वारा निकाली जाती है—यदि सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण उत्कृष्ट स्थितिवाले मोहनीय (मिथ्यात्व) कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति एकेन्द्रियके एक सागर प्रमाण बंधती है तो उसके तीस कोड़कोड़ी सागरोपम प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति वाले ज्ञानावरणीय कर्मकी कितनी उत्कृष्ट बंधेगी, २० को. को. सा. $\times \frac{1}{7} = \frac{20}{7}$ सागरोपम । इसी प्रकारसे द्वीन्द्रियादि जीवोंके

भी समझना चाहिये । मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थितिका द्वीन्द्रियके २५ सागरोपम, त्रीन्द्रियके ५० सा. चतुरिन्द्रियके १०० सा. और असंखी पंचेन्द्रियके १००० सा. प्रमाण बंध है ।

नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट स्थिति सागरोपम सात भागोंमेंसे परिपूर्ण दो भाग [$\frac{20 \text{ को. सा.} \times \frac{1}{7}}{70 \text{ को. सा.}} = \frac{2}{7}$ सा.] प्रमाण है । विशेष इतना है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त

अपर्याप्त तथा बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके उत्कृष्ट स्थितिबन्ध बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्तके उत्कृष्ट स्थितिबन्धकी अपेक्षा पत्योपमके अस्त्यथातथै भागसे हीन होता है । आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध अपनी अपनी उत्कृष्ट आबाधासे अधिक एक पुर्वकोटि प्रमाण है ।

१ तिर्यगायुषो मनुष्यायुषश्च जघन्या रिषतिः क्षुल्लकमयः । तस्य किं मानमिति चेदुच्यते-आवृत्तिकानां द्वे शते षट्संवशदधिके । क. प्र. (मलय.) १, ७८. २. ताप्रतौ 'एदेसिमुक्कस्सट्ठिदिपमाणं उच्चदे । तं जहाँ' इत्येतावानन्यं पाठस्तुष्टितो ज्ञातः । ३. आ-काप्रत्योः 'पञ्चतस्सुक्कस्सबंधो', ताप्रतौ 'पञ्चतस्सुक्कस्सट्ठिदिबंधो' इति पाठः ।

बेइदियादि जाव असणिणपंचिदियो ति जहाकमेण मोहणीयस्स जहण्णओ ठिदिबंवो पणुवीससागरोवमाणि, पण्णाससागरोवमाणि, सागरोवमसदं, सागरोवमसहसं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण उमयं । नाणावरणादिचटुण्हं कम्माणपेयं चैव वत्तवं । णवरि पणुवीस, पण्णास-सद-सहस्ससागरोवमाणं तिण्णिसत्त भागा पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण उमया । एवं णामा-गोदाणं । णवरि बे-सत्त भागा ति वत्तवं । आउअस्स जहण्णट्टिदिबंवो सुदाभव-गहणं जहण्णाचाहाए अब्भहिंयं ।

उक्कस्सट्टिदिबंवो बेइदिएसु मोहणीयस्स पणुवीसं सागरोवमाणि । चटुणं कम्माणं पणुवीससागरोवमाणं तिण्णि-सत्त भागा । णामा-गोदाणं पणुवीससागरोवमाणं बे-सत्त भागा २५-१० । ५ । ७ । ७ । १ । ७ । आउअस्स उक्कस्सट्टिदी पुव्वकोडी । तेइदि-यस्स जहाकमेण पण्णाससागरोवमाणं सत्त-सत्त भागा तिण्णि-सत्त भागा बे-सत्त भागा उक्कस्सट्टिदी होदि ५०-२१ । ३ । ७ । १४ । २ । ७ । आउअस्स पुव्वकोडी । चउरिदि-

इन्द्रियसे लेकर असंखी पंचेन्द्रिय तक यथाक्रमसे मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध पयोपमके संख्यातवें भावसे हीन पच्चीस सागरोपम, पचास सागरोपम, सौ सागरोपम और हजार सागरोपम प्रमाण होता है । ज्ञानावरणादि चार कर्मोंकी जघन्य स्थितिबन्धका भी कथन इसी प्रकारसे करना चाहिये । विशेष इतना है कि उनका जघन्य स्थितिबन्ध इन्द्रियादिकोंके क्रमशः परोपमके संख्यातवें भागसे हीन पच्चीस, पचास, सौ और हजार सागरोपमोंके तीन सात भाग ($\frac{3}{7}$) प्रमाण होता है - [२५× $\frac{3}{7}$, ५०× $\frac{3}{7}$, १००× $\frac{3}{7}$, १०००× $\frac{3}{7}$ सा.] इसी प्रकार नाम व गोत्र कर्मके भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि यहां दो सात भाग कहना चाहिये [२५× $\frac{3}{7}$, ५०× $\frac{3}{7}$, १००× $\frac{3}{7}$, १०००× $\frac{3}{7}$ सागरोपम (परोपमके संख्यातवें भागसे हीन) । आयुका जघन्य स्थितिबन्ध जघन्य आवाधासे सहित क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण है ।

इन्द्रिय जीवोंमें मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पच्चीस सागरोपम प्रमाण होता है । चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पच्चीस सागरोपमोंके तीन सात ($\frac{3}{7}$) भाग प्रमाण

होता है — $\left[\frac{३० \text{ को. सा. } \times २५}{७० \text{ को. सा.}} = ३ \times \frac{१}{७} = १\frac{३}{७} \right]$ सागरोपम । नाम गोत्रका उत्कृष्ट

स्थितिबन्ध पच्चीस सागरोपमोंके दो सात ($\frac{2}{7}$) भाग प्रमाण होता है—

$\frac{२० \text{ को. सा. } \times २५}{७० \text{ को. सा.}} = ७\frac{३}{७}$ सागरोपम । आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध एक पूर्वकोटि

प्रमाण होता है ।

इन्द्रिय जीवके मोहनीय, ज्ञानावरणादिक एवं नाम-गोत्र कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति क्रमशः पचास सागरोपमोंके सात-सात भाग ($\frac{3}{7}$), तीन-सात भाग ($\frac{2}{7}$) और दो-सात भाग ($\frac{1}{7}$) प्रमाण है— $५० \times \frac{3}{7} = ५०$; $५० \times \frac{2}{7} = २१\frac{३}{७}$; $५० \times \frac{1}{7} = ७\frac{३}{७}$ । आयुकी उत्कृष्ट स्थिति एक पूर्वकोटि प्रमाण होती है ।

१ प्रतिपु 'पणारस' इति पाठः । २ प्रतिपु 'असंखेज्जदिभागेण' इति पाठः । ३ एवं पणकदि पणं सयं सहसं च मिच्छवत्तंवे । इमिणिगळणं अवरं पट्ठासंखल-संखलं ॥ बदि सत्तरिस्स एसियमेत्तं किं होदि तीसियादीण । इदि संपाते सेलानं इयि-विगळेयु उमपठिदी ॥ गो. क. १४५. ४ व. सं. पु. ६ पु. १९५.

एषु सागरोक्मसदस्स सत्त-सत्त भागा तिण्णि-सत्त भागा बे-सत्त भागा पडिबुण्णा १००—
 ४२।६।७; २८।४।७। आउअस्स पुव्वकोडी । असण्णिपंचिदिएसु सागरोक्मसहस्सस्स
 सत्त-सत्त भागा तिण्णि-सत्त भागा बे-सत्त भागा उक्कस्सट्ठिदिबंधो १०००—४२८ ।
 ४।७; २८५।५।७। आउअस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जि-
 भागो^१ । सण्णिपंचिदियअपज्जत्तयस्स सत्तण्णं कम्माणं जहण्णट्ठिदिबंधो उक्कस्सट्ठिदिबंधो
 च अंतो कोडाकोडीए । सण्णिपंचिदियपज्जत्तयस्स वेयणीयस्स जहण्णट्ठिदिबंधो बारस
 मुहुत्ता । णामागोदाणमट्ठमुहुत्ता । सेसाणं कम्माणं भिण्णमुहुत्तं । उक्कस्सट्ठिदिबंधो
 मोहणीयस्स सत्तरि, चट्ठण्णं कम्माणं तीसं, णामागोदाणं बीसं सागरोक्मकोडीयो ।
 आउअस्स तेत्तीसं सागरोक्माणि सादिरियाणि । एवं पमाप्परूवणा गदा ।

संपदि एदेसिं ट्ठिदिबंधट्ठाणणं^२ अप्पाबहुगं उच्चदे । तं जहा—सव्वत्थोवो संजदस्स
 जहण्णट्ठिदिबंधो । एत्थ सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदस्स चरिमट्ठिदिबंधो जहण्णो ति घेतव्वो ।

चतुरिन्द्रिय जीवोंमें मोहनीय, ज्ञानावरणादिक एवं नाम गोत्र कर्मोंका उत्कृष्ट स्थिति-
 बन्ध सौ सागरोपमोंके सात-सात भाग, तीन-सात भाग और दो-सात भाग प्रमाण होता
 है—१००, ४२३, २८३ । आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध एक पूर्वकोटि प्रमाण होता है ।

असंखी पंचेन्द्रिय जीवोंमें उपर्युक्त कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध क्रमशः एक हजार
 सागरोपमोंके सात-सात भाग, तीन-सात भाग और दो-सात भाग प्रमाण होता है—
 १०००, ४२८३, २८५३ । आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पत्योपमके असंख्यातवें भाग
 प्रमाण होता है ।

संखी पंचेन्द्रिय अर्थात्सक जीवके आयुके बिना सात कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध
 और उत्कृष्ट स्थितिबन्ध अन्तः कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण होता है । संखी पंचेन्द्रिय
 पर्याप्तके वेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध बारह मुहूर्त प्रमाण होता है । नाम एवं शेषका
 जघन्य स्थितिबन्ध उसके आठ अन्तमुहूर्त प्रमाण होता है । शेष कर्मोंका जघन्य स्थिति-
 बन्ध उसके अन्तमुहूर्त प्रमाण होता है । उक्त जीवके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध सत्तर
 कोडाकोडि सागरोपम, ज्ञानावरणादि चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध तीस कोडाकोडि
 सागरोपम और नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध बीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण
 होता है । आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध साधिका तेत्तीस सागरोपम प्रमाण होता है । इस
 प्रकार प्रमाणप्रकरण समाप्त हुई ।

अब इन स्थितिबन्धस्थानोंके अल्पबहुत्वको कहते हैं । यथा—संयतका जघन्य
 स्थितिबन्ध सबसे स्तोक है । यहाँ सूक्ष्मसूक्ष्मपरायिक शुद्धिसंयतके अन्तिम स्थितिबन्धको
 जघन्य ग्रहण करना चाहिये ।

१ आउअवकुणकोलो पड्ढासंखेज्जभागमणेसु । सेसाण पुव्वकोडी साउतिभागो आवाहा सिं ॥
 क. प्र. १, ७४. २ अ-आ-का-प्रतिषु 'ट्ठिदिबंधट्ठाणं' इति पाठः ।

उवरि किण्ण वेप्पदे ? ण, तत्थ कसायाभावेण द्विदिबंधाभावादो । खीणकसाए वि एगसमइया द्विदी अंतोमुहुत्तमेत्तसुहुमसापराइयचरिमद्विदिबंधादो असंखेज्जगुणहीणा लब्भदि । सा किण्ण वेप्पदे ? ण, विदियादिसमएसु अवट्ठाणस्स द्विदि त्ति ववणसादो । ण च उप्पत्तिकाले द्विदी होदि, विरोहादो ।

बादरेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो

असंखेज्जगुणो ॥ ६६ ॥

को गुणमारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? अंतोमुहुत्तमेत्तसंजदजहण्ण-द्विदिबंधेण पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागोणूणसागरोवममेत्तबादरेइंदियपज्जत्तजहण्णद्विदिबंधे भागे हिदे पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो

विसेसाहियो ॥ ६७ ॥

केत्तियमेत्तेण ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

बादरेइंदियअपत्तजयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो

विसेसाहियो ॥ ६८ ॥

शंका—इससे ऊपरके स्थितिबन्धको जघन्य स्वरूपसे क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि ऊपर कथायका अभाव होनेसे स्थितिबन्धका अस्तित्व भी नहीं है ।

शंका—क्षीणकथाय गुणस्थानमें भी एक समयवाली स्थिति सूक्ष्मसांपरायिकके अन्तर्मुहूर्त मात्र अन्तिम स्थितिबन्धकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हीन पायी जाती है । उसका ग्रहण क्यों नहीं करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, द्वितीयादि समयोंमें स्थित रहनेका नाम स्थिति है । उत्पत्ति समयमें कहीं स्थिति नहीं होती, क्योंकि, वैसा होनेमें विरोध है ।

उससे बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है ॥ ६६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्लोपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, संयतके अन्तर्मुहूर्त परिमित स्थितिबन्धका बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके पल्लोपमके असंख्यातमें भागसे हीन सागरोपम प्रमाण जघन्य स्थितिबन्धमें भाग देनेपर पल्लोपमका असंख्यातवां भाग पाया जाता है ।

उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ६७ ॥

वह कितने प्रमाणसे अधिक है ? पल्लोपमके असंख्यातवें भाग मात्रसे वह अधिक है

उससे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ६८ ॥

१ ततो बादरपर्याप्तकस्य जघन्यः स्थितिबन्धोऽसंखेयगुणः (२) । क. प्र. (मलय), १, ८०-८१, (अतोऽजे वक्ष्यमाणमिदं सर्वमेवास्त्वबहुरवमत्र यथाक्रमं वद्विधात्यदेवपुनस्तस्यते) .

केत्तियमेतो' विसेसो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणवीचारट्ठाणमेतो ।

सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो

विसेसाहिओ ॥ ६९ ॥

केत्तियमेतो विसेसो ? बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधादो सुहुमेइंदिय-
अपज्जत्तयस्स हेट्ठिमवीचारट्ठाणमेतो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो

विसेसाहिओ ॥ ७० ॥

केत्तियमेतो विसेसो ? सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स वीचारट्ठाणमेतो ।

बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो

विसेसाहिओ ॥ ७१ ॥

केत्तियमेतो' विसेसो ? सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधादो उवरिमबादरे-
इंदियअपज्जत्तवीचारट्ठाणमेतो ।

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो

विसेसाहिओ ॥ ७२ ॥

केत्तियमेतेण ? बादरेइंदियअपज्जत्त-उक्कस्सट्ठिदिबंधादो उवरिमेण बादरेइंदियअपज्जत्त-

विशेष कितना है ? वह पञ्चोपमके अर्थात् अतर्क्य भाग प्रमाण वीचारस्थानके बराबर है ।

उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ६९ ॥

विशेष कितना है ? वह बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके जघन्य स्थितिबन्धसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त सम्बन्धी नीचेके वीचारस्थानके बराबर है ।

उसी अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७० ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके वीचारस्थानके बराबर है ।

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७१ ॥

विशेष कितना है ? वह सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे ऊपरके बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके वीचारस्थानके बराबर है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७२ ॥

वह कितने प्रमाणसे अधिक है ? वह बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थिति-

१ ताम्रौ ' केत्तिओ ' इति पाठः ।

बीचारद्वाणेहिंतो संखेज्जगुणेण सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स बीचारद्वाणेण पल्लिदोवमस्स असं-
खेज्जदिभागमेतेण ।

**बादरेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ त्रिदिबन्धो
विसेसाहिओ ॥ ७३ ॥**

सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सत्त्रिदिबन्धादो उवरिमेहि पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग-
मेत्तबादरेइंदियपज्जत्तबीचारद्वाणेहि विसेसाहिओ ।

**बीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ त्रिदिबन्धो
संखेज्जगुणो ॥ ७४ ॥**

को गुणगारो ? किंचूणपणुवीसरूवाणि । सेसं सुगमं ।

**तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ त्रिदिबन्धो
विसेसाहिओ ॥ ७५ ॥**

बीइंदियपज्जत्तजहण्णत्त्रिदिबन्धादो हेट्ठा पल्लिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तबीचार-
द्वाणाणि ओसरिण बीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णत्त्रिदिबन्धस्स अवट्ठाणादो ।

**तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ त्रिदिबन्धो
विसेसाहिओ ॥ ७६ ॥**

सगजहण्णत्त्रिदिबन्धादो पल्लिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तबीचारद्वाणाणि उवरि चडिय
सगुक्कस्सत्त्रिदिबन्धसमुप्पत्तीदो ।

बन्धसे ऊपरके बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके बीचारस्थानसे संबधातगुणे व पल्लोपमके
असंबध्यातवें भाग प्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके बीचारस्थानसे अधिक है ।

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७३ ॥

वह सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे ऊपर पल्लोपमके असंबध्यातवें
भाग मात्र बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके बीचार स्थानोंसे विशेष अधिक है ।

द्वीन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ७४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार कुछ कम पचवीस रूप हैं । शेष कथन सुगमं है ।

उसी अपर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७५ ॥

क्योंकि, द्वीन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य स्थितिबन्धसे नीचे पल्लोपमके संबध्यातवें
भाग मात्र बीचारस्थान हटकर द्वीन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध अवस्थित है ।

उसी अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७६ ॥

क्योंकि, अपने जघन्य स्थितिबन्धसे पल्लोपमके संबध्यातवें भाग मात्र बीचारस्थान
ऊपर बढ़कर अपना उत्कृष्ट स्थितिबन्ध उत्पन्न होता है ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कसओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ ॥७७॥

बीईदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधादो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिबंध-
ट्ठाणाणि उवरि अब्भुस्सरिदूण बीईदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदिबंधावट्ठाणादो ।

तीईदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो

विसेसाहिओ ' ॥ ७८ ॥

केत्तियमेतो विसेसो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण्णपणुवीससागरोवममेतो ।

तीईदियअपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो

विसेसाहिओ ॥ ७९ ॥

केत्तियमेतेण ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेतेण । कुदो ? तीईदियअपज्जत्तजहण्ण-
ट्ठिदिबंधादो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिदूण तीईदिय-
पज्जत्तयस्स जहण्णट्ठिदिबंधावट्ठाणादो ।

तस्सेव उक्कस्सट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ ८० ॥

केत्तियमेतेण ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागपमाणसगवीचारट्ठाणमेतेण ।

तीईदियपज्जत्तयस्स उक्कसओ द्विदिबंधो

विसेसाहिओ ॥ ८१ ॥

उसी पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७७ ॥

क्योंकि, द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे पल्योपमके संख्यातर्षे भाग मात्र
स्थितिबन्धस्थान ऊपर जाकर द्वीन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध अवस्थित है ।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७८ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? उसका प्रमाण पल्योपमके संख्यातर्षे भागसे हीन
पञ्चीस सागरोपम प्रमाण है ।

त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ७९ ॥

कितने मात्रसे वह विशेष अधिक है ? वह पल्योपमके संख्यातर्षे भाग मात्रसे
अधिक है, क्योंकि, त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकके जघन्य स्थितिबन्धसे पल्योपमके संख्यातर्षे भाग
मात्र स्थितिबन्धस्थान नीचे जाकर त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका जघन्य स्थितिबन्ध अवस्थित है ।

उसीका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८० ॥

वह कितने प्रमाणसे अधिक है ? वह पल्योपमके संख्यातर्षे भाग मात्र अपने
वीचारस्थानोंके प्रमाणसे अधिक है ।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८१ ॥

१ ततोऽपि पर्याप्तत्रीन्द्रियस्य जघन्यः स्थितिबन्धः संख्येयगुणः (१४) । क. प्र. (मल्ल.) १, ८०-८१.

तीर्णदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सट्ठिदीदो उवरिमत्ते^१दियपज्जत्तनीचारट्ठाणेहि पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तेहि विसेसाहिओ ।

**चउरिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो
विसेसाहिओ ॥ ८२ ॥**

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण्णपण्णाससागरोवममेत्तो ।

**तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो
विसेसाहिओ ॥ ८३ ॥**

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तो । कुदो ? चउरिंदियअपज्जत्त-जहण्णट्ठिदिबंधादो हेट्ठा^२ पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिबंधाणाणि चउरिंदियअपज्जत्त-ट्ठिदिबंधट्ठाणेहि^३तो संखेज्जगुणाणि ओसरिय चउरिंदियपज्जत्तजहण्णट्ठिदिबंधावट्ठाणादो ।

**तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ^४ ट्ठिदिबंधो
विसेसाहिओ ॥ ८४ ॥**

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तो ।

**तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो
विसेसाहिओ ॥ ८५ ॥**

बह त्रीन्द्रिय अपर्याप्तके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे ऊपरके पदोपमके संख्यातवें भाग मात्र एकेन्द्रियके वीचारस्थानोंसे विशेष अधिक है ।

चतुरिन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८२ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? उसका प्रमाण पदोपमके संख्यातवें भागसे हीन पवास सागरोपम है ।

उसी अपर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८३ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? उसका प्रमाण पदोपमका संख्यातवां भाग है, क्योंकि चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य स्थितिबन्धसे नीचे पदोपमके संख्यातवें भाग मात्र होकर चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थानोंसे संख्यातगुने स्थितिबन्धस्थान हटकर चतुरिन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध अवस्थित है ।

उसी अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८४ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? वह पदोपमके संख्यातवें भाग प्रमाण है ।

उसी पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८५ ॥

१ तामसौ 'वेड्ढिम' इति पाठः । २ अ-आ-का-प्रतिषु 'तस्सेव उक्कस्सओ' इति पाठः ।

केत्तियमेत्तेण ? चउरिंदियअपज्जत्तट्टिदिबंधाणेहिंतो संखेज्जगुणेण चउरिंदियअपज्जत्त-
उक्कस्सट्टिदिबंधादो उवरिमेण चउरिंदियपज्जत्तवीचारट्टाणमेत्तेण विसेसाहिओ ।

असण्णिपंविंदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्टिदिबंधो
संखेज्जगुणो ॥ ८६ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कारणं सुगमं ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्टिदिबंधो
विसेसाहिओ ॥ ८७ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पल्लिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्टिदिबंधो
विसेसाहिओ ॥ ८८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? सगवीचारट्टाणमेत्तो ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्टिदिबंधो
विसेसाहिओ ॥ ८९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पल्लिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तो ।

संजदस्स उक्कस्सओ ट्टिदिबंधो संखज्जगुणो ॥ ९० ॥

बह कितने प्रमाणसे अधिक है ? बह चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थानोंसे
संख्यातगुणे ऐसे चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे ऊपरके चतुरिन्द्रिय पर्याप्तके
वीचारस्थानप्रमाणसे विशेष अधिक है ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ८६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय हैं । इसका कारण सुगम है ।

उसी अपर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८७ ॥

विशेष कितना है ? बह पल्लोपमके संख्यातबें भाग प्रमाण हैं ।

उसी अपर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८८ ॥

विशेष कितना है ? बह अपने वीचारस्थानके बराबर है ।

उसीके पर्याप्तका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ ८९ ॥

विशेष कितना है ? बह पल्लोपमके संख्यातबें भाग प्रमाण हैं ।

संयतका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९० ॥

१ कामती 'सगवीचारट्टाणमेत्तो' इति पाठः । २ अ-आ-का-प्रतिषु 'पज्जत्तयस्स' इति पाठः ।

को गुणगारो ? संखेज्जा समया । कुदो ? सागरोक्कमसहस्सेण अंतोकोडाकोडीए ओवट्टिदाए संखेज्जसमओवल्ममादो ।

संजदासंजदस्स जहण्णओ ठिदिबंघो संखेज्जगुणो ॥ ९१ ॥

कुदो मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमयपमतैसंजदुक्कस्सट्टिदिबंघादो वि संजदासंजदजहण्ण-
ट्टिदिबंघो संखेज्जगुणो त्ति ? ण, देसघादिसंजलणोदयं पेक्खिदूण सच्चघादिपच्चक्खाणो-
दयस्स अणंतगुणत्तादो । ण च कारणे थोवे संते कज्जस्स बहुत्तं संभवइ, विरोहादो ।

तस्सेव उक्कस्सओ ठिदिबंघो संखेज्जगुणो ॥ ९२ ॥

कुदो ? मिच्छत्ताहिमुहचरिमसमयसंजदासंजदउक्कस्सट्टिदिबंघगहणादो ।

असंजदसम्मादिट्टिपज्जत्तयस्स जहण्णओ ठिदिबंघो

संखेज्जगुणो ॥ ९३ ॥

कुदो ? उदयगदपच्चक्खाणादो तस्सेव गदअपच्चक्खाणस्स अणंतगुणत्तादो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ठिदिबंघो

संखेज्जगुणो ॥ ९४ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय हैं, क्योंकि, हजार सागरोपमोंका अन्तः कोडाकोडिमें भाग देनेपर संख्यात समय प्राप्त होते हैं ।

संयतासंयतका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९१ ॥

शंका—मिथ्यात्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती प्रमत्तसंयतके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे भी संयतासंयत जीवका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा क्यों है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि देशघाती संजवलन कषायके उदयकी अपेक्षा सर्वघाती प्रत्याख्यानान्तरण कषायका उदय अनन्तगुणा है । और कारणके स्तोक होनेपर कार्यका आधिक्य सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेमें विरोध है ।

उक्त जीवका ही उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९२ ॥

कारण कि यहाँ मिथ्यात्वके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती संयतासंयतके उत्कृष्ट स्थितिबन्धका ग्रहण किया गया है ।

असंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९३ ॥

कारण कि उसके प्रत्याख्यानान्तरणके उदयकी अपेक्षा अप्रत्याख्यानान्तरणका उदय अनन्तगुणा है ।

उसीके अपर्याप्तका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९४ ॥

कुदो ? अपञ्जत्तकाले अहविसोहीए द्विदिबंघापसरणमिन्ताए अभावादो ।

तस्सेव अपञ्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिबंघो

संखेज्जगुणो ॥ ९५ ॥

अपञ्जत्तकाले सच्चविसुद्धेण असंजदसम्मादिट्ठिणा बज्जमाणद्विदिबंघादो अपञ्जत्तकाले चेव असंजदसम्मादिट्ठिणा सच्चुक्कट्ठसंकिलेसेण बज्जमाणद्विदीए संखेज्जगुणत्तं पडि विरोहाभावादो ।

तस्सेव पञ्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विदिबंघो

संखेज्जगुणो ॥ ९६ ॥

कुदो ? अपञ्जत्तअसंजदसम्मादिट्ठिसच्चुक्कट्ठसंकिलेसादो पञ्जत्तअसंजदसम्मादिट्ठिसच्चुक्कट्ठसंकिलेस्स अणत्तगुणत्तुवलंभादो ।

सण्णिमिच्छाहट्ठिपंचिदियपञ्जत्तयस्स जहण्णओ द्विदिबंघो

संखेज्जगुणो ॥ ९७ ॥

कुदो ? असंजदसम्मादिट्ठिस्स सच्चुक्कट्ठसंकिलेसादो सण्णिमिच्छाहट्ठिपंचिदियपञ्जत्तसच्चजहणसंकिलेस्स अणत्तगुणत्तुवलंभादो, संकिलेसवङ्गीए द्विदिबंघवङ्गिमित्तादो ।

क्योंकि, अपर्याप्तकालमें स्थितिबन्धापसरणमें निमित्तभूत अतिशय विशुद्धिका अभाव है ।

उसीके अपर्याप्तकाल उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९५ ॥

क्योंकि, अपर्याप्तकालमें सर्वविशुद्ध असंख्यात सम्यग्दृष्टि जीवके द्वारा बांधे जानेवाले स्थितिबन्धकी अपेक्षा अपर्याप्तकालमें ही सर्वोत्कृष्ट संकलेशसे संयुक्त असंयत सम्यग्दृष्टिके द्वारा बांधे जानेवाले स्थितिबन्धके संख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

उसीके पर्याप्तकाल उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९६ ॥

इसका कारण यह है कि अपर्याप्त असंयत सम्यग्दृष्टिके सर्वोत्कृष्ट संकलेशकी अपेक्षा पर्याप्त असंयत सम्यग्दृष्टिका सर्वोत्कृष्ट संकलेश अनन्तगुणा पाया जाता है ।

संज्ञी मिथ्यादृष्टि पंचेन्द्रिय पर्याप्तकाल जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९७ ॥

कारण कि असंयत सम्यग्दृष्टिके सर्वोत्कृष्ट संकलेशकी अपेक्षा संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकाल सर्वजघन्य संकलेश अनन्तगुणा पाया जाता है, और संकलेशकी वृद्धि ही स्थितिबन्धवृद्धिका निमित्त है । अथवा, मिथ्यात्वके उद्भव वशा असंयत सम्यग्दृष्टिके सर्वोत्कृष्ट

१ प्रतिपु 'अहविसोहीए' इति पाठः । २ अपर्याप्त 'सच्चुक्कट्ठ' इति पाठः । ३ तन्वीपञ्चसियरे अग्निमतरओ य (उ) कोडिकोवीओ । ओधुक्कोवी तन्निस्स होइ पञ्चसगस्सेव ॥ क. प्र. १, ८२

मिच्छतोदयणिमित्तेण वा असंजदसम्माइद्विसव्वुक्कस्सट्ठिदिबंधादो संजमाहिमुह-चरिमसमय-
मिच्छाइद्विस्स जहण्णट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो
संखेज्जगुणो ॥ ९८ ॥

कुदो ? संजमाहिमुहचरिमसमयमिच्छाइद्विसंकिलेसादो अपज्जत्तमिच्छाइद्विसव्वज-
हण्णसंकिलेसस्स अणंतगुणतुवलंभादो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो
संखेज्जगुणो ॥ ९९ ॥

सुगममेदं ।

तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो
संखेज्जगुणो ॥ १०० ॥

अपज्जत्तकालसंकिलेसादो पज्जत्तद्वाए सव्वुक्कस्ससंकिलेसस्स अणंतगुणतुवलंभादो ।

एवं ट्ठिदिबंधट्ठाणपरूवणा ति समत्तमणियोगहारं ।

गिसेयपरूवणदाए तत्थ इमाणि दुवे अणियोगहाराणि
अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा ॥ १०१ ॥

निषेचनं निषेकः, कम्मपरमाणुक्खंधणिक्खेवो गिसेगो णाम । तस्स परूवणदाए

स्थितिवन्धकी अपेक्षा संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिका जघन्य
स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है ।

उसीके अपर्याप्तकका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९८ ॥

कारण कि संयमके अभिमुख हुए अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके संक्लेशकी अपेक्षा
अपर्याप्त मिथ्यादृष्टिका सबैजघन्य संक्लेश अनन्तगुणा पाया जाता है ।

उसीके अपर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है ॥ ९९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उसीके पर्याप्तकका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है ॥ १०० ॥

कारण कि अपर्याप्तकालीन संक्लेशकी अपेक्षा पर्याप्तकालीन सर्वोत्कृष्ट संक्लेश
अनन्तगुणा पाया जाता है ।

इस प्रकार स्थितिवन्धस्थान-प्ररूपणानुयोगद्वारे समाप्त हुआ ।

निषेकप्ररूपणमें ये दो अनुयोगद्वार हैं—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा ॥ १०१ ॥

‘निषेचनं निषेकः’ इस निरुक्तिके अनुसार कर्मपरमाणुओंके स्कन्धोंके निक्षेपण
करनेका नाम निषेक है । उसके दो अनुयोगद्वार हैं, क्योंकि, अनन्तर प्ररूपणा और

दुबे अणियोगद्वाराणि होंति, अणंतर-परंपरपरस्वरूपं मोत्तूण तदियपरस्वणाए अभावादो !

अणंतरोवणिधाए पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्त-
याणं णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराइयाणं तिण्णिवास-
सहस्साणि आबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं,
जं विदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए
पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव
उक्कस्सेण तीसं सागरोवमकोडीयो ति' ॥ १०२ ॥

विगलित्तिदियपडिसेहट्ठं पंचिंदियणिहेसो कदो । विगलित्तिदियपडिसेहो किमट्ठं कीरदे ?
तत्थ उक्कस्सट्ठिदीए उक्कस्सावाहाए च अभावादो । णिसेयपरस्वणाए कीरमाणाए
उक्कस्सट्ठिदिउक्कस्सावाहाणं च परस्वणाए को एत्थ संबधो ? ण केवलं एसा णिसेयपरस्वणा
चेव, किंतु उक्कस्सट्ठिदि-उक्कस्सावाहा-णिसेगाणं च परस्वणत्तादो । ट्ठिदिबन्धट्ठाणपरस्वणाए

परम्परा प्ररूपणाको छोड़कर तीसरी कोई प्ररूपणा नहीं है ।

अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक जीवोंके ज्ञानावरणीय,
दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय कर्मकी तीन हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर
जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निक्षिप्त है वह बहुत है, जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निक्षिप्त
है वह उससे विशेष हीन है, जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निक्षिप्त है वह उसमें विशेष हीन
है, इस प्रकार वह उत्कर्षसे तीस कोड़ाकोड़ी मागरोपम तक उत्तरोत्तर विशेष हीन होता
गया है ॥ १०२ ॥

विकलेन्द्रिय जीवोंका प्रतिषेध करनेके लिये सूत्रमें पंचेन्द्रिय पदका निर्देश किया
गया है ।

शंका—विकलेन्द्रिय जीवोंका प्रतिषेध किसलिये किया जाता है ?

समाधान—ज्योंकि उनमें उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट आबाधाका अभाव है, अतः
उनका यहाँ प्रतिषेध किया गया है ।

शंका—निषेकप्ररूपणा करते समय यहाँ उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट आबाधाकी
प्ररूपणाका क्या सम्बन्ध है ?

समाधान—यह केवल निषेकप्ररूपणा ही नहीं है, किन्तु उत्कृष्ट स्थिति, उत्कृष्ट
आबाधा और निषेकोंकी भी यह प्ररूपणा है ।

१ मोत्तूण सगमबाहे (इ) पढमाए ठिइए बहुतरं दब्बं । एत्तो विसेसहीणं वायुक्कोसं ति
सम्बत्ति ॥ क. प्र. १, ८३. २ अ-आ-काप्रतिपु 'कुसो' इति पाठः ।

उक्कस्सओ द्विदिबंधो उक्कस्सिया आवाहा च परूविदा । पुवं तेसिं परूविदाणं पुणो परूवणा एत्थ किमट्ठं कीरदे ? ण एस दोसो, द्विदिबंधट्ठाणपरूवणाए सृचिदाणं परूवणाए कीरमाणाए पउणरुत्तियाभावादो । जदि एवं तो एदस्साणियोगहारस्स णिसेयपरूवणा ति ववएसो कथं जुज्जदे ? ण, णिसेयरचनाए पहाणभावेण तस्स तत्त्ववएससंभवादो ।

असण्णिपडिसेहट्ठं सण्णीणमिदि णिदेसो कदो । सम्मादिट्ठीसु उक्कस्सद्विदिबंध-पडिसेहट्ठं मिच्छाद्विणीमिदि णिदेसो कदो । अपजत्तकाले उक्कस्सद्विदिबंधो णत्थि ति जाणावणट्ठं पजत्तयमिदि णिदेसो कदो । सेसकम्मपडिसेहट्ठं णाणावरणादिणिदेसो कदो । उक्कस्सद्विदि बंधमाणस्स तिसु वाससहस्सेसु पदेसणिकखेवो णत्थि ति जाणावणट्ठं तिण्णिवाससहस्साणि आवाहं भोत्तूणे ति भणिदं ।

एत्थ एदेहि दोहि अणियोगहारेहि सेडिपरूवणासामण्णेण एगत्तमावण्णेहि सेस-पंचणियोगहाराणि जेण कारणेण सृचिदाणि तेण एत्थ परूवणा पमाणं सेडी अवहारे

शंका—स्थितिबन्धस्थानप्ररूपणामें उत्कृष्ट स्थितिबन्ध और उत्कृष्ट आवाधाकी भी प्ररूपणा की जा चुकी है । अतः पूर्वमें प्ररूपित उन दोनोंकी प्ररूपणा यहां फिरसे किस लिये की जा रही है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, स्थितिबन्धस्थान प्ररूपणामें उन दोनोंकी सूचना मात्र की गई है । अतः अब उनकी यहां प्ररूपणा करनेमें पुनरुक्ति दोषकी सम्भावना नहीं है ।

शंका—यदि ऐसा है तो फिर इस अनुयोगहारकी ' निषेक-प्ररूपणा ' यह संज्ञा कैसे उचित है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि निषेक-रचनाकी प्रधानता होनेसे उसकी उक्त संज्ञा सम्भव ही है ।

असंज्ञियोंका प्रतिषेध करनेके लिये सूत्रमें ' सण्णीणं ' पदका निर्देश किया गया है । समयगृष्टि जीवोंमें उत्कृष्ट स्थितिबन्धका निषेध करनेके लिये ' मिच्छाद्विणी ' पदका उपादान किया है । अपर्याप्तकालमें उत्कृष्ट स्थितिबन्ध नहीं होता, इस बातके ज्ञापनार्थ ' पर्याप्तक ' का ग्रहण किया है । शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेके लिये ज्ञानावरणादिकोंका निर्देश किया है । उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाले जीवके तीन हजार वर्षोंमें प्रवेशोंका निक्षेप नहीं होता, इस बातको बतलानेके लिये ' तीन हजार वर्ष प्रमाण आवाधाको छोड़कर ' ऐसा कहा है ।

यहाँ ' अणिप्ररूपणा ' सामान्यकी अपेक्षा एकत्वको प्राप्त हुए इन दो (अन्तरोप-निधा और परम्परोपनिधा) अनुयोगहारोंके द्वारा चूँकि शेष पाँच अनुयोगहारोंकी सूचना की गई है अतः यहाँ प्ररूपणा, प्रमाण, अणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व,

भागाभागे अप्पावहुगं चेदि छ अणियोगहाराणि क्त्वाणि भवन्ति । एत्थ ताव पस्वणं पमाणं च वत्तस्सामो । तं जहा—चदुण्णं कम्माणं तिण्णवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण जो उवरिमसमओ तत्थ णिसित्तपदेसग्गमत्थि । ततो अणंतरउवरिमसमए णिसित्तपदेसग्गं पि अत्थि । ततो उवरिमतदियसमए णिसित्तपदेसग्गं पि अत्थि । एवं णेदव्वं जाव तीसंसागरोवमकोडाकोडीणं चरिमसमओ ति । पस्वणा गदा ।

पदमाए द्विदीए णिसित्तपरमाणु अमवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता । एवं णेयव्वं जाव उवकस्सद्विदि ति । पमाणपस्वणा गदा ।

सेडिपस्वणा दुविहा—अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरोवणिधा वुच्चदे—तिण्णवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण जं पदमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं । जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं णिसेगभागहारेण खंडिदेगखंडमेत्तेण । जं तिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं रूवृणणिसेगभागहारण खंडिदेगखंडमेत्तेण । जं चउत्थसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं दुम्भृणणिसेगभागहारण खंडिदेगखंडमेत्तेण । एवं णेयव्वं जाव पदमणिसेयस्स अद्धं चेद्विदं ति । पुणो बिदियगुणहाणिपदमणिसेयादो

इन छह अनुयोगहारोंकी प्ररूपणाकरने योग्य है । इनमें पहिले प्ररूपणा और प्रमाणका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है—चार कमोंकी तीन हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर जो अगला समय है उसमें निश्चित प्रवेशाग्र है । उससे अव्यवहित आगेके समयमें निश्चित प्रवेशाग्र भी है । उससे आगेके तीसरे समयमें निश्चित प्रवेशाग्र भी है । इस प्रकार तीस कोडाकोड़ सागरोपमोंके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

प्रथम स्थितिमें निश्चित परमाणु अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणे व सिद्धोंके अनन्तवें भाग प्रमाण हैं । [द्वितीय स्थितिमें निश्चित परमाणु विशेष हीन हैं ।] इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये । प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा । इनमें अनन्तरोपनिधाको कहते हैं—

तीन हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर जो प्रथम समयमें निश्चित प्रवेशाग्र (२५६) है वह बहुत है । जो द्वितीय समयमें निश्चित प्रवेशाग्र है वह निष्कभागहारका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध हो उतने ($256 \div 16 = 16$) मात्रसे विशेष हीन है । जो प्रवेशाग्र तृतीय समयमें निश्चित है वह एक अंक कम निष्कभागहारका भाग देनेपर जो एक भाग प्राप्त हो उतने [$256 \div (16 - 1) = 16$] मात्रसे विशेष हीन है । चतुर्थ समयमें जो प्रवेशाग्र निश्चित है वह दो अंक कम निष्क भागहारका भाग देनेपर जो एक भाग प्राप्त हो उतने [$256 \div (16 - 2) + 16$] मात्रसे विशेष हीन है । इस प्रकार प्रथम निष्कके अर्ध भाग तक ले जाना चाहिये ।

तत्थेव विदियणितेयो विसेसहीणो । केत्तियमेत्तेण ? गितेसभागहारेण खंदिदेयखंडमेत्तेण । तत्थेव तदियसमए णिसित्तं पदेसमं विसेसहीणं रूवणणितेसभागहारेण खंदिदेयखंडमेत्तेण । एवं गेयव्वं जाव एत्थतणपढमणितेयस्स अद्दं चेद्दिदं ति । एवं गेयव्वं जाव चरिमगुणहाणि ति । एत्थ संदिद्धी—

१४४	७२	३६	१८	९
१६०	८०	४०	२०	१०
१७६	८८	४४	२२	११
१९२	९६	४८	२४	१२
२०८	१०४	५२	२६	१३
२२४	११२	५६	२८	१४
२४०	१२०	६०	३०	१५
२५६	१२८	६४	३२	१६

दोगुणहाणिपट्टाडि रूवणकमेण जाव रूवाहियगुणहाणि ति ठवेदूण रूवणणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोणन्मत्तरा-
सिणा पादेक्कं गुणिय पुणो रूवणणाणागुणहाणिसलागेत्त-
पडिरासीयो अद्ददं काऊण डुवेदव्वाओ । पुणो एहे
पक्खेवे सन्ने वि मेलाविय समयपक्खे भागे द्विदे जं लद्धं
तेण सव्वपक्खेवेसु पादेक्कं गुणिदेसु इच्छिद-इच्छिदणितेसा
होति,

प्रक्षेपकसंक्षेपेण विभक्ते यद्धं समुपलद्धं ।

प्रक्षेपास्तेन गुणा प्रक्षेपसमानि खंडानि ॥ ६ ॥

इति संख्यानशास्त्रे उक्तत्वात् ।

पश्चात् द्वितीय गुणहानिके प्रथम निषेककी अपेक्षा उसका ही द्वितीय निषेक विशेष हीन है । कितने मात्रसे वह विशेष हीन है ? निषेकभागहारका भाग देनेसे जो प्राप्त हो उतने मात्रसे वह विशेष हीन है । द्वितीय गुणहानिके तृतीय समयमें निश्चित प्रवेशाप्र एक अंक कम निषेकभागहारका भाग देनेपर जो प्राप्त हो उतने मात्रसे विशेष हीन है । इन प्रकार यहाँके प्रथम निषेकका अर्ध भाग स्थित होने तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार अन्तिम गुणहानि तक लेजाना चाहिये । यहाँ संदिद्धि—(मूलमें देखिये) ।

दो गुणहानियों ($८ \times २ = १६$) को आदि लेकर एक एक अंक कमके क्रमसे एक अधिक गुणहानिप्रमाण (१६, २०, २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४४) तक स्थापित करना चाहिये । पश्चात् उनमेंसे प्रत्येकको एक कम नानागुणहानिशालाकार्यों (५-१) की अन्योन्याभ्यस्ताराशि (१६) से गुणित (१६×१६) करके एक कम नानागुणहानि-शालाका (४) प्रमाण प्रतिराशियोंको आधी आधी करके (१२८, ६४, ३२, १६) स्थापित करना चाहिये । पश्चात् इन सभी प्रक्षेपोंको मिलाकर प्राप्त राशिका समयवचनमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उससे सब प्रक्षेपोंमेंसे प्रत्येकको गुणित करनेपर इच्छित-इच्छित निषेकोंका प्रमाण होता है, क्योंकि—

प्रक्षेपोंके संक्षेप अर्थात् योगफलका विवक्षित राशियमें भाग देनेपर जो धन प्राप्त हो उससे प्रक्षेपोंको गुणा करनेपर प्रक्षेपोंके बराबर बाण्ड होते हैं ॥ ६ ॥

ऐसा गणितशास्त्रमें कहा गया है । (पु. ६, पृ. १५८) देखिये ।

१ अ-आ-का-प्रतिषु ' अत्वं ' इति पाठः । २ पपतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु ' संख्यान-राशौ उक्तत्वात् ' इति पाठः ।

संपहि परूवणा-प्पमाणाणियोगदाराणि अणंतरोवणिधाए णिवदंति त्ति ताणि अभणिदूण मोहणीयस्स अणंतरोवणिधापरूवणद्वमुत्तरसुत्तं भणदि—

पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाद्विणीं पज्जत्तयाणं मोहणीयस्स सत्तवाससहस्साणि आवाहं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं, जं विदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण सत्तरिसागरोवमकोडाकोडि त्ति ॥ १०३ ॥

पुवं गाणावणादीणं चटुण्णं कम्माणं तिण्णिवाससहस्साणि त्ति आवाहा परूविदा । संपहि मोहणीयस्स सत्तवाससहस्साणि आवाधा त्ति किमद्वं बुच्चदे ? ण, सगट्ठिदिपडिभागेण आवाधुप्पत्तीदो । तं जहा—दससागरोवमकोडाकोडीणं वस्ससहस्समावाहा लब्भदि^१ । कधमेदं णव्वदे ? परमगुत्त्वदेसादो । जदि दससागरोवमकोडाकोडीणं वस्ससहस्समावाहा

अब चौकि प्रकृपणा और प्रमाण ये दो अनुयोगहार अनन्तरोगिधाके अन्तर्गत हैं अतः उसको न कहकर मोहनीय कर्मकी अनन्तरोगिधाके प्रकृपणार्थ उत्तरस्त्व कहते हैं—

पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक जीवोंके मोहनीय कर्मकी सात हजार वर्ष प्रमाण आवाधाको छोड़कर जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त है वह बहुत है, जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निषिक्त है वह उससे विशेष हीन है, जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निषिक्त है वह उससे विशेष हीन है, इस प्रकार उत्कर्षसे सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम तक विशेष हीन विशेष हीन होता गया है ॥ १०३ ॥

शंका—पहिले ज्ञानावरणादि चार कर्मोंकी आवाधा तीन हजार वर्ष प्रमाण कही जा चुकी है । अब मोहनीय कर्मकी सात हजार वर्ष प्रमाण आवाधा किसलिये बतलायी जा रही है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि आवाधाकी उदयति अपनी स्थितिके प्रतिभागसे होती है । यथा—वस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिकी आवाधा एक हजार वर्ष प्रमाण पायी जाती है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—वह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

१ उदयं षड् सत्तहं आवाहा कोडकोडि उवहीणं । वाससयं तप्पडिभागेण व सेसद्विदीणं च ॥ गो. क. १५६. वाससहस्समावाहा कोडाकोडीदसगस्स सेसाणं । अणुवाओ अणुवट्ठणाउड्डु छम्मासिगुक्कसो ॥ क. प्र. १, ७५

लम्बदि तो सत्तरि-तीस-बीससागरोवमकोडाकोडीण किं लभामो ति पमाणेण फल्लगुणिदिच्छाए ओवट्ठिदाए जहाकमेण सत्त तिणिण वेणिण वाससहस्साणि आबाहाओ होति । मोहणीयस्स आबाधा एसा ७००० । णाणावरणादीणं चदुण्णं कम्माणमाबाहा एतिया होदि ३००० । णामागोदानमाबाहा एतिया होदि २००० । एदेण अत्यपदेण सेसउत्तरपयडीणं पि आबाहापरूवणा कायव्वा । एवं कदे सोलसण्णं कसायाणं चत्तारि वाससहस्साणि आबाधा होदि । एवं सेसउत्तरपयडीणं पि जाणिदण वत्तन्वं । एवमेइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरि-दिय-असणिणंपंचिदिएसु वि आबाहापरूवणा सग-सगट्ठिदीसु कायव्वा । णवरि आउअस्स आबाधाणियमो णत्थि, पुव्वकोडितिमागमाबाहं काऊण खुदाभवगहणमेत्तट्ठिदाए वि बंधु-वलंभादो अंसखेवद्धाबाहाए वि तेत्तीससागरोवममेत्तट्ठिदिबंधुवलंभादो । सेसं णाणावरणादि-चदुण्णं कम्माणं जहा परूविदं तहा गिस्सेसं परूवेद्वं, विससामावादो ।

एत्थ मोहसव्वपयडीणं पदेसपिंडं घेतुण किमणंतरोवणिधा बुब्बदे, आहो पुष-पुष-पयडीणं गिसेगस्स अणंतरोवणिधा बुब्बदि ति ? ण ताव पढमवियप्पो जुज्जदे, चालीस-

यदि वस कोडाकोड़ि सांगरोपम प्रमाण स्थितिकी एक हजार वर्ष प्रमाण आबाधा पायी जाती है तो सत्तर, तीस और बीस कोडाकोड़ि सांगरोपम प्रमाण स्थितियोंकी आबाधा तितनी होगी, इस प्रकार प्रमाणसे फल्लगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर क्रमशः उनकी सात, तीन और दो हजार वर्ष प्रमाण आबाधा होती है । मोहनीय कर्मकी आबाधा ७००० वर्ष प्रमाण है । ज्ञानावरणादिक चार कर्मोंकी आबाधा इतनी होती है— ३००० वर्ष । नाम व गोत्रकी आबाधा इतनी होती है — २००० वर्ष । इस अर्थपरसे शेष उत्तर प्रकृतियोंकी भी आबाधाकी प्ररूपणा करना चाहिये । ऐसा करनेपर सोलह कवायोंकी चार हजार वर्ष प्रमाण आबाधा होती है । इसी प्रकार शेष उत्तर प्रकृतियोंके विषयमें भी जानकर प्ररूपणा करना चाहिये ।

इस प्रकार एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और अलंकी एकेन्द्रिय जीवोंमें भी अपनी अपनी कर्मस्थितिके अनुसार आबाधाकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि आयु कर्मकी आबाधाका ऐसा नियम नहीं है, क्योंकि, पूर्वकोटिके तृतीय भाग प्रमाण आबाधा करके भूद्रभयग्रहण मात्र स्थितिका भी बन्ध पाया जाता है, तथा अलंकोपादा मात्र आबाधामें भी तेत्तीस सांगरोपम प्रमाण स्थितिका बन्ध पाया जाता है । शेष जैसे ज्ञानावरणादिक चार कर्मोंकी प्ररूपणा की गई है वैसेही पूर्ण रूपसे प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई भेद नहीं है ।

शंका—यहां मोहनीय कर्मकी समस्त प्रकृतियोंके प्रवेशपिण्डको ग्रहण करके क्या अनन्तरोपनिधा कही जाती है, अथवा उसकी पृथक् पृथक् प्रकृतियोंके निषेककी अनन्तरोपनिधा कही जाती है ? इनमें प्रथम विकल्प तो योग्य नहीं है, क्योंकि, अनन्तरोपनिधाकी

साम्रोवमाणि अर्णतरोवणिघाए विसेसहीणकमेण गंतुण तदणंतरउवरिमसमए अणंतगुणहीण-
प्पदेसपिसेगप्पसंगादो, देसवादिपदेसपिंडो अणंतगुणहीणो ति कसायपाहुडे णिद्धिच्चादो ।
ण च अणंतगुणहीणत्तं वोत्तुं जुत्तं, विसेसहीणं सच्चत्थ णिसिंचदि ति सुत्तेण सह विरोहादो ।
ण विदियपक्खो वि, सच्चपयहीणं ठिदीयो अस्सिदण पुध पुध णिसेयपरूवणापसंगादो ।
ण च एवं, विसेसहीणा विसेसहीणा सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीयो ति सुत्तेण सह विरोहादो
ति ? एत्थ परिहारो उच्चदे । तं जहा—ण ताव विदियपक्खमि वुत्तदोसाणं संभवो,
तदन्वुवगमाभावादो । न पढमपक्खे वुत्तदोससंभवो वि, भिच्छत्तपदेसगं चेव घेत्तूण
अणंतरोवणिघं परूवेमाणस्स तदोससमागमाभावादो । न च सामण्णे विसेसो णत्थि,
विसेसाणुविद्याणं चेव सामण्णाणमुवलंभादो । न च सामण्णे अप्पिदे विसेसप्पणा विरुज्झदे,
विसेसवदिरित्तसामण्णाभावादो ति ।

संपदि उवरिहीणं द्विदीणं णिसेयस्स उक्कत्सपदे ति सुत्ते वक्खाणिज्जमाणे
उक्कत्सियाए द्विदीए बहुगं पदेसगं देदि, दुचरिमादिद्विदीसु विसेसहीणं देदि ति जं
मणिदं तमेदेण सुत्तेण सह कथं न विरुज्झदे ? न, गुणिदकम्मंसियमस्सिदण सा परूवणा

अपेक्षा विशेषहीन कमसे चाहीस सागरोपम जाकर उससे अभ्यवहित आगेके समयमें
अनन्तगुणे हीन प्रवेशवाले निषेकका प्रसंग आता है, क्योंकि, [सर्वघातीकी अपेक्षा]
वेशघाती प्रकृतियोंका प्रवेशपिण्ड अनन्तगुणा हीन है; ऐसा कसायपाहुड़में कहा गया है ।
परन्तु अनन्तगुणी हीनताका कथन उचित नहीं है, क्योंकि, सर्वत्र विशेषहीन होता है, इस
सूत्रके साथ विरोध होता है । दूसरा पक्ष भी ठीक नहीं है, क्योंकि, समस्त प्रकृतियोंकी
स्थितियोंका आश्रय करके पृथक् पृथक् निषेकोंकी प्ररूपणाका प्रसंग आता है । परन्तु
ऐसा है नहीं, क्योंकि, सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरोपम तक वे विशेषहीन विशेषहीन हैं, इस
सूत्रके साथ विरोध आता है ?

समाधान—यहां उपर्युक्त शंकाका परिहार कहते हैं । वह इस प्रकार है—दूसरे
पक्षमें दिये गये दोषोंकी सम्भावना तो है ही नहीं, क्योंकि, वैसा स्वीकार ही नहीं किया
गया है । प्रथम पक्षमें कहे हुए दोषोंकी भी सम्भावना नहीं है, क्योंकि एकमात्र मिथ्यात्व
प्रकृतिके प्रवेशपिण्डको ग्रहण करके अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा करनेपर उक्त दोषोंका
आना सम्भव नहीं है । सामान्यमें विशेष न हो, ऐसा तो कुछ है नहीं, क्योंकि,
विशेषोंसे सम्बन्ध ही सामान्य पाये जाते हैं । सामान्यकी मुख्यता होनेपर विशेषकी
विषया विवक्ष्य हो, सो भी नहीं है, क्योंकि, विशेषोंसे भिन्न सामान्यका अभाव है ।

शंका—अब ‘उवरिहीणं द्विदीजं णिसेयस्स उक्कत्सपदे’ इस सूत्रका व्याख्यान
करते हुए “उत्तुह स्थितिमें बहुत प्रवेशपिण्डको देता है, द्विचरम आदिक स्थितियोंमें
विशेषहीन देता है ” यह जो कहा है वह इस सूत्रसे कैसे विवक्ष्य नहीं होगा ?

१ मपतिपाकोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिबु ‘तदन्वुवगमादो’ इति पाठः ।

कदा, इमा पुण खविदुग्गिद-बोलमाणजीवे अस्सिक्ख कदा ति विरोहाभावादो ।

संपहि संगतोविस्सत्तपरूवणा-पमाणाणियोगहारमणंतरोवणिधमाउअस्स परूवणह-
मुत्तरसुत्तं भणदि—

पंचिंदियाणं सण्णीणं सम्मादिट्ठीणं वा मिच्छादिट्ठीणं वा
पज्जत्तयाणमाउअस्स पुव्वकोडितिभागमाबाधं मोत्तूण जं पढमसमए
पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं, जं विदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं
विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसे-
सहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण तेतीससागरोवमाणि ति ॥१०४॥

एत्थ पुव्वकोडितिभागमाबाधं ति जं भणिदं तेण अण्णजोगववच्छेदो' ण कीरदे. किंतु
अजोगववच्छेदो' चेव; पुव्वकोडितिभागमादि काडण जाव असंखेवद्धा ति ताव सच्चाभावाहि
तेतीससागरोवममेत्तद्विदिवंधसंभवादो । जदि एवं तो उक्कस्साबाहाए चेव किमट्ठं णिसेय-
परूवणा कीरदे ? ण, आउअस्स उक्कस्साबाहा एतिया चेव होदि, उक्कस्साबाहाए सह

समाधान—नहीं, क्योंकि, वह प्ररूपणा गुणितकर्माधिकका आश्रय करके की गई
है, किन्तु यह प्ररूपणा क्षणित-गुणित-बोलमान जीवोंका आश्रय करके की गई है, अतः
उससे बिभक्ष नहीं है ।

अब प्ररूपणा और प्रमाण अनुयोगद्वारासे गर्भित आयुर्कर्मकी अनन्तरोपनिधाकी
प्ररूपणा करनेके लिये आनेका सूत्र कहते हैं—

पंचेन्द्रिय संज्ञी सम्यग्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि पर्याप्त जीवोंके आयु कर्मकी एक
पूर्वकोटिके तृतीय भाग प्रमाण आबाधाको छोड़कर प्रथम समयमें जो प्रदेशपिण्ड दिया
गया है वह बहुत है, द्वितीय समयमें जो प्रदेशपिण्ड दिया गया है वह उससे विशेष
हीन है, तृतीय समयमें जो प्रदेशपिण्ड दिया गया है वह विशेष हीन है; इस प्रकार
उत्क्रमसे तीस सागरोपम तक वह विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०४ ॥

यहां सूत्रमें 'पुव्वकोडितिभागमाबाधं' यह जो कहा गया है उससे अन्ययोन-
व्यवच्छेद (अन्य आबाधाओंकी ध्यावृत्ति) नहीं किया जा रहा है, किन्तु अयोगव्यवच्छेद
ही किया जा रहा है; क्योंकि, पूर्वकोटिके त्रिभागको भाग लेकर असंक्षेपात्ता तक समस्त
आबाधाओंके साथ तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुर्कर्मका बन्ध सम्भव है ।

शंका—यदि ऐसा है तो उत्कृष्ट आबाधामें ही किसलिये निषेकप्ररूपणा की जाती है ।

समाधान—नहीं, क्योंकि आयु कर्मकी उत्कृष्ट आबाधा इतनी ही होती है तथः
उत्कृष्ट आबाधाके साथ तेतीस सागरोपम मात्र उत्कृष्ट स्थिति भी होती है, यह बतलानेके

१ अ-आ-काप्रतिषु 'अण्णजोगववएतो' इति पाठः । २ विशेषणसंगतैवकारअयोगव्यवच्छेद-
बोधकः, यथा शंखः पाण्डुर एवेति । अयोगव्यवच्छेदो नाम उरेश्वरावच्छेदक-समानाधिकरणाभावाप्र-
तियोगित्वम् । × × × विशेष्यसङ्गतैवकारोऽन्ययोगव्यवच्छेदबोधकः, यथा पार्थ एव धनुर्वर इति ।
अन्ययोगव्यवच्छेदो नाम विशेष्यभित्तात्तात्त्वादिबोधकः । तत्त. त. पृ. २५-२६.

तेतीससागरोवमाणि उक्कस्सिया द्विदी च होदि ति जाणावणहं तदुत्तीए । देवाउअं पडुच्च सम्मादिट्ठीणं वा ति भणिदं, संजदेसु सम्मादिट्ठीसु पुव्वकोडितिभागपढमसमय-
द्विदीसु देवाउअस्स केसु वि तेतीससागरोवमपमाणस्स बंधुवलंभादो । गिरयाउअं पडुच्च मिच्छाइट्ठीणं वा ति वुत्तं, पुव्वकोडितिभागपढमसमए वट्ठमाणमिच्छाइट्ठीसु केसु वि तेतीससागरोवमेत्तगिरयाउअस्स बंधुवलंभादो । सेसं जहा जाणावरणीयस्स परुविदं तहा परुवेदव्वं, विसेसाभावादो ।

अंतोखितपरुवणा-पमाणमणंतरोवणिधं णामा-गोदाणमुत्तरसुत्तेण भणदि—

पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तयाणं णामागोदाणं
वेवाससहस्साणि आबाधं मोत्तुण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं
बहुगं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदिय-
समए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं
जाव उक्कस्सेण वीसं सागरोवमकोडीयो ति ॥ १०५ ॥

णिसेगभागहारो सव्वकम्मेसु सरिसो, सव्वत्थ गुणहाणीणं सरिसत्तुवलंभादो ।
गोबुच्छविसेसा ण सव्वगुणहाणीसु सरिमा, किंतु आदिगुणहाणिप्पट्ठि अट्ठद्वगया,
लिये उक्त प्ररूपणा की जा रही है ।

वेवायुकी अपेक्षा करके 'सम्मादिट्ठीणं वा' ऐसा कहा गया है, क्योंकि, पूर्वकोटिके
त्रिभागके प्रथम समयमें स्थित किन्हीं त्र्ययगृष्टि संयत जीवोंमें तेतीस सागरोपम प्रमाण
वेवायुका बन्ध पाया जाता है । नारकायुकी अपेक्षा करके 'मिच्छाइट्ठीणं वा' ऐसा कहा
गया है, क्योंकि, पूर्वकोटिके त्रिभागके प्रथम समयमें वर्तमान किन्हीं मिथ्यागृष्टि जीवोंमें
तेतीस सागरोपम प्रमाण नारकायुका बन्ध पाया जाता है । शेष प्ररूपणा जैसे ज्ञाना-
वरणीयके विषयमें की गई है, वैसे ही यहां करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई
विशेषता नहीं है ।

अब आगेके सूत्रसे प्ररूपणा व प्रमाण अनुयोगद्वारासे गर्भित नाम व गोचरकी
अन्तरोपनिधाको कहते हैं—

पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यागृष्टि पर्याप्तक जीवोंके नाम व गोत्र कर्मकी दो हजार वर्ष
प्रमाण आबाधाको छोड़कर जो प्रदेशपिण्ड प्रथम समयमें निष्कित है वह बहुत है, जो
प्रदेशपिण्ड द्वितीय समयमें निष्कित है वह उससे विशेष हीन है, जो प्रदेशपिण्ड तृतीय
समयमें निष्कित है, वह उससे विशेष हीन है, इस प्रकार उत्कर्षसे बीस कोड़ाकोड़ि
सागरोपमों तक विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०५ ॥

निष्कैवभागहार सब कर्मोंमें समाप्त है, क्योंकि सर्वत्र गुणहानियोंकी सदृशता देखी
जाती है । गोबुच्छविशेष सब गुणहानियोंमें सदृश नहीं है, किन्तु प्रथम गुणहानिसे लेकर

गुणहाणीसु अवट्टिदासु गोबुच्छविसेसाणमवट्टाणविरोहादो । सेसं जहा थाणावरणीयस्स परुविदं तहा परुवेदव्वं ।

संपदि सण्णीसु पजत्तेसु सव्वकम्माणं पदेसणिसेगस्स अणंतरोविणं परुविय सण्णि-
अपजत्ताणं तप्पस्सवणद्धमुत्तरसुत्तं भणदि—

पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणमपजत्तयाणं सत्तण्णं
कम्माणमाउववज्जाणमंतोमुहुत्तमाबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं
णिसित्तं तं बहुगं, जं विदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं,
जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं
विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण अंतोकोडाकोडीयो त्ति ॥ १०६ ॥

एय्य आउअं किमट्ठं एदेहि सह ण भणिदं ? ण एस दोसो, एदेसिं ट्टिदिबंधेण
समाणाउअट्टिदिबंधाभावेण सह वोत्तुमसत्तीदो । णामा-गोदाणमंतोकोडाकोडीदो चटुण्णं
कम्माणमंतोकोडाकोडी दुभागम्माहिया । मोहस्स अंतोकोडाकोडी चटुण्णं कम्माणमंतो-

उत्तरोत्तर आधे आधे होते गये हैं, क्योंकि, गुणहानियोंके अवस्थित होनेपर गोबुच्छ-
विशेषोंके अवस्थानका विरोध है । शेष प्ररूपणा जैसे ज्ञानावरणीयके सम्बन्धमें की गई है
वैसे ही करना चाहिये ।

अब संज्ञी पर्याप्तक जीवोंके सब कर्मोंके प्रदशनियेककी अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा
करके संज्ञी अपर्याप्तक जीवोंके उसकी प्ररूपणा करनेके लिये उत्तर खूब कहते हैं—

पंचेन्द्रिय संज्ञी मिथ्यादृष्टि अपर्याप्तक जीवोंके आयुको छोड़कर शेष सात
कर्मोंकी अन्तर्गृह्यता मात्र आवाधाको छोड़कर जो प्रदेशपिण्ड प्रथम समयमें निष्कित
है वह बहुत है, जो प्रदेशपिण्ड द्वितीय समयमें निष्कित है वह विशेषहीन है, जो
प्रदेशपिण्ड तृतीय समयमें निष्कित है वह विशेषहीन है, इस प्रकार उत्कर्षसे अन्तः-
कोडाकोड़ि सागरोपम तक विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०६ ॥

शंका—यहां इनके साथ आयु कर्मका कथन क्यों नहीं किया ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इनके स्थितिवन्धके समान आयु
कर्मका स्थितिवन्ध नहीं होता; अतएव उनके साथ आयु कर्मका कहना शक्य नहीं है ।

शंका—नाम व गोत्रके अन्तः कोडाकोड़ि मात्र स्थितिवन्धकी अपेक्षा चार कर्मोंका
स्थितिवन्ध द्वितीय भागसे अधिक अन्तः कोडाकोड़ि प्रमाण होता है । मोहजीय कर्मकी
अन्तःकोडाकोड़ि चार कर्मोंकी अन्तःकोडाकोड़िकी अपेक्षा एक तृतीय भाग सहित दो

कोडाकोडीर्हितो सतिभाव-दोरुर्वगुणा ति । सेसकम्माडिदी विसरिसा ति । तेण सेसकम्माणं पि एगजोगो मा होदु ति वुत्ते ण, अंतोकोडाकोडित्तणेण तेसिं द्विदीणं समाणत्तुवल्भादो । अंतोमुहुत्तमाबाधं मोत्तूणेति भण्णिदे पढमसमयप्पहुडि संखेज्जावलियाओ वज्जिदूण उवरि णिसेयरचणं करेदि ति धेतव्वं । सेसं सण्णिपंचिदियपज्जत्तणावरणीयस्स जहा वुत्तं तथा वत्तव्वं, अविसेसादो ।

पंचिदियाणं सण्णीणमसण्णीणं चउरिंदिय-तीइंदिय-बीइंदियाणं बादरेइंदियअपज्जत्तयाणं सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणमाउअस्स अंतो मुहुत्तमाबाधं मोत्तूण जाव पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं, जं विदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण पुव्वकोडीयो ति ॥ १०७ ॥

एदे सत्त अपज्जत्तजीवसमाससरूवेण परिणयजीवा सुहुमेइंदियपज्जत्तजीवा च आउअस्स सव्वुक्कस्सट्ठिदिं बंधमाणा पुव्वकोडिं चेव जेण बंधंति तेण पुव्वकोडिमेत्ता चेव पदेस-रूपो (२३) से गुणित है । दोष कर्मोंकी स्थिति विसदृश है । इसलिये दोष कर्मोंका भी एक योग नहीं होना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अन्तःकोडाकोडि स्वरूपसे उनकी स्थितियोंके समानता पायी जाती है ।

‘ अंतोमुहुत्तमाबाधं मोत्तूण ’ ऐसा कहनेपर प्रथम समयसे लेकर संख्यात आवलि-योंको छोड़कर इसके आगे निषेकरचनाको करता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । दोष कथन जैसे संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके ज्ञानावरणीयके विषयमें किया है वैसा ही इसके भी करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय व बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक एवं अपर्याप्तक जीवोंके आयु कर्मकी अन्तर्मुहूर्त मात्र आवाधाको छोड़कर प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निष्कित है वह बहुत है, जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निष्कित है वह उससे विशेष हीन है, जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निष्कित है वह विशेष हीन है, इस प्रकार उत्कर्षसे पूर्वकोटि तक विशेषहीन विशेषहीन होता गया है ॥ १०७ ॥

अपर्याप्त जीवसमास स्वरूपसे परिणत ये सात जीव तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव आयु कर्मकी उत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हुए चूँकि पूर्वकोटि प्रमाण ही बाँधते हैं, अतएव पूर्वकोटि मात्र ही प्रदेशारचना कही गई है । पूर्वकोटिमेंसे एक-अंक कम इत्यादि क्रमसे

१ काप्रती ‘ दीकव ’ इति पाठः ।

रचणापरुविदा पुव्वकोडीदो रूव्वणादिकमेण परिहीणा वि पदेसरचना अत्थि, अण्णहा उक्कस्सेण जाव पुव्वकोडि ति णिदेसानुववत्तीदो । एदे पुव्वकोडीदो अण्महियमाउअं किण्ण बंधंति ? सहावदो अच्चंताभावेण निरुद्धसत्तित्तादो वा । एदेसिमाबाहा अंतोमुहुत्तमेत्ता चेवे ति किम्वट्ठं बुच्चदे ? ण, एदेसिमंतोमुहुत्तआउआणं सगआउअतिभागे अंतोमुहुत्तभावस्सेव उवलंभादो । सेसं सुगमं ।

पंचिंदियाणमसणीणं चउरिंदियाणं तीहंदियाणं वीहंदियाणं बादरएहंदियपज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्माणं आउअवज्जाणं अंतो-मुहुत्तमावाधं मोत्तुण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं, जं विदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण सागरोवमसहस्सस्स सागरोवमसदस्स सागरोवमपण्णासाए सागरोवमपणुवीसाए सागरोवमस्स तिण्णि-सत्तभागा सत्त-सत्तभागा

हीन भी प्रदेशरचना होती है, क्योंकि, अथवा ' उक्कस्सेण जाव पुव्वकोडि ति ' यह निर्देश चटित नहीं होता ।

शंका—ये जीव पूर्वकोटिसे अधिक आयुको क्यों नहीं बँधते हैं ?

समाधान—उक्त जीव स्वभावतः उससे अधिक आयुको नहीं बँधते हैं, अथवा अत्यन्ताभावसे निवृद्धशक्ति होनेसे वे अधिक आयुका बन्ध नहीं करते हैं ।

शंका—इन जीवोंके उक्त कर्मोंकी आबाधा अन्तर्मुहूर्त मात्र ही किसलिये कही जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि इन जीवोंकी आयु अन्तर्मुहूर्त प्रमाण ही होती है, अतएव अपनी आयुके विभागमें अन्तर्मुहूर्तता ही पायी जा सकती है ।

शेष कथन सुगम है ।

पंचेन्द्रिय असंज्ञी, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय जीवोंके आयु कर्मसे रहित सात कर्मोंकी अन्तर्मुहूर्त मात्र आबाधाको छोड़कर प्रथम समयमें जो प्रदेशपिण्ड निष्कित है वह बहुत है, जो प्रदेशपिण्ड द्वितीय समयमें निष्कित है वह उससे विशेषहीन है, जो प्रदेशपिण्ड तृतीय समयमें निष्कित है वह उससे विशेषहीन है; इस प्रकार विशेषहीन विशेषहीन होकर उत्कृष्टसे हजार सागरोपमोंके, सौ सागरोपमोंके, पचास सागरोपमोंके और पच्चीस सागरोपमोंके चार कर्मों, मोहनीय एवं नाम-गोत्र कर्मोंके क्रमसे सात भागोंमेंसे परिपूर्ण तीन भाग (३।७), सात भाग (७।७)

बे-सत्तभागा पडिवुण्णा ति ॥ १०८ ॥

एत्थ पुब्बाणुपुब्बीए जेण णिहेसो कदो तेण असण्णिपंविदियाणं सागरोवमसदस्सस्स तिण्णि-सत्तभागा चटुण्णं कम्माणमणुक्कस्सट्ठिदी^१ होदि, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा-गोदाणं बे-सत्तभागा । चउरिंदियाणं सागरोवमसदस्स तिण्णि-सत्तभागा चटुण्णं कम्माण-मुक्कस्सट्ठिदी होदि, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा-गोदाणं बे-सत्तभागा । तीईदिय-पज्जत्तएसु सागरोवमपण्णासाए तिण्णि-सत्तभागा चटुण्णं कम्माणं उक्कस्सट्ठिदी, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा-गोदाणं बेसत्तभागा होदि । बीईदियपज्जत्तएसु सागरोवमपणुबीसाए तिण्णि-सत्तभागा चटुण्णं कम्माणमुक्कस्सट्ठिदी, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा-गोदाणं बे-सत्तभागा होदि । बादरएईदियपज्जत्तएसु सागरोवमाए तिण्णि-सत्तभागा चटुण्णं कम्माण-मुक्कस्सट्ठिदी, मोहणीयस्स सत्त-सत्तभागा, णामा-गोदाणं बे-सत्तभागा होदि । एत्थ एदाओ ट्ठिदीओ तेरासियकमेण जाणिद्वण आणेदव्वाओ । सत्तरिकोडाकोडिरूवेहि सत्त-वाससदस्समोवट्ठिय लद्धे सग-सगकम्म^२ट्ठिदीणं सागरोवमसलागाहि गुणिदे इच्छिदजीवसमा-सकम्मट्ठिदीणमाबाहाओ होति । सेसं जाणिय वत्तवं ।

और दो भागों (२।७) तक चला गया है ॥ १०८ ॥

यहाँ सूत्रमें चूँकि पूर्वानुपूर्वीके क्रमसे निर्देश किया गया है, अतः असंखी पंचेन्द्रिय जीवोंके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति हजार सागरोपमोंके तीन-सात भाग ($\frac{3}{7}$) प्रमाण, मोहनीयकी उत्कृष्ट स्थिति सात-सात भाग ($\frac{7}{7}$) प्रमाण, और नाम-गोत्रकी दो-सात भाग ($\frac{2}{7}$) प्रमाण है । चतुरिन्द्रिय जीवोंके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति सौ सागरोपमोंके तीन-सात भाग प्रमाण, मोहनीयकी सात-सात भाग प्रमाण और नाम-गोत्रकी दो-सात भाग प्रमाण है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति पचास सागरोप-मोंके तीन-सात भाग, मोहनीयकी सात-सात भाग और नाम-गोत्रकी दो-सात भाग प्रमाण है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति पच्चीस सागरोपमोंके तीन-सात भाग, मोहनीयकी सात-सात भाग और नाम-गोत्रकी दो-सात भाग प्रमाण है । बादर एकैन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें चार कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपमके तीन-सात भाग, मोहनीयकी सात-सात भाग और नाम-गोत्रकी दो-सात भाग प्रमाण है । यहाँ इन स्थितियोंको त्रैराशिक क्रमसे जानकर ले जाना चाहिये । सत्तर कोड़ाकोड़ रूपोंसे सात हजार वर्षोंको अपवर्तित करके जो लब्ध हो उसे अपनी कर्मस्थितियोंकी सागरोपमशला-काओं द्वारा गुणित करनेपर अभीष्ट जीवसमासकी कर्मस्थितियोंकी आबाधार्थ होती है । शेष कथन जानकर करना चाहिये ।

१ अ-आ-काप्रतिषु 'सहस्र' इति पाठः । २ अप्रती 'कम्माणमणुक्कट्ठिदी', आ-काप्रत्योः 'कम्माणमणुक्कस्सट्ठिदी' इति पाठः । ३ ताप्रती 'गोदाणं चेय वेत्तभागा' इति पाठः । ४ ताप्रती 'सगकम्म' इति पाठः ।

पंचिंदियाणमसणीणं चउरिंदियाणं तीइंदियाणं बीइंदियाणं
बादरएइंदियपज्जत्तयाणमाउअस्स पुव्वकोडित्तिभागं वेमासं सोलस-
रादिंदियाणि सादिरेयाणि चत्तारिवासाणि सत्तवाससहस्साणि सादिरे-
याणि आबाहं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुगं,
जं विदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं, जं तदियसमए
पदेसग्गं निसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव
उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो पुव्वकोडि त्ति ॥१०९॥

असण्णपंचिंदियपज्जत्ताणं पुव्वकोडित्तिभागो आबाहा होदि, तेसु भुंजमाणाउअस्स
पुव्वकोडिपमाणस्स उवलंभादो । चउरिंदिएसु उक्कस्साबाहा वे मासा, तत्थ सव्वुक्कस्स-
भुंजमाणाउअस्स छम्मासपमाणतुवलंभादो । तेइंदिएसु सोलसरादिंदियाणि सादिरेयाणि
उक्कस्साबाहा होदि, तेसु एणवण्णरादिंदियमेत्तपरमाउदंसणादो । बीइंदिएसु चत्तारिवासाणि
उक्कस्साबाहा होदि, तत्थ बारसवासमेत्तपरमाउदंसणादो । बादरेइंदियपज्जत्तएसु सत्तसहस्स-
तिणिसदत्तेतीसवासाणि चत्तारिमासा च उक्कस्साबाहा होदि, तत्थ बावीससहस्समेत्त-

असंखी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक
जीवोंके आयु कर्मकी क्रमशः पूर्वकोटिके तृतीय भाग, दो मास साधिक सोलह दिवस,
चार वर्ष, और साधिक सात हजार वर्ष प्रमाण आबाधाको छोड़कर जो प्रदेशपिण्ड प्रथम
समयमें निषिक्त है वह बहुत है, जो प्रदेशपिण्ड द्वितीय समयमें निषिक्त है वह उससे
विशेषहीन है, जो प्रदेशपिण्ड तृतीय समयमें निषिक्त है वह उससे विशेषहीन है,
इस प्रकार उत्कर्षसे फल्योपमके असंख्यातवें भाग व पूर्वकोटि तक विशेषहीन विशेषहीन
होता गया है ॥ १०९ ॥

असंखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुकर्मकी आबाधा पूर्वकोटिके त्रिभाग प्रमाण
होती है, क्योंकि, उनमें भुज्यमान आयु पूर्वकोटि प्रमाण पायी जाती है । चतुरिन्द्रिय
जीवोंमें उसकी उत्कृष्ट आबाधा दो मास प्रमाण होती है, क्योंकि, उनमें सर्वोत्कृष्ट भुज्यमान
आयु छह मास प्रमाण पायी जाती है । त्रीन्द्रिय जीवोंमें उत्कृष्ट आबाधा साविक सोलह
दिवस प्रमाण होती है, क्योंकि, उनमें उन्नंवास दिवस प्रमाण उत्कृष्ट आयु देकी जाती है ।
द्वीन्द्रिय जीवोंमें चार वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आबाधा होती है, क्योंकि, उनमें बारह वर्ष
प्रमाण उत्कृष्ट आयु देकी जाती है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें उत्कृष्ट आबाधा सात
हजार तीन सौ तेतीस वर्ष व चार मास प्रमाण होती है, क्योंकि, उनमें बाईस हजार वर्ष

समाउदंसणादो । एदाओ आबाहाओ वज्जिदूण पदेसरचना कीरदि ति उत्तं होदि । पदेसविण्णासस्स आयाओ पुण असण्णिपंचिदियपज्जत्तएसु आउअस्स पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदि-
भागमेत्तो, तत्थ पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तणिरयाउट्ठिदीए बंधुवलंभादो । चउरिदि-
यादीणं आउअस्स पदेसविण्णासायाओ पुव्वकोट्टिमेत्तो चेव, तत्थ एदम्हादो अहियबंधा-
भावादो । सेसं सुगमं ।

पंचिदियाणमसण्णीणं चउरिंदियाणं तीइंदियाणं बीइंदियाणं
बादरेइंदियअपज्जत्तयाणं सुहुमेइंदियपज्जत्तअपज्जत्तयाणं सत्तण्हं
कम्माणमाउववज्जाणमंतोमुहुत्तयाबाधं मोत्तूण जं पढमसमए पदेसग्गं
णिसित्तं तं बहुगं, जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं,
जं तदियसमए पदेसग्गं निसित्तं तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं
विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण सागरोवमंसदस्स सागरोवमपण्णासाए
सागरोवमपणुवीसाए सागरोवमस्स तिणिसत्तभागा, सत्त-सत्तभागा,
बे-सत्तभागा पल्लिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण उणया पल्लिदोवमस्स
असंखेज्जदिभागेण उणया ति ॥ ११० ॥

प्रमाण उत्कृष्ट आयु देखी जाती है । इन आबाधाओंको छोड़कर प्रदेशरचना की जाती है, यह उक्त कथनका अभिप्राय है ।

परन्तु अस्संजी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें आयु कर्मके प्रदेशविन्यासका आयाम पच्योपमके अस्संख्यातवें भाग प्रमाण है, क्योंकि, उनमें पच्योपमके अस्संख्यातवें भाग प्रमाण नारकायुका स्थितिबन्ध पाया जाता है । चतुरिन्द्रिय आविक जीवोंके आयु कर्मके प्रदेश-विन्यासका आयाम पूर्वकोटि प्रमाण ही है, क्योंकि, उनमें इससे अधिक स्थितिबन्धका अभाव है । शेष कथन सुगम है ।

असंजी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय द्वीन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक एवं अपर्याप्तक जीवोंके आयु कर्मसे रहित शेष सात कर्मोंकी अन्तर्मुहूर्त मात्र आबाधाको छोड़कर प्रथम समयमें जो प्रदेशपिण्ड निष्कित है वह बहुत है, द्वितीय समयमें जो प्रदेशपिण्ड निष्कित है वह उससे विशेषहीन है, तृतीय समयमें जो प्रदेशपिण्ड निष्कित है वह उससे विशेषहीन है, इस प्रकार उत्कृष्टसे सौ सागरोपम, पचास सागरोपम, पच्चीस सागरोपम और एक सागरोपमके सात भागोंमेंसे पच्योपमके अस्संख्यातवें भागसे हीन तीन, सात और दो भाग तक विशेषहीन विशेषहीन होता चला गया है ॥ ११० ॥

१ ताप्रतौ 'उक्कस्सेण [सागरोवमसहस्सस] सागरोवम ' इति पाठः ।

एत्थ अपज्जत्तसदो असण्णिपंचिदियादिसु पादेक्कमहिंसंबवणिज्जो, तस्संबवेण विणा पउणरुत्तिक्कप्पसंवादो । असण्णिपंचिदियअपज्जत्तप्पहुडि जाव बीइंदियअपज्जत्तो त्ति ताव एदेसिं द्विदीयो पल्लिदोवमस्स संखेज्जदिभागेण उग्गाओ । बादरेइंदियअपज्जत्त-सुहुमेइंदिय-पज्जत्तापज्जाणमुक्कस्साउद्विदीयो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणसागरोवममेत्ताओ । सेसं सुगमं । एवमणंतरोवणिधा समत्ता ।

परंपरोवणिधाए पंचिदियाणं सण्णीणमसण्णीणं पज्जत्तयाणं अट्ठण्णं कम्माणं जं पढमसमए पदेसमं तदो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणा, एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव उक्कस्सिया द्विदी त्ति ॥ १११ ॥

विसेसहीणकमेण गच्छता निसेगा किं कत्थ वि दुगुणहीणा जादा त्ति पुच्छिदे असंखेज्जगोवुच्छविसेसे गंतूण दुगुणहीणा जादा त्ति जाणावणहं परंपरोवणिधा आगदा । पढमणिसेगादो प्पहुडि पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणा त्ति वयणेण कम्मद्विदिअन्तरे असंखेज्जाओ दुगुणहीणीयो अत्थि त्ति णव्वदे । तं जहा—पल्लिदोवमस्स

सूत्रमें प्रयुक्त अपर्याप्त शब्दका सम्बन्ध असंज्ञी पंचेन्द्रिय आदिक जीवोंमेंसे प्रत्येकके साथ करना चाहिये, क्योंकि, उसका सम्बन्ध न करनेसे पुनरुक्ति दोषका प्रसंग आता है । असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकसे लेकर द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक तक इन जीवोंकी स्थितियों पत्योपमके संख्यातवर्षे भागसे हीन हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक और सूक्ष्म वकेन्द्रिय पर्याप्तक व अपर्याप्तक जीवोंकी उत्कृष्ट स्थितियों पत्योपमके असंख्यातवर्षे भागसे हीन सागरोपम प्रमाण हैं । शेष कथन सुगम है । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आठ कर्मोंका जो प्रथम समयमें प्रदेशाश्रय है उससे पत्योपमके असंख्यातवर्षे भाग जाकर दुगुणहीन है, इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक दुगुणहीन दुगुणहीन होता चला गया है ॥ १११ ॥

विशेषहीनताके क्रमसे जाते हुए निषेक कहींपर दुगुण हीन भी हो जाते हैं अथवा नहीं होते हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तरमें कहते हैं कि असंख्यात गोपुच्छविशेष जाकर वे दुगुण हीन हो जाते हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ परम्परोपनिधाका अवतार हुआ है । प्रथम निषेकसे लेकर पत्योपमके असंख्यात बहुभाग जाकर दुगुण हीन होते हैं, इस वचनसे कर्मस्थितिके भीतर असंख्यात दुगुणहीनियां हैं, यह जाना जाता है । यथा—

असंखेज्जदिभागं गंतुण जदि एगा दुगुणहाणिसलागा लब्भदि तो कम्मट्ठिदिअम्भंतरसंखेज्ज-
पलिदोवमस्स केत्तियाओ दुगुणहाणिसलागाओ लभामो त्ति पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण
कम्मट्ठिदीए ओवट्ठिदाए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो उवलम्भदि त्ति आबाधुणकम्मट्ठिदीए
एगगुणहाणीए भागे हिदाए रूक्खणाणागुणहाणिसलागाओ एक्किस्से गुणहाणिसलागाए
असंखेज्जा भागा च आगच्छंति । कुदो ? णाणागुणहाणिसलागाहि कम्मट्ठिदीए ओवट्ठिदाए
एगगुणहाणी आगच्छदि त्ति गुरुवदेसादो । तम्हा सव्वकम्माणं णाणागुणहाणि-
सलागाओ सच्छेदाओ होति । अद्धगुणहाणिणा आबाधाऊणकम्मट्ठिदीए ओवट्ठिदाए
जदि अच्छेदरासी आगच्छदि तो णाणागुणहाणिसलागाहि सयलकम्मट्ठिदीए
ओवट्ठिदाए सादियेगुणहाणिअद्धानमागच्छदि । कुदो ? णाणागुणहाणिसलागाहि
अहियावाहाए ओवट्ठिदाए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो । ण च णाणागुणहा-
णिसलागाणं गुणहाणिअद्धानस्स वा सच्छेदत्तं, तहोवएसामावादो । तम्हा गुणहाणिणा
आबाधूणकम्मट्ठिदीए ओवट्ठिदाए णाणागुणहाणिसलागाओ आगच्छंति । पुणो ताहि
वि ताए ओवट्ठिदाए एगगुणहाणिअद्धानमागच्छदि त्ति वेत्तव्वं । एत्थ गुणहाणि-
अद्धानं सव्वकम्माणमवट्ठिदं । कुदो ? अण्णोण्णभत्थरासीणं विसरिसत्तन्नुवगमादो । तदो

पद्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर यदि एक दुगुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो कर्म-
स्थितिके भीतर असंख्यात पद्योपमोंमें कितनी दुगुणहानिशलाकायें प्राप्त होंगी, इस
प्रकार पद्योपमके असंख्यातवें भागसे कर्मस्थितिको अपवर्तित करनेपर पद्योपमका
असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है । अत एव आबाधासे हीन कर्मस्थितिमें एक गुणहानिका
भाग देनेपर एक कम नानागुणहानिशलाकायें और एक गुणहानिशलाकाके असंख्यात
बहुभाग आते हैं, क्योंकि, नानागुणहानिशलाकाओंका कर्मस्थितिमें भाग देनेपर एक
गुणहानि लब्ध होती है, ऐसा गुरुका उपदेश है । इस कारण सब कर्मोंकी नानागुण-
हानिशलाकायें सछेद् होती हैं । अर्ध गुणहानिका आबाधासे हीन कर्मस्थितिमें भाग
देनेपर यदि अछेद् राशि प्राप्त होती है, (ऐसा अभीष्ट है) तो नानागुणहानिशलाकाओंका
समस्त कर्मस्थितिमें भाग देनेपर सांखिक गुणहानि अश्वान आता है, क्योंकि, नानागुणहा-
निशलाकाओंसे अधिक आबाधाको अपवर्तित करनेपर एक रूपका असंख्यातवां भाग पाया
जाता है । परन्तु नानागुणहानिशलाकायें अथवा गुणहानिअश्वान सछेद् नहीं हैं । क्योंकि,
ऐसा उपदेश नहीं है । इस कारण आबाधासे हीन कर्मस्थितिमें गुणहानिका भाग देनेपर
नानागुणहानिशलाकायें प्राप्त होती हैं । पश्चात् उनके द्वारा उसीको अपवर्तित करनेपर
एक गुणहानि अश्वान आता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । यहां सब कर्मोंका गुणहानि-
अश्वान अवस्थित है, क्योंकि, अन्योन्याभ्यस्त राशियां विसदृश स्वीकार की गई हैं ।

१ ताम्रौ ‘एगा गुणहाणि-’ इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु ‘आबाहाण’ इति पाठः

णामा-मोदणानुगुणहाणिसलागाओ दुम्माणा-
हियाओ । मोहणीयस्स णाणागुणहाणिसलागाओ आहुट्टगुणओ । आउअस्स णाणागुण-
हाणिसलागाओ णामा-मोदणानुगुणहाणिसलागाणं संखेज्जदिभागमेत्तीयो । एवमसण्णीण-
मट्ठणं कम्माणं पि तेरासियं काउय णाणागुणहाणिसलागाओ उप्पाययव्वाओ ।
असण्णीणमुक्कस्सट्ठिदिबंघो^१ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो । गुणहाणिअट्ठाणं पि
पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तं चेव । किंतु गुणहाणिअट्ठाणादो असण्णीणं उक्कस्साउ-
ट्ठिदिबंघो असंखेज्जगुणो^२ ति एत्थ वि असंखेज्जाओ णाणागुणहाणिसलागाओ लब्भंति ति
वेत्तव्वं । एवमसण्णिपंचिदियपज्जत्तणाणावरणादीणं णाणागुणहाणिसलागाओ तेरासिएण
आणेदव्वाओ ।

संपहि एत्थ णाणागुणहाणिसलागाणं गुणहाणीए च पमाणपरुवणट्ठमुत्तरमुत्तं भणदि-

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं असंखेज्जाणि पलिदो-

वमवग्गमूलाणि^३ ॥ ११२ ॥

एत्थ पलिदोवमस्स वग्गमूलमिदिहुत्ते पलिदोवमपदमवग्गमूलस्सेव गहणं कायव्वं, ण
विदियादीणं; पलिदोवमस्स वग्गमूले गहिदे पदमवग्गमूलस्सेव उप्पत्तिदंसणादो । ताणि च
इत्थ कारण नाम व गोत्रकी नानागुणहानिशलाकाओंकी अपेक्षा चार कर्मोंकी नानागुण-
हानिशलाकायें द्वितीय भागसे अधिक हैं । मोहनीयकी नानागुणहानिशलाकायें उनसे
साढेतीन गुणी हैं । आयुर्कर्मकी नानागुणहानिशलाकायें नाम-गोत्रकी नानागुणहानिशलाका-
ओंके संख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

इसी प्रकार असंखी जीवोंके आठों कर्मोंकी नानागुणहानिशलाकाओंको त्रैराशिक
करके उत्पन्न कराना चाहिये । असंखी जीवोंके आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध पत्त्योपमके
असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है । गुणहानिअध्वान भी पत्त्योपमके असंख्यातवें भाग
प्रमाण ही है । किन्तु गुणहानिअध्वानसे असंखी जीवोंके आयुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध
असंख्यातगुणा होता है, अतएव यहाँ भी असंख्यात नाना गुणहानिशलाकायें पायी जाती हैं,
ऐसा ग्रहण करना चाहिये । इसी प्रकार असंखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके ज्ञानावरणादिक
कर्मोंकी नानागुणहानिशलाकाओंको त्रैराशिक द्वारा ले आना चाहिये ।

अब यहाँ नानागुणहानिशलाकाओं और गुणहानिके प्रमाणकी प्ररूपणाके लिये
आगेका सूत्र कहते हैं—

एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पत्त्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है ॥ ११२ ॥

यहाँ 'पत्त्योपमका वर्गमूल' ऐसा कहनेपर पत्त्योपमके प्रथम वर्गमूलका ग्रहण
करना चाहिये, द्वितीयादि वर्गमूलोंका नहीं; क्योंकि, पत्त्योपमके प्रथम वर्गमूलको ग्रहण
करनेपर प्रथम वर्गमूलकी ही उत्पत्ति देखी जाती है । वे वर्गमूल असंख्यात हैं, क्योंकि,

१ अ-आ-काप्रतिषु 'उक्कस्साउट्ठिदिबंघो' इति पाठः । २ अ-आ-काप्रतिषु 'उक्कस्साउट्ठिदिबंघो
असंखेज्जगुणा' इति पाठः । ३ एकस्मिन् द्विगुणवृद्धयोरन्तरे स्थितिस्थानानि पत्त्योपमवर्गमूलान्यसंख्येयानि ।
क. प्र. (मल्ल.) १, ८८

पदमवगममूलाणि असंखेज्जाणि, जाणागुणहाणिसलागां हि कम्मट्ठिदीए ओवट्ठिदाए गुणहाणिपमाणुप्पत्तीदो । एसा गुणहाणी सव्वकम्माणं सरिसा; कम्मट्ठिदिभागहारमूद-
जाणागुणहाणिसलागाणं कम्मट्ठिदिपडिभागेण पमाणत्तुवलंभादो ।

**जाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवगममूलस्स
असंखेज्जदिभागो' ॥ ११३ ॥**

एव मोहणीयस्स जाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमस्स किंचूणद्धच्छेदनयमेत्ताओ । तं कवं णव्वदे ? चरिमगुणहाणिदव्वादो पदमणिसेयो असंखेज्जगुणो ति पदेसविरइयअपा-
बहुयादो । जाणावरणादीणं पुण जाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमपदमवगममूलमद्धच्छेद-
णेहिंतो योवाओ । कुदो ? एदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्मत्ये कदे असंखेज्ज-
पलिदोवमविदियवगममूलुप्पत्तीदो । तं पि कुदो णव्वदे ? मोहणीयणाणागुणहाणिसलागाणं
दो-तिणि-सत्तभागेसु विसेसाहियविदियवगममूलछेदाणुवलंभादो ।

नानागुणहाणिशलाकाओंका कर्मस्थितिमें भाग देनेपर गुणहानिका प्रमाण प्राप्त होता है ।
यह गुणहानि सब कर्मोंकी समान है, क्योंकि, कर्मस्थितिके भागहारभूत नानागुणहाणि-
शलाकाओंका प्रमाण कर्मस्थितिप्रतिभागसे पाया जाता है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पत्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ ११३ ॥

यहां मोहनीयकी नानागुणहाणिशलाकायें पत्योपमके कुछ कम अर्धच्छेदोंके
बराबर हैं ।

शंका—वह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—वह ' अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे प्रथम निषेक असंख्यातगुणा है '
इस प्रदेशविरहित अल्पबहुत्वसे जाना जाता है ।

परन्तु नानावरणादिकोंकी नानागुणहाणिशलाकायें पत्योपम सम्बन्धी प्रथम
वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे स्तोक हैं, क्योंकि, इनका विरलन कर द्विगुणित करके परस्पर
गुणा करनेपर पत्योपमके असंख्यात द्वितीय वर्गमूल उत्पन्न होते हैं ।

शंका—वह भी कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान—चूँकि मोहनीयकी नानागुणहाणिशलाकाओंके दो-तीन सात भागोंमें
विशेष अधिक द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद पाये जाते हैं, अतः इसीसे उतने द्वितीय
वर्गमूलोंकी उत्पत्तिका ज्ञान होता है ।

१ नानाद्विगुणद्विरस्थानानि चांगुलवर्गमूलच्छेदनकासंख्येयतमभागप्रमाणानि । एतदुक्तं भवति—
अंगुलमात्रक्षेत्रगतप्रदेशाशेषं प्रथमं वर्गमूलं तन्मनुष्यप्रमाणद्विराशिषण्वतिच्छेदनविधिना तावच्छिद्यते
यावद् भागं न प्रपच्छति । तेषां च छेदनकानामसंख्येयतमे भागे यावन्ति छेदकानि तावत्सु यावानाकाश-
प्रदेशाश्विस्तावत्प्रमाणानि नानाद्विगुणस्थानानि भवन्ति । क. प्र. (मध्य) १, ८८. २ ताप्रती ' पलिदो-
वमस्स विहिंय ' इति पाठः ।

प्राणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ॥ ११४ ॥

कुदो ? थोवूणपलिदोवमद्वच्छेदणयपमानत्तादो थोवूणपलिदोवमपढमवग्गमूलच्छेद-
णयमेत्तादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ ११५ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणमपज्जत्तयाणं चउरिंदिय-तीइंदिय-
बीइंदिय-एइंदिय-बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्माणमाउव-
वज्जाणं जं पढमसमए पदेसगं तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-
भागं गंतूण दुगुणहीणा, एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव
उक्कस्सिया ट्ठिदि ति ॥ ११६ ॥

एत्य जथा सण्णिपज्जत्तणाणावरणादीणं परुवणा कदा तथा कायब्बा । णवरि एत्य
अप्पणो ट्ठिदीणं पमाणं जाणिदूण वत्तव्वं ।

**एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पलिदोवमवग्ग-
मूलाणि ॥ ११७ ॥**

सुगममेदं ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥ ११४ ॥

कारण यह कि वे पत्योपमके कुछ कम अर्धच्छेदोंके बराबर होनेसे पत्योपमके
प्रथम वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे कुछ कम हैं ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ ११५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पत्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल हैं ।

संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय तथा
एकेन्द्रिय बादर व सूक्ष्म इन पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके आयुको छोड़ शेष सात कर्मोंका
जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें है उससे पत्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर वह दुगुणहीन
हो जाता है, इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक वह दुगुणहीन दुगुणहीन होता जाता है ॥ ११६ ॥

यहां जैसे संज्ञी पर्याप्तकके ज्ञानावरणादिकोंकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही करना
चाहिये । विशेषता इतनी है कि यहां अपनी स्थितियोंका प्रमाण जानकर कहना चाहिये ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पत्योपमके असंख्यात वर्गमूलोंके बराबर है ॥ ११७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

गाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११८ ॥

एदं पि सुग्गं ।

गाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ॥ ११९ ॥

गुणहाणिणा कम्मट्ठिदीए ओवट्ठिदाए तेसिमुप्पत्तिदंसणादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ १२० ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि । एवं परम्परोवाणिधा समत्ता ।

संपदि सेडिपस्वणाए सुचिदाणमवहार-भागाभाग-अप्पाबहुआणियोगद्वाराणं पस्वणं कस्सामो । तं जहा—संवासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं पढमाए ट्ठिदीए पदेसपमाणेण केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? दिवङ्गुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । एदस्स कारणं वुच्चदे । तं जहा—विदिद्यादिगुणहाणिद्वे पढमगुणहाणिद्वपमाणेण कदे चरिसगुणहाणि-

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पत्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ॥ ११८ ॥

यह सूत्र भी सुग्गं है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥ ११९ ॥

कारण कि गुणहानि द्वारा कर्मस्थितिको अपवर्तित करनेपर उनकी उत्पत्ति देखी जाती है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ १२० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पत्योपमके असंख्यात वर्गमूल हैं । इस प्रकार परम्परोप-निधा समाप्त हुई ।

अब श्रेणिप्ररूपणा द्वारा सूचित अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है—सब स्थितियोंका प्रदेशपिण्ड प्रथम स्थितिके प्रदेशपिण्डके प्रमाण द्वारा कितने कालसे अपहत होता है ? उक्त प्रमाणके द्वारा वह डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहत होना है । इसका कारण घतलाते हैं । वह इस प्रकार है—द्वितीयादिक गुणहानियोंके द्रव्यको प्रथम गुणहानिके द्रव्यप्रमाणसे करनेपर वह अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे रहित प्रथम गुणहानिका द्रव्य होता है । उसका प्रमाण यह है—

दि. गु.	१२८	१२०	११२	१०४	९६	८८	८०	७२
स. "	६४	६०	५६	५२	४८	४४	४०	३६
स. "	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८
प. "	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९
योग	२४०	२२५	२१०	१९५	१८०	१६५	१५०	१३५
अन्तिम								
गुण.	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९
प्रथम								
गुण.	२५६	२४०	२२४	२०८	१९२	१७६	१६०	१४४

द्व्येणपदमगुणहाणिद्व्यं होदि । तस्स पमाणमेदं २४० । २२५ । २१० । १९५ । १८० । १६५ । १५० । १३५ । चरिमगुणहाणिद्व्यपमाणमेदं १६ । १५ । १४ । १३ । १२ । ११ । १० । ९ । एदस्मि द्व्ये पुव्वद्व्यम्हि पक्खित्ते पदमगुणहाणिद्व्यपमाणं होदि । २५६ । २४० । २२४ । २०८ । १९२ । १७६ । १६० । १४४ । पुणो एदं पदमगुणहाणिद्व्यं दोखंडे कावूण तत्थ एगखंडमघोसिरं करिय विदियखंडपासे ठविदे एत्तियं होदि । २०० । २०० । २०० । २०० । २०० । २०० । २०० । २०० । एदस्स पमाणं पदमगिसेयस्स तिण्णि-चदुम्भागा सादिरेया । पुणो एत्थ सादिरेये अवणिदे सुद्धा पदमगिसेयस्स तिण्णि-चदुम्भागा चेव चेद्वंति । तेसिं पमाणमेदं १९२ । १९२ । १९२ । १९२ । १९२ । १९२ । सादिरेयं पि एदं ८ । ८ । ८ । ८ । ८ । ८ । ८ । ८ । पदमगुणहाणिद्व्ये वि समकरणे कीरमाणे पदमगिसेयस्स तिण्णिचदुम्भागा सादिरेया होति । पुणो तेसु चदुम्भागे अवणिदे सेसं बे-चदुम्भागपमाण-मेत्तियं होदि १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । १२८ । सेसचदुम्भागपमाणमेदं ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । ६४ । पुणो इमं चदुम्भागं घेतूण पुव्विल्लतिण्णि-चदुम्भागेसु पक्खित्ते गुणहाणिमेत्तपदमगिसेया होति । तेसिं पमाणमेदं २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । २५६ । पुणो पदमगिसेयस्स अद्वाणि गुणहाणिमेत्ताणि अत्थि । ताणि पदमगिसेयपमाणेण कदे गुणहाणीए अद्धमेत्ता पदमगिसेया होति । तेसिं पमाणमेदं २५६ । २५६ । २५६ ।

अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका प्रमाण यह है । इस द्रव्यको पूर्वे द्रव्यमें मिलनेपर प्रथम गुण-हानिके द्रव्यका प्रमाण होता है । (संदृष्टिमें देखिये) । पुनः प्रथम गुणहानिके इस द्रव्यके दो खण्ड करके उनमेंसे एक खण्डको अधःशिर करके द्वितीय खण्डके पार्श्वमें स्थापित करनेपर इतना है— $२००+२००+२००+२००+२००+२००+२००+२००=१६००$ । इसका प्रमाण प्रथम निषेकके तीन चतुर्थ भाग (३) से कुछ (८) अधिक होता है । इसमेंसे अधिकताके प्रमाणको कम कर देनेपर अवशिष्ट प्रथम निषेकके शुद्ध तीन चतुर्थ भाग ही रहते हैं— $(२००-८)=१९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२$, साधिकताका भी प्रमाण यह है— $८, ८, ८, ८, ८, ८, ८, ८$ । प्रथम गुणहानिके द्रव्यका भी समकरण करनेपर $(१६००÷८=२००)$ वह प्रथम निषेकके साधिक (८) तीन चतुर्थ भाग प्रमाण होता है । फिर उनमेंसे एक चतुर्थ भागको अलग कर देनेपर शेष दो चतुर्थ भागोंका प्रमाण इतना होता है— $[१९२-६४=१२८=\frac{२५६ \times २}{४}] १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८$ ।

अवशेष चतुर्थ भागका प्रमाण यह है— $६४, ६४, ६४, ६४, ६४, ६४, ६४, ६४$ । अब इस चतुर्थ भागको ग्रहण करके पूर्वके तीन चतुर्थ भागोंमें मिला देनेपर गुणहानिके बराबर प्रथम निषेक होते हैं । उनका प्रमाण यह है— $(१९२+६४=२५६, २५६, २५६, २५६, २५६, २५६, २५६, २५६)$ । प्रथम निषेकके अर्ध भाग गुणहानिके बराबर अर्थात् आठ हैं $(२ \times २ \times २ \times २ \times २ \times २ \times २ \times २=१५६)$ । उनको प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर गुणहानिके अर्ध भाग प्रमाण

२५६ । पुणो एदे^१ गुणहाणिअद्वमेत्तपढमणिसेगे धेतूण गुणहाणिमेत्तपढमणिसेगेसु पक्खित्तेसु दिवङ्गुणहाणिमेत्तपढमणिसेया होंति २५६ । १२ । पुणो सेसअधियदव्वे वि पढमणि-
सेयपमाणेण कदे तस्सद्धमेत्तं होदि १२८ । पुणो एदमप्पहाणं काट्ठण पढमणिसेगेण दिवङ्गुणहाणीए गुणिदाए सव्वदव्वमेत्तियं होदि ३०७२ । पुणो एदग्घि दिवङ्गुणहाणीए १२ । भागे हिदे पढमणिसेयो आगच्छदि । एवं^३ पढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वं दिवङ्गुण-
हाणिट्ठाणंतेण कालेण अवहिरिज्जदि ति सिद्धं ।

चिदियाए द्विदिए पदेसम्पमाणेण सव्वट्ठिदिपदेसगं केवचिरेण कालेण अवहिरि-
ज्जदि ? सादियेयदिवङ्गुणहाणिट्ठाणंतेण कालेण । तं जहा—दिवङ्गुणहाणीयो विरलेट्ठण
सव्वदव्वं समखंडं काट्ठण दिण्णे एक्केक्खस्स रुवस्स पढमणिसेयपमाणं पावदि । पुणो हेट्ठा
णिसेगभागहारं विरलेट्ठण उवरिमेरुवधरिदं समखंडं काट्ठण दिण्णे विरलणरूवं पढि
एगेग-गोबुच्छविसेयपमाणं पावदि । पुणो एदेण पमाणेण उवरिमसव्वरुवधरिदेसु अवणिदेसु
दिवङ्गुणहाणिमेत्तगोबुच्छविसेया अधिया होंति । पुणो उव्वरिददव्वं^४ पि दिवङ्गुणहाणि-
मेत्तविदियणिसेयपमाणं होदि । पुणो अधियगोबुच्छविसेसे विदियणिसेयपमाणेण कस्सामो ।

प्रथम निषेक होते हैं । उसका प्रमाण यह है—२५६, २५६, २५६, २५६ । पञ्चात् गुणहानिके
अर्ध भाग प्रमाण इन प्रथम निषेकोंको ग्रहण करके गुणहानिके बराबर प्रथम निषेकोंमें मिला
देनेपर डेढ़ गुणहानि प्रमाण प्रथम निषेक होते हैं—२५६×१२ । अवशिष्ट अधिक द्रव्यको
भी प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर वह उसके अर्ध भागके बराबर होता है १२८ । अब
इसको गौण करके प्रथम निषेकसे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर सब द्रव्य इतना
होता है—२५६×१२=३०७२ । इसमें डेढ़ गुणहानिका (१२) भाग देनेपर प्रथम निषेक
प्राप्त होता है । इस प्रकार प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्य डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे
अपहत होता है, यह सिद्ध होता है ।

द्वितीय स्थिति सम्बन्धी प्रदेशात्रके प्रमाणसे सब स्थितियोंका प्रदेशापिण्ड कितने-
कालसे अपहत होता है ? वह साक्षिक डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहत होता है ।
यथा—डेढ़ गुणहानियोंको विरलित करके सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक
अंकके प्रति प्रथम निषेकका प्रमाण प्राप्त होता है (३०७२÷१२=२५६) । इसके नीचे
निषेकभागहारका विरलन कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड
करके देनेपर विरलन अंकके प्रति एक एक गोबुच्छविशेषका प्रमाण प्राप्त होता है
(२५६÷१६=१६) । इस प्रमाणसे ऊपरकी सब एक अंकके प्रति प्राप्त राशियोंका
अपनयन करनेपर डेढ़ गुणहानि प्रमाण गोबुच्छविशेष अधिक होते हैं (१६×१२=१९२) ।
अवशिष्ट द्रव्य भी डेढ़ गुणहानि मात्र द्वितीय निषेकके बराबर होता है (२४०×१२=२८८०) ।

१ ताप्रवी ' एदेण ' इति पाठः । २ ताप्रवी ' एदं ' इति पाठः । ३ प्रविषु ' एवं ' इति पाठः ।
४ आप्रवी ' उवरिददव्वं ' , ताप्रवी ' उवरि दव्वं ' इति पाठः ।

तं जहा—१६।१५।१।१६।१२ रूवणणिसेयभागहारमेतगोबुच्छविसेसे धेतूण
जदि एगं विदियणिसेयपमाणं लम्भदि, तो दिवङ्गुणहाणिमेतगोबुच्छविसेसे किं लभामो त्ति
पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए संदिट्ठीए चत्तारि पंचभागा होंति ४।५। पुणो
एदं दिवङ्गुणहाणीसु सरिसच्छेदं^१ काट्टण पक्खित्ते एत्तियं होदि ६४।५।^२ पुणो एदेण
सव्वदव्वे भागे हिदे विदियणिसेगो आगच्छदि ।

तदियाए ट्टिदीए पदेसग्गपमाणेण सव्वट्टिदिपदेसग्गं केवचिरेण कालेण अवहिरि-
जदि ? सादियेरूवाहियदिवङ्गुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिजदि १६।१४।१।
१६।२४। दोरूवणणिसेयभागहारमेतगोबुच्छविसेसेहिंतो जदि एगं तदियणिसेयपमाणं
लम्भदि तो तिण्णिगुणहाणिमेतगोबुच्छविसेसेसु केवडिए तदियणिसेगे लभामो त्ति पमाणेण
फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एत्तियं होदि १।५।७। पुणो एदम्मि दिवङ्गुणहाणिम्मि
पक्खित्ते एत्तियं होदि ९६।७ पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे तदियणिसेगो
आगच्छदि । एवं जाणिट्ठण उवरि जेदव्वं जाव पढमगुणहाणीए अढं गदं ति ।

अब अधिक गोबुच्छविशेषोंको द्वितीय निषेकके प्रमाणसे करते हैं । यथा—एक
कम निषेकभागहार प्रमाण गोबुच्छविशेषोंको ग्रहण कर यदि एक द्वितीय निषेकका प्रमाण
पाया जाता है, तो डेढ़ गुणहानि प्रमाण गोबुच्छविशेषोंमें कितना द्वितीय निषेकका प्रमाण
प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर वह पाँच
भागोंमेंसे चार भाग ($\frac{4}{5}$) प्रमाण होता है ।

उदाहरण—यहां निषेकभागहारका प्रमाण १६ और गोबुच्छविशेषका प्रमाण
भी १६ है; अतः निम्न प्रकार चैराशिक करनेपर उपर्युक्त प्रमाण प्राप्त होता है—
 $16 \times \frac{4}{5} = \frac{64}{5} = (2\frac{4}{5} \times 5) = 12\frac{4}{5} ।$



पुनः इसको समच्छेद करके डेढ़ गुणहानियोंमें मिलानेपर इतना होता है— $(1 + \frac{4}{5}) = \frac{9}{5} ।$
इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय निषेक प्राप्त होता है— $30\frac{1}{2} \div \frac{9}{5} = 16\frac{2}{3} ।$

तृतीय स्थिति सम्बन्धी प्रवेशाप्रमाणसे सब स्थितियोंका प्रवेशपिण्ड कितने
कालसे अपहत होता है ? वह साक्षिक एक अंकसे अधिक डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे
अपहत होता है । दो रूपोंसे कम निषेकभागहार प्रमाण गोबुच्छविशेषोंसे यदि एक
तृतीय निषेक प्राप्त होता है, तो तीन गुणहानियोंके बराबर गोबुच्छविशेषोंमें कितने तृतीय
निषेक प्राप्त होंगे; इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाणका भाग देनेपर इतना होता है—

उदाहरण—निषेकभागहार १६; गोबुच्छ १६; $16 \div 2 = 8$; $3\frac{1}{2} \times 8 = 28$ ।

इसको डेढ़ गुणहानियोंमें मिला देनेपर इतना होता है— $12 + \frac{28}{5} = \frac{88}{5} ।$ अब
इसका समस्त द्रव्यमें भाग देनेपर तृतीय निषेक आता है $30\frac{1}{2} \div \frac{88}{5} = 17\frac{1}{4} ।$ इस प्रकार
जानकर प्रथम गुणहानिका अर्ध भाग समाप्त होने तक ले जाना चाहिये ।

१ ताम्रौ 'सच्छेदं' इति पाठः । २ प्रतिषु ६४ इति पाठः ।

पुणो उवरिमणिसेयपमाणेण सव्वट्ठिदिपदेसग्गं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? बेगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण । तं जहा—दिवङ्गुणहाणिकखेतं पढमणिसेगविकखंभेण चत्तारि फालीयो काट्ठण पुणो तत्थ चउत्थफालिं घेतूण गुणहाणिअट्ठपमाणेण तिण्णि खंडाणि काट्ठण परावत्तिय तिण्णं फालीणं पासे ठविदेसु बेगुणहाणीयो होंति  अथवा, तेरासियकमेण आणेदव्वं । तं जहा—१६ । १२ । १ । १६ । १२ । ४ । णिसेयभागहारस्स तिण्णि-चदुन्नागमेतविसेसे घेतूण जदि एगं तदित्थ-णिसेयपमाणं लब्भदि तो आयामेण दिवङ्गुणहाणिकखंभेण णिसेयभागहारचदु-न्नागमेतविसेसेसु किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठिदाए गुणहाणीए अट्ठमागच्छदि ४ । पुणो एदम्मि दिवङ्गुणहाणिम्मि पक्खित्ते दोगुणहाणीयो भवंति १६ । पुणो एदाहि सव्वदव्वे भागे हिंदे तदित्थणिसेयो आगच्छदि । तदुवरि भागहारो वुच्चमाणे सादित्थे-वे-गुणहाणीयो वत्तव्वाओ । एवं णेदव्वं जाव पढमगुणहाणिचरिमसमओ ति । पुणो विदियगुणहाणिपढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? तिण्णि गुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण । तं जहा— दिवङ्गुणहाणिकखेतं ठविय  अट्ठेण

उससे अग्रिम निषेकके प्रमाणसे सब स्थितियोंका प्रदेशात्र कितने कालमें अपहृत होता है ? उक्त प्रमाणसे वह दोगुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा— डेढ़ गुणहानि मात्र क्षेत्रकी प्रथम निषेकके विस्तारप्रमाणसे चार फालियां करके पश्चात् उनमेंसे चतुर्थ फालिको ग्रहण कर गुणहानिके अर्ध प्रमाणसे तीन खण्ड करके परिवर्तन-पूर्वक तीन फालियोंके पार्श्व भागमें स्थापित करनेपर दो गुणहानियां होती हैं । (संरक्षि मूलमें देखिये ।)

अथवा, त्रैराशिकक्रमसे इसे ले आना चाहिये । यथा—निषेकभागहारके तीन चतुर्थ भाग मात्र विशेषोंको ग्रहण करके यदि वहांके एक निषेकका प्रमाण पाया जाता है, तो आयाम (?) व डेढ़ गुणहानि विषकम्भसे निषेकभागहारके चतुर्थ भाग मात्र विशेषोंमें वह कितना प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर गुणहानिका अर्ध भाग आता है ।

फिर इसको डेढ़ गुणहानियोंमें मिलानेपर दो गुणहानियां (१६) होती हैं । इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर वहांके निषेकका प्रमाण लब्ध होता है । उससे आगेके भागहारका कथन करनेपर साक्षिक दो गुणहानियां कहना चाहिये । इस प्रकार प्रथम गुणहानिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये ।

द्वितीय गुणहानि सम्बन्धी प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह कितने कालसे अपहृत होता है ? उक्त प्रमाणसे वह तीन गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा—डेढ़ गुणहानि प्रमाण क्षेत्रको स्थापित करके (संरक्षि मूलमें देखिये) अर्ध

पाडिय विदिअदस्सुवरि ठविदे तिण्णिगुणहाणीयो होंति । अथवा, दिवङ्गुणहाणीयो
अवेदूण एगगुणहाणिं चडिय इच्छामो त्ति एगरूवं विरलिय विगं करियं अण्णोण्णच्चत्थे कदे
उप्पणरासिणा दिवङ्गुणहाणीए गुणिदाए तिण्णिगुणहाणीयो होंति । २४ । पुणो एदाहि
सव्वदव्वे भागे हिदे विदियगुणहाणीए पढमणिसेगो आगच्छदि ।

पुणो तिस्से चेव विदियणिसेगपमाणेण सव्वदव्वं सादिरेयतिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरेण
कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा— ८ । १५ । १ । ८ । २४ । १ स्वरूपाणिसेयभागहारमेत्त-
गोबुच्छविसेसे धेतूण जदि एगपक्खेवसलागा लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठिदाए
एत्तियं होदि ८ । ५ । पुणो एदम्मि सरिसच्छेदं कादूण तिसुं गुणहाणीसु पक्खित्ते एत्तियं
होदि १२८ । ५ । पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे विदियणिसेयो आगच्छदि । एवं
[णेदव्वं] जाव विदियगुणहाणीए अदं गदं ति । तदो तण्णिसेयपमाणेण सव्वदव्वे
अवहिरिज्जमाणे चत्तारिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा—तिण्णिगुणहाणि-
क्खेतं ठविय पुवं व चत्तारिफालीयो कादूण तव्य तीहि फालीहि तदित्थणिसेओ होदि
त्ति चउत्थफाली अधिया होदि । पुणो इममहियफालिं तप्पमाणेण कस्सामो— ८ । १२ ।

भागसे फाड़कर द्वितीय अर्धे भागके ऊपर रक्खनेपर तीन गुणहानियां होती हैं । अथवा,
बेड़ गुणहानियोंको स्थापित करके चूँकि एक गुणहानि चढ़े हैं, अतः एक रूपका विरलन
करके द्विगुणित कर परस्परमें गुणित करनेपर उत्पन्न राशिसे बेड़ गुणहानिको गुणित
करनेपर तीन गुणहानियां (२४) होती हैं । अब इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय
गुणहानिका प्रथम निषेक आता है ।

उसी (द्वितीय) गुणहानिके द्वितीय निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्य साधिक तीन
गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा—एक कम निषेकभागद्वारा प्रमाण गोपुच्छ-
विशेषोंको ग्रहणकर यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त है, तो तीन गुणहानि मात्र गोपुच्छविशेषोंसे
कितनी प्रक्षेपशलाकायें प्राप्त होंगी ? इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित
करनेपर इतना होता है— $3 \times \frac{1}{2} = \frac{3}{2}$ । अब इसको समच्छेद करके तीन गुणहानियोंमें
मिलानेपर इतना होता है— $24 \div \frac{3}{2} = 16$ । इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय निषेक
आता है— $3072 \div 16 = 192$ । इस प्रकार द्वितीय गुणहानिका अर्धे भाग समाप्त होने
तक ले जाना चाहिये ।

पश्चात् उसके आगेके निषेकप्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह चार
गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है । यथा—तीन गुणहानि मात्र क्षेत्रको स्थापित
कर पूर्वके ही समान चार फालियां करके उनमेंसे तीन फालियोंसे वहांका निषेक होता
है । अतः चतुर्थ फालि अधिक है । अब इस अधिक फालिको उसके प्रमाणसे करते हैं—

१ अमत्तौ संदहिरियमग्ने 'भागहारमेत्त' इत्यतः पश्चादुपलभ्यते । २ ताप्रतौ 'तीडु' इति पाठः ।

१।८।४।२४। गिसेगभागहारतिणिण-चदुम्मागमेत्तगोवुच्छविसेसे धेतूण जदि एसो तदित्यणिसेगो लब्धदि तो एगफालिमेत्तगोवुच्छविसेसेसु किं लमामो त्ति पमाणेण फल्लगुणि-दिच्छाए ओवट्ठिदाए एत्तियं होदि ८। पुणो एदम्मि तिसुं गुणहाणीसु पक्खित्ते चत्तारि-गुणहाणीयो होति ३२। पुणो एदेण सव्वदव्वे^१ भागे हिदे तदित्यणिसेयो होदि। एवं जाणिदूण जेयव्वं जाव विदियगुणहाणिचरिमणिसेयो त्ति।

पुणो तदियगुणहाणिपढमणिसेयपमाणेण अवहिरिज्जमाणे छगुणहाणिट्ठाणंतरपमाणेण अवहिरिज्जदि। तं जहा—तिणिणगुणहाणिवक्खेते मज्जे पाडिय एगअट्ठस्सुवरि विदियअट्ठे जोएदूण^२ ट्ठविदे छगुणहाणीयो होति। अपवा, वेगुणहाणीओ चट्ठिदाओ त्ति वे स्वे विरलिय विगं करिय अण्णोणम्भत्ये कदे चत्तारि स्वाणि उप्पज्जंति। पुणो तेहि दिवङ्गुणहाणीए गुणिदाए भागहारो छगुणहाणिमेतो होदि ४८। पुणो एदाहि सव्वदव्वे भागे हिदे इच्छिदणिसेयो आगच्छदि।

पुणो तिसे गुणहाणीए विदियणिसेयपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे सादियेय-छगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि। एत्थ तेरासियकमेण लद्धपक्खेवस्वाणि ४८। १५। पुणो एदम्मि सरिसछेदं कादूण छसु गुणहाणीसु पक्खित्ते सादियेयछगुण-

निषेकभागहारके तीन चतुर्थ भाग मात्र गोपुच्छविशेषोंको ग्रहण कर यदि वहाँका एक निषेक प्राप्त होता है, तो एक फालि मात्र गोपुच्छविशेषोंमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फल्लगुणिन इच्छाको अपवर्तित करनेपर इतना होता है—८। इसको तीन गुणहानियोंमें मिलानेपर चार गुणहानियां होती हैं— $24+8=32$ । इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर वहाँका (द्वि० गु० हा० का पांचवां) निषेक होता है— $32 \div 5 = 6.4$ । इस प्रकार जानकर द्वितीय गुणहानिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये।

तृतीय गुणहानि सम्बन्धी प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह छह-गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यथा—तीन गुणहानि प्रमाण क्षेत्रको मध्यमें फाड़कर एक अर्ध भागके ऊपर द्वितीय अर्ध भागको जोड़कर स्थापित करनेपर छह गुणहानियां होती हैं। अथवा, चूंकि दो गुणहानियां चट्टे हैं अतः दो अंकोंका विरलन करके द्रुगुणा कर परस्पर गुणित करनेपर चार अंक उत्पन्न होते हैं। पश्चात् उनके द्वारा छह गुणहानियोंको गुणित करनेपर भागहार छह गुणहानि प्रमाण होता है— $12 \times 4 = 48$ । इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर असीष्ट निषेक प्राप्त होता है— $48 \div 5 = 9.6$ ।

उक्त गुणहानिके द्वितीय निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह साधिक छह गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यहां त्रैराशिकक्रमसे प्राप्त प्रक्षेप अंक ये हैं—६६। इनको समच्छेद करके छह गुणहानियोंमें मिलाने पर साधिक

१ ताम्रती 'तीडु' इति पाठः। २ अ-आ-ताप्रतिपु 'सव्वदव्वेण' इति पाठः। ३ प्रतिपु 'लोएदूण' इति पाठः।

हाणीयो होंति । ७६८ । १५^१ । पुणो एदाहि सव्वदव्वे भागे हिदे बिदियगिसेयो आगच्छदि । एवं जाणिदूण णेदव्वं जाव अग्गट्टिदिभागहारो ति । णवरि अग्गट्टिदिभागहारो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जोसप्पिणि^२ उत्सप्पिणिमेतो । तस्स पमाणेदं ३०७२ । ९^३ । एदेण समयपवद्धे भागे हिदे चरिमणिसेयो आगच्छदि । एवं भागहारपरुवणा समत्ता ।

पढमाए द्विदीए पदेसग्गं सव्वट्टिदिपदेसग्गस्स केवडियो भागो ? असंखेज्जदिभागो, दिवहुगुणहाणीए खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं ति वुत्तं होदि । एवं णेदव्वं जाव पढमगुणहाणिचरिमणिसेगो ति । बिदियगुणहाणिपढमणिसेगो सव्वट्टिदिपदेसग्गस्स केवडियो भागो ? असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? तिण्णि गुणहाणीयो । एवं जाणिदूण णेदव्वं जाव चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगो ति । एवं भागाभागपरुवणा समत्ता ।

सव्वत्थोव चरिमाए द्विदीए पदेसग्गं ९ । पढमाए द्विदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता किंभुण्णोण्णम्भत्थरासी । तस्स पमाणेदं २५६ । ९^४ । एदेण चरिमणिसेगे गुणिदे पढमणिसेगो होदि । २५६ । छह गुणहानियां होती हैं — $\frac{१}{१६} + \frac{१}{१६} = \frac{२}{१६} = \frac{१}{८}$ । इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर तृतीय गुणहानिका द्वितीय निषेक आता है — $३०७२ \div \frac{१}{८} = ६०$ । इस प्रकार जानकर अग्रस्थिति भागहार तक ले जाना चाहिये । विशेष इतना है कि अग्रस्थिति भागहार अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंके बराबर है । उसका प्रमाण यह है — $\frac{१}{१६} \times २ = \frac{२}{१६} = \frac{१}{८}$ । इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर अन्तिम निषेक प्राप्त होता है — $३०७२ \div \frac{१}{८} = २४$ । इस प्रकार भागहार प्ररूपणा समाप्त हुई ।

प्रथम स्थितिका प्रदेशपिण्ड समस्त स्थितियोंके प्रदेशपिण्डके कितनेवें भाग प्रमाण है ? उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । समस्त स्थितियोंके प्रदेशपिण्डमें डेढ़ गुणहानिका भाग देनेपर जो प्राप्त हो ($३०७२ \div १२ = २५६$) उतने मात्र वह है, यह उसका अभिप्राय है । इस प्रकार प्रथम गुणहानिके अन्तिम निषेक तक ले जाना चाहिये । द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेक समस्त स्थितियोंके प्रदेशपिण्डके कितनेवें भाग प्रमाण है, वह उसके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग तीन गुणहानियां हैं । इस प्रकार जानकर अन्तिम गुणहानिके अन्तिम निषेक तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार भागाभाग प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अन्तिम स्थितिका प्रदेशपिण्ड सबसे स्तोक (९) है । प्रथम स्थितिका प्रदेशपिण्ड उससे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र कुछ कम अत्योपम्यस्त राखि है । उसका प्रमाण यह है — $\frac{१}{१६}$ । इसके द्वारा अन्तिम

१ अ-आ-ताप्रतिषु ७६८ । ५ । एवंविचात्र संदडिरस्ति । २ अपत्तो 'भागो असंखेज्जाओसप्पिणि', आ-काप्रत्यो: 'भागो असंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणि', ताप्रत्तो 'भागो असंखेज्जाओ [संखेज्जाओ] ओसप्पिणि' इति पाठः । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु ३०७३ इति पाठः । ४ का ताप्रत्यो: २५६ । ४ । एवंविचात्र संदडिरस्ति ।

अजहण्यअणुक्कस्सदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सादिरेगेरूवपरिहीणदिवङ्गुणहाणी । किं कारणं ? रूवणदिवङ्गुणहाणिसलागाहि पढमणिसेगे गुणिदे पढमणिसेयवदिरित्तउवरिम-सव्वट्ठिदिदव्वं होदि २८१६ । पुणे एदम्मि चरिमट्ठिदिदव्वेण विणा इच्छिज्जमाणे रूवण-दिवङ्गुणहाणीए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागमवणिय पढमणिसेगे गुणिदे अजहण्यअणुक्कस्स-दव्वं होदि २८०७ । अपढमं विसेसाहियं । केत्तियमेतो विसेसो ? उक्कस्सट्ठिदिदव्वमेतो २८१६ । अणुक्कस्सं विसेसाहियं । केत्तियमेतो विसेसो ? चरिमणिसेगेणपढमणिसेगमेतो । सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसगं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? चरिमट्ठिदिदव्वमेत्तेण । एवं णिसेयपरूवणा समता ।

आबाधकंदयपरूवणदाए ॥ १२१ ॥

किमट्ठमाबाधकंदयपरूवणा आगदा ? किं सव्वट्ठिदिबंधट्ठाणेषु एवका चेव आबाहा होदि, आहो अण्णणां होदि ति पुच्छिदे एवं होदि ति जाणावणट्ठमाबाहाकंदयपरूवणा निषेकको गुणित करनेपर प्रथम निषेक होता है— $२५९ \times ९ = २५६$ । उससे अजघन्या-नुत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार साधिक एक अंकसे हीन डेढ़ गुणहानियां हैं ।

शंका—इसका कारण क्या है ?

समाधान—इसका कारण यह है कि एक कम डेढ़गुणहानिरालाओंसे प्रथम निषेकको गुणित करनेपर प्रथम निषेकसे रहित अग्रिम सब स्थितियोंके द्रव्यका प्रमाण होता है— $[२५६ \times (१२-१) = २८१६ = (३०७२ - २५६)]$ ।

अब यदि यह द्रव्य अन्तिम स्थितिके द्रव्यसे रहित अभीष्ट है, तो एक कम डेढ़ गुण-हानिमेंसे एक अंकके असंख्यातवें भागको घटाकर दोषसे प्रथम निषेकको गुणित करनेपर अजघन्यअनुत्कृष्ट द्रव्यका प्रमाण होता है— $१२-१=११$; $११-१=१०$; $१० \times २५६ = २८०७$ । इसकी अपेक्षा प्रथम स्थितिसे हीन सब द्रव्य विशेष अधिक है । विशेष कितना है ? वह उत्कृष्ट अर्थात् अन्तिम स्थितिके द्रव्यके बराबर है— $२८०७+९=२८१६$ । इससे अनुत्कृष्ट द्रव्य विशेष अधिक है । विशेष कितना है ? वह अन्तिम निषेकसे हीन प्रथम निषेकके बराबर है— $(२५६-९=२४७$; $२८१६+२४७=३०६३)$ । इससे सब स्थितियोंमें प्रवेशात्र विशेष अधिक है । कितने मात्र विशेषसे वह अधिक है ? वह अन्तिम स्थितिके द्रव्यप्रमाणसे अधिक है— $(३०६३+९=३०७२)$ । इस प्रकार निषेकप्ररूपणा समाप्त हुई ।

आबाधाकाण्डक प्ररूपणाका अधिकार है ॥ १२१ ॥

शंका—आबाधाकाण्डक प्ररूपणाका अवतार किसलिये हुआ है ?

समाधान—सब स्थितिकव्यस्थानोंमें क्या एक ही आबाधा है, अथवा अन्य-अन्य हैं, ऐसा पूछनेपर 'इस प्रकारकी आबाधा-व्यवस्था है' यह जतलानेके लिये आबाधाकाण्डक प्ररूपणाका अवतार हुआ है ।

१ अ-आ-काप्रतिषु 'अण्णोणा', ताप्रतो 'अण्णा ण' इति पाठः ।

आगदा । एत्थ तिणिण अणियोगद्वाराणि परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चैव । पमाणप्पाबहु-
आणं संभवो होदु णाम, सुत्तसिद्धत्तादो । सुत्तम्मि असंतीए परूवणाए कधमेत्थ संभवो ? ण
एस दोसो, परूवणाए विणा पमाणप्पाबहुआणमणुववत्तीदो । तत्थ ताव सुतेण सृचिदपरूवणा
वुच्चदे । तं जहा—चोइसणं जीवसमासाणं अत्थि आबाहाकंदयाणि आबाहाट्टाणाणि
च । आबाहाकंदयपरूवणाए कधमाबाहट्टाणाणि वुच्चंति ? ण, आबाहाकंदयपरूवणाए
आबाहट्टाणाविणाभावेण देसामासियत्तमावण्णाए आबाहट्टाणपरूवणं पडि विरोहाभावादो ।

पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणं चउरिंदियाणं तीइंदियाणं
बीइंदियाणं एइंदियबादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्तयाणं सत्तणं कम्माण-
माउववज्जाणमुक्कस्सियादो ट्टिदीदो समए समए पल्लिदोवमस्स
असंखेज्जदिभागमेत्तमोसरिट्ठण एयमात्राहाकंदयं करेदि । एस कम्पो
जाव जहणिया ट्टिदि ति' ॥ १२२ ॥

समए समए इदि वुत्ते आबाधाए एगेसमण, इदि वुत्तं होदि । उक्कत्साबाहाए

इस आबाधाकाण्डकप्ररूपणामें तीन अनुयोगद्वार हैं—प्ररूपणा, प्रमाण और
अल्पबहुत्व ।

शंका—प्रमाण और अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारोंकी सम्भावना भले ही हो, क्योंकि,
वे सूत्रसे लिखे हैं । परन्तु सूत्रमें न पाये जानेवाले प्ररूपणा अनुयोगद्वारकी सम्भावना
यहां कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, प्ररूपणाके बिना प्रमाण और अल्प-
बहुत्वका कथन बन ही नहीं सकता ।

उनमें पहिले सूत्रसे सूचित प्ररूपणा अनुयोगद्वारका कथन करते हैं । वह इस प्रकार
है—चौदह जीवसमासोंके आबाधाकाण्डक और आबाधास्थान दोनों हैं ।

शंका—आबाधाकाण्डकप्ररूपणामें आबाधास्थानोंका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि आबाधाकाण्डकप्ररूपणाका आबाधास्थानप्ररूपणाके
साथ अविनाभाव सम्बन्ध है, अतः आबाधास्थानप्ररूपणाके प्रति देशामर्शक भावको प्राप्त
हुई आबाधाकाण्डकप्ररूपणामें आबाधास्थानोंका कथन करना विरुद्ध नहीं है ।

संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और बादर व सूक्ष्म
एकेन्द्रिय इन पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके आयुको छोड़ शेष सात कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिसे
समय समयमें पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र नीचे उतर कर एक आबाधाकाण्डकको करता
है । यह क्रम जघन्य स्थिति तक है ॥ १२२ ॥

सूत्रमें 'समए समए' ऐसा कहनेसे आबाधाके एक एक समयमें, ऐसा अभिप्राय

१ मोक्षण आउगाई समए समए अबाहणीए । पत्तासंखियमाणं कंठं कुण अप्पबहुमेसि ॥
क. प्र. १, ८९.

चरिमसमए णिरुद्धे उक्कत्सद्विदीदो हेट्ठा पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिमागमेत्तमोसरिवृण
एयमाबाहाकंदयं करेदि । आबाहचरिमसमयं णिरुंमिदृण उक्कत्सियं द्विदिं बंधदि । ततो
समऊणं पि बंधदि' । एवं दुसमऊणादिकमेण णेदव्वं जाव पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिमागे-
ण्णद्विदि ति । एवमेदेण आबाहाचरिमसमएण बंधपाओग्गद्विदिविसेसाणमेगमाबाहाकंदय-
मिदि सण्णा ति कुत्तं होदि । आबाधाए दुचरिमसमयस्स णिरुंमणं काट्ठण एवं चेव
विदियमाबाहाकंदयं पस्सेदव्वं । आबाहाए तिचरिमसमयणिरुंमणं काट्ठण पुव्वं व तदिओ
आबाहाकंदयो पस्सेदव्वो । एवं णेयव्वं जाव जहणिया द्विदि ति । एदेण सुत्तेण
एगाबाहाकंदयस्स पमाणपस्सवणा कदा ।

संपहि देसामासियत्तमावण्णेण एदेण सुत्तेण मूचिदाणमाबाहट्ठाणाणमाबाहाकंदय-
सलागाणं च पमाणपस्सवणा कीरदे । तं जहा— सण्णिपंचिदियपज्जत्ताणमाबाहट्ठाणाणि
आबाहाकंदयाणि च दो वि संखेज्जवासमेत्ताणि । सण्णिपंचिदियपज्जत्ताणमाबाहाट्ठाणाणि
आबाहाकंदयाणि च दो वि अंतोमुहुत्तमेत्ताणि । असण्णिपंचिदिय-चउरिदिय-तीइंदिय-

समझना चाहिये । उत्कृष्ट आबाधाके अन्तिम समयकी विवक्षा होनैपर उत्कृष्ट स्थितिसे
पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र नीचे उतर कर एक आबाधाकाण्डको करना है ।
आबाधाके अन्तिम समयको विवक्षित करके उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है । उससे एक
समय कम भी स्थितिको बांधता है । इस प्रकार दो समय कम इत्यादि क्रमसे पल्योपमके
असंख्यातवें भागसे रहित स्थिति तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार आबाधाके इस
अन्तिम समयमें बन्धके योग्य स्थितिविशेषोंकी एक आबाधाकाण्डक संज्ञा है, यह
अभिप्राय है । आबाधाके द्विचरम समयकी विवक्षा करके इसी प्रकारसे द्वितीय आबाधा-
काण्डककी प्ररूपणा करना चाहिये । आबाधाके त्रिचरम समयकी विवक्षा करके पहिलेके
ही समान तृतीय आबाधाकाण्डककी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार जघन्य स्थिति
तक यही क्रम जानना चाहिये । इस सूत्रके द्वारा एक आबाधाकाण्डकके प्रमाणकी
प्ररूपणा की गई है ।

अथ वेशमार्शक भावको प्राप्त हुए इस सूत्रके द्वारा सूचित आबाधास्थानों और
आबाधाकाण्डकशालाओंके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— संक्षी पंचेन्द्रिय
पर्याप्तक जीवोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही संवशत वर्ष प्रमाण हैं ।
संक्षी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही अन्तर्मुहूर्त
प्रमाण हैं । असंक्षी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और द्वीन्द्रिय [पर्याप्तक अपर्याप्त]

बीईदियाणमट्टुहं जीवसमासाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयसल्लाओ च आवलियाए संखेअदिभागमेत्ताणि । चटुण्णमेईदियाणं आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च आवलियाए असंखेअदिभागमेत्ताणि ।

आउअस्स आबाहाकंदयपरूवणा किमट्ठं ण कदा ? ण एस दोसो, आउअस्स इमा द्विदी एदीए चेव आबाहाए बज्झदि ति गियमाभावादो । पुव्वकोटिभागमाबाहं काऊण तेतीसाउअं बंधदि, समऊणतेतीसं पि बंधदि, एवं दुसमऊणै-तिसमऊणादिकमेण पुव्वकोटिभागमाबाहं धुवं काट्ठण णेदव्वं जाव बंधसुद्धाभवग्गहणं ति । पुणो एदे चेव आउवबंधवियप्पा पुव्वकोटिभागै समऊणे आबाधत्तणेण गिरुद्धे वि होति । एवं दुसमऊणादिकमेण णेदव्वं जाव असंखेयद्धा ति । जेणेवमणियमो तेण आउअस्स आबाहा-कंदयपरूवणा ण कदा । ण च आबाहाकंदयाणि गत्थि ति आबाहट्ठाणाणमसंभवो, तदभावे लिंमाभावादो । तदो आउअस्स गत्थि आबाहाकंदयाणि ति सिद्धं ।

इन षाठ जीवसमासोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डकशालाकायें आबलीके संबंधातवें भाग प्रमाण हैं । चार एकेन्द्रिय जीवोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक आबलीके असंबंधातवें भाग प्रमाण हैं ।

संका— यहाँ आयु कर्मके आबाधाकाण्डकोंकी प्ररूपणा किसलिये नहीं की गई ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, कारण कि आयुकी यह स्थिति इसी आबाधामें बंधती है, ऐसा कोई नियम नहीं है । पूर्वकोटिके त्रिभागको आबाधा करके तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुको बांधता है, एक समय कम तेतीस सागरोपम प्रमाण आयुको भी बांधता है; इस प्रकार पूर्वकोटिके त्रिभाग रूप आबाधाको भुच करके दो समय कम, तीन समय कम इत्यादि कमसे बन्ध भुद्रभवग्रहण प्रमाण स्थिति तक ले जाना चाहिये । पूर्वकोटिके एक समय कम त्रिभागको आबाधा रूपसे विवक्षित करनेपर भी ये ही आयुबन्धके विकल्प होते हैं । इसी प्रकार दो समय कम, तीन समय कम इत्यादि कमसे असंबंधेयान्ता काल प्रमाण आबाधा तक ले जाना चाहिये । जिस कारण यहाँ कोई ऐसा नियम नहीं है, इसलिये आयुके आबाधाकाण्डकोंकी प्ररूपणा नहीं की गई ।

आबाधाकाण्डक चूंकि नहीं हैं, इसलिये आबाधास्थान असम्भव हों; ऐसी कोई बात नहीं है; क्योंकि, उनके अभावमें कोई हेतु नहीं है । इस कारण आयुके आबाधा-काण्डक नहीं हैं, यह सिद्ध है ।

१ आप्तौ 'अंसले', ताप्तौ 'अंसले' इति पाठः । २ ताप्तौ 'इमा द्विदीए चेव' इति पाठः । ३ अ-आ-काप्रतिपु 'दुसमऊणा' इति पाठः । ४ अ-आ-ताप्रतिपु 'पुव्वकोटिभागे' इति पाठः । ५ ताप्तौ 'दुवमयादि' इति पाठः ।

एष्य अप्याबहुगपस्त्वणा किण्ण कीद्वे ? न एस दोसो, उवरि भण्णमाणअप्याबहु-
आणियोगहारेण तदवगमादो । एवमाबाधाकंदयपस्त्वणा समता ।

अप्याबहुएत्ति ॥ १२३ ॥

अं तं चउत्थमणियोगइयमप्याबहुगमिदि तं वत्तइस्सामो ति भणिदं होदि ।

**पंचिदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणं पज्जतापज्जताणं सत्तण्हं
कम्माणमाउववज्जाणं सव्वत्थोवा जहणिया आवाहो ॥ १२४ ॥**

कुदो ? संखेजावलियमेत्ता होइण अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो ।

**आवाहट्टाणाणि आवाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि
संखेज्जगुणाणि ॥ १२५ ॥**

कुदो ? जहण्णावाधादो उक्कस्सावाहा संखेज्जगुणा, तेण आवाहट्टाणाणि वि

शंका—यहां अल्पबहुत्वप्ररूपणा क्यों नहीं की जाती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उसका ज्ञान आगे कहे जानेवाले
अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारसे हो जाता है । इस प्रकार आबाधाकाण्डक प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारका अधिकार है ॥ १२३ ॥

जो वह चौथा अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार है उसको कहते हैं, यह अभिप्राय है ।

संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक व अपर्याप्तक पंचेन्द्रिय जीवोंके आयुको छोड़कर शेष
सात कर्मोंकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है ॥ १२४ ॥

इसका कारण यह है कि उक्त आबाधा संख्यात आवली प्रमाण हो करके अन्तर्मुहूर्त
मान है ।

आबाधास्यान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं ॥ १२५ ॥

चूंकि जगन्य आबाधाकी अपेक्षा उत्कृष्ट आबाधा संख्यातगुणी है, इसीलिये
आबाधास्थान भी उससे संख्यातगुणे ही हैं ।

शंका—कैसे ?

१ आप्रतो 'तं' इति नोपलभ्यते । २ एतेषां दशानां स्थानानामल्पबहुत्वमुच्यते—तत्र संक्षिपंचेन्द्रि-
येषु पणितेषु अपर्याप्तकेषु वा बन्धकेषु आयुर्बलानां सप्तानां कर्मणां सर्वस्तोका जघन्यावाधा (१) । सा च
अन्तर्मुहूर्तप्रमाणा । क. प्र. (मलय. टीका) १, ८६. ३ आप्रतो 'च' वृत्ताणि दो वि संखेज्जगुणाणि ;
इति पाठः । ततोऽबाधास्थानानि कंडकस्थानानि चासंख्येयगुणानि । तानि तु परस्परं तुल्यानि । तथाहि—
जघन्यामबाधामादि कृतोत्कृष्टाऽबाधाचरमसमयमभिम्याप्य बाधन्तः समयाः प्राप्यन्ते ताबन्धवाधास्थानानि
भवन्ति । तद्यथा—जघन्याऽबाधा एकमबाधास्थानम् । सैव समयाधिका द्वितीयम् । द्विसमयाधिका तृतीयम् ।
एवं ताबद्धाब्धं बाधदुत्कृष्टाबाधाचरमसमयः । एताबन्धेय बाधाधिकाकंडकानि, जघन्याबाधात आरभ्य समर्थ
कर्मं प्रति कंडकस्य प्राप्यमाणत्वात् । एतच्च प्रागेवोक्तम् (२-३) । क. प्र. (म. टी.) १, ८६.

संखेजगुणाणि चेव । कथं ? समऊणजहण्णाबाहाए उक्कत्साबाहादो सोहिदाए आबाह-
ट्टाणुप्पत्तीदो । कथमाबाहट्टाणेहि आबाहाकंदयसलागाणं सरिसत्तं ? ण एस दोसो,
एगेगाबाहट्टाणस्स पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिबंघट्टाणाणमाबाहाकंदयसणिदाणं
उवल्लेमेण समाणत्ता ।

उक्कत्सिया आबाहा विसेसाहियां ॥ १२६ ॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणजहण्णाबाहमेत्तेण ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि^१ ॥ १२७ ॥

कुदो ? उक्कत्साबाहाओ संखेज्जावल्लियमेत्ताओ होवुण सण्णीसु पज्जत्तएसु संखेज्ज-
वस्साणि अपज्जत्तएसु अतोमुहुत्तं होति । णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पुण असंखेज्जवस्साणि
होवुण पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । तेण उक्कत्सआबाहादो णाणापदेसगुणहाणि-
ट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ति जुज्जे ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं^२ ॥ १२८ ॥

समाधान— क्योंकि, उत्कृष्ट आबाधामेंसे एक समय कम जघन्य आबाधाको बड़ा
देनेपर आबाधास्थानोंकी उत्पत्ति होती है ।

शंका— आबाधास्थानोंसे आबाधाकाण्डकशालाकायें समान कैसे हैं ?

समाधान— वह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, एक एक आबाधास्थान सव्यन्धी जो
पक्ष्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिवन्धस्थान हैं उनकी आबाधाकाण्डक संज्ञा है;
अत एव उनके समानता है ही ।

उनसे उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ॥ १२६ ॥

शंका— वह कितने प्रमाणसे अधिक है ?

समाधान— वह एक समय कम जघन्य आबाधाके प्रमाणसे अधिक है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥ १२७ ॥

कारण कि उत्कृष्ट आबाधायें संख्यात आवली प्रमाण हो करके संज्ञी पर्याप्तक जीवोंमें
संख्यात वर्ग और अपर्याप्तकोंमें अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होती हैं । परन्तु नानाप्रदेशगुणहानि-
स्थानान्तर असंख्यात वर्ग प्रमाण हो करके पक्ष्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं । अतएव
उत्कृष्ट आबाधाकी अपेक्षा नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरोंका असंख्यातगुणा होना
उचित ही है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ १२८ ॥

१ तेन्य उत्कृष्टाबाधा विशेषाधिका, जघन्याबाधायास्तत्र प्रवेद्यात् (४) । क. प्र. (म. टी.) १, ८६.
२ ततो दलिकनिषेकविधौ द्विगुणहानिरस्थानानि असंख्येयगुणानि, पक्ष्योपमप्रथमवर्गमूलासंख्येयभागगतसम-
प्रमाणत्वात् (५) । क. प्र. (म. टी.) १, ८६. ३ तत एकस्मिन् द्विगुणहान्योरन्तरे निषेकस्थानान्यसंख्येय-
गुणानि, तेषामसंख्येयानि पक्ष्योपमवर्गमूलाणि परिमाणमिति कृत्वा (६) । क. प्र. (म. टी.) १, ८६.

कुदो ? असंखेज्जपल्लिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो ।

एयमावाहाकंदयमसंखेज्जगुणं ॥ १२९ ॥

णाणापदेसगुणहाणिसलागाहि असंखेज्जवस्सपमाणाहि कम्मट्ठिदीए ओवट्ठिदीए एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमागच्छदि । उक्कस्सावाहाए संखेज्जवस्समेत्ताए अंतोमुहुत्तमेत्ताए च सग-सगुक्कस्सट्ठिदीए ओवट्ठिदीए जेणेगमावाहाकंदयपमाणं होदि, तेणेगपदेसगुणहाणिट्ठाण-
तरादो एगमावाहाकंदयमसंखेज्जगुणमिदि वेत्तव्वं ।

जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो ॥ १३० ॥

एगमावाहाकंदयं णाम पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, जहण्णट्ठिदिबंधो पुण अंतोकोडाकोडिमेत्तसागरोवमाणि । तेण एगमावाहाकंदयादो जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्ज-
गुणो जादो ।

टिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ १३१ ॥

जहण्णट्ठिदिबंधादो उक्कस्सट्ठिदिबंधो जेण संखेज्जगुणो तेण ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि वि

क्योंकि, वे पद्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंके बराबर हैं ।

एक आवाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है ॥ १२९ ॥

असंख्यात वर्ष प्रमाण नानाप्रदेशगुणहानिखलाकाओंका कर्मस्थितिमें भाग देनेपर एकगुणहानिस्थानान्तर लब्ध होता है । संख्यात वर्ष मात्र व अन्तर्मुहूर्त मात्र उत्कृष्ट आवाधाना अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें भाग देनेपर चूंकि एक आवाधाकाण्डकका प्रमाण होता है, अत एव एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरकी अपेक्षा एक आवाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है ॥ १३० ॥

चूंकि एक आवाधाकाण्डक पद्योपमके असंख्यातवर्ष भाग प्रमाण है, परन्तु जघन्य स्थितिबन्ध अन्तःकोडाकोडि सागरोपमों प्रमाण है; अत एव एक आवाधाकाण्डककी अपेक्षा जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा हो जाता है ।

स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ १३१ ॥

चूंकि जघन्य स्थितिबन्धकी अपेक्षा उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है, अतः उससे

१ तेभ्योऽपि अर्थेन कंडक- [पंचसंग्रहे पुनरेतस्य स्थानेऽवाधाकंडकमित्येतदेवोपलभ्यते] असंखेय-
गुणम् (७) । क. प्र. (म. टी.) १, ८६. २ तस्माच्च जघन्यः स्थितिबन्धोऽसंखेयगुगः, अन्तःसागरोपम-
कोटीकोटीप्रमाणत्वात् । संक्षिपत्वेन्द्रिया हि अणिमनाकृता जघन्यतोऽपि स्थितिबन्धमन्तःसागरोपमकोटीकोटी-
प्रमाणमेव कुर्वन्ति (८) । क. प्र. (म. टी.) १, ८६. ३ ततोऽपि स्थितिबन्धस्थानानि संखेयगुणानि
(९) । क. प्र. (म. टी.) १, ८६.

संस्त्रेज्जगुणाणि चेव, समउणजहण्हट्ठिदिबंधेणउक्कस्सट्ठिदिबंधस्सेव ट्ठिदिबंधाणववएसादो ।

उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ १३२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? समउणजहण्हट्ठिदिबंधमेत्तेण ।

पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणं पज्जत्तयाणमाउअस्स सब्ब-
त्थोवा जहण्णिया आबाहाँ ॥ १३३ ॥

कुदो ? आउअं बंधिय समयाहियसव्वजहण्णविस्समणकालग्गहादो ।

जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संस्त्रेज्जगुणो ॥ १३४ ॥

कुदो ? खुदामवग्गहणपमाणत्तादो ।

आबाहाट्ठाणाणि संस्त्रेज्जगुणाणि ॥ १३५ ॥

स्थितिबन्धस्थान भी संख्यातगुणे ही होने चाहिये, क्योंकि एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धसे रहित उत्कृष्ट स्थितिबन्धकी ही स्थितिबन्धस्थान संज्ञा है ।

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध उससे विशेष अधिक है ॥ १३२ ॥

कितने मात्रसे वह अधिक है ? एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धके प्रमाणसे वह अधिक है ।

संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है ॥ १३३ ॥

क्योंकि, यहां आयुको बांधकर एक समय अधिक सर्वजघन्य विभ्रमणकालका ग्रहण है ।

उससे जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ १३४ ॥

क्योंकि, वह क्षुद्रभवग्रहणके बराबर है ।

उससे आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं ॥ १३५ ॥

१ तस्य उत्कृष्टा स्थितिर्विशेषाधिक, बध्न्यस्थितेरबाधाबाध तत्र प्रवेशात् । क. प्र. (म. टी.) १, ८६.
२ तथा संक्षिपंचेन्द्रियेष्वसंक्षिपंचेन्द्रियेषु वा पर्वातकेषु प्रत्येकमायुषो बध्न्याबाधा सर्वस्तोका (१) ।
ततो बध्न्यः स्थितिबन्धः संख्येयगुणः । स च क्षुल्लकभवरूपः (२) । ततोऽबाधास्थानानि संख्येयगुणानि ।
बध्न्याबाधारहितः पूर्वकोटिप्रमाण इति कृत्वा (३) । ततोऽप्युत्कृष्टाबाधा विशेषाधिक, बध्न्याबाधाया
अपि तत्र प्रवेशात् (४) । ततो द्विगुणहानिस्थानान्यसंख्येयगुणानि, पश्योपमप्रथमवर्गमूलासंख्येयमाभा-
गतलमवप्रमाणत्वात् (५) । तेष्वोऽप्येकस्मिन् द्विगुणहान्योरन्तरे नियेकस्थानान्यसंख्येयगुणानि (६) ।
तत्र युक्तिः प्रयुक्ता वक्तव्या । ततः स्थितिकवस्थानान्यसंख्येयगुणानि (७) । तेष्वोऽप्युत्कृष्टः स्थितिबन्धो
विशेषाधिकः, बध्न्यस्थितेरबाधाबाध तत्र प्रवेशात् (८) । क. प्र. (म. टी.) १, ८६.

‘जहण्णजो द्विदिबंनो णाम अंतोमुहुत्तमेत्तो’, आवाहाट्ठाणाणि पुण संखेज्जपमाण-
पुव्वकोटिभागमेत्ताणि; तेण जहण्णद्विदिबंनो आवाहाट्ठाणाणं संखेज्जगुणत्तं णव्वदे ।

उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया ॥ १३६ ॥

केत्तियमेतेण ? समऊणजहण्णावाहमेतेण ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १३७ ॥

पुव्वकोटिभागं पेक्खिदूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेतणाणागुणहाणिसला-
गाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ १३८ ॥

कुदो ? पलिदोवमपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेतणाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतर-
सलागाहि असंखेज्जपलिदोवमवग्गमूलमेतएगपदेसगुणहाणीए ओवट्ठिदाए असंखेज्जखुवलंभादो ।

ठिदिबंनट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १३९ ॥

कुदो ? एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं णाम पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, ठिदिबंन-
ट्ठाणाणि पुण संखेज्जसागरोवमेत्ताणि पलिदोवमस्सासंखेज्जदिभागो^१ च; तेण एगपदेसगुण-

जघन्य स्थितिबन्ध अस्तुमुहूर्त प्रमाण है; परन्तु आवाधास्थान संख्यात प्रमाण
[जघन्य आवाधासे रहित] पूर्वकोटिभाग मात्र हैं; इसीसे जाना जाता है कि जघन्य
स्थितिबन्धकी अपेक्षा आवाधास्थान संख्यातगुणे हैं ।

उनसे उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है ॥ १३६ ॥

कितने प्रमाणसे वह अधिक है ? एक समय कम जघन्य आवाधाके प्रमाणसे वह
विशेष अधिक है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥ १३७ ॥

क्योंकि, पूर्वकोटिभागकी अपेक्षा पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण नानागुण-
हानिशालाकाओंके असंख्यातगुणत्व पाया जाता है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ १३८ ॥

क्योंकि, पल्योपम सम्बन्धी प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भाग मात्र नानाप्रदेश-
गुणहानिस्थानान्तरशालाकाओंका पल्योपमके असंख्यात वर्गमूलोंके बराबर एकप्रदेश-
गुणहानिमें भाग देनेपर असंख्यात अंक पाये जाते हैं ।

स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ १३९ ॥

क्योंकि, एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, परन्तु
स्थितिबन्धस्थान संख्यात सागरोपम मात्र व पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं; इस कारण

१ अ-आ-कामतिषु ‘मेत्ता’ इति पाठः । २ प्रतिषु ‘असंखेज्ज’ इति पाठः । ३ अ-आप्रत्ययः
‘पल्लोवमस्स संखे० भागो’ इति पाठः ।

हाणिद्वाणंतरादो द्विदिबंधाणणि असंखेज्जगुणाणि ति' वेत्तव्व ।

उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ ॥ १४० ॥

केतियमेत्तेण ? समउज्जजहण्णद्विदिबंधमेत्तेण ।

पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणमपज्जत्तयाणं चउरिंदियाणं
तीइंदियाणं बीइंदियाणं एइंदियवादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तयाणैमाउ-
अस्स सव्वत्थोवा जहणिया आवाहा ॥ १४१ ॥

आउअं बंधिय समयाहियसव्वजहण्णविस्समणकालग्गहणादो ।

जहण्णओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ १४२ ॥

कुदो ? बंधसुहाभवग्गहणादो ।

आवाहट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ १४३ ॥

सग-सगउक्कत्साउआणं तिभागस्स समउज्जजहण्णावाहाए परिहीणस्स गहणादो ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरकी अपेक्षा स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ १४० ॥

बह कितने मात्रसे अधिक है ? एक समय कम अजन्म स्थितिबन्धके प्रमाणसे बह विशेष अधिक है ।

संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकों तथा चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और वादर एवं सूक्ष्म एकेन्द्रिय, इन पर्याप्त-अपर्याप्तोंके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे श्लोक है ॥ १४१ ॥

क्योंकि, यहां आयुको बांधकर एक समयसे अधिक सर्वजघन्य विश्रमणकालका ग्रहण है ।

जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ १४२ ॥

क्योंकि, यहां बन्धक्षुद्रमयका ग्रहण है ।

आवाधास्थान संख्यातगुणे हैं ॥ १४३ ॥

क्योंकि, एक समय कम अजन्म आवाधासे हीन अपनी अपनी उत्कृष्ट आयुओंके विभागका यहां ग्रहण है ।

१ ताप्रती 'असंखेज्जगुणाणि' इति पाठः । २ प्रतिषु 'सुहुमपज्जत्तयाण-' इति पाठः । ३ तथा पंचेन्द्रियेषु संक्षिप्पसंक्षिप्पपर्याप्तेषु चतुरिन्द्रिय-त्रीन्द्रिय-द्वीन्द्रिय-वादरसूक्ष्मेकेन्द्रियेषु च पर्याप्तापर्याप्तेषु प्रत्येक-मायुषः सर्वश्लोका जघन्यावाधा (१) । ततो जघन्यः स्थितिबन्धः संख्येयगुणः, स च क्षुद्रकमयरूपः (२) । ततोऽवाधास्थानानि संख्येयगुणानि (३) । ततोऽप्युत्कृष्टावाधा विशेषाधिका (४) । ततोऽपि स्थितिबन्धस्थानानि संख्येयगुणानि, जघन्यस्थितिबन्धपूर्वकोटिप्रमाणत्वात् (५) । तत उत्कृष्टः स्थिति-बन्धो विशेषाधिकः, जघन्यस्थितेरवाधावाध तत्र प्रवेद्यात् (६) । क. प्र. (म. टी.) १,८६.

उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया ॥ १४४ ॥

केतियमेतेण ? समऊणजहण्णावाहामेतेण ।

ठिदिबंघट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ १४५ ॥

कुदो ? समऊणजहण्णठिदिबंघेण्णपुव्वकोडिग्गहणादो ।

उक्कस्सओ ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ १४६ ॥

केतियमेतेण ? समऊणजहण्णठिदिबंधमेतेण ।

पंचिंदियाणमसण्णीणं चउरिंदियाणं तीहंदियाणं वीहंदियाणं
पज्जत्त-अपज्जत्तयाणं सत्तणं कम्माणं आउववज्जाणमावाहट्टाणाणि
आवाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि ॥ १४७ ॥

कुदो ? आवलियाए संखेज्जदिभागप्पमाणतादो ।

उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है ॥ १४४ ॥

वह कितने मात्र विशेषसे अधिक है ? वह एक समय कम जघन्य आवाधा मात्रसे अधिक है ।

स्थितिबन्धस्थान संख्यातुणे हैं ॥ १४५ ॥

क्योंकि, एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धसे हीन पूर्वकोटिका ग्रहण है ।

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ १४६ ॥

वह कितने मात्रसे अधिक है ? वह एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धके प्रमाणसे विशेष अधिक है ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और द्वीन्द्रिय पर्याप्तक-अपर्याप्तक जीवोंके आयुको छोड़कर शेष सात कर्मोंके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं ॥ १४७ ॥

क्योंकि, वे आवलीके संख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

१ तथाऽसंज्ञिपंचेन्द्रिय-चतुरिन्द्रिय-त्रीन्द्रिय-द्वीन्द्रिय-सुक्ष्मबाहुरैकेन्द्रियेषु पर्याप्तापर्याप्तोष्णानुर्वर्जानां
सप्तानां कर्मणां प्रत्येकमवाधारस्थानानि कंडकानि च स्तोकानि परस्परं च तुल्यानि, आबलिकाऽसंख्येय-
मागततत्त्वमयप्रमाणत्वात् (१-२) । ततो जघन्यावाधाऽसंख्येयगुणा, अन्तर्मुहूर्तप्रमाणत्वात् (३) ।
ततोऽप्युत्कृष्टावाधा विशेषाधिक, जघन्यावाधाया अपि तत्र प्रवेद्यात् (४) । ततो द्विगुणहीनानि (हानि)
स्थानान्यसंख्येयगुणानि (५) । तत एकस्मिन् द्विगुणहान्योन्तरे विवेकस्थानान्यसंख्येयगुणानि (६) ।
ततोऽयैव कंडकमसंख्येयगुणम् (७) । ततोऽपि स्थितिबन्धस्थानान्यसंख्येयगुणानि, पक्षोपमा (म)
संख्येयमागततत्त्वमयप्रमाणत्वात् (८) । ततोऽपि जघन्यवस्थितिबन्धोऽसंख्येयगुणः (९) । ततोऽप्युत्कृष्ट-
स्थितिबन्धो विशेषाधिकः, पक्षोपमासंख्येयभागेनास्त्वधिकत्वादिष्टि (१०) । क. प्र. (म. टी.) १, ८६.

जहणिया आवाहा संखेज्जगुणा ॥ १४८ ॥

कुदो ? संखेजावलियमेत्तजहण्णावाहाए आबलियाए संखेज्जिभागमेत्तआवाहट्ठाणेहि भागे हिदाए संखेज्जस्सोवलंभादो ।

उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया ॥ १४९ ॥

केत्तियमेतेण ? आबलियाए संखेज्जिभागमेतेण ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १५० ॥

कुदो ? संखेजावलियमेत्तउक्कस्सावाहाए पलिदोवमस्स असंखेज्जिभागमेत्तणाणा-
पदेसगुणहाणिट्ठाणंतरेसु अवहिरिदेसु असंखेज्जस्सोवलंभादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ १५१ ॥

कुदो ? पलिदोवमच्छेदणाणं संखेज्जिभागमेत्तणाणापदेसगुणहाणिसलागाहि असंखेज्ज-
पलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तएयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरे भागे हिदे असंखेज्जस्सोवलंभादो ।

एयमावाधाकंदयमसंखेज्जगुणं ॥ १५२ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जिभागो उक्कस्सावाहाए ओवट्ठिदणाणागुण-
हाणिसलागाओ वा ।

जघन्य आवाधा संख्यातगुणी है ॥ १४८ ॥

क्योंकि, संख्यात आवलियों प्रमाण जघन्य आवाधामें आवलीके संख्यातवें भाग मात्र आवाधास्थानोंका भाग देनेपर संख्यात अंक प्राप्त होते हैं ।

उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है ॥ १४९ ॥

कितने मात्रसे वह विशेष अधिक है ? वह आवलीके संख्यातवें भाग मात्रसे विशेष अधिक है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥ १५० ॥

क्योंकि, संख्यात आवली प्रमाण उत्कृष्ट आवाधाका पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरोंमें भाग देनेपर असंख्यात अंक लब्ध होते हैं ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ १५१ ॥

क्योंकि, पत्योपमके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भाग प्रमाण नानाप्रदेशगुणहानिशाला-
काओंका पत्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तरमें भाग देनेपर असंख्यात अंक लब्ध होते हैं ।

एक आवाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है ॥ १५२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पत्योपमका असंख्यातवां भाग अथवा उत्कृष्ट आवाधासे अपचर्तित नानागुणहानिशालाकावें हैं ।

ठिदिबंधट्टाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १५३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जस्सोवट्ठिदसगुक्खसावाहा ।

जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ १५४ ॥

सुगमं ।

उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ १५५ ॥

केत्तिमत्तेण ? पल्लिदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तेण ।

एहंदियवादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्तयाणं सत्तण्हं कम्माणं
आजववज्जाणमावाहट्टाणाणि आवाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि
थोवाणि ॥ १५६ ॥

कुदो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागप्पमाणत्तादो ।

जहणिया आवाहा असंखेज्जगुणा ॥ १५७ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? आवलियाए असंखेज्जदि-
भागमेत्तआवाहट्टाणेहि संखेज्जावलियमेत्तजहण्णावाहाए ओवट्ठिदाए आवलियाए असंखेज्जदि-
भागुलंभादो ।

स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ १५३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात अंकोंसे अपवर्तित अपनी उत्कृष्ट आवाधा है ।

जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ १५४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ १५५ ॥

यह कितने मात्रसे विशेष अधिक है ? वह पद्योपमके संख्यातवर्षे भाग मात्रसे अधिक है ।

वादर और सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त-अपर्याप्त जीवोंके आयुको छोड़कर शेष सात कर्मोंके आवाधास्थान और आवाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोके हैं ॥ १५६ ॥

क्योंकि, वे आबलीके असंख्यातवर्षे भाग प्रमाण हैं ।

जघन्य आवाधा असंख्यातगुणी है ॥ १५७ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आबलीका असंख्यातवर्षे भाग है, क्योंकि, आबलीके असंख्यातवर्षे भाग प्रमाण आवाधास्थानोंका संख्यात आबली मात्र जघन्य आवाधामें भाग देनेपर आबलीका असंख्यातवर्षे भाग पाया जाता है ।

१ तामसौ 'आवलियाए' इत्येतत्पदं नोपलभ्यते ।

उक्कस्सिआ आवाहा विसेसाहिया ॥ १५८ ॥

केतियमेत्तो विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १५९ ॥

को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो उक्कस्सावाहोवट्ठिदणाणुणहाणि-
सलागाओ वा ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ १६० ॥

सुगममेदं ।

एयमावाहाकंदयमसंखेज्जगुणं ॥ १६१ ॥

एदं पि सुगमं ।

ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ १६२ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो ॥ १६३ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ १६४ ॥

केतियमेत्तेण ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण । संपहि एदेण अप्पाबहुअसुत्तेण

उत्कृष्ट आवाधा विशेष अधिक है ॥ १५८ ॥

विशेष कितना है ? वह आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥ १५९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पस्योपमका असंख्यातवां भाग अथवा उत्कृष्ट आवाधासे
अपवर्तित नानागुणहानिशब्दाकार्य हैं ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा हैं ॥ १६० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

एक आवाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है ॥ १६१ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ १६२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है ॥ १६३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ १६४ ॥

वह कितने भागसे विशेष अधिक है ? वह पस्योपमके असंख्यातवें भाग भागसे अधिक है ।

सूचिदानं सत्त्वाण-परत्वाणअप्याबहुआणं परूवणं कस्सामो । सत्त्वाणे पयदं—पंचिदियाणं पञ्जत्तयाणं सण्णीणं सब्वत्थोवा आउअस्स जहण्णिया आबाहा । जहण्णओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । णामा-गोदाण-माबाहाट्टाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्टाणा आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आबाहाट्टाणाणि आबाहा-कंदयाणि च दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहाट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणि-ट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । अट्ठण्णं कम्माणं एगपदेसगुण-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । सत्तण्णं कम्माणमेगमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं । आउअस्स द्विदिबंधट्टाणाणि असंखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहियो ।

अब इस अल्पबहुत्वस्त्रले सूचित स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वकी प्रकृपाणा करते हैं । इनमें स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है—संखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है । जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । नाम व गोत्रके आबाधास्थान व आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयके आबाधास्थान व आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य असंख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयु कर्मके नानाप्रदेशगुणहानि-स्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेश-गुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । आठ कर्मोंका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यात-गुणा है । सात कर्मोंका एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है । आयुके स्थितिवन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिपु 'संखेज्जगुणाणि' इति पाठः ।

मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो असंखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं द्विदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं द्विदिबंधाणविसेसो विसेसाहिओ । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स द्विदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ ।

पंचिदियाणं सण्णीणमपज्जत्तयाणमाउअस्स । सव्वत्थोवा जहण्णिया आबाहा । जहण्णओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जयण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । णामा-गोदाण-माबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स द्विदिबंधाणविसेसो संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणमारो ? पत्तिदो-वमस्स वग्गमूलस्स असंखेज्जदिमागो । चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । सत्तणं

स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । नाम-गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है । जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है । गुणकार पद्मोपमके बर्गमूलका असंख्यातवां भाग है । चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । सात

कम्माणमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो असंखेज्जाणि पल्लिदोवमवगमूलाणि । सत्तणं कम्माणमेगमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेजावलियाओ गुणगारो । आवलियाए असंखेज्जदिमागो ति णिक्खेबा-इरियो भणदि । किंतु सो एत्थ ण उत्तो, बहुवेदि आइरिएदि असम्पदादो' । णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अंतोमुहुत्तं । चदुणं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं द्विदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । चदुणं कम्माणं द्विदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स द्विदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ ।

पंचिदियाणं असण्णीणं पज्जतयाणं णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । चदुणं कम्माणं आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुणं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।

कर्मोंका एकप्रवेशगुणहनिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार पस्योपमका असंख्यातवां भाग है जो पस्योपमके असंख्यात वर्गमूल प्रमाण है । सात कर्मोंका एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार असंख्यात आवलियां हैं । गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, ऐसा निक्षेपाचार्य कहते हैं । किन्तु उसे यहां नहीं कहा गया है, क्योंकि, वह बहुतसे आचार्योंको श्रृष्ट नहीं है । नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिवन्ध असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार अन्तर्मुहूर्त है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । नाम गोत्रके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंके स्थितिवन्धस्थान विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ।

असंखी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके नाम व गोत्रके आबाधास्थान एवं आबाधा-काण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोके हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष

! आपत्तौ 'असंखदत्तादो', आपत्तौ 'असंखदत्तादो', आपत्तौ 'असंखदत्तादो' इति पाठः ।

मोहणीयस्स जहण्णिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? पत्तिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । चट्ठणं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । अट्ठणं कम्माणमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? असंखेज्जपत्तिदोवम-पढमवग्गमूलाणि । सत्तण्हं कम्माणमेयमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? णाणागुण-हाणिसलागाणमसंखेज्जदिभागो । आउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहियो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंध-ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । चट्ठणं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहियो । चट्ठणं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहियो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहियो । मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहियो ।

असण्णिपंचिदियअपज्जत्याण णामा-गोदाणं आबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च

अधिक है । मोहनीयकी अज्जन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उक्कट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उक्कट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार पत्त्योपमके वर्गमूलका असंख्यातवां भाग है । नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार आबलीका असंख्यातवां भाग है । चार कर्मोंके नाना-प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । आठ कर्मोंके एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार पत्त्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल हैं । सात कर्मोंका आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? गुणकार नानागुणहानिशलाकाओंका असंख्यातवां भाग है । आयुके स्थितिवन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार अस्तसुद्धत है । उक्कट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम-गोत्रके स्थितिवन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार आबलीका असंख्यातवां भाग है । चार कर्मोंके स्थितिवन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । नाम-गोत्रका अज्जन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उक्कट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका अज्जन्य स्थितिवन्धविशेष अधिक है । उक्कट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका अज्जन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उक्कट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है ।

अबली पंचेन्द्रिय अपर्जातकर्मोंके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक

दो वि तुल्लाणि थोवाणि । चदुण्णं कम्माणं आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । आउअस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहण्णो द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । णामा-भोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स द्विदिबंधाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सो द्विदिबंधो विसेसाहियो । णामा-भोदाणं णाणापदेसगुहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि । सत्तण्णं कम्माणमेगपदेसगुहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । सत्तण्णं कम्माणमेगमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं । उवरि सेसपदानमसण्णिपंचिदियपज्जतभंगो ।

वेइदिय-तेइदिय-चउरिंदियपज्जतयाणं णामा-भोदाणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । आउअस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । तस्सेव जहण्णो

दोनो ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनो ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनो ही तुल्य संब्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संब्यातगुणी है । जघन्य स्थितिवन्ध संब्यातगुणा है । आबाधास्थान संब्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संब्यातगुणी है । उनकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संब्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके स्थितिवन्धस्थान संब्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंब्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संब्यातगुणे हैं । सात कर्मोंका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंब्यातगुणा है । सात कर्मोंका एक आबाधाकाण्डक असंब्यातगुणा है । आगे शेष पदोंकी प्ररूपणा अस्संखी पचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है ।

इन्द्रिय, अिन्द्रिय और अतुिन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनो ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनो ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनो ही तुल्य संब्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संब्यातगुणी है । उसीकर जघन्य

ट्टिदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुणं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव आउअस्स ट्टिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ ट्टिदिबंधो विसेसाहियो । णामा-गोदाणं णाणापदेसगुहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । सेसपदानमसणिणंपंचिदियअपज्जत्तभंगो ।

एदेसिं चैव अपज्जत्ताणं असणिणंपंचिदियअपज्जत्तभंगो । बादरेइंदियपज्जत्तएसु णामा-गोदाणमाबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि योवाणि । चदुणं कम्माण-माबाहट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहा-ट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । आउअस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । जहणयो ट्टिदिबंधो संखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुणं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव आउअस्स ट्टिदिबंधट्ठाणाणि

स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । नाम व गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके आयुके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । शेष पदोंकी प्ररूपणा असंखी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है ।

इन्हीं इन्द्रिय, श्रोत्रिय और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंकी प्ररूपणा असंखी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें नाम-गोत्रके आबाधा स्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । उसीके आयुके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध

संखेजगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणि-
ट्ठाणंतराणि असंखेजगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहि-
याणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेजगुणाणि । सत्तण्णं कम्माणमेगपदेस-
गुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेजगुणं । सत्तण्णं कम्माणमेगमाबाहाकंदयमसंखेजगुणं । णामा-गोदाणं
द्विदिबंधट्ठाणाणि असंखेजगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं द्विदिबंधट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।
मोहणीयस्स द्विदिबंधट्ठाणाणि संखेजगुणाणि । णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो
असंखेजगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो
विसेसाहिओ । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो
असंखेजगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ ।

बादरेइंदियअपजत्त-सुहुमेइंदियपजत्तापजत्तानं च णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहा-
कंदयाणि च दो वि तुलाणि थोवाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि
च दो वि तुलाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च
दो वि तुलाणि संखेजगुणाणि । आउअस्स जहण्णिया आबाहा संखेजगुणा । जहण्णओ
द्विदिबंधो संखेजगुणो । आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेजगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा
विसेसाहिया । णामा-गोदाणं जहण्णिया आबाहा संखेजगुणा । उक्कस्सिया आबाहा
विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणं जहण्णिया आबाहा विसेसाहिया । उक्कस्सिया आबाहा

विशेष अधिक है । नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । चार
कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानि-
स्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । सात कर्मोंका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ।
सात कर्मोंका एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है । नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान
असंख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थिति-
बन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । उत्कृष्ट
स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उत्कृष्ट
स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है । उत्कृष्ट
स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त-अपर्याप्त जीवोंके नाम-गोत्रके
आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आबाधा-
स्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान
और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । आयुकी जघन्य आबाधा संख्यात-
गुणी है । जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है । आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं ।
उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट
आबाधा विशेष अधिक है । चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उत्कृष्ट

विसेसाहिया । मोहणीयस्स जहणिया आबाहा संखेजगुणा । उक्कस्सया आबाहा विसेसाहिया । आउअस्स द्विदिबंधाणाणि संखेजगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेजगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेजगुणाणि । सत्तण्णं कम्माणमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेजगुणं । सत्तण्णं कम्माणमेग-माबाहाकंदयमसंखेजगुणं । णामा-गोदाणं द्विदिबंधाणाणि असंखेजगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं द्विदिबंधाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबंधाणाणि संखेजगुणाणि । णामा-गोदाणं जहणओ द्विदिबंधो असंखेजगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । चदुण्णं कम्माणं जहणओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । मोहणीयस्स जहणओ द्विदिबंधो संखेजगुणो । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । एवं सत्याणप्पाबहुगं समत्तं ।

परत्याये पयदं—सुहुमेइंदियअपजत्तयाण णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहा-कंदयाणि च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । चदुण्णं कम्माणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेजगुणाणि । बादरएइंदियअपजत्तयाणं णामा-गोदाणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेजगुणाणि । चदुण्णं कम्माणं आबाहाट्ठाणाणि

आबाधा विशेष अधिक है । मोहनीयकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । आयुके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । नाम-गोत्रके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । सात कर्मोंका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । सात कर्मोंका एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है । नाम-गोत्रके स्थितिवन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिवन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिवन्ध असंख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । चार कर्मोंका जघन्य स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । इस प्रकार स्वस्थान अपरबहुत समाप्त हुआ ।

अब परस्थान अत्यबहुतका अधिकार है — सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके नाम व गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । चार कर्मोंके आबाधा स्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके नाम-गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । चार

विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जुणाणि । चोदसइं जीवसमासाणमाउअस्स जहणिया आबाहा संखेज्जुणा । जहण्णओ द्विदिबंधो संखेज्जुणो । सत्तण्णमपज्जत्ताणं जीवसमासाणमाउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स आउअस्स आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहणिया आबाहा संखेज्जुणा । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । तस्सेव णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चटुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चटुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चटुण्णं कम्माणं जहणिया आबाहा विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चटुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चटुण्णं कम्माणं उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । एवं सेसपदाणि विसेसाहियाणि ति वत्तवाणि । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स विशेष अधिक हैं । मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डके दोनों ही तुल्य संख्यात गुणे हैं । चोद जीवसमासोंके आयुकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । जघन्य स्थिति-बन्ध संख्यातगुणा है । सात अपर्याप्त जीवसमासोंके आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके आयु कर्मके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके [नाम-गोत्रकी] उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके बार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके बार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके बार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके बार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तके बार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके बार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । इसी प्रकार उसके शेष पद विशेष अधिक हैं, ऐसा कहना चाहिये । बादर

[illegible]

है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसी चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके मोहनीयकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। अस्त्री पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा संख्यातगुणी है। उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रकी उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंकी जघन्य आबाधा विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके

[illegible]

संखेजगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । चदुण्णं कम्माणमाबाह्वाणाणि
 आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।
 मोहणीयस्स आबाहाह्वाणाणि आबाहाकंदयाणि च दो वि तुल्लाणि संखेजगुणाणि ।
 उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । बादरएइंदियपज्जत्ताणमाउअस्स आबाहाह्वाणाणि
 विसेसाहियाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । पंचिंदियसण्णिअसण्णीणं
 पज्जत्ताणमाउअस्स आबाहाह्वाणाणि संखेजगुणाणि । उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ।
 बारसण्णं जीवसमासाणमाउअस्स द्विदिबंधह्वाणाणि संखेजगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो
 विसेसाहियो । असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणमाउअस्स णाणापदेसगुणह्वाणिह्वाणंतराणि असंखेज-
 गुणाणि । सुहुमेइंदियपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणह्वाणिह्वाणंतराणि असंखेजगुणाणि ।
 बादरेइंदियपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणह्वाणिह्वाणंतराणि विसेसाहियाणि ।
 सुहुमेइंदियपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणह्वाणिह्वाणंतराणि विसेसाहियाणि । बादरे-
 इंदियपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं णाणापदेसगुणह्वाणिह्वाणंतराणि विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदिय-
 अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणह्वाणिह्वाणंतराणि विसेसाहियाणि । बादरएइंदिय-
 अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणह्वाणिह्वाणंतराणि विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदिय-
 पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणह्वाणिह्वाणंतराणि विसेसाहियाणि । बादरेइंदिय-
 पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं णाणापदेसगुणह्वाणिह्वाणंतराणि विसेसाहियाणि । सुहुमेइंदिय-

संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । चार कमौंके आबाधास्थान और
 आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है ।
 मोहनीयके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट
 आबाधा विशेष अधिक है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुके आबाधास्थान
 विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय संकी व असंकी
 पर्याप्तक जीवोंके आयुके आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक
 है । बारह जीवसमासोंके आयुके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिवन्ध
 विशेष अधिक है । असंकी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुके नानाप्रदेशगुणह्वाणि-
 स्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके नाम गोत्रके नाना-
 प्रदेशगुणह्वाणिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके
 नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणह्वाणिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक
 जीवोंके नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणह्वाणिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय
 पर्याप्तक जीवोंके नाम गोत्रके नानाप्रदेशगुणह्वाणिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म
 एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कमौंके नानाप्रदेशगुणह्वाणिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं । बादर
 एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कमौंके नानाप्रदेशगुणह्वाणिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं ।
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कमौंके नानाप्रदेशगुणह्वाणिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं ।
 बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कमौंके नानाप्रदेशगुणह्वाणिस्थानान्तर विशेष अधिक हैं ।

गुणहाणिह्वानंतराणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्य णाणापदेसगुणहाणिह्वानंतराणि संखेजगुणाणि । अट्ठण्णं कम्माणं एगपदेसगुणहाणिह्वानंतरमसंखेजगुणं । सत्तण्णं कम्माण-
मेगमाबाहाकंदयमसंखेजगुणं । असण्णिपंचिदियपज्जत्तयस्स आउअस्स द्विदिबंधहाणाणि
असंखेजगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-
गोदाणं द्विदिबंधहाणि असंखेजगुणाणि । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधहाणाणि विसेसाहियाणि ।
मोहणीयस्स द्विदिबंधहाणाणि संखेजगुणाणि । बादरएइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं
द्विदिबंधहाणाणि संखेजगुणाणि । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधहाणाणि विसेसाहियाणि ।
मोहणीयस्स द्विदिबंधहाणाणि संखेजगुणाणि । सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं द्विदिबंध-
हाणाणि संखेजगुणाणि । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधहाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स
द्विदिबंधहाणाणि संखेजगुणाणि । बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं द्विदिबंधहाणाणि
संखेजगुणाणि । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधहाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबंध-
हाणाणि संखेजगुणाणि । बेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं द्विदिबंधहाणाणि असंखेज-
गुणाणि । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधहाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबंध-
हाणाणि संखेजगुणाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं द्विदिबंधहाणाणि संखेजगुणाणि ।
चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधहाणाणि विसेसाहियाणि । मोहणीयस्स द्विदिबंधहाणाणि
संखेजगुणाणि । तेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं द्विदिबंधहाणाणि संखेजगुणाणि ।

मोहनीयके नानाप्रदेशगुणहनिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं । आठ कर्मोंका एकप्रदेश-
गुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । सात कर्मोंका एक आबाजाकाण्डक असंख्यात-
गुणा है । असंखों पंचेन्द्रिय पर्याप्तके आयुके स्थितिवन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट
स्थितिवन्ध विशेष अधिक है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम-गोत्रके स्थितिवन्धस्थान
असंख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिवन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थिति-
वन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके नाम-गोत्रके स्थितिवन्धस्थान
संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिवन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थिति-
वन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम-गोत्रके स्थितिवन्धस्थान
संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिवन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थिति-
वन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तके नाम-गोत्रके स्थितिवन्धस्थान
संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिवन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थिति-
वन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । त्रिन्द्रिय अपर्याप्तके नाम-गोत्रके स्थितिवन्धस्थान
असंख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके स्थितिवन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिव-
न्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उन्नीके पर्याप्तके नाम-गोत्रके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ।
चार कर्मोंके स्थितिवन्धस्थान विशेष अधिक हैं । मोहनीयके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे
हैं । त्रीन्द्रिय अपर्याप्तके नाम-गोत्रके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । चार कर्मोंके

[illegible]

स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। अनुरिन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। असंखी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। उसीके पर्याप्तकके नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं। मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं। बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम-गोत्रका अघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम गोत्रका अघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका अघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम-गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय

Digitized by Google

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु 'बादरएइदियपञ्च०' इति पाठः ।

[illegible][illegible]

विसेसाहिओ । तस्सेव अपजत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पजत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । असण्णिपंचिदिय-पजत्तयस्स चटुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपजत्तयस्स चटुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपजत्तयस्स चटुण्णं कम्माणं उक्क-स्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पजत्तयस्स चटुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । असण्णिपंचिदियपजत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो संखेजगुणो । तस्सेव अपजत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपजत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पजत्तयस्स मोहणीयस्स उक्क-स्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । सण्णिपंचिदियपजत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदि-बंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो संखेजगुणो । तस्सेव अपजत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ द्विदिबंधो संखेजगुणो । चटुण्णं कम्माणं जहण्णओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स जहण्णओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपजत्तयस्स णामा-गोदाणं द्विदिबंधाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंधाणाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । मोहणीयस्स द्विदिबंधाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पजत्तयस्स णामा-गोदाणं द्विदिबंधाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंधो

[illegible]

विसेसाहियो । चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंघट्टाणाणि विसेसाहियाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंघो विसेसाहियो । मोहणीयस्स द्विदिबंघट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि । उक्कस्सओ द्विदिबंघो विसेसाहियो ।

संपदि सुत्ततोणिनीयस्स एदस्स अप्पाबहुगस्स विसमपदाणं भंजणयिया पंजियां उच्चदे । तं जहा—तिणिमाससहस्समाबाहं काऊण समऊण-विसमऊणादिकमेण पल्लोवमस्स असंखेज्जदिभागं जाव ओसारिय बंधदि ताव णिसेयद्विदी च उग्गा होदि । कुदो ? एदेसु द्विदिबंघविसेसेसु उक्कसाबाहं मोत्तुण अण्णाबाहाणमभावादो । पुणो संपुण्णआबाहाकंदएण्णउक्कस्सद्विदि बंधमाणस्स आबाहा समऊणतिणिवाससहस्समेता होदि, पुव्विलाबाहाचरिमसमए पढमणिसेयो पडिदो त्ति तस्स णिसेयद्विदीए अंतम्भावादो । समऊणाबाहाकंदएण्णउक्कस्सद्विदिबंधे संपुण्णआबाहाकंदएण्णउक्कस्सद्विदिबंधे च णिसेय-द्विदीयो समाणाओ, पुव्विलाबाधादो संपदिआबाधाए समऊणत्तुवलंभादो । पुणो समऊण-तिणिवाससहस्साणि आबाहभावेण धुवं करिय समऊण-विसमऊणादिकमेण जाव पल्लोवमस्स असंखेज्जदिभागमेतद्विदिबंघट्टाणाणि ओसारिय बंधदि ताव णिसेयद्विदी चेव अधिक है । चार कमोंके स्थितिबन्धस्थान विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । मोहनीयके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

अब सूचके अन्तर्गत इस अष्टावहुत्वके विषय पर्वोंकी भंजनात्मक पंजिकाको कहते हैं । यथा, तीन हजार वर्ष मात्र आबाधा करके एक समय कम, दो समय कम, इत्यादि क्रमसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग तक नीचे हटकर स्थितिको जब तक बांधता है तब तक निषेकस्थिति ही कम होती जाती है, क्योंकि, इन स्थितिबन्धोंमें उत्कृष्ट आबाधाके अतिरिक्त अन्य आबाधाओंकी सम्भावना नहीं है । पश्चात् सम्पूर्ण आबाधाकाण्डकसे रहित उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाले जीवके आबाधाका प्रमाण एक समय कम तीन हजार वर्ष होता है, क्योंकि पूर्वोक्त आबाधाके अन्तिम समयमें ब्रूँकि प्रथम निषेक आशुका है अतः वह निषेक स्थितिमें गर्भित है । एक समय कम आबाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिबन्धमें तथा सम्पूर्ण आबाधाकाण्डकसे हीन उत्कृष्ट स्थितिबन्धमें निषेक स्थितियाँ समान हैं, क्योंकि, पहिलेकी आबाधासे इस समयकी आबाधा एक समय तक पायी जाती है । फिर एक समय कम तीन हजार वर्षोंको आबाधा रूपसे स्थिर करके एक समय कम, दो समय कम, इत्यादि क्रमसे जब तक पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबन्धस्थान नीचे हटकर स्थितिको बांधता है तब तक केवल निषेक स्थिति ही

१ कारिका स्वल्पविरुद्धं सूत्रं सूचनकं स्मृतम् । टीका निरन्तरं व्याख्या पञ्जिका परमञ्जिका ॥ प्रमेयर० (वेजेवप्रवपुत्रस्येत्यादिश्लोकस्य टिप्पण्यम्) पिञ्जवदेऽर्थोऽस्यामिति 'पिजि आबाधेः' अश्वाम्बोरादिकादधिकरणे 'गुरोश्च इत्थं' इत्यप्रत्यये, पृषोदरत्वादिकास्वाकारे स्वायें कनि व, पिञ्जवतीति विप्रदे द्व कनि वा पञ्जिका—निधोपपदस्य व्याख्या । अमरकोष ३, ५, ७. (स्तालाख्या टीका) १ प्रसिद्ध 'पुण' इति पाठः ।

ऊणा होदि, समऊणक्कत्साबाधाए तत्थ धुवभावेण अवट्ठाणदंसणादो । पुणो विदिय-
आबाधाकंदयमेत्तमोसरिय बंधे उक्कत्साबाहा दुसमऊणा होदि । कुदो ? समउत्तराद्विदि-
बंधणिसेगट्ठिदीहि सह समऊणद्विदिबंधणिसेगट्ठिदीणं समाणत्तुवलंभादो । पुणो एत्तो समऊण-
दुसमऊणादिकमेण जाव पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण्णद्विदि बंधदि ताव
दुसमऊणतिणिणवाससहस्समेत्ता आबाहा होदि । संपुण्णेषु आबाहाकंदएसु परिहीणेषु
तिसमऊणतिणिणवाससहस्समेत्ताआबाहा होदि । एवं समऊणाबाहाकंदयमेत्ताओ द्विदीयो
जाव परिहायंति ताव एक्का चेव आबाहा होदूण पुणो संपुण्णेगाबाहाकंदयमेत्तद्विदीसु
परिहीणासु पुब्बिलाबाहादो संपहियाबाहा समऊणा होदि ति सक्कथ वत्तवं । एदेण
कमेण ओदोदेदवं जाव जहण्णाबाहा जहण्णणिसेयद्विदी च चिट्ठदि ति ।

जहण्णद्विदिबंधादो समउत्तरादिकमेण जाव समऊणाबाहाकंदयमेत्तद्विदीयो बद्धिदूण
बंधदि ताव आबाहा जहण्णिया चेव होदि । पुणो संपुण्णमेगमाबाहाकंदयमेत्तं बद्धिदूण
बंधमाणस्स आबाहा जहण्णाबाहादो समउत्तरा होदि । आबाहावत्तिदसमए णिसेगट्ठिदी
ण वड्ढदि, अवकमेण दोण्णं द्विदीणं बद्धिप्पसंगादो । दोसु समएसु जुगवं वत्तिदेसु को
उत्तरोत्तर कम होती जाती है, क्योंकि, उनमें एक समय कम उत्कृष्ट आबाधाका ध्रुव
स्वरूपसे अवस्थान देखा जाता है । पश्चात् द्वितीय आबाधाकाण्डकके बराबर स्थितिबन्ध-
स्थान नीचे हटकर जो स्थितिबन्ध होता है, उसमें उत्कृष्ट आबाधा दो समय कम होती
है, क्योंकि, एक समय अधिक स्थितिबन्धोंकी निषेक स्थितियोंके साथ एक समय कम
स्थितिबन्धकी निषेकस्थितियोंकी समानता पायी जाती है । इसके आगे एक समय कम,
दो समय कम, इत्यादि क्रमसे जब तक पदोपमके अस्त्ययातवें भागसे हीन स्थितिको
बांधता है तब तक आबाधा दो समय कम तीन हजार वर्ष प्रमाण होती है । सम्पूर्ण
आबाधा-काण्डकोंके हीन होनेपर आबाधा तीन समय कम तीन हजार वर्ष मात्र होती
है । इस प्रकार जब तक एक समय कम आबाधाकाण्डकके बराबर स्थितियां हीन होती
हैं तब तक एक ही आबाधा होती है । पश्चात् सम्पूर्ण एक आबाधाकाण्डकके बराबर
स्थितियोंके हीन हो जानेपर पहिलेकी आबाधासे इस समयकी आबाधा एक समय कम
होती है, ऐसा सर्वत्र कथन करना चाहिये । इस क्रमसे जब तक जघन्य आबाधा और
जघन्य निषेकस्थिति प्राप्त नहीं होती तब तक नीचे उतारना चाहिये ।

जघन्य स्थितिबन्धसे एक समय अधिक, दो समय अधिक, इत्यादि क्रमसे जब तक
एक समय कम आबाधाकाण्डकके बराबर स्थितियां वृद्धिगत होकर बन्ध होता है तब
तक आबाधा जघन्य ही होती है । पुनः सम्पूर्ण एक आबाधाकाण्डकके बराबर स्थितियोंके
वृद्धिगत होनेपर स्थितिको बांधनेवाले जीवके जघन्य आबाधाकी अपेक्षा एक समय
अधिक आबाधा होती है । आबाधाकी वृद्धिके समयमें निषेकस्थितिकी वृद्धि नहीं होती,
क्योंकि, वैसा होनेपर एक साथ दोनों स्थितियोंकी वृद्धिका प्रसंग आता है ।

शंका—दो समयोंकी एक साथ वृद्धि होनेपर क्या दोष है ?

१ प्रतिपु 'परिहीणसु' इति पाठः । २ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-माप्रतिपु 'वत्तिदे' इति पाठः ।

दोसो ? न, जहण्णट्टिदिमुक्कस्सदिमिहं सोहिच्च रूवे पक्खित्ते ट्टिदिबन्धट्ठाणाणमणुप्पत्ति-
प्पसंगादो । न च एवं, ट्टिदिबन्धट्ठाणसुत्तेण सह विरोहादो । एवं कदे अन्तोमुहुत्तूणत्तिणि-
वाससहस्समेत्ताणि आबाहाट्ठाणाणि लद्धाणि^१ होति । जत्तियाणि आबाहाट्ठाणाणि
तत्तियाणि चेव आबाहाकंदयाणि लब्धमिति । जवरि अतिममाबाहकंदयमेगस्सवृणं^२ ।
कुदो ? जहण्णट्टिदिजहण्णाबाहाए चरिमसमयस्स सव्वणिसेगाट्टिदीसु परिहीणासु
जहण्णट्टिदिग्गहादो ।

मोहणीयस्स अंतोमुहुत्तूणसत्तवाससहस्समेत्ताणि आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि
च हवंति । एत्थ आबाहाकंदएसु एगस्सव्वणयणस्स कारणं पुवं व कत्तव्वं । एवमूणिदे
आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि च तुल्लाणि ति अप्पाबहुवसुत्तेण विरोहो किण्ण
होदि ति उत्ते, न, बीचारट्ठाणेसु उप्पण्णआबाहाकंदयसलागाणं तेहि समाणत्तं
पडि विरोहाभावादो ।

णामा-गोदाणमंतोमुहुत्तूणवेवाससहस्समेत्ताणि आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंदयाणि
हवंति ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, ऐसा होनेसे उत्कृष्ट स्थितिमेंसे जघन्य स्थितिको कम
करके एक अंक मिलानेपर स्थितिवन्धस्थानोंकी उत्पत्तिका प्रसंग जाता है । परन्तु ऐसा
है नहीं, क्योंकि, स्थितिवन्धस्थान स्वयंके साथ विरोध जाता है ।

इस प्रकार करनेपर अन्तर्मुहुर्तसे रहित तीन हजार वर्ष प्रमाण आबाधास्थान प्राप्त
होते हैं । जिनने आबाधास्थान प्राप्त हैं उनके ही आबाधाकाण्डक प्राप्त होते हैं । विशेष
इतना है कि अन्तिम आबाधाकाण्डक एक अंकसे हीन होता है, क्योंकि, जघन्य स्थिति
सम्बन्धी जघन्य आबाधाके अन्तिम समयकी सब निषेकस्थितियोंकी हानि हो जानेपर
जघन्य स्थितिका ग्रहण किया गया है ।

मोहणीय कर्मके अन्तर्मुहुर्तसे हीन सात हजार वर्ष प्रमाण आबाधास्थान और
आबाधाकाण्डक होते हैं । वहाँ आबाधाकाण्डकोंमेंसे एक अंक कम करनेका कारण पहिलेके
ही समान कहना चाहिये ।

शंका—इस प्रकार कम करनेपर ‘आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों
तुल्य हैं’ इस अद्वयवृत्तस्वयंके साथ विरोध क्यों नहीं होगा ?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि उससे विरोध नहीं होगा, क्योंकि,
बीचारस्थानोंमें उत्पन्न आबाधाकाण्डकशलाकाओंकी उनके साथ समानतामें कोई
विरोध नहीं है ।

नाम व गोत्रके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक अन्तर्मुहुर्त कम दो हजार वर्ष
प्रमाण हैं ।

१ अ-आ-काप्रतिपु ‘डिदीहि’ इति पाठः । २ अ-आ-का प्रतिपु ‘अद्धाणि’ इति पाठः ।

३ अ-आ-काप्रतिपु ‘कवानं’ इति पाठः ।

आउअस्स अंतोमुहुत्तणपुव्वकोडितिभागमेत्ताणि आबाहट्ठाणाणि । आबाहाकंदयंणि पुण णत्थि । कारणं चित्तिं वत्तं ।

जेणेवंधिहमाबाहाकंदयं तेणगाबाहाकंदएण समज्जजहण्णट्ठिदिमोवट्ठिय लद्धम्मि एगस्से पक्खित्ते जहणिया आबाहा आगच्छदि । अथवा, जहण्णाबाहाए आबाहाट्ठाण-
गुणिदएगाबाहाकंदए भागे हिदे जं लद्धं तेणं ट्ठिदिबंधट्ठाणेषु भागे हिदे जहणिया
आबाहा आगच्छदि । अथवा, जहण्णाबाहाए उक्कस्साबाहमोवट्ठिय लद्धेण एगमाबाहाकंदयं
गुणिय तेण उक्कस्सट्ठिदीए भागे हिदाए जहणियाबाहा होदि ।

एक्केण आबाहाकंदएण ट्ठिदिबंधट्ठाणेषु भागे हिदेसु आबाहट्ठाणाणि आगच्छंति ।
जहण्णाबाहसुक्कस्साबाहादो सोहिदे सुद्धसेसमाबाहट्ठाणविसेसो णाम । एक्केणाबाहाकंदएण
उक्कस्सट्ठिदीए भागे हिदाए उक्कस्साबाहा होदि । एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरेण कम्मट्ठिदिग्धिं
भागे हिदे णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि आगच्छंति । णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतरेहि
कम्मट्ठिदीए ओवट्ठिदाए एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं होदि । उक्कस्सियाए आबाहाए उक्कस्स-
ट्ठिदीए ओवट्ठिदाए एगमाबाहाकंदयं होदि । अथवा, आबाहाट्ठाणेहि ट्ठिदिबंधट्ठाणेषु
ओवट्ठिदेसु एगमाबाहकंदयं होदि । जहणियाए आबाहाए एगमाबाहाकंदयं गुणिय पुणो

आयुके आबाधास्थान अन्तर्मुहूर्तं कम पूर्वकोटिके तृतीय भाग प्रमाण हैं । उसके
आबाधाकाण्डक नहीं होते । इसका कारण विचारपूर्वक कहना चाहिये ।

जिस कारण इस प्रकारका आबाधाकाण्डक है इसीलिये एक आबाधाकाण्डकका एक
समय कम जघन्य स्थितिमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसमें एक अंक मिला देनेपर
व्य आबाधाका प्रमाण आता है । अथवा, जघन्य आबाधाका आबाधास्थानोंसे गुणित
एक आबाधाकाण्डकमें भाग देनेपर जो लब्ध हो उसका स्थितिवन्धस्थानोंमें भाग देनेसे
जघन्य आबाधा आती है । अथवा, उत्कृष्ट आबाधामें जघन्य आबाधाका भाग देकर जो
प्राप्त हो उससे एक आबाधाकाण्डकको गुणित करना चाहिये । एवमात् प्राप्त राशिका
उत्कृष्ट स्थितिमें भाग देनेपर जघन्य आबाधाका प्रमाण आता है ।

स्थितिवन्धस्थानोंमें एक आबाधाकाण्डकका भाग देनेपर आबाधास्थानोंका प्रमाण
आता है । उत्कृष्ट आबाधामेंसे जघन्य आबाधाको कम करनेपर जो शेष रहे वह
आबाधास्थानविशेष कहलाता है । उत्कृष्ट स्थितिमें एक आबाधाकाण्डकका भाग देनेपर
उत्कृष्ट आबाधाका प्रमाण आता है । कर्मस्थितिमें एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरका भाग
देनेपर नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरका प्रमाण आता है । नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरका
कर्मस्थितिमें भाग देनेपर एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तरका प्रमाण आता है । उत्कृष्ट
स्थितिमें उत्कृष्ट आबाधाका भाग देनेपर आबाधाकाण्डकका प्रमाण होता है । अथवा,
स्थितिवन्धस्थानोंमें आबाधास्थानोंका भाग देनेपर एक आबाधाकाण्डकका प्रमाण

१ अथतौ 'जं बंधं ति तेण', अथतौ 'जं बंधं तेण', इति पाठः । २ अ-आ-ताप्रतिषु
'कम्मट्ठिदि', काप्रतौ 'कम्मट्ठिदि' इति पाठः ।

तत्त्व रूपे आबाहाकंदए अण्णिदे जइण्णद्धिदिबंधो होदि । आबाहट्टाणविसेसेहि एग्मा-
बाहाकंदयं गुणिय तत्त्व रूपेणाबाहाकंदए पक्खित्ते द्विदिबंधट्टाणविसेसो होदि । उक्कस्सियाए
आबाहाए एग्माबाहाकंदए गुणिदे उक्कस्सद्धिदिबंधो होदि ।

संपहि चटुण्णमेइंदियजीवसमासाणमट्टण्णं विगल्लिंदियजीवसमासाणं च आबाहा-
ट्टाणापेमाबाहाकंदयाणं च पमाणपरुवणं कस्सामो । तं जहा—संखेज्जपल्लिंदोवममेत्तवीचार-
ट्टाणेहि जदि संखेज्जावलियमेत्ताणि आबाहट्टाणाणि आबाहाकंदयाणि च लब्धमिति तो
पल्लिंदोवमस्स संखेज्जदिभागमेत्तवीचारट्टाणाणं पल्लिंदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवीचारट्टाणाणं
च केत्तियाणि आबाहाट्टाणाणि आबाहाकंदयाणि च लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए
ओवट्ठिदाए चटुण्णमेइंदियजीवसमासाणमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि आबाहाट्टाणाणि
आबाहाकंदयाणि च होंति । मेइंदियादिअट्टण्णं पि जीवसमासाणमावलियाए संखेज्जदि-
भागमेत्ताणि आबाहाट्टाणाणि आबाहाकंदयाणि च होंति । एवं णाणापदेसगुणहाणि-
ट्टाणंतराणमेगपदेसगुणहाणिट्टाणंतरस्स च तेरासियं काउण्णं सव्वजीवसमाससव्वकम्मट्ठिदीणं
पमाणपरुवणं कायव्वं ।

होता है । अथन्य आबाधासे एक आबाधाकाण्डकको गुणित करके उसमेंसे एक कम
आबाधाकाण्डकको घटा देनेपर अथन्य स्थितिबन्ध होता है । आबाधास्थानविशेषोंसे एक
आबाधाकाण्डकको गुणित करके प्राप्त राशिमें एक कम आबाधाकाण्डकको मिलायेपर
स्थितिबन्धस्थानविशेष प्राप्त होता है । उत्कृष्ट आबाधासे एक आबाधाकाण्डकको गुणित
करनेपर उत्कृष्ट स्थितिबन्ध प्राप्त होता है ।

अब चार एकैन्द्रिय समासों और आठ विकलेन्द्रिय जीवसमासोंके आबाधास्थानों
व आबाधाकाण्डकोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—संख्यात
पत्त्योपम प्रमाण वीचारस्थानोंसे यदि संख्यात आबलि प्रमाण आबाधास्थान व
आबाधाकाण्डक प्राप्त होते हैं, तो पत्त्योपमके संख्यातवें भाग मात्र वीचारस्थानों और
पत्त्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र वीचारस्थानोंके कितने आबाधास्थान और आबाधा-
काण्डक प्राप्त होंगे, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर चार
एकैन्द्रिय जीवसमासोंके आबलिके असंख्यातवें भाग मात्र आबाधास्थान और आबाधा-
काण्डक प्राप्त होते हैं । द्वीन्द्रियादिक आठोंही जीवसमासोंके आबलिके संख्यातवें
भाग मात्र आबाधास्थान व आबाधाकाण्डक होते हैं । इसी प्रकार नानाप्रदेशगुणहानि-
स्थानान्तरों और एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तरका वैराशिक करके समस्त जीवसमासों
सम्बन्धी कर्मस्थितियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

१ काप्रती 'आबाहाट्टाणाणि', ताप्रती 'आबाहाट्टाणाणि (णं)' इति पाठः । २ अ-आप्तयोः
'विचारङ्गणेहिओ वदि', काप्रती 'विचारङ्गणेहिओ वदि', ताप्रती 'विचारङ्गणेहि (हिंते) इति
पाठः । ३ ताप्रती 'लब्धमिति (ब्धमिति)', इति पाठः । ४ ताप्रती 'असंखे' इति पाठः । ५ ताप्रती
'संखेज्ज' इति पाठः ६ ताप्रती 'च' इत्येतत्पदं नास्ति ।

सन्वत्सोवा आउअस्स जहण्णावाहा इदि हुत्ते असंखेयद्वापढमसमए आउअकम्मबंध-
माहविष जहण्णबंधगदाए चरिमसमए वट्टमाणस्स जा आवाहा सा वेत्तन्वा, ततो ऊणाए
अण्णावाहाए अणुवलंमादो* । खुदामवग्गहणप्पहुडि समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण जाव
अपज्जत्तउक्कस्साउअं ति ताव गिरंतरं गंवण पुणो उवरि अंतोमुहुत्तमंतरं होवण सण्णि-असण्णि-
पज्जत्ताणं जहण्णाउअं होदि । पुणो एदमादि कादण उवरि गिरंतरं गच्छदि जाव
तेवीससागरोवमाणि ति । तेण जहण्णाद्विदिबंधमुक्कस्सद्विदिबंधमि सोहिदे सेसकम्माणं
व आउअस्स द्विदिबंधट्ठाणविसेसो ण उप्पज्जदि ति वेत्तन्वं । एवमप्पाबहुं समत्तं ।

(बिदिया चूलिया)

ठिदिबंधज्जवसाणपरूवणदाए तत्थ इमाणि तिण्णि अणिआग-
दाराणि जीवसमुदाहारो पयडिसमुदाहारो द्विदिसमुदाहारो ति ॥ १६५ ॥

संपधि इमा कालविहाणस्स बिदिया चूलिया किमट्टमागदा ? ठिदिबंधट्ठाणाणं
कारणभूदअज्जवसाणट्ठाणपरूवणट्ठं । द्विदिबंधट्ठाणबंधकारणसंकिलेस-विसेहिट्ठाणाणं परूवणा

‘आयुकी जघन्य आवाधा सबसे स्तोक है ऐसा’ कहनेपर असंखेयद्वा
(असंखेपाडा) के प्रथम समयमें आयु कर्मके बन्धको प्रारम्भ करके जघन्य बन्धकालके
अन्तिम समयमें वर्तमान जीवके जो आवाधा होती है उसका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि
उससे हीन और अन्य आवाधा पायी नहीं जाती । धुप्रभवग्रहणको आदि लेकर एक
समय अधिक दो समय अधिक इत्यादि क्रमसे जब तक अपर्याप्तकी उत्कृष्ट आयु नहीं
प्राप्त होती तब तक निरन्तर जाकर, तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त अन्तर होकर संज्ञी व असंज्ञी
पर्याप्तकी जघन्य आयु होती है । फिर इसको आदि लेकर आगे तेतीस रागरोपम
तक निरन्तर जाते हैं । इसलिये उत्कृष्ट स्थितिवन्धमेंसे जघन्य स्थितिवन्धको कम करनेपर
शेष कर्मोंके समान आयु कर्मका स्थितिवन्धविशेष उत्पन्न नहीं होता, ऐसा ग्रहण करना
चाहिये । इस प्रकार अल्पवयस्क समाप्त हुआ ।

(द्वितीय चूलिका)

स्थितिवन्धाध्यवसायस्थानपरूपणा अधिकृत है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं—
जीवसमुदाहार, प्रकृतिसमुदाहार और स्थितिसमुदाहार ॥ १६५ ॥

शंका—अब यह कालविधानकी द्वितीय चूलिका किसलिये आयी है ?

समाधान—बहु स्थितिवन्धस्थानोंके कारणभूत अध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा
करनेके लिये प्राप्त हुई है ।

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ आ-का-ताप्रतिषु ‘संखेयद्वा—’ इति पाठः । २ अ-वा-काप्रतिषु ‘जाव
आवाहा वेत्तन्वा’, मप्रती ‘जाव आवाहा सा वेत्तन्वा’ इति पाठः । ३ प्रतिषु ‘ऊणाए’ इति पाठः । ४ मप्रति-
पाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिषु ‘अण्णावाहाअणुवलंमादो’ इति पाठः । ५ तदेवमुक्तमस्यबहुत्वम् । इदानीं
स्थितिवन्धाध्यवसायस्थानप्ररूपणा कर्तव्या । तत्र त्रीण्यनुयोगद्वाराणि । तथा—स्थितिसमुदाहारः १, प्रकृति-
समुदाहारः २, जीवसमुदाहारश्च ३ । समुदाहारः प्रतिपादनम् । क. प्र. (म. टी.) १, ८७ गायत्र्या उत्थानिका ।

पक्षमाए च्छलियाए कदा चेव, पुणो तत्थ परुविदाणं संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं परुवणा न कायन्वा; पुणस्तदोसप्पसंगादो । न च कसाउदयट्ठाणाणि मोत्तूण द्विदिबंघस्स अण्णं कारणमत्थि, द्विदिअणुभागे कसायदो कुणदि ति वयणेष विरोहप्पसंगादो ति ? एत्थ परिहारो उच्चदे । तं जहा—असादबंघपाओग्गकसाउदयट्ठाणाणि संकिलेसो णाम । ताणि च जहण्णद्विदीए योवाणि होदूण विदियद्विदिप्पहुडि विसेसाहिय कमेण ताव गच्छंति जाव उक्खस्सद्विदि ति । एदाणि च सव्वमूलमयडीणं समाणाणि, कसाएण विणा वज्जमाणमूलमयडीए अणुवलंभादो । सादबंघपाओग्गाणि कसाउदयट्ठाणाणि विसोहिट्ठाणाणि । एदाणि च उक्खस्सद्विदीए योवाणि होदूण दुचरिमद्विदिप्पहुडिप्पगणणादो विसेसाहियकमेण ताव गच्छंति जाव जहण्णद्विदि ति । संकिलेसट्ठाणेहिंतो किमट्ठं विसोहिट्ठाणाणि उणत्तमुवगयाणि ? न, साभावियादो । एदाणि संकिलेसविसोहिट्ठाणाणि णाम द्विदिबंघमूलकारणभूदाणि एदेसिं द्विदिबंघट्ठाणपरुवणाए वण्णणा कदा । न च एत्थ एदेसिं पुवं परुविदाणं परुवणा अत्थि जेण पुणस्तदोसो होअे, किंतु एत्थ द्विदिबंघट्ठाणाणं विसेसपच्चयस्स द्विदिबंघज्जवसाणसण्णिदस्स परुवणा कीरदे । न पुणस्तदोसो वि दुक्खदे, पुव्वमपरुविदद्विदि-

शंका—स्थितिवन्धस्थानोंके कारणभूत संकलेश-विशुद्धिस्थानोंकी प्ररूपणा प्रथम कृत्तिकामें की ही जा चुकी है, अतः वहाँ वर्णित संकलेश-विशुद्धिस्थानोंकी प्ररूपणा फिरसे नहीं की जाती चाहिये; क्योंकि, वैसा करनेपर पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता है । कषायोद्वस्थानोंको छोड़कर स्थितिवन्धका और कोई दूसरा कारण संभव नहीं है, क्योंकि, वैसा होनेपर “स्थिति व अनुभागको कषायसे करता है” इस आगम वाक्यके साथ विरोधका प्रसंग आता है ?

समाधान—यहाँ इस शंकाका उत्तर कहते हैं । वह इस प्रकार है—असाता वेदनीयके बन्ध योग्य कषायोद्वस्थानोंको संकलेश कहा जाता है । वे जघन्य स्थितिमें स्तोक होकर आगे द्वितीय स्थितिसे लेकर उत्कृष्ट स्थिति तक विशेषाधिकताके क्रमसे आते हैं । ये सब मूल प्रकृतियोंके समान हैं । क्योंकि, कषायके बिना बंधको प्राप्त होनेवाली कोई मूल प्रकृति पायी नहीं जाती । सातावेदनीयके बन्ध योग्य परिणामोंको विशुद्धिस्थान कहते हैं । ये उत्कृष्ट स्थितिमें स्तोक होकर आगे त्रिचरम स्थितिसे लेकर जघन्य स्थिति तक गणनाकी अपेक्षा विशेष अधिकताके क्रमसे आते हैं ।

शंका—विशुद्धिस्थान संकलेशस्थानोंकी अपेक्षा हीनताको क्यों प्राप्त हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वे स्वभावसे ही हीनताको प्राप्त हैं ।

ये संकलेश-विशुद्धिस्थान स्थितिवन्धके मूल कारणभूत हैं । इनका वर्णन स्थितिवन्धस्थानप्ररूपणामें किया गया है । यहाँ पूर्वमें वर्णित इनकी पुनः प्ररूपणा नहीं की जा रही है, जिससे कि पुनरुक्त दोष होनेकी सम्भावना हो । किन्तु यहाँ स्थितिवन्धाव्यवस्थान नामसे प्रसिद्ध स्थितिवन्धस्थानोंके विशेष प्रत्यक्ष (कारण) की प्ररूपणा की जा रही है । अतः पुनरुक्त दोष भी सम्भव नहीं है, क्योंकि, यहाँ पूर्वमें जिनकी प्ररूपणा नहीं की गयी है, उन वन्धाव्यवस्थानस्थानोंकी प्ररूपणा की गयी है ।

१ अ-भाप्रतो: ‘जेण पुनवचदोसो न होअ’ काप्रतो ‘वे पुन पुनवचदोसो न होअ’ इति पाठः ।

बंधज्जवसाणट्ठाणपस्खणत्तादो' । द्विदिबंधज्जवसाणट्ठाणाणि कसाउदयट्ठाणाणि ण होति ति कथं भव्वे ? णामा-गोदाणं द्विदिबंधज्जवसाणट्ठाणेहिंतो चटुण्णं कम्माणं द्विदिबंध-ज्जवसाणट्ठाणाणि [अंसखेज्जगुणाणि ति अप्पाबहुगसुत्तादो । जदि पुण कसाउदयट्ठाणाणि केव द्विदिबंधज्जवसाणट्ठाणाणि] होति तो णेदमप्पाबहुगं घट्ठे, कसायोदयट्ठाणेण विणा मूलपयडिबंधाभावेण सव्वपयडिद्विदिबंधज्जवसाणट्ठाणाणं समाणत्तप्पसंगादो । तम्हा सव्वमूलपयडीणं सग-सगउदयादो समुप्पण्णपरिणामाणं सग-सगद्विदिबंधकारणत्तेण द्विदिबंध-ज्जवसाणट्ठाणसणिदाणं एत्थ गहणं कायव्वं, अण्णहा उत्तदोसप्पसंगादो । एदेसिं द्विदिबंधज्जवसाणट्ठाणाणं पस्खणट्ठमिमा बिदिया च्छुलिया आगदा । तत्थ तिण्णि अणियोगहाराणि जीव-पयडि-द्विदिसमुदाहारभेदेण । तत्थ जीवसमुदाहारो किमट्ठ आगदो ? सादासादाणं एकेक्खिस्से द्विदीए एत्तिया जीवा होति ण होति ति जाणावणट्ठमागदो । पयडिसमुदाहारो किमट्ठमागदो ? एदिस्से पयडीए द्विदिबंधज्जवसाणट्ठाणाणि एत्तियाणि

शंका—स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान कषायोदयस्थान नहीं हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—नाम व गोत्रके स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा वार कर्मोंके स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे है, इस अल्पबहुत्वस्वसे वह जाना जाता है । यदि कषायोदयस्थान ही स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान हों तो यह अल्पबहुत्व घटित नहीं हो सकता है, क्योंकि, कषायोदयस्थानके विना मूल प्रकृतियोंका बन्ध न हो सकेनेसे सभी मूल प्रकृतियोंके स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंकी समानताका प्रसंग आता है । अत एव सब मूल प्रकृतियोंके अपने अपने उदयसे जो परिणाम उत्पन्न होते हैं उनकी ही अपनी अपनी स्थितिके बन्धमें कारण होनेसे स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान संज्ञा है । इनका ही ग्रहण यहीं करना चाहिये, क्योंकि, अन्यथा पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता है ।

इन स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणाके लिये द्वितीय च्छलिकाका अवतार हुआ है । उसमें तीन अनुयोगहार हैं—जीवसमुदाहार, प्रकृतिसमुदाहार और स्थितिसमुदाहार ।

शंका—इनमें जीवसमुदाहार किसलिये आया है ?

समाधान—साता व असाताकी एक एक स्थितिमें इतने जीव हैं व इतने नहीं है, इस बातके ज्ञापनार्थ जीवसमुदाहार प्राप्त हुआ है ।

प्रकृतिसमुदाहार किसलिये आया है ?

इस प्रकृतिके स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान इतने होते हैं और इतने नहीं होते हैं, इस

१ अ-आ-का-ताप्रतिष्ठनुपलम्बमानमिदं हेतुवचनं मप्रतिसोऽत्र योजितम् । २ अ-आ-का-ताप्रतिष्ठनु-पलम्बमानोऽयं कोङ्कश्यः पाठो मप्रतिसोऽत्र बोधितः ।

होति [एत्तिवाणि] ण होति ति जाणावणद्धमागदो । द्विदिसमुदाहारो किमद्धमागदो ? एदिस्से द्विदीए एत्तिवाणि द्विदिबंज्जवसाणट्ठाणाणि होति, एत्तिवाणि ण होति ति जाणावणद्धं । ण च तिणिण अणियोगहारणि भोत्तूण एव चउत्थमणियोगदारं संभवदि, अणुवलंभादो । पयडिद्विदिसमुदाहारणं द्विदिबंज्जवसाणट्ठाणपरुवणद्धं^१ होदु णाम, पयडि-द्विदीओ अस्सिदूण तत्थ द्विदिबंज्जवसाणट्ठाणपरुवणुवलंभादो । ण जीवसमुदाहारस्से, तत्थ तदणुवलंभादो ति ? ण एस दोसो, ठिदीणं कजे कारणोवयारेण ठिदिबंज्जवसाणट्ठाणववणसोवलंभादो । ण च जीवसमुदाहारो उवयारेण द्विदिबंज्जवसाणट्ठाणसण्णिद-द्विदीयो ण परुवेदि, तत्थ जीवसेसिद्विदिपरुवणुवलंभादो । अधवा, ठिदिबंज्जवसाणट्ठाणमासओ ति जीवाणं तत्थ तव्वणसो ति ण दोसो ।

जीवसमुदाहारे ति जे ते णाणावरणीयस्स बंधा जीवा ते दुविहा-सादबंधा चेव असादबंधा चेव ॥ १६६ ॥

पुव्वुदिद्वअहियारसंभालणद्धं जीवसमुदाहारो पयदं ति अज्झाहारो कायव्वो, अण्णहा वातका परिहान करानेके लिये प्रकृतिसमुदाहारका अवतार हुआ है । स्थितिसमुदाहार किस लिये आया है ? इस स्थितिके इतने स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते हैं और इतने नहीं होते हैं, इसका परिहान करानेके लिये स्थितिसमुदाहार प्राप्त हुआ है । इन तीन अनुयोगद्वारोंको छोड़कर यहां किसी चौथे अनुयोगद्वारकी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, वह पाया नहीं जाता ।

शंका—स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा करनेके लिये प्रकृतिसमुदाहार व स्थितिसमुदाहारकी सम्भावना भले ही हो, क्योंकि, प्रकृति व स्थितिका आश्रय करके वहां स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा पायी जाती है । किन्तु जीवसमुदाहारकी सम्भावना नहीं है, क्योंकि, वहां उनकी प्ररूपणा पायी नहीं जाती ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, कार्यमें कारणका उपचार करनेसे स्थितियोंकी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान संज्ञा पायी जाती है । और जीवसमुदाहार उपचारसे स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान संज्ञाको प्राप्त हुई स्थितियोंकी प्ररूपणा न करता हो, ऐसा है नहीं; क्योंकि, उसमें जीवसे विशेषताको प्राप्त हुई स्थितियोंकी प्ररूपणा पायी जाती है । अधवा, चूँकि स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान आकाश है, अतः वहाँ जीवोंकी उक्त संज्ञामें कोई दोष नहीं है ।

जीवसमुदाहार प्रकृत है । जो ज्ञानावरणीयके बन्धक जीव हैं वे दो प्रकार हैं—सातबन्धक और असातबन्धक ॥ १६६ ॥

पूर्वोद्दिष्ट अधिकारका स्मरण करानेके लिये 'जीवसमुदाहार प्रकृत है' ऐसा अभ्याहार करना चाहिये, क्योंकि अन्यथा परिहान नहीं हो सकता । 'सादबंधा'

१ अ-आ-काप्रतिपु 'जाणावणद्धं च' इति पाठः । २ आ-का-ताप्रतिपु 'परुवणत्तं' इति पाठः । ३ अग्रो 'जीवसमुदाहारो' इति पाठः । ४ ताप्रती 'त्ति' इत्येतत्सर्वं नास्ति ।

अथपडिषत्तीय अभावादो । सादबंधा ति उते सादबंधवा ति वेत्तव्वं, कस्तारणिदेसादो । णाणावरणीयस्स बंधया जीवा दुविहा चेव सादबंधया असादबंधया चेदि । नं थ सादासादानं बंधेण विणा णाणावरणीयस्स बंधया जीवा अत्थि, अणुवलंभादो । एत्थ णाणावरणीयगहणेण णाणावरणादीणं धुत्तबंधीणं पयडीणं बंधया जीवा दुविहा ति वत्तव्वं । सादबंधया इदि उते साद-यिर-सुम-सुस्सर-सुभग-आदेज-असकिति-उत्तागोदानमट्ठणं सुहपयडीणं परियत्तमाणीणं गहणं कायव्वं, अण्णोण्णाविणाभाविवंधादो । असादबंधवा इदि उते असाद-अयिर-असुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज-अजसगिति-णीचागोदबंधयाणं गहणं कायव्वं, बंधेण अण्णोण्णाविणाभावित्तदसणादो । सादासादादीणमट्ठमेण एगजीवमि बंधो किण्ण जायेदं ? न, अचंताभावेण पडिसिद्धअक्कमण्यउत्तीदो । सादासादादीणमट्ठम-बंधे जीवाणं सत्ती गत्थि ति भणिदं होदि ।

तत्थ जे ते सादबंधा जीवा ते ति विहा-चउट्टाणबंधा तिट्ठाण-बंधा बिट्ठाणबंधा ॥ १६७ ॥

तत्थ सादबंधा जीवा ति णिहेसेण असादबंधयजीवाणं पडिसेहो कदो । ति विहा ति वयणेण चउट्ठिहादिपडिसेहो कदो । चउट्टाण-तिट्ठाण-बिट्ठाणमिदि ति विहो सादाणु भागो होदि । सादावेदणीए एगट्ठाणाणुभागो गत्थि, तहाणुवलंभादो । बंधं पडि एगट्ठा-कडनेपर 'सादबंधया' अर्थात् सातावेदनीयके बन्धक, ऐसा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, कर्ताका निर्देश है । ज्ञानावरणीयसे बन्धक जीव दो प्रकार ही हैं—सातबन्धक और असातबन्धक । साता व असाता वेदनीयके बन्धसे रहित ज्ञानावरणीयके बन्धक जीव नहीं हैं, क्योंकि वे पाये नहीं जाते । सूत्रमें जो ज्ञानावरणीय पदवा उपादान किया है उससे ज्ञानावरणाधिक ध्रुव प्रकृतियोंके बन्धक जीव दो प्रकार हैं, ऐसा कहना चाहिये । 'सादबंधया' कहनेपर साता, स्थिर, शुभ, सुस्वर, सुभग, आदेय, यशस्कीर्ति और उच्चगोत्र, इन आठ परिचर्तमान प्रकृतियोंका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, इनके बन्धमें परस्पर अविनाभाव सम्बन्ध है । 'असादबंधया' कहनेसे असाता, अस्थिर, अशुभ, दुर्मग, दुस्वर, अनादेय, अयशस्कीर्ति और नीच गोत्रके बन्धकोंका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, बन्धकी अपेक्षा उनमें अविनाभाव सम्बन्ध देखा जाता है ।

शंका—एक जीवमें एक साथ साता व असातादिकोंकाबन्ध क्यों नहीं होता है ? समाधान—नहीं, उनकी युगपत् प्रवृत्ति अत्यन्ताभावसे प्रतिषिद्ध है, अर्थात् साता व असाता आदिकोंको एक साथ बाँधनेमें ओषोंकी शक्ति नहीं है, वह अभिप्राय है । उनमें जो सातबन्धक जीव हैं वे तीन प्रकार हैं—चतुःस्थानबन्धक, त्रिस्थान-बन्धक और द्विस्थानबन्धक ॥ १६७ ॥

सूत्रमें 'सादबन्धया जीवा' इस निर्देशसे असातबन्धक जीवोंका निषेध किया गया है । चतुःस्थान, त्रिस्थान और द्विस्थान इस प्रकारसे सात वेदनीयका अनुभाग तीन प्रकार है । सातावेदनीयमें एकस्थान अनुभाग नहीं है, क्योंकि, ऐसा पाया नहीं जाता ।

१ बंधंती ध्रुवपात्री परिसमाणिगुप्ताणि सिविहरत्तं । चउ-तिगविट्ठमणं विवरीययव्वं व अट्ठमाणं ॥ क.प्र.१, १०.

प्राप्तुमावस्स संक्खो जदि वि अत्थि तो वि संतं पट्ठव अत्थि ति एगट्ठाणानुभागो एत्थ किण्ण पल्लवित्तो । न, बंधाहियारे संतपल्लवणाणुक्कवत्तित्तो । एत्थ सादाणुभागो जहण्ण-फट्ठवत्तुट्ठि जाव उक्कस्सफट्ठयो ति ताव रक्खेय्वो सेडिआगारेण । तत्थ पढमो भागो गुडसमाणो एगं ट्ठाणं, विदियो भागो खंडसमाणो विदियं ट्ठाणं, तदियो भागो सक्करातुल्लो तदियं ट्ठाणं, चउत्थो भागो अभियसमो चउत्थट्ठाणं । एदाणि चत्तारिट्ठाणाणि जम्भि सादाणुभागबंधे अत्थि सो अनुभागबंधो चउत्थट्ठाणो । तस्स बंधया जीवा चउट्ठाणबंधया णाम । एवं तिट्ठाण-विट्ठाणबंधाणं पि पल्लवणं कायव्वं । एवं सादबंधया अनुभागबंध-भेदेण ति विहा चैव होति ।

असादबंधा जीवा तिविहौ- विट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा चउट्ठाण-बंधा ति ॥ १६८ ॥

एत्थ असादाणुभागो पुवं व सेडिआगारेण उट्ठव चत्तारिभागेसु कट्टेसु तत्थ पढम-भागो णिंसमो एगट्ठाणं, विदियभागो कांजीरसमो विदियट्ठाणं, तदियभागो विससमो

शंका—यद्यपि बन्धकी अपेक्षा एकस्थान अनुभागकी सम्भावना नहीं है, तथापि सत्त्वकी अपेक्षा तो उसकी सम्भावना है ही । फिर एकस्थानानुभागकी प्ररूपणा यहाँ क्यों नहीं की गई ?

समाधान—नहीं, क्योंकि बन्धके अधिकारमें सत्त्वकी प्ररूपणा संगत नहीं है ।

यहाँ उच्चम्य स्पर्धकसे लेकर उत्कृष्ट स्पर्धक तक श्रेणिके आकारसे साताके अनुभागकी रचना करना चाहिये । उसमें प्रथम भाग गुडके समान एक स्थान, द्वितीय भाग बौड़के समान दूसरा स्थान, तृतीय भाग शक्करके समान तीसरा स्थान, और चतुर्थ भाग अमृतके समान चौथा स्थान है । इस प्रकार जिस साताके अनुभागमें ये चार स्थान हों वह अनुभागबन्ध चतुर्यस्थान कहा जाता है । उसको बाँधनेवाले जीव चतुःस्थानबन्धक कहलाते हैं । इसी प्रकार त्रिस्थान और द्विस्थानबन्धकोंकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । इस अनुभागके भेदसे सातबन्धक तीन प्रकारके हैं ।

असातबन्धक जीव तीन प्रकारके हैं—द्विस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और चतुःस्थानबन्धक ॥ १६८ ॥

यहाँ असाताके अनुभागको पहिलेके ही समान श्रेणिके आकारसे स्थापित करके चार भाग करनेपर उनमेंसे प्रथम भाग नीमके समान एक स्थान, द्वितीय भाग कांजीरके समान दूसरे स्थान, तृतीय भाग बिचके समान तीसरे स्थान, और चतुर्थ भाग हालाहलके

१ अ-आ-काप्रतिषु 'गुणसमाणो', ताप्रती 'गुण (४) समानो' इति पाठः ।

२ इह ब्रह्मप्रकृतीनां रसः क्षीरादिरलोपमः । अष्टमप्रकृतीनां तु बोधात्कीर्तिनादिरलोपमः । उक्तं च—'बोधाद्दह-निबुधमो अनुमाणं ब्रह्मण क्षीर-संभुधमो' इति । क्षीरादिरसस्य स्वाभाविक एकरसानिक उच्यते । इवोस्तु कर्षणोपावर्तने कृते सति बोधशिशिले एकः कर्षः स द्विस्थानिकः । ज्ञानाभावावर्तने कृते सति च उद्धतित एकः कर्षः त्रिस्थानगतः । चतुर्णां तु कर्षणमावर्तने कृते सति बोधशिशिः एकः कर्षः च चतुस्थानगतः । क. प्र. (म. टी.) १, १०. ३ अत्रत्यौ 'असादबंधजीवा तिविहा' इति पाठः ।

तदियं ठाणं, चउत्थो भागो हालाहलुत्थो चउत्थद्धानं । तत्थ दोण्णि द्वाणाणि जम्हि अणु-
भागबंधे सो बिद्धानो^१ णाम । तस्स बंधया जीवा बिद्धानबंधा । एवं तिद्धानबंधाणं चउ-
द्धानबंधाणं च पस्वणा कायव्वा । एवमणुभागबंधमस्सिद्वण असादबंधा ति विहा होति ।

सर्वविमुद्धा सादस्स चउद्धानबंधा जीवा ॥ १६९ ॥

सर्वेहितो विमुद्धा सर्वविमुद्धा । सादबिद्धान-तिद्धानबंधेहितो सादस्स चउद्धान-
बंधा जीवा सुट्ठ विमुद्धा ति उत्तं होदि । एत्थं का विमुद्धा णाम ? अहित्वकसायाभावो
मंदकसाओ विमुद्धदा ति धेतव्वा । तत्थ सादस्स चउद्धानबंधा जीवा सर्वविमुद्ध ति भण्दि
सुट्ठमंदसंकिलेसा ति धेतव्वं । जहण्णट्टिदिबंधकारणजीवपरिणामो वा विमुद्धदा णाम ।

तिद्धानबंधा जीवा संकिलिद्धदरा ॥ १७० ॥

सादचउद्धानबंधेहितो सादस्सेव तिद्धानाणुभागबंधया जीवा संकिलिद्धदरा,
कसाउक्कडा ति भण्दि होदि ।

समान चौथे स्थान रूप है । उनमेंसे जिस अनुभागबन्धमें दो स्थान हैं वह द्विस्थान
अनुभागबन्ध कहलाता है । उसको बांधनेवाले जीव द्विस्थानबन्धक कहे जाते हैं ।
इसी प्रकार त्रिस्थानबन्धक और चतुःस्थानबन्धक जीवोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस
प्रकार अनुभागबन्धका आश्रय करके असातबन्धक तीन प्रकारके होते हैं ।

सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक जीव सबसे विशुद्ध हैं ॥ १६९ ॥

‘सर्वेहितो विमुद्ध सर्वविमुद्धा’ इस प्रकार सर्वविशुद्ध पदमें तत्पुरुष समाप्त है ।
साता वेदनीयके द्विस्थानबन्धकों और त्रिस्थानबन्धकोंकी अपेक्षा उनके चतुःस्थानबन्धक
जीव अतिशय विशुद्ध हैं, यह उसका अभिप्राय है ।

शंका—यहां विशुद्धतासे क्या अभिप्राय है ?

समाधान—अत्यन्त तीव्र कषायके अभावमें जो मन्द कषाय होती है उसे विशुद्धता
पदसे ग्रहण करना चाहिये ।

सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक जीव सर्वविशुद्ध हैं, ऐसा कहनेपर ‘वे अतिशय
मन्द संक्लेशसे सहित हैं’ ऐसा ग्रहण करना चाहिये । अथवा, जघन्य स्थितिबन्धका
कारण स्वरूप जो जीवका परिणाम है उसे विशुद्धता समझना चाहिये ।

त्रिस्थानबन्धक जीव संकिलिद्धतर हैं ॥ १७० ॥

साताके चतुःस्थानबन्धकोंकी अपेक्षा साताके ही त्रिस्थानानुभागबंधक जीव संकिलिद्ध
तर हैं, अर्थात् वे उनकी अपेक्षा उत्कट कषायवाले हैं, यह अभिप्राय है ।

१ अ-आ-काप्रतिपु ‘अणुभागबंधो सो बिद्धानू’ इति पाठः । २ वे सर्वविशुद्धा रसं बन्धन्ति ।
क. प्र. (म. टी.) १, ११. ३ अप्रती ‘एषं एतत्’ इति पाठः । ४ वे पुनर्मध्यमपरिणामास्ते त्रिस्थान-
गतं रसं बन्धन्ति । क. प्र. (म. टी.) १, ११ ।

विट्ठाणबन्धा जीवा संकिलिट्ठदरा ॥ १७१ ॥

सादतिट्ठाणुभागबन्धणहितो सादस्सेव विट्ठाणानुभागबन्धया जीवा संकिलिट्ठदरा, संकिलेसेण अहिया ति भणिदं होदि ।

सन्वविसुद्धा असादस्स विट्ठाणबन्धा जीवा ॥ १७२ ॥

असादस्स तिट्ठाणानुभागबन्धणहितो तस्सेव विट्ठाणानुभागबन्धया मंदकसाया ति भणिदं होदि ।

तिट्ठाणबन्धा जीवा संकिलिट्ठदरा ॥ १७३ ॥

असादस्स विट्ठाणानुभागबन्धणहितो तिट्ठाणानुभागबन्धया जीवा सुट्ठुक्कसंकिलेसा होति । कुदो ? सामावियादो ।

चउट्ठाणबन्धा जीवा संकिलिट्ठदरा ॥ १७४ ॥

असादतिट्ठाणानुभागबन्धणहितो तस्सेव चउट्ठाणानुभागबन्धयाणं कसायो अइवहुलो होदि । कुदो ? सामावियादो । संकिलेसे वक्कमाणे सादादीणं सुहपयडीणमणुभागबन्धो हायदि, असादादीणमसुहपयडीणमणुभागबन्धो वद्धदि । संकिलेसे हायमाणे सादादीणं

द्विस्थानबन्धक जीव संकिलिहतर हैं ॥ १७१ ॥

साताके त्रिस्थानुभागबन्धकोंकी अपेक्षा साताके ही द्विस्थानबन्धक जीव संकिलिहतर हैं, अर्थात् वे अधिक संकलेशवाले हैं ।

असातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव सर्वविसुद्ध हैं ॥ १७२ ॥

असाता वेदनीयके त्रिस्थानानुभागबन्धकोंकी अपेक्षा उसके ही त्रिस्थानानुभागबन्धक जीव मन्दकसायवाले हैं, यह सूत्रका अभिप्राय है ।

त्रिस्थानबन्धक जीव संकिलिहतर हैं ॥ १७३ ॥

असाताके त्रिस्थानानुभागबन्धकोंकी अपेक्षा उसके ही त्रिस्थानानुभागबन्धक जीव अति उत्कट संकलेशसे संयुक्त होते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

चतुःस्थानबन्धक जीव संकिलिहतर हैं ॥ १७४ ॥

असाताके चतुःस्थानानुभागबन्धकोंकी अपेक्षा उसके ही चतुःस्थानानुभागबन्धकोंकी कषाय अतिशय बहुत होती है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । संकलेशकी वृद्धि होनेपर साता आवधिक शुभ प्रकृतियोंका अनुभागबन्ध हीन होता है और असाता आवधिक अशुभ

१ संकिलिहपरिणामास्तु द्विस्थानगतम् । क. प्र. (म. टी.) १, ११. २ अ-आ-काप्रतिपु 'संकिलेसेव । इति पाठः । ३ ये पुनस्तथोक्तमूलिकानुसारेण सर्वविसुद्धा परमवर्तमाना अशुभप्रकृतीर्बन्धन्ति ते तत्र-द्विस्थानगतं रतं निवर्तयन्ति क. प्र. (म. टी.) १, ११ । ४ मध्यमपरिणामत्रिस्थानगतम् । क. प्र. (म. टी.) १, ८१. ५ संकिलिहपरिणामास्तु चतुःस्थानगतम् । क. प्र. (म. टी.) १, ११. ।

सुहृपडीणमणुभागबंधो वहुदि, असादादीबं असुहृपडीणमणुभागबंधो ह्यदि सि उत्तं होदि ।

**सादस्स चउट्टाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहणियं
ट्टिदि बंधंति' ॥ १७५ ॥**

णाणावरणगृहणं जेण देसामासियं तेण णाणावरणादीबं^१ ध्रुवबंधीणमसुहृपडीणं सच्चासिं जहणियं ट्टिदि बंधंति ति धेतव्वं । जे जे सादस्स चउट्टाणाणुभागबंधया जीवा ते ते णाणावरणादीणं जहणियं चेव ट्टिदि बंधंति ति णावहारणं^२ कीरदे, चउट्टाणबंधयसु णाणावरणादीणमजहणट्टिदीणं पि बंधदसणादो । जेण कसाओ ट्टिदिबंधस्स कारणं तेण मंदकसाइणो सादस्स चउट्टाणबंधया जीवा णाणावरणीयस्स जहणियं ट्टिदि बंधंति ति भणिदं ।

**सादस्स तिट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स अजहण-
अणुक्कस्सियं ठिदि बंधंति' ॥ १७६ ॥**

ण ताव उक्कस्सियं ट्टिदि बंधंति, असादजोगुक्कस्ससंकिलेसेहि विणा णाणावरणी-
प्रकृतियोंका अनुभागबन्ध बढ़ता है । संक्लेशकी हानि होनेपर साता आविक शुभ प्रकृतियोंका अनुभागबन्ध बढ़ता है और असाता आविक अशुभ प्रकृतियोंका अनुभाग-
बन्ध हीन होता है, यह अभिप्राय है ।

सातावेदनीयके चतुस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिको बाँधते हैं ॥ १७५ ॥

चूँकि ज्ञानावरणका ग्रहण वेदामार्शक है, अतः उससे ज्ञानावरणादिक ध्रुवबन्धी सब अशुभ प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिको बाँधते हैं; ऐसा ग्रहण करना चाहिये । जो जो साता वेदनीयके चतुस्थानानुभागबन्धक जीव हैं वे वे ज्ञानावरणादिकोंकी जघन्य ही स्थितिको बाँधते हैं, ऐसा अवधारण नहीं किया जा रहा है, क्योंकि, चतुःस्थानबन्धकोंमें ज्ञानावरणादिकोंकी अजघन्य स्थितियोंका भी बन्ध देखा जाता है । चूँकि स्थितिवन्धका कारण कषाय है, अतः सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक बन्धकषायी जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिको बाँधते हैं; ऐसा कहा गया है ।

साताके त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितिको बाँधते हैं ॥ १७६ ॥

ये जीव ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट स्थितिको नहीं बाँधते हैं, क्योंकि, असाताके बोध

१ ये सर्वविधका शुभप्रकृतीनां चतुःस्थानगतं स्तं बन्धन्ति ते शुभप्रकृतीनां जघन्यां स्थितिं निवर्तयन्ति । क. प्र. (म. टी.) १, ९१. । २ ताप्रतौ 'णाणावरणीयादीबं' इति पाठः । ३ अ-आ-काप्रतिषु 'ध्रुवबन्धीणमसुहृ' ताप्रतौ 'ध्रुवबन्धीय' असुहृ—' इति पाठः । ४ अ-आ-काप्रतिषु 'णाणावहारणं' इति पाठः । ५ परावर्तमानशुभप्रकृतीनां निश्चयानगतस्य तत्स्य ये बन्धकास्ते शुभप्रकृतीनामवधन्यां मध्यमां स्थितिं ब्रूयन्ति । क. प्र. (म. टी.) १, ९२. । ६ काप्रतौ 'सावकस्स', अ-आ प्रतौः 'सागकस्स' ताप्रतौ 'साग (?) कस्स—' इति पाठः ।

स्सं [उक्कस्स] द्विदिबन्धनसाणदो । ण सहज्जयं पि बंधंति, उक्कट्टविसोदीए अभावादो । तम्हा सादस्स तिहाणबन्धा जीवा णाणावरणादीणमज्झणमणुक्कस्सियं द्विदि बंधंति चि उत्तं ।

सादस्स विट्ठाणबन्धा जीवा सादस्स चेव उक्कस्सियं द्विदि बंधंति ॥ १७७ ॥

सादस्स विट्ठाणबन्धया जीवा जेण उक्कट्टसंकिलेसा तेण सादस्स उक्कस्सियं द्विदि बंधंति, णे णाणावरणीयस्स; ओधुक्कस्ससंकिलेसाभावादो । ण च सादबन्धपाओम्हाउक्कस्ससंकिलेसेण णाणावरणीयस्स उक्कस्सद्विदि^१ बंधदि, बिरोहादो । ण च सादस्स विट्ठाण-बन्धया सज्जे वि सादुक्कस्सद्विदि^२ पण्णारससागरोक्ककोडाकोडिमेत्तं बंधंति^३, तत्थं अनुक्कस्सद्विदिबन्धस्स वि उवत्तमादो । तम्हा अजोगववच्छेदो एत्थ कायब्बो । अत्रोपयोगिनौ श्लोकौ विशेषण-विशेष्याभ्यां क्रियाया च सहोदितः । पाथो धनुर्धरो नीलं सरोजमिति वा यथै ॥७॥ अयोगमपरैर्योगमत्यन्तायोगमेवै च । व्यवच्छिनति धर्मस्य निपातो व्यतिरेचकः ॥ ८ ॥

उत्कट्ट संक्लेशके बिना ज्ञानावरणीयके [उत्कट्ट] स्थितिवन्धकी सम्भावना नहीं है । उसकी अल्प स्थितिको भी नहीं बांधते हैं, क्योंकि उनके उत्कट्ट विद्युत्प्रकाश अभाव है । अतएव विद्युत्प्रकाशक जीव ज्ञानावरणाधिक्यकी अजल्प-अनुत्कट्ट स्थितिको बांधते हैं, ऐसा कहा गया है ।

साताके द्विस्थानबन्धक जीव सातावेदनीयकी ही उत्कट्ट स्थितिको बांधते हैं ॥१७७॥

सातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव वृत्ति उत्कट्ट संक्लेशसे संयुक्त होते हैं अतः वे साता वेदनीयकी उत्कट्ट स्थितिको बांधते हैं, न कि ज्ञानावरणकी उत्कट्ट स्थितिको, क्योंकि, यहां सामान्य उत्कट्ट संक्लेशका अभाव है । साताके बन्ध योग्य उत्कट्ट संक्लेशके ज्ञानावरणीयकी उत्कट्ट स्थितिका कब नहीं हो सकता, क्योंकि, इसमें बिरोध है । दूसरे, साता वेदनीयके द्विस्थानबन्धक सभी जीव सातावेदनीयकी पन्द्रह कोड़ाकोड़ सागरोपम प्रमाण उत्कट्ट स्थितिको नहीं बांधते हैं, क्योंकि उनमें उसका अनुत्कट्ट स्थितिवन्ध भी पाया जाता है । इस कारण यहां अजोगववच्छेद करना चाहिये । यहां उपयोगी दो श्लोक—

निपात अर्थात् एवकार व्यतिरेकक अर्थात् निवर्तक वा निवामक होता है । विशेषण, विशेष्य और क्रियाके साथ कहा गया निपात कमसे अयोग, अपरयोग (अभ्ययोग)

१ अ-का-ताप्रतिपु 'संकिलेसेहि वि जाणावरणीयत्त' इति पाठः । २ अ-आ-का-ताप्रतिपु 'अ' इत्येतत्पदं नास्ति, मप्रतो त्वन्ति छत् । ३ प्रतिपु 'उक्कट्टद्विदि' इति पाठः । ४ आपत्तौ 'सागरोपममेत्तं कोडाकोडी बज्जति' इति पाठः । ५ आपत्तौ 'तत्त' इति पाठः । ६ आपत्तौ 'वामया (?)' इति पाठः । ७ अ-का-प्रत्ययः '-बोगमेव' इति पाठः । ८ प्रमाणवार्तिक ४-११०. १

असादस्स वेट्ठाणबन्धा जीवा सत्याणेणं णाणावरणीयस्स जहणियं द्विदिं बंधंति^१ ॥ १७८ ॥

असादबंधयसु वेट्ठाणबंधया जीवा अविमुद्धा मंदकसाइत्तादो जहण्णट्टिदिकारण-परिणामेहि संजुत्तां, तेण णाणावरणीयस्स जहणियं द्विदिं बंधंति । जहण्णट्टिदिं बंधंता वि ओषजहणियं द्विदिं ण बंधंति ति जाणावणहं सत्याणेण णाणावरणीयस्स जहणियं द्विदिं बंधंति ति अणिदं । सत्याणेण णाणावरणीयस्स का जहण्णट्टिदी णाम ? असादेण सह

और अत्यन्तायोगका व्यवच्छेद करता है । जैसे—‘पाथो धनुधरः’ और ‘नीलं सरोजम्’ इस वाक्योंके साथ प्रयुक्त एवकार ॥ ७-८ ॥

विशेषार्थः—विशेषणके साथ प्रयुक्त एवकार अयोगव्यवच्छेदका बोधक होता है । जैसे—‘पाथो धनुधरः एव’ अर्थात् पाथं धनुधारी ही है, इस वाक्यमें प्रयुक्त एवकार पाथमें अधनुधरत्वकी भाशंकाको दूरकर धनुधरत्वका विधान करता है । अतः वह अयोगव्यवच्छेदका बोधक है । विशेष्यके साथ प्रयुक्त एवकार अन्ययोगव्यवच्छेदका बोधक होता है । जैसे—‘पाथ एव धनुधरः’ अर्थात् मर्जुन ही एक मात्र धनुधर है, इस वाक्यमें प्रयुक्त एवकार मर्जुनमें जो अन्य धनुधरोंकी अपेक्षा सातिशय धनुधरत्व विद्यमान है उसका अन्य पुरुषोंमें निषेध करता है । अतएव वह अन्ययोगव्यवच्छेदका बोधक है । म्रियापके साथ प्रयुक्त एवकार अत्यन्तायोगव्यवच्छेदका बोधक होता है । जैसे—‘नीलं सरोजं अवत्येव’ अर्थात् सरोज नील होता ही है, इस वाक्यमें प्रयुक्त एवकार सरोजमें नीलत्वके अत्यन्ताभावका व्यवच्छेदक होनेसे अत्यन्तायोगव्यवच्छेदका बोधक है । (देखिये म्यायकुमुदचन्द्र भा. २ पृ. ६९३)

असातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव स्वस्थानसे ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिको बाँधते हैं ॥ १७८ ॥

असातबन्धकोंमें द्विस्थानबन्धक जीव अतिशय विग्रह होते हुए, मन्दकपायी होनेसे जूँकि जघन्य स्थितिके कारणभूत परिणामोंसे संयुक्त हैं, इसीलिये वे ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिको बाँधते हैं । जघन्य स्थितिको बाँधते हुए भी वे ओष जघन्य स्थितिको नहीं बाँधते हैं, इस बातके आप्तार्थ ‘स्वस्थानसे ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिको बाँधते हैं’ ऐसा कहा गया है ।

श्रीका—स्वस्थानसे ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थिति किसे कहते हैं ।

१ अ-भा-काप्रतिपु ‘संठाणेव’ इति पाठः । २ तथा इतरासां परावर्तमानाश्चमप्रकृतीनां ये द्विस्थानगते रते ब्रह्मन्ति ते द्व्यप्रकृतीनां जघन्या स्थितिं स्वस्थाने, स्वविद्युद्विभक्तितुलारेणेत्यर्थः, ब्रह्मन्ति । परावर्तमानाश्चमप्रकृतिसकद्विस्थानगतसकचैद्विद्युद्विभक्तितुलारेण जघन्या स्थितिं ब्रह्मन्ति, न त्वतिबंधन्या मित्यर्थः । जघन्यस्थितिकन्यो हि द्व्यप्रकृतीनामेकान्तविद्युद्वै सम्भवति, न च तदानीं परावर्तमानाश्चमप्रकृतीनां वन्या सम्भवन्ति । क. प्र. (म. टी.) १, १२. ३ प्रतिपु ‘संजुत्तं’ इति पाठः ।

बंधपाओम्मा णाणावरणीयस्स सज्जहण्णद्विदी सा सत्थाणजहण्णा पाम । तित्से बंधया ति उत्तं होदि

असादस्स तिट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स अजहण्ण-
अणुक्कस्सियं द्विदि बंधंति' ॥ १७९ ॥

कुदो ? ण ताव उक्कस्सियं द्विदि बंधंति, उक्कस्ससंकित्तेसाभावादो । ण जहणियं पि, अजविसुद्धपरिणामाभावादो । तम्हा णाणावरणीयस्स अजहण्ण-अणुक्कस्सियं चैव द्विदि असादतिट्ठाणबंधा जीवा बंधंति ति सिद्धं ।

असादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा असादस्स चैव उक्कस्सियं
द्विदि बंधंति' ॥ १८० ॥

जेण असादस्स चउट्ठाणबंधया जीवा तिव्वसंकित्तेसा तेण असादस्स उक्कस्सियं द्विदि बंधंति । एत्थ चैव सत्तो अवि-सद्धे वट्ठे । तेण णाणावरणादीणं पि उक्कस्सियं द्विदि बंधंति ति धेतव्वं, अण्णहा तदुक्कस्सद्विदीणं बंधकारणाभावप्पसंगादो । एवं

समाधान—असातावेदनीयके साथ बन्धके योग्य जो ज्ञानावरणीयकी सबसे अजघन्य स्थिति है वह स्वस्थान अजघन्य स्थिति कही जाती है ।

उक्त जीव उसी स्थितिके बन्धक हैं, यह अभिप्राय है ।

असातावेदनीयके त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थितिको बांधते हैं ॥ १७९ ॥

कारण यह कि वे उत्कृष्ट स्थितिको तो बांधते नहीं हैं, क्योंकि, उनके उत्कृष्ट संकलेशका अभाव है । न अजघन्य स्थितिको भी बांधते हैं, क्योंकि, उनके अत्यन्त विमुक्त परिणामोंका अभाव है । इस कारण असाताके त्रिस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितिको ही बांधते हैं, यह सिद्ध है ।

असाता वेदनीयके चतुस्थानबन्धक जीव असातावेदनीयकी ही उत्कृष्ट स्थितिको बांधते हैं ॥ १८० ॥

क्योंकि असाता वेदनीयके चतुस्थानबन्धक जीव तीव्र संकलेशसे संयुक्त होते हैं, अतएव वे असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधते हैं । यहाँ सूत्रमें प्रयुक्त 'चैव' शब्द 'अपि' शब्दके अर्थमें वर्तमान है । इसीलिये वे ज्ञानावरणाधिकोंकी भी उत्कृष्ट स्थितिको बांधते हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये; क्योंकि, इसके बिना उनके उत्कृष्ट स्थितिबन्धके कारणोंके अभावका प्रसंग आयेगा । इस प्रकार साता व असाता वेदनीयके

१ ये पुनः परावर्तमानशुभप्रकृतीनां त्रिस्थानगतस्य एवमेव बन्धकास्ते शुभप्रकृतीनामवयव्या स्थितिं व्रजन्ति । क. प्र. (म. टी.) १, १९. १ तथा ये परावर्तमानाशुभप्रकृतीनां चतुःस्थानगतं एव व्रजन्ति ते शुभप्रकृतीनामुत्कृष्टा स्थितिं निवर्तयन्ति । क. प्र. (म. टी.) १, १९ ।

सादासादाणं चउट्ठाण-तिट्ठाण-विट्ठाणानुभागबंधसु द्विदीणं संकिलेस-विसोहीणं च पमाणं परुविय संपदि द्विदीयो आधारं कादण तत्थ द्विदजीवाणं सेडिपरुवणहुसुत्तरसुत्तं भणदि—

तेसिं दुविहा सेडिपरुवणा अणंतरोवणिधा परंपरो-
वणिधा ॥ १८१ ॥

एदं सुत्तं देसामासियं, सेडिपरुवणं मणिदुण परुवणा-पमाण-अवहार-भागाभाग-अपाबहुगाणं सृचयत्तादो । तेण ताव परुवणादीणं पणवणा कीरदे । तं जहा- सादस्स चउट्ठाणबंधया तिट्ठाणबंधया विट्ठाणबंधया असादस्स विट्ठाणबंधया तिट्ठाणबंधया चउट्ठाणबंधया णाणावरणीयस्स सग-सगजहणियाए द्विदीए अत्थि जीवा बिदियाए छिदीए अत्थि जीवा एवं गेयव्वं जाव अप्पण्णो उक्कस्सट्ठिदि ति । परुवणा गदा ।

सादस्स चउट्ठाण-तिट्ठाण-विट्ठाणबंधया असादस्स विट्ठाण-तिट्ठाण-चउट्ठाणबंधया णाणावरणीयस्स सग-सगजहणियाए द्विदीए जीवा पदरस्स असंखेज्जिभागमेत्ता, बिदियाए छिदीए पदरस्स असंखेज्जिभागमेत्ता, एवं गेदव्वं जाव अप्पण्णो उक्कस्सट्ठिदि ति । सादविट्ठाणिय जवमज्जादो असादचउट्ठाणियजवमज्जादो च उवरिमट्ठिदीसु कत्थ वि सेडीए असंखेज्जिभागमेत्ता जीवा किण्ण होंति ति उत्ते- ण होंति । किं कारणं ? अप्पण्णो चतुःस्थान, त्रिस्थान और द्विस्थान रूप अनुभागबन्धोंमें स्थितियों एवं संकलेश ब विद्युत्तिके प्रमाणकी प्ररूपणा करके अब स्थितियोंका आश्रय करके उनमें स्थित जीवोंकी श्रेणिप्ररूपणा करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

उनकी श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा ॥१८१॥

यह सूत्र देशामशंक है, क्योंकि, यह श्रेणिप्ररूपणाको कहकर प्ररूपणा, प्रमाण, अवहार, भागाभाग और अद्वैतत्व अनुयोगहारोंका सूत्रक है । अतएव पहिले प्ररूपणा आदिक अनुयोगहारोंका प्रकाशन किया जाता है । यथा—सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और द्विस्थानबन्धक तथा असातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक त्रिस्थानबन्धक और चतुःस्थानबन्धक ज्ञानावरणीयकी अपनी अपनी अछन्न स्थितिमें जीव हैं । द्वितीय स्थितिमें जीव हैं । इस प्रकार अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और द्विस्थानबन्धक तथा असाता वेदनीयके द्विस्थानबन्धक, त्रिस्थानबन्धक और चतुःस्थानबन्धक जीव ज्ञानावरणीयकी अपनी अपनी अछन्न स्थितिमें अगप्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । द्वितीय स्थितिमें जीव प्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । इस प्रकार अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये ।

शंका—साता वेदनीयके द्विस्थानिक यथमध्यसे तथा असातावेदनीयके चतुःस्थानिक यथमध्यसे ऊपरकी स्थितियोंमें कहींपर भी अगश्रेणिके असंख्यातवें भाग प्रमाण जीव क्यों नहीं होते ।

जहण्ट्विदीए जीवेहि समानज्वमज्जठवरिमद्विदिगीचा पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता, तमरासिम्मि तिण्णिगुणहाणिगुणिदपल्लिवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे सेडीए असंखेज्ज-दिभागमेत्तसेडीणमुवलंमादो । ण च पदेसु पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेसु पल्लिवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तद्वाणं गंतुण अट्ठेणं ज्जीयमाणेसु अवसाणे सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्त होदि, उवरिमज्जणोण्णमत्तरासिणा पल्लिवमस्स असंखेज्जदिभागेण पदरस्स असंखेज्ज-दिभागे भागे हिदे असंखेज्जसेडिमेत्तजीवोवलंमादो । उवरिमणाणांगुणहाणिसलागाओ सेडिहेदणार्हितो बहुगाओ ति के वि आइरिया मणंति । तेसिमाइरियाणमहिप्पाण सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा उवरि तप्पाओग्गासंखेज्जगुणहाणीयो गंतुण होति । ण च एवं, वक्खाणे अण्णोण्णमत्तरासिस्स पल्लिवमस्स असंखेज्जदिभागमुवलंमादो । पमाणपल्लवणा गदा ।

अणंतरोवणिधाए सादस्स चउट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स विट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा जीवा गाणावरणीयस्स जहण्णि-याए द्विदीए जीवा थोवा ॥ १८२ ॥

समाधान—उक्त शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि वे भेजिके अस्ंख्यातवें भाग प्रमाण नहीं होते हैं । कारण यह कि अपनी अपनी जघन्य स्थितिके जीवोंके समान यवमध्यसे उपरिम स्थितियोंके जीव प्रतरके अस्ंख्यातवें भाग प्रमाण हैं, क्योंकि, तल राशिमें तीन गुणहानियोंसे गुणित पदोपमके अस्ंख्यातवें भागका भाग देनेपर भेजिके अस्ंख्यातवें भाग प्रमाण जगभेजियौ लब्ध होती हैं । परन्तु प्रतरके अस्ंख्यातवें भाग मात्र इन जीवोंके पदोपमके अस्ंख्यातवें भाग मात्र अध्वान जाकर अर्ध-अर्ध भागसे हीन होनेपर अन्तमें उनका प्रमाण भेजिके अस्ंख्यातवें भाग मात्र रहता है, क्योंकि, पदोपमके अस्ंख्यातवें भाग प्रमाण उपरिम अण्णोण्णमत्तर राशिका प्रतरके अस्ंख्यातवें भागमें भाग देनेपर अस्ंख्यात भेजियौ प्रमाण जीव उपलब्ध होते हैं ।

ऊपरकी नागागुणहानिशङ्कायें भेजिके अर्धच्छेदोंसे बहुत हैं, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । उन आचार्योंके अभिप्रायसे भेजिके अस्ंख्यातवें भाग प्रमाण जीव भागे तत्तायोम्य अस्ंख्यात गुणहानियां जाकर हैं । परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि, इस व्याख्यानमें अण्णोण्णमत्तर राशि पदोपमके अस्ंख्यातवें भाग प्रमाण पायी जाती है । प्रमाणप्रकृपणा समाप्त हुई ।

अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा साता वेदनीयके चतुःस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक जीव, असातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक व त्रिस्थानबन्धक जीव तथा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके जीव स्तोक हैं ॥ १८२ ॥

१ अ-भा-का-प्रतिषु 'अवेज' इति पाठः । २ ताप्रती 'पदरस्स असंखेज्जदिभागे' इत्येतावान् पाठो नास्ति । आप्रती 'असंखे' भागेण भागे हिदे' काप्रती 'असंखेज्जदिभागे हिदे' इति पाठः ।

३ ताप्रती 'विट्ठाणतिट्ठाणबंधा' इति पाठः । ४ थोवा जहणियाए होति विसेवाहिओ वडिधयाई ।

सादस्स च उट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदीयो सागरोवमसदपुधत्तमेत्ताओ । ताओ बुद्धीए पुध द्वविय, तिट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गओ सागरोवमसदपुधत्तमेत्ताओ, एदाओ वि पुध द्वविय; एवमसादस्स विट्ठाणतिट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गसागरोवमसदपुधत्तमेत्ताट्ठिदीयो च पुध द्वविय, तत्थ एदेसिं चट्ठणं पि पंतीणं^१ णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जीवा थोवा; तसरासिस्स संखेज्जदिभागमेक्केक्कट्ठिदिपंतिअब्भंतरे ट्ठिदजीवरासिं तिण्णिगुणह्वाणिगुणिदपल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे जहण्णट्ठिदिजीवाणं पमाणुवलंभादो ।

विदियाए ट्ठिदीए जीवा विसेसाहिया ॥ १८३ ॥

कुदो ? एगगुणह्वाणियद्वाणमसंखेज्जपल्लिदोवमपद्धमवगमूलमेतं विरलिय जहण्णट्ठिदि- जीवे समखंडं करिय विरलणरूवं पडि दादूण तत्थ एगखंडमेतेण अद्वियतुवलंभादो । एगगुणजद्वाणं चैव भागद्वारो होदि त्ति कथं णव्वदे ? पक्खेवाणं दुगुणतुवलंभादो । तं पि कुदो ? अण्णहा जवमज्झभावाणुववत्तीदो ।

साता वेदनीयकी चतुःस्थानानुभागबन्धके योग्य शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थितियां हैं । उनको बुद्धिसे पृथक् स्थापित करके उसीकी त्रिस्थानानुभागबन्धके योग्य ओ शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थितियां हैं इनको भी पृथक् स्थापित करके, इसी प्रकार असाता वेदनीयकी द्विस्थान व त्रिस्थान रूप अनुभागबन्धके योग्य शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थितियोंको पृथक् स्थापित करके उनमें इन चारो ही कमाँकी पैक्तियोंके ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके जीव श्लोक हैं, क्योंकि, अस राशिके संख्यातवें भाग एक एक पैक्तिके भीतर स्थित जीवराशिमें तीन गुणहानिगुणित पक्ष्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जघन्य स्थितिके जीवोंका प्रमाण उपलब्ध होता है ।

द्वितीय स्थितिके जीव विशेष अधिक हैं ॥ १८३ ॥

इसका कारण यह है कि पक्ष्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण एकगुणहानि-अध्वानका विरलन करके जघन्य स्थितिके जीवोंको समखण्ड करके प्रत्येक विरलन रूपके ऊपर देकर उनमेंसे एक खण्डके प्रमाणसे उनमें अधिकता पायी जाती है ।

शंका—एकगुणहानिअध्वान ही भागहार होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—प्रक्षेपोंमें दुगुणताकी उपलब्धि होनेसे जाना जाता है कि एक गुणहानिअध्वान ही भागहार होता है ।

शंका—वह भी कहाँसे जाना जाता है ?

जीवा विसेसणीया उदहिसयपुइत्त मो चाव ॥ एव तिट्ठाणकरा विट्ठाणकरा य आ सुभुक्कोसा । अद्भुभावे विट्ठाणे ति—च उट्ठाणे य ठक्कोसा ॥ क. प्र. १, ९३-९४ । परावर्तमानानां शुभप्रकृतीनां चतुस्थानगतस- बन्धका सन्तो ज्ञानावरणीयादीनां शुभप्रकृतीनां जघन्यस्थितौ बन्धकत्वेन वर्तमाना जीवा श्लोकाः (म. डी.) ।

१ अग्रतौ 'पि कम्माणं पंतीणं' इति पाठः । २ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'जीवराशी- तिणि', आग्रतौ 'जीवरासितिणि' इति पाठः ।

तदियाए द्विदीए जीवा विसेसाहिया ॥ १८४ ॥

केतियमेतेण ? एगविसेसमेतेण । एवं उवरिं पि एगेगजीवविसेसमहियं कावुण णेदब्बं ।

एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोवमसदपुधत्तं ॥ १८५ ॥

सागरोवमसदपुधत्तवयणेण चटुण्णं पि जवमज्झाणं हेट्ठिमअद्धानपमाणं जाणाविदं ।
एत्थं विसेसो अणवद्विदो दट्ठञ्जो, गुणहारिणं पडि दुगुणक्कमेण विसेसाणं वड्ढिदंसणादो ।

तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सागरोवमसद- पुधत्तं ॥ १८६ ॥

एदेण सागरोवमसदपुधत्तवयणेण चटुण्णं जवमज्झाणं उवरिमअद्धानपमाणं जाणा-
विदं । जवमज्झउवरिमगुणहाणीयो वि हेट्ठिमगुणहाणीहि अद्धानपमाणेण समाणाओ ।
जीवविसेसा पुण अणवद्विदा; अद्दक्कमेण गुणहारिणं पडि तेसिं गमणुवलंभादो ।

समाधान—चूँकि इसके बिना यवमध्यपमा बनता नहीं है, इसलिये उनका दुगुणत्व
मिश्रित होता है ।

तृतीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं ॥ १८४ ॥

कितने प्रमाणसे वे अधिक हैं ? वे एक विशेष मात्रसे अधिक हैं । इसी प्रकार आगे
भी एक एक जीवविशेषको अधिक करके ले जाना चाहिये ।

इस प्रकार शतपृथक्त्व सागरोपमों तक विशेष अधिक विशेष अधिक
ही हैं ॥ १८५ ॥

‘शतपृथक्त्व सागरोपम’ के कहनेसे चारों ही यवमध्योंके अधस्तम अध्वानका
प्रमाण बतलाया गया है । यहाँ विशेषको अनवस्थित समझना चाहिये, क्योंकि, प्रत्येक
गुणहारिके प्रति दुगुणे क्रमसे विशेषोंकी वृद्धि देखी जाती है ।

उसके आगे शतपृथक्त्व सागरोपमों तक विशेष हीन विशेष हीन हैं ॥ १८६ ॥

इस ‘सागरोपमशतपृथक्त्व’ के कहनेसे चारों यवमध्योंके उपरिम अध्वानका
प्रमाण बतलाया गया है । यवमध्यसे ऊपरकी गुणहारियाँ भी अध्वानप्रमाणकी अपेक्षा
नीचेकी गुणहारियोंके समान हैं । परन्तु जीवविशेष अनवस्थित हैं, क्योंकि, प्रत्येक
गुणहारिके प्रति उनकी आगे आगे क्रमसे प्रवृत्ति देखी जाती है ।

१ ततो द्वितीयस्यां स्थितौ विशेषाधिकाः । ततोऽपि तृतीयस्यां स्थितौ विशेषाधिकाः । एवं
तावद्विशेषाधिका वक्तव्या बाधव्यभूतानि सागरोपमशतपृथक्त्वानि भवन्ति । ततः परं विशेषहीना
विशेषहीनास्तावद्वक्तव्या बाधविशेषहान्यापि ‘तद्विषयपुहुंस्ति’ प्रभूतानि सागरोपमशतानि भवन्ति ।
‘मो’ इति पावपूरणे । पृथक्त्वव्यभूतानि बहुत्ववाची । यदाह कूर्णिकृत—पुहुत्तसरो बहुत्ववाचीति ।
इति । क. प्र. (म. टी.) १, ११. ।

सादस्स बिट्ठाणबंभा जीवा असादस्स चउट्ठाणबंभा जीवा
णाणावरणीयस्स जहणियाए ट्टिदीए जीवा थोवा ॥ १८७ ॥

कुदो ? जहणट्ठाणजीवहितो विसेसाहियकमेण उवरिमट्टिदिजीवाणं वट्ठिदंसणादो ।

बिदियाए ट्टिदीए जीवा विसेसाहिया ॥ १८८ ॥

केतियमेत्तो विसेसो ? एगजीवविसेसमेत्तो । को पडिभागो ? एगदुगुणवट्ठिअट्ठाणं ।

तदियाए ट्टिदीए जीवा विसेसाहिया ॥ १८९ ॥

को विसेसो ? स्वाहियगुणहाणीए खंडिएगखंडमेत्तो ।

एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोवमसद-
पुधत्तं ॥ १९० ॥

एदेण सागरोवमसदपुधत्तणिहेसेण जवमज्झाणं हेडिमअट्ठाणं जाणाविदं । एत्थ
गुणहाणिअट्ठाणाणं पमाणमवट्ठिदं । जीवविसेसा पुण अणवट्टिदा, गुणहाणिं पडि दुगुण-
दुगुणकमेण तेसिं वट्ठिदंसणादो ।

तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सादस्स असादस्स
उक्कस्सिया ट्टिदि त्ति ॥ १९१ ॥

साताके द्विस्थानबन्धक जीव और असाताके चतुःस्थानबन्धक जीव ज्ञाना-
वरणीयकी जघन्य स्थितिमें स्तोक हैं ॥ १८७ ॥

इसका कारण यह है कि अघन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा उपरिम स्थितियोंके
जीवोंके विशेष अधिक क्रमसे वृद्धि देखी जाती है ।

द्वितीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं ॥ १८८ ॥

विशेष कितना है ? यह एक जीवविशेषके बराबर है । प्रतिभाग क्या है ? एक
दुगुणवृद्धिअध्वान प्रतिभाग है ।

तृतीय स्थितिमें जीव विशेष अधिक हैं ॥ १८९ ॥

विशेष क्या है ? एक अधिक गुणहाणिका द्वितीय स्थितिमें भाग देनेपर जो एक
भाग प्राप्त हो उतना विशेषका प्रमाण है ।

इस प्रकार शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थिति तक जीवोंका प्रमाण विशेष
अधिक विशेष अधिक होता गया है ॥ १९० ॥

‘शतपृथक्त्व सागरोपम’ इस निर्देशसे यक्षमर्षोंके अधस्तन अध्वानको बतलाया
गया है । वहां गुणहानिअध्वानोंका प्रमाण अवस्थित है । ध्वस्तु जीव विशेष अनवस्थित
हैं, प्रत्येक गुणहानिके अनुसार उनके दुगुण-दुगुण वृद्धि देखी जाती है ।

इसके आगे साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति तक वे विशेष हीन विशेष
हीन होते गये हैं ॥ १९१ ॥

एदेसिं दोण्णं जवमज्झाणं पुण परुवणा किमुद्धं कदा ? पुण्विल्लचदुण्णं जवमज्झाणं जवमज्झादो हेट्ठिम-उवरिमज्झाणाणि सागरोवमसदपुवत्तमेत्ताणि चेव, एदेसिं दोण्णं जवमज्झाणं हेट्ठिमज्झाणाणि सागरोवमसदपुवत्तमेत्ताणि, उवरिमज्झाणाणि पुण पण्णारस-तीससागरोवमकोठाकोठिमेत्ताणि ति जाणावणद्धं पुण परुवणा कदा । एत्थं छण्णं पि जवमज्झाणं एवेगगुणहाणिअद्धानं समानं । कुदो । गुस्वएसादो । पाणागुणहाणिसला-गाजो पुण असमाणाओ, जवमज्जे हेट्ठिमउवरिमज्झाणाणं अण्णोणसमाणत्ताभावादो । एत्थं संदिद्धी एसा १६।२०।२४।२८।३२।४०।४८।५६।६४।७२।८०।८८।९६।१०४।११२।१२०।१२८।१३६।१४४।१५२।१६०।१६८।१७६।१८४।१९२।२००।२०८।२१६।२२४।२३२।२४०।२४८।२५६।२६४।२७२।२८०।२८८।२९६।३०४।३१२।३२०।३२८।३३६।३४४।३५२।३६०।३६८।३७६।३८४।३९२।४००।४०८।४१६।४२४।४३२।४४०।४४८।४५६।४६४।४७२।४८०।४८८।४९६।५०४।५१२।५२०।५२८।५३६।५४४।५५२।५६०।५६८।५७६।५८४।५९२।६००।६०८।६१६।६२४।६३२।६४०।६४८।६५६।६६४।६७२।६८०।६८८।६९६।७०४।७१२।७२०।७२८।७३६।७४४।७५२।७६०।७६८।७७६।७८४।७९२।८००।८०८।८१६।८२४।८३२।८४०।८४८।८५६।८६४।८७२।८८०।८८८।८९६।९०४।९१२।९२०।९२८।९३६।९४४।९५२।९६०।९६८।९७६।९८४।९९२।१०००।

परंपरोवणिधाए सादस्स चउट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा जीवा
असादस्स विट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा पाणावरणीयस्स जहणियाए
ट्टिदीए जीवेहिंतो तदो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण
दुगुणवद्धिदहं ॥ १९२ ॥

तदो जहणट्ठाणजीवेहिंतो सि [उत्तं] होदि । जहणट्ठाणजीवेहिंतो दुगुणत्तं

शंका—इन दो यवमध्योंकी पुण्य मरुपणा किसलिये की गई है ?

समाधान—पूर्व बार यवमध्यों सम्बन्धी यवमध्यमें नीचे व ऊपरके अण्णव शतपुण्यवत्त सागरोपम प्रमाण ही हैं, परन्तु इस दो यवमध्योंके नीचेके अण्णव शतपुण्यवत्त सागरोपम प्रमाण और ऊपरिम अण्णव कन्ध व तील कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण हैं; इस बातको बतसानेके लिये उनकी पुण्य मरुपणा की गई है ।

यहां छहों यवमध्योंकी एक एक गुणहाणिका अण्णव समान है, क्योंकि, वेसा शुक्का उपदेश है । परन्तु मानागुणहाणिकाकायें असमान हैं, क्योंकि, यवमध्यमें नीचे व ऊपरके अण्णवोंके परस्पर समानता नहीं है । यहां उनकी संख्या यह है—(मूलमें देखिये) इस प्रकार अनन्तरोवणिधा समस्त हुई ।

परम्परोवणिधाकी अनेक साताके चतुस्थानन्वक व त्रिस्थानन्वक जीव तथा असाताके द्विस्थानन्वक व त्रिस्थानन्वक जीव ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा उनसे पत्थोपमके असंख्यातवें भाग जाकर दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते हैं ॥ १९२ ॥

‘तदो’ पदका अर्थ ‘जघन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा’ है । अर्थात् वे जघन्य

१ ताम्बो ‘असमाणाओ सि’, इति पाठः । २ पञ्चासंधिवृत्तानि गंतुं दुगुणा व दुगुणहीणा व । नासंहराणि पञ्चास वृत्तानि असंख्यानि ॥ अ. प्र. १, १५ । पठ सि—परावर्तमानवृत्तमप्रकटीनीं चतुःस्थानान्तरकण्ठका बुधप्रकटीनीं यवमध्यस्थितौ कण्ठकेन वर्तमाना ये जीवास्तदपेक्षया यवमध्यस्थितौ परतः पत्थोपमस्यासंख्येयानि वर्गवृत्तानि—अनन्तरोवमस्यासंख्येयेषु वर्गवृत्तेषु बाधतः समवासावधममात्रा स्थितौ रतिक्रम्यान्तरे स्थितिरथाने द्विगुणा भवति (म. टी.) ।

पडिअमाणा । कं वेक्खिदूण दुगुणत्ते पुच्छिदे जहण्हिद्वीए जीवेहिंतो त्ति भणिदं होदि । एदेसिं जवमज्झाणं जाणागुणहाणिसलागाहि अप्पण्णो अद्धाने भागे हिदे एगुणहाणि-अद्धानं होदि त्ति वेत्तव्वं । जवमज्झस्स हेट्ठा एक्का चेव गुणहाणी ण होदि, अणेगाओ होति त्ति जाणावण्हमुत्तरसुत्तं भणदि—

एवं दुगुणवडिढदा दुगुणवडिढदा जाव जवमज्झं ॥ १९३ ॥

अवडिढमद्धानं गंतुण दुगुणवड्डी होदि त्ति जाणावण्हमेवमिदि णिदेसो कदो । जवमज्झस्स हेट्ठा गुणहाणीयो बहुगाओ होति त्ति जाणावण्हं विच्छाणिदेसो' कदो ।

तेण परं पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुण-हीणा ॥ १९४ ॥

जवमज्झादो उवरिमगुणहाणीयो आयामेण हेट्ठिमगुणहाणीहि समाणाओ । सेसं सुगमं ।

एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव सागरोवमसदपुधत्तं ॥ १९५ ॥

एदेसिं चट्ठणं जवमज्झाणं हेट्ठिमभागो व्व उवरिमभागो सागरोवमसदपुधत्तमेत्तो चेव होदि त्ति जाणावण्हं सागरोवमसदपुधत्तगहणं कदं । सेसं सुगमं ।

स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते हैं । किसीकी अपेक्षा वे दुगुणे हैं, ऐसा पृच्छनेपर उत्तर देते हैं कि वे अधम्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा दुगुणे हैं, यह अभिप्राय निकलता है । इन यवमध्योंकी नानागुणहाणिशलाकाओंका अपने अपने अध्वानमें प्राप्त होनेपर एक गुणहानिअध्वान प्राप्त होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । यवमध्यके नीचे एक ही गुणहानि नहीं होती, किन्तु वे अनेक होती हैं । इस बातका ज्ञापन करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

इस प्रकार यवमध्य तक वे दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त हुए हैं ॥ १९३ ॥

अवस्थित अध्वान जाकर दुगुणी वृद्धि होती है, इस बातका परिज्ञान करानेके लिये 'एवं' पदका निर्देश किया गया है । यवमध्यके नीचे गुणहानियां बहुत होती हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ 'दुगुणवडिढा दुगुणवडिढा' यह वीप्सा (द्विकृति) का निर्देश किया है । इसके आगे पत्थोपमके असंख्यातवें भाग जाकर वे दुगुणी हानिको प्राप्त होते हैं ॥ १९४ ॥

यवमध्यसे ऊपरकी गुणहानियां आयामकी अपेक्षा समान हैं । शेष कथन सुगम है ।

इस प्रकारं शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थितितक दुगुणी दुगुणी हानिको प्राप्त होते गये हैं ॥ १९५ ॥

इन कार यवमध्योंके अधस्तन भागके समान उपरिम भाग भी शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण ही है, इस बातका परिज्ञान करानेके लिये सूत्रमें 'सागरोपमशतपृथक्त्व' का ग्रहण किया है । शेष कथन सुगम है ।

१ प्रतिपु 'मिच्छाणिदेसो' इति पाठः ।

सादस्स चिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा
णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीए जीवेहिंतो तदो पल्लिदोवमस्स
असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणवड्ढिददा ॥ १९६ ॥

सुगममेदं ।

एवं दुगुणवड्ढिददा दुगुणवड्ढिददा जाव सागरोवमसद-
पुधत्तं ॥ १९७ ॥

एदं पि सुगमं ।

तेण परं पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुण-
हीणा ॥ १९८ ॥

एदं पि सुगमं ।

एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव सादस्स असादस्स
उक्कस्सिया द्विदि त्ति ॥ १९९ ॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीव-दुगुणवड्ढि-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पल्लिदोवम-
वग्गमूलाणि ॥ २०० ॥

पुर्वं गुणहाणीए आयामो सामण्णेण परुविदो, विसेसेण विणा पल्लस्स असंखेज्जदि-
सातावेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव व असातावेदनीयके चतुस्थानबन्धक जीव
ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके जीवोंकी अपेक्षा उससे पल्लोपमके असंख्यातवें भाग
जाकर दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते गये हैं ॥ १९६ ॥

यह स्व सुगम है ।

इस प्रकार शतपृथक्त्व सागरोपमों तक दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त होते
गये हैं ॥ १९७ ॥

यह स्व भी सुगम है ।

इसके आगे पल्लोपमका असंख्यातवां भाग जाकर वे दुगुणी हानिको प्राप्त होते
गये हैं ॥ १९८ ॥

यह स्व भी सुगम है ।

इस प्रकार साता व असाता वेदनीयकी उत्कृष्ट स्थिति तक दुगुणे दुगुणे हीन होते
गये हैं ॥ १९९ ॥

यह स्व भी सुगम है ।

एकजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर पल्लोपमके असंख्यात वर्गमूल प्रमाण है ॥ २०० ॥

पहिले सामान्य रूपसे गुणहानिके आयामकी प्ररूपणा की गई है, क्योंकि, यह

भागो ति उक्तञ्चादौ । संपत्ति तस्मात् अद्यावत्स विज्ञेयो एतेन सुतेन परुषिदो । असंख्येयाणि पलितोवमवगममूलाणि ति भणिते असंख्येया पलितोवमपदमवगममूलाणि ति वेत्तव्यं, विदित्यादिवगममूलेषु वगिदेसु पलितोवमाणुपत्तीदौ ।

पाणाजीव-दुगुणवडिह-हाणिद्वान्तराणि पलितोवमवगममूलस्स असंख्येज्जदिभागो ॥ २०१ ॥

पलितोवमवगममूलस्स असंख्येज्जदि भागमेतावो पाणागुणहाणिसलागावो होति ति यदि वि सामण्णेण उतं तो वि पलितोवमअद्वेदणएहिंतो थोवावो ति वेत्तव्यं । कुदो ? एदेसिमण्णेण्णभत्थरासी पलितोवमस्स असंख्येज्जदिभागो ति गुरुवेदसादो ।

पाणाजीव-दुगुणवडिह-हाणिद्वान्तराणि थोवाणि ॥ २०२ ॥

कुदो ? पलितोवमादो असंख्येयाणि वगमाणाणि हेत्वा ओसरिय उप्पण्णत्तादो ।

एगजीव-दुगुणवडिह-हाणिद्वान्तरमसंख्येज्जगुणं ॥ २०३ ॥

कुदो ? असंख्येज्जपलितोवमपदमवगममूलपमाणत्तादो । कम्मपदेसगुणहाणीदो एसा जीवगुणहाणी किं सरिसा किमसरिसा ति पुच्छिदे एदं न जाणिज्जे । कुदो ? सुत्तामावादो । एवं सेडिपरुषणा समत्ता ।

विशेषके विना पत्योपमके असंख्यातवै भाग प्रमाण है, ऐसा उपविष्ट है । इस समय इस सूत्रके द्वारा उस अश्वानका विशेष बतलाया गया है । 'असंख्येयाणि पलितोवमवगममूलाणि' ऐसा कहनेपर पत्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंको ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, द्वितीयादि वर्गमूलोंका वर्ग करनेपर पत्योपम उत्पन्न नहीं होता है ।

नानाजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर पत्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवै भाग प्रमाण हैं ॥ २०१ ॥

यद्यपि पत्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवै भाग प्रमाण नानागुणहानिशलाकायें होती हैं, ऐसा सामान्य रूपसे कहा गया है, तो भी वे पत्योपमके अर्धच्छेदोंसे स्तोक हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये; क्योंकि, इनकी अश्वान्याभ्यस्त राशि पत्योपमके असंख्यातवै भाग प्रमाण है, ऐसा शुद्धका उपदेश है ।

नानाजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥ २०२ ॥

क्योंकि, वे पत्योपमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे हटकर उत्पन्न हुए हैं ।

एकजीवदुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ २०३ ॥

क्योंकि, वह पत्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंके बराबर है । कर्मप्रदेशोंकी गुणहानिकी अपेक्षा यह जीवगुणहानि क्या सहस्र है या विसहस्र है, ऐसा पूछनेपर उसका उत्तर ज्ञात नहीं होता, क्योंकि, उसकी प्रकृति करनेवाला कोई सूत्र नहीं है । इस प्रकार भेदप्रकृति समाप्त हुई ।

१ प्रतिशु 'वगोसु' इति पाठः ।

यवमज्जजीवपमाणेय सव्वजीवा केवचिरेण कालेण अवहिरिजंति ? तिण्णिगुणहाणि-
ह्वान्तरेण । कण्णं जवानं जीवे अप्पपणो जवमज्जजीवपमाणेय कदे किंचणत्तिण्णिगुणहाणि-
मेत्ता होति । संदिट्ठीए सव्वदव्वमट्ठतीसाहियळस्सदमेत्तं ६३८ । किंचणत्तिण्णिगुणहाणीओ
एहाओ ३१९।३२ । एहाहि सव्वदव्वे भागे हिदे जवमज्जजीवपमाणं होदि ६४ ।

पुणो कण्णं जवानं जवमज्जस्स हेट्ठिमज्जहण्हिदिजीवपमाणेय सव्वजीवा केवचिरेण
कालेण अवहिरिजंति ? तिण्णिगुणहाणिगुण्णिदपल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण । तं जहा-
जीवजवमज्जस्स हेट्ठिमणाणागुणहाणिसलागाओ (२) विरलिय विगुणिय अण्णोण्णव्वमे
कदे पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो उप्पज्जदि (४) । पुणो एदेण किंचणत्तिसु गुणहाणीसु
गुणिदासु पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तगुणहाणिपमाणं होदि (३१९।८) । पुणो
एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे जहण्हिदिजीवपमाणं होदि (१६) । पुणो एदं परिहाणि कादूण
णेदव्वं जाव पढमगुणहाणिचरिमट्ठिदिजीवेति ।

पुणो विदियगुणहाणिपढमट्ठिदिजीवपमाणेय सव्वट्ठिदिजीवा केवचिरेण कालेण
अवहिरिजंति ? जहण्हिदिजीवभागहारादो अदमेत्तेण । कुदो ? एगदुगुणवट्ठि चडिदो
सि एगत्तवं विरलिय विगुणिय अण्णोण्णव्वत्तं कादूण पुव्वभागहारे ओवट्ठिदे तदुपसीदो

यवमध्यके जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त
प्रमाणसे वे तीन गुणहानिस्थानांतरकालके द्वारा अपहृत होते हैं । छह वर्षोंके जीवोंको
अपने अपने यवमध्यजीवोंके प्रमाणसे करनेपर वे कुछ कम तीन गुणहानियोंके बराबर
होते हैं । संदर्भमें सब द्रव्यका प्रमाण छह सौ अड़तीस (६३८) है । कुछ कम तीन गुणहा-
नियोंके हैं — $\frac{3}{4}$ । इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर यवमध्यके जीवोंका प्रमाण होता है —
 $\frac{638 + \frac{3}{4}}{3} = \frac{1915}{4} \times \frac{4}{3} = 638$ । छह वर्षोंके यवमध्यसे नीचेकी जघन्य स्थितिके
जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे तीन
गुणहानियोंसे गुणित पचोपमके असंख्यातवें भाग मात्र कालके द्वारा अपहृत होते हैं ।
यथा जीवयवमध्यके नीचेकी मानागुणहानिसलाकानों (२) का विरलन करके द्विगुणित
कर परस्पर गुणित करनेपर पचोपमका असंख्यातवां भाग ($2 \times 2 = 4$) उत्पन्न होता है ।
इसके द्वारा कुछ कम तीन गुणहानियोंको गुणित करनेपर पचोपमके असंख्यातवें भाग
मात्र गुणहानियोंका प्रमाण होता है — $\frac{3}{4} \div 4 = \frac{3}{16}$ । इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर
जघन्य स्थितिके जीवोंका प्रमाण होता है — $\frac{638 + \frac{3}{4}}{16} = \frac{10213}{16} \div 4 = 159$ । इसकी हानि
करके प्रथम गुणहानि सम्बन्धी अस्तित्व स्थितिके जीवों तक ले जाना चाहिये ।

द्वितीय गुणहानिकी प्रथम स्थितिके जीवोंके प्रमाणसे सब स्थितियोंके जीव कितने
कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? वे उक्त प्रमाण से जघन्य स्थिति सम्बन्धी जीवोंके
अगह्वरके वर्ष मात्र मात्रसे अपहृत होते हैं, क्योंकि, एक पुण्यवर्ष आगे गये हैं, अतः
एक अंकका विचलन करके पुनरा करके परस्पर गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उससे पूर्व

३१९। १६। पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे द्विदे विदियगुणहाणिपद्धमद्विदिजीवपमाणं होदि
 ३२। पुणो परिहारिणि कादण नेदव्वं जाव छणं जवाणं सागरोवमसदपुवतमेत्तसुवरि चड्ढिण
 द्विदजवमज्जजीवपमाणं पत्तं ति। पुणो तस्स भागहारो किञ्चुणतिणिगुणहाणीवो
 ३१९। ३२। पुणो एदस्सुवरि पक्खेवं कादण नेदव्वं जाव छणं जवाणं चरिमद्विदिजीव-
 पमाणं पत्तं ति। पुणो तप्पमाणेण अवहिरिज्जमाणे पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तगुण-
 हाणिद्वान्तरेण कालेण अवहिरिज्जति। तं जहा—जवमज्जानुवरिमणाणागुणहाणिसलागाणं
 (४) अण्णोण्णन्मत्तरासिणा (१६) तिणिगुणहाणीयो गुणिय किञ्चुणे वदे पल्लिदोवमस्स
 असंखेज्जदिभागमेत्तगुणहाणीवो भागहारो होदि ति (६३८। ५)। पुणो एदेण सव्वदव्वे
 भागे द्विदे चरिमद्विदिजीवपमाणमागच्छदि (५)। एवं भागहारपरूवणा गदा।

छणं जवाणं जवमज्जजीवा सव्वजीवाणं केवडियो भागो ? असंखेज्जदिभागो ? को
 पडिभागो ? किञ्चुणतिणिगुणहाणीयो। एवं जवमज्जस्स हेट्ठोवरि जाणिदण भागाभाग-
 परूवणा कायव्वा। भागाभागपरूवणा गदा।

सव्वत्थोवा छणं जवाणं चरिमद्विदिजीवा ५। तेसिं जहण्णद्विदिजीवा असंखेज्ज-
 गुणा। को गुणगारो ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो ? जवमज्जस्स उवरिम-

भागहारको अपवर्तित करनेपर उसका अर्ध भाग उत्पन्न होता है— $1 \times 2; \frac{1}{2} \times 2 = 1$ ।
 इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय गुणहानिकी प्रथम स्थितिके जीवोंका प्रमाण होता
 है— $638 \div \frac{1}{2} = 1276$ । इतनी हानि करके छह वर्षोंके शतपृथक्क सागरोपम प्रमाण आने
 जाकर स्थित यवमध्य सम्बन्धी जीवोंका प्रमाण प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये। उसका
 भागहार कुछ कम तीन गुणहानियां हैं— $\frac{1}{3}$ । इसके आने प्रक्षेप करके छह वर्षोंकी
 अन्तिम स्थिति सम्बन्धी जीवोंका प्रमाण प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये। उस प्रमाणसे
 अपहृत करनेपर वे पत्योपमके असंख्यातवर्ध भाग मात्र गुणहानिस्थानान्तरकाळके द्वारा
 अपहृत होते हैं। यथा—यवमध्योंकी उपरिम नानागुणहानिशकाकाओं (४) की
 अण्योन्याभ्यस्त राशि (१६) से तीन गुणहानियोंको गुणित करके कुछ कम करनेपर
 पत्योपमके असंख्यातवर्ध भाग मात्र गुणहानियां भागहार होती हैं— $\frac{1}{3}$ । इसका सब
 द्रव्यमें भाग देनेपर अन्तिम स्थितिके जीवोंका प्रमाण (५) आता है। इस प्रकार
 भागहारप्ररूपणा समाप्त हुई।

छह वर्षोंके यवमध्यके जीव सब जीवोंके कितनेवर्ध भाग प्रमाण हैं ? वे सब जीवोंके
 असंख्यातवर्ध भाग प्रमाण हैं। प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग कुछ कम तीन गुणहानियां हैं।
 इसी प्रकार यवमध्यके नीचे व ऊपर भी जानकर भागाभागकी प्ररूपणा करना चाहिये।
 भागाभागकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

छह वर्षोंकी अन्तिम स्थितिके जीव सबसे स्तोक हैं (५)। उनकी अल्प स्थितिके
 जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? गुणकार पत्योपमका असंख्यातवर्ध भाग

जहण्णद्विदिजीवसमाणजीवद्विदीदो उवरिमणाणागुणहणिंसलागाओ (२) विरलिय विमं करिय अण्णोण्णभत्तय कापुण किंचुणे कदे पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तगुणगाररासिससु-
प्पत्तीदो १६।५। एदेण चरिमद्विदिजीवे गुणिदे^१ जहण्णद्विदिजीवपमाणं होदि १६।
जवमज्जजीवा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो?
जवमज्जस्सुवरिमजहण्णद्विदिसमाणजीवाणं^२ च हेट्ठिम(२)णाणागुणहणिंसलागाओ विरलिय
विमं करिय अण्णोण्णभत्तयरासिससु गुणमारभुदस्स पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तनुव-
लंभादो^३ ४। एदेण जहण्णद्विदिजीवे गुणिदे जवमज्जजीवा होति ६४। केत्तियासु
द्विदीसु जवमज्ज^४? एक्किस्से चैव। जवमज्जप्पहुट्ठि हेट्ठिमजीवा असंखेज्जगुणा। को
गुणगारो? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, किंचुणदिवङ्गुणहणीयो ति उत्तं होदि।
३९।८। एदेण जवमज्जजीवे गुणिदे जवमज्जेण सह हेट्ठिमजीवपमाणं होदि ३१२^५।
जवमज्जस्स उवरिमजीवा विसैसाहिया। वंचविसैसाहियकारणं उब्बदे। तं जह्वा—जव-
मज्जहेट्ठिमआयामादो^६। ततो उवरिमदीहपमाणं संखेज्जगुणं। पुणो जवमज्जस्स हेट्ठा
हे, क्योंकि, उपरिम जघन्य स्थितिके जीवोंके समान जीवस्थितिके ऊपरकी नानागुणहानि-
शलाकाओंका विरलन करके हुना कर परस्पर गुणन करनेपर जो प्राप्त हो उसमें कुछ कम
करनेपर पक्ष्योपमके असंबंधातर्षे भाग प्रमाण गुणकार राशि उत्पन्न होती है—५^१।
इससे अन्तिम स्थितिके जीवोंको गुणित करनेपर जघन्य स्थितिके जीवोंका प्रमाण होता
है—१६। उनसे यवमध्यके जीव असंबंधातर्षे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार पक्ष्योप-
मका असंबंधातर्षा भाग है, क्योंकि, यवमध्यके ऊपरकी और जघन्य स्थितिके समान
जीवोंके नीचेकी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन करके द्विगुणित कर परस्पर गुणा
करनेपर जो गुणकारभूत राशि प्राप्त होती है वह पक्ष्योपमके असंबंधातर्षे भाग प्रमाण
पायी जाती हैं—४। इससे जघन्य स्थितिके जीवोंको गुणित करनेपर यवमध्यके जीव
होते हैं—९४।

शंका—कितनी स्थितियोंमें यवमध्य होता है?

समाधान—एक ही स्थितिमें होता है।

यवमध्यसे लेकर नीचेके जीव असंबंधातर्षे गुणे हैं। गुणकार क्या है? गुणकार
पक्ष्योपमका असंबंधातर्षा भाग अर्थात् कुछ कम केट्ट गुणहानियां हैं, यह अभिप्राय है—
१२। इससे यवमध्यजीवोंको गुणित करनेपर यवमध्यके साथ नीचेके जीवोंका प्रमाण
होता है—३१२। यवमध्यसे ऊपरके जीव विशेष अधिक हैं। उनके विशेष अधिक होनेका
कारण बतलाते हैं। वह इस प्रकार है—यवमध्यके अधस्तन आयामकी अपेक्षा उससे
ऊपरकी दीर्घताका प्रमाण संबन्धातर्षा है। यवमध्यके नीचे जितना अण्णान है उतना

१ अ काप्रत्ययः '—समासात्', ताप्रत्यो 'समासात्' इति पाठः। २ प्रतिषु 'जीवगुणिदे' इति पाठः।
३ ताप्रत्यो 'जहण्णद्विदिसमाण जीवाणं' इति पाठः। ४ अ-आ-काप्रतिषु 'मेत्तुवचंभादो' इति पाठः।
५ अमत्तिपाठोऽप्यस्ति। अ-आ-का-प्रतिषु १९ इति पाठः। ६ अप्रत्यो 'जवमज्जहेट्ठिमजीवेदि उरिचं
होदि आयाम्मादो' इति पाठः।

असिधमहाणं तसियमेतमुवरि गंतुण द्विद्विदीणं जीवपमाणं जवमज्जहेट्टिमजीवेहि सरिसे होदि । पुणो वि उवरिमद्विदिदीहपमाणं संखेज्जगुणमत्थि । तासु द्विदीसु द्विदसम्बजीव जवमज्जहेट्टिमजीवाणमसंखेज्जदिभागमेत्ता । तेसिं पमाणमेदं ७८ । पुणो एदम्मि एत्थ ३१२ पक्खित्ते जवमज्जहेट्टिमजीवाणमसंखेज्जदिभागमेत्तेण उवरिमजीवा अहिया होति ३९० । सव्वासु द्विदीसु जीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? जवमज्जहेट्टिमजीवपक्खित्तमेत्तेण ६३८ । अववा, पुणरवि अण्णेण पयारेण अप्पाचहुअं मणिस्सामो । तं जहा—सव्वत्थोवा छण्णं जवाणं उक्कस्सियाए द्विदीए जीवा । अप्पप्पणो जहण्णिवाए द्विदीए जीवा पुव पुव असंखेज्जगुणा । अजहण्णं—अणुक्कस्सियासु द्विदीसु जीवा असंखेज्जगुणा । पढ्मासु द्विदीसु जीवा विसेसाहिया । अवरिमासु द्विदीसु जीवा विसेसाहिया । सव्वासु द्विदीसु जीवा विसेसाहिया । एदाओ द्विदीओ णाणोवज्जोणेण वज्जति, एदाओ च दंसणोवज्जोणेण वज्जति ति जाणावणद्वुत्तरसुत्तं भणदि—

**सादस्स असादस्स य विट्ठाणयम्मि णियमा अणागारपाओग्ग-
ट्ठाणाणि^१ ॥ २०४ ॥**

अणागारउवज्जोपाओमाद्विदिबंधट्ठाणाणि णियमा णिच्छएण सादासादाणं विट्ठा-

मात्र ऊपर जाकर स्थित स्थितियोंके जीवोंका प्रमाण यवमध्यसे नीचेके जीवोंके समान होता है । फिर भी उपरिम स्थितियोंकी दीर्घताका प्रमाण संख्यातगुणा है । उन स्थितियोंमें स्थित सब जीव यवमध्यके अधस्तन जीवोंके असंख्यातवें भाग मात्र हैं । उनका प्रमाण यह है—७८ । इसको इसमें (३१२) मिलानेपर यवमध्यसे नीचेके जीवोंके असंख्यातवें भाग मात्रसे ऊपरके जीव अधिक होते हैं— $312 + 78 = 390$ । सब स्थितियोंमें जीव विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ! यवमध्यके नीचेके जीवोंके प्रक्षिप्त मात्रसे वे अधिक हैं—६३८ ।

अथवा फिरसे भी दूसरे प्रकारसे अस्पष्टबुद्धको कहते हैं । वह इस प्रकार है—छह यवोंकी उत्कृष्ट स्थितिमें जीव सबसे स्तोक हैं । अपनी अपनी अवस्थ स्थितिमें पृथक् पृथक् असंख्यातगुणे हैं । अजक्य-अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें जीव असंख्यातगुणे हैं । प्रथम स्थितियोंमें जीव विशेष अधिक हैं । अवरम स्थितियोंमें जीव विशेष अधिक हैं । सब स्थितियोंमें जीव विशेष अधिक हैं । वे स्थितियों ज्ञानोपयोगसे बंधती हैं और वे स्थितियों दर्शनोपयोगसे बंधती हैं, वह बतलानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

साता व असाता वेदनीयके द्विस्थानिक अनुभागमें निश्चयसे अनाकार उपयोग योग्य स्थान होते हैं ॥ २०४ ॥

अनाकार उपयोग योग्य स्थितिकथस्थान नियम अर्थात् निश्चयसे साता व असाता

^१ प्रतिपु 'अवहण्णा—' इति पाठः । १ अणमारणाडग्गा विट्ठावणगाड पुविहणजीव । अणमार सव्वत्थ वि...। क. प्र. १, १६. ।

विषयमि अनुभागे बज्जमाणे होति, न अण्णत्थ; दंसणोवजोगकाले अइसंविस्सेसिस्सोहीण-
मभावादो । को दंसणोवजोगो नाम ? अंतरंगउवजोगो^१ । कुदो ? आगारो णाम कम्म-
कत्तारभावो, तेण विणा जा उवलदी^२ सो अपागारउवजोगो । अंतरंगउवजोगे^३ वि
कम्म-कत्तारभावो अत्थि ति णासंकणिजं, तत्थ कत्तारादो दव्व-खेतेहि फट्ठकम्माभावादो ।
एवं संते सुद-मणपञ्चवणाभाणं पि दंसणोवजोगपुरंगमतं पसज्जदि ति उत्ते, न, मदिणाण-
पुरंगमाणं तेसिं दोणं पि दंसणोवजोगपुरंगमतविरोहादो । तदो^४ बज्जत्थगहणसंते
विसिद्धसगसरूक्खवेयणं दंसणमिदि सिद्धं । न च बज्जत्थगहणमुहावत्था चेव दंसणं,
किंतु बज्जत्थगहणुवसंहरणपढमसमयप्यहुडि जाव बज्जत्थगहणचरिमसमजो ति दंसणुव-
जोगो ति वेत्तव्वं, अण्णहा दंसण-णाणोवजोगवदिरितस्स वि जीवस्स अत्थितपसंगादो ।

सागारपाओग्गट्ठाणाणि सब्बत्थ ॥ २०५ ॥

वेदनीयके द्विस्थानिक अनुभागका बन्ध होनेपर होते हैं, अव्यय नहीं होते; क्योंकि,
दर्शनोपयोगके समयमें अतिशय संक्लेश और विशुद्धिका अभाव होता है ।

शंका—दर्शनोपयोग किसे कहते हैं ?

समाधान—अन्तरंग उपयोगको दर्शनोपयोग कहते हैं । कारण यह कि आकारका
अर्थ कर्मकर्तृत्व है, उसके बिना जो अर्थोपलब्धि होती है उसे अनाकार उपयोग
कहा जाता है ।

अन्तरंग उपयोगमें भी कर्मकर्तृत्व होता है, ऐसी आशंका नहीं करना चाहिये;
क्योंकि, उसमें कर्ताकी अपेक्षा ग्रन्थ व क्षेत्रसे स्पष्ट कर्मका अभाव है ।

शंका—ऐसा होनेपर सुतज्ञान और मनःपर्यय ज्ञानके भी दर्शनोपयोगपूर्वक
होनेका प्रसंग आवेगा ?

समाधान—नहीं आवेगा, क्योंकि, वे दोनों ज्ञान मतिज्ञानपूर्वक होते हैं, अतः
उनके दर्शनोपयोगपूर्वक होनेमें विरोध है । इस कारण बाह्य अर्थका ग्रहण होनेपर जो
विशिष्ट आत्मस्वरूपका वेदन होता है वह दर्शन है, वह सिद्ध होता है ।

बाह्य अर्थके ग्रहणके उन्मुख होने रूप जो अवस्था होती है वही दर्शन हो, ऐसी
बात भी नहीं है; किन्तु बाह्यग्रहणके उपसंहारके प्रथम समयसे लेकर बाह्यार्थके
अग्रहणके अन्तिम समय तक दर्शनोपयोग होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि,
इसके बिना दर्शन व ज्ञानोपयोगसे शिथिल भी जीवके अस्तित्वका प्रसंग आता है ।

साकार उपयोगके योग्य स्थान सर्वत्र वैषते हैं ॥ २०५ ॥

१ साम्बो 'नाम ? अंतरंगउवजोगो' इति पाठः । २ अश्वतो 'वाउवाउवकम्मी'
इति पाठः । ३ साम्बो 'अंतरंगउवजोगो' इति पाठः । ४ मज्झिमसुत्तम् । अ-आ-का-प्रतिपु 'फट्ठि',
साम्बो 'फट्ठ (१)' इति पाठः । ५ मज्झिमसुत्तम् । अ-आ-का-प्रतिपु 'कुदो' इति पाठः ।

सागारो णाणोवजोगो, तस्य कम्म-कतारभावसंभवादो । तस्स सागारस्स णाओग्गाणि
द्विदिबंधाणाणि सञ्चत्य अत्थि । भावत्यो—जाणि द्विदिबंधाणाणि दंसणोवजोगेण
सह बज्झंति ताणि णाणोवजोगेण वि बज्झंति । जाणि दंसणोवजोगेण ण बज्झंति
द्विदिबंधाणाणि ताणि वि णाणोवजोगेण बज्झंति सि उत्तं होदि । एदेसि छणं
जबाणं हेट्ठिम-उवरिमभागाणं थोवबहुत्तजाणावणट्ठमणागारैपाओग्गाणाणं पमाणजाणावणं
च उवरिल्लमप्पाबहुगसुत्तमागदं—

सादस्स चउट्ठाणिर्यजवमज्झस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि
थोवाणि ॥ २०६ ॥

कुदो ? सागरोवमसदपुधत्तपमाणत्तादो ।

उवरि संखेज्जगुणाणि ॥ २०७ ॥

जवमज्झादो उवरिमद्विदिबंधाणाणि संखेज्जगुणाणि । किं कारणं ? अहविसुद्ध-
द्विदीहितो मंदविसुद्धदीपं बहुताकिरोहादो ।

साकारसे अभिप्राय ज्ञानोपयोगका है, क्योंकि, उसमें कर्म और कर्तृत्वकी सम्भावना
है । एक साकार उपयोगके योग्य स्थितिवन्धस्थान सर्वत्र होते हैं । भावार्थ—जो स्थिति-
वन्धस्थान दर्शनोपयोगके साथ बंधते हैं वे ज्ञानोपयोगके साथ भी बंधते हैं ।
जो स्थितिवन्धस्थान दर्शनोपयोगके साथ नहीं बंधते हैं वे भी ज्ञानोपयोगके साथ बंधते
हैं, यह उसका अभिप्राय है ।

इन छह यवोंके अधस्तन और उपरिम भागोंके अल्पबहुत्वको बतलानेके लिये तथा
अनाकार उपयोगके योग्य स्थानोंके प्रमाणको भी बतलानेके लिये आगेका अल्पबहुत्वसूत्र
प्राप्त होता है—

साता वेदनीयके चतुःस्थानिक यवमज्जके नीचेके स्थान स्तोक हैं ॥ २०६ ॥

कारण कि वे शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण हैं ।

उपरिम स्थान उनसे संख्यातगुणे हैं ॥ २०७ ॥

यवमज्जसे ऊपरके स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, अति विशुद्ध

१ साम्प्रतौ 'जाणि दंसणोवजोगेण ण बज्झंति' इत्येतावानर्थ पाठस्तुतितोऽस्ति । २ मप्रतिपादोऽयम् ।
अ-आ-काप्रतिपु 'तिणि' इति पाठः । ३ प्रतिपु 'अजगार' इति पाठः (काप्रतौ पुटितोऽयं पाठः) ।
४ साम्प्रतौ 'चउट्ठाणिमा बव—' इति पाठः । ५...हिंदा थोवाणि जवमज्झा ॥ ठाणाणि चउट्ठाणा संखेज्ज-
गुणाणि उवरिमेवन्ति (एवं) । तिङ्गाणे विङ्गाणे सुमाणि एयंतमीवाणि ॥ उवरिं मिस्साणि बहज्जो सुमार्णं
तवो विसेवहिओ । होइ सुमाण बहज्जो संखेज्जगुणाणि ठाणाणि ॥ विङ्गाणे जवमज्झा हेट्ठा एयंत
मीसगालुवरिं । एवं ति-चउट्ठाणे जवमज्झाओ व बायठिइ ॥ अंतोकोडाकोडी सुमविङ्गाण जवमज्झाओ
उवरिं । एयंतगा विविङ्गा सुमविङ्गा बायठिइवेट्ठा ॥ क. प्र. १,१६—१००, पराचर्यमानग्रामप्रकृतीनां
चतुःस्थानकरचवमज्ज्यादयः स्थितिवानानि सर्वस्तोकानि (म. टी. १,१६) । १ तस्यचतुःस्थान-
करचवमज्ज्यस्यैवोपरि स्थितिवानानि संखेयगुणानि (२) । क. प्र. (म. टी.) १,१७. ।

सादस्स तिट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ २०८ ॥

कुदो ? चउट्ठाणियअणुमागबंधपाओग्गअज्झवसाणेहिंतो सादतिट्ठाणियजवमज्झहेट्ठि-
मअणुमागबंधपाओग्गअज्झवसाणाणमसुहत्तदंसाणादो ।

उवरि संखेज्जगुणाणि ॥ २०९ ॥

कुदो ? सादतिट्ठाणियजवमज्झहेट्ठिमअज्झवसाणेहिंतो उवरिमअज्झवसाणाणमसुहत्त-
दंसाणादो । मंदविसोहीहि परिणममाणा जीवा बहुगा होति, तासिं पाओग्गद्विदीयो वि
बहुगीयो ति उत्तं होदि । कुदो ? जं तेणै वि मंदविसोहीणमुप्पत्तीदो ।

**सादस्स विट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो एयंतसागार्पाओग्ग-
ट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ २१० ॥**

कुदो ? सादतिट्ठाणियजवमज्झस्स उवरिमद्विदिसंकिंसेसादो सादविट्ठाणियजव-

स्थितियोंकी अपेक्षा मन्द विशुद्ध स्थितियोंके बहुत होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

साता वेदनीयके त्रिस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थान उनसे असंख्यातगुणे हैं ॥ २०८ ॥

कारण यह कि चतुःस्थानिक अनुभागबन्धके योग्य परिणामोंकी अपेक्षा क्षराके
त्रिस्थानिक यवमध्यके नीचेके अनुभागबन्धके योग्य परिणाम अशुभ देखे जाते हैं ।

यवमध्यसे ऊपरके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २०९ ॥

कारण कि साताके त्रिस्थानिक यवमध्यके अधस्तन परिणामोंकी अपेक्षा उपरिम
परिणाम अशुभ देखे जाते हैं । मन्द विशुद्धियों रूप परिणामन करनेवाले जीव बहुत हैं
तथा उनके योग्य स्थितियाँ भी बहुत हैं, यह अभिप्राय है । इसका कारण यह है कि उससे
भी मन्द विशुद्धियाँ उत्पन्न होती हैं ।

साता वेदनीयके द्विस्थानिक यवमध्यके नीचेके एकान्ततः साकार उपयोगके योग्य
स्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१० ॥

इसका कारण यह है कि साता वेदनीयके त्रिस्थानिक यवमध्यके ऊपरके स्थितिबन्ध-

१ अ-आ-काप्रतिषु 'असंखेज्जगुणाणि' इति पाठः । २ तेभ्योऽपि त्रिस्थानकस्तयवमध्यस्योपरि
स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ४ । क. प्र. (म. टी.) १, १७ । तेभ्योऽपि पञ्चवर्तमानद्व्यप्रकृतीनां
त्रिस्थानकस्तयवमध्यस्थः स्थितिस्थानानि संख्येयगुणाणि ३ । क. प्र. (म. टी.) १, १७ । ३ अ-आ-का-
प्रतिषु 'अपेय' इति पाठः । ४ अप्रती 'वापर', आ-काप्रत्योः 'वापर' इति पाठः । ५ तेभ्योऽपि
पञ्चवर्तमानद्व्यप्रकृतीनां त्रिस्थानकस्तयवमध्यस्थः स्थितिस्थानानि एकान्तसाकारोपयोगयोग्यानि संख्येय-
गुणानि ५ । क. प्र. (म. टी.) १, १७ ।

कञ्चस्व हेडिमद्विदिबन्धट्टाणां सागारोवजोगेण कञ्चसाणां संकिलेस्स असुहत्तदंसाणादो । दीसइ च सुहवज्जादिपोओग्गट्टाणेहिंतो असुहपत्तरादिपोओग्गट्टाणाणमइवहुत्तं ।

मिस्सयाणि संखेज्जगुणाणि ॥ २११ ॥

सागार-अणागारउवजोगाणं जाणि पाओग्गाणि सादवेड्डाणियजवमज्झादो हेडिमाणि द्विदिबन्धट्टाणाणि ताणि संखेज्जगुणाणि । कुदो ? हेडिमअज्झवसाणेहिंतो एदेसिमज्झवसाणाणं असुहपुवल्भादो । मोक्खकारणादो संसारकारणेण बहुएण होदव्वं, अण्णहा देवमणुस्सेहिंतो तिरिक्खाणमणंतगुणत्ताणुववत्तीदो ।

सादस्स चैवं विट्ठाणियजवमज्झस्स उवरि मिस्सयाणि संखेज्जगुणाणि ॥ २१२ ॥

कारणं हेडिमअज्झवसाणेहिंतो उवरिमअज्झवसाणाणं सुट्ठ असुहत्तं ।

असादस्स विट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो एयंतसायारपाओग्गट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ २१३ ॥

स्थानोंके संकलेशकी अपेक्षा साता वेदनीयके द्विस्थानिक यवमध्यके नीचेके साकार उपयोगसे बंधनेवाले स्थितिबन्धस्थानोंका संकलेशान अशुभ देखा जाता है । वज्र आदिके योग्य शुभ स्थानोंकी अपेक्षा अशुभ पथर आदिके योग्य स्थान अत्यन्त बहुत देखे भी जाते हैं ।

मिश्र स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २११ ॥

साकार व अनाकार उपयोगके योग्य जो साता वेदनीयके द्विस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थितिबन्धस्थान हैं वे संख्यातगुणे हैं, क्योंकि नीचेके अध्यवसानोंकी अपेक्षा ये अध्यवसान अशुभ देखे जाते हैं । मोक्षके कारणकी अपेक्षा संसारका कारण बहुत होना चाहिये, क्योंकि, अन्यथा देख और मनुष्योंकी अपेक्षा तिर्यक्षोंका अनन्तशुणत्व बन नहीं सकता ।

साताके ही द्विस्थानिक यवमध्यके उमर मिश्र स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१२ ॥

इसका कारण अद्यस्तम अध्यवसानोंकी अपेक्षा उपरिम अध्यवसानोंका अत्यन्त होना है ।

असाताके द्विस्थानिक यवमध्यके नीचे एकान्ततः साकार उपयोगके योग्य स्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१३ ॥

१ सामो 'वण्णदि' इति पाठः । २ तेभ्योपि द्विस्थानकरसवबमध्यादवः पाश्चात्त्येभ्य ऊर्ध्वं स्थितिस्थानानि मित्राणि साकारानकारोपयोयोन्यानि संखेयगुणानि ६ । क. प्र. (म. टी.) १, १७ । ३ अमो 'सादस्सेव' इति पाठः । ४ तेभ्योऽपि द्विस्थानकरसवबमध्यादवमि मित्राणि स्थितिस्थानानि संखेयगुणानि ७ । क. प्र. १, १८ । ५ सामो 'असंखेयगुणानि' इति पाठः । ततोऽप्यष्टमपरावर्तमानमङ्गलीनामेव द्विस्थानकरसवबमध्यादव एकान्तसाकारोपयोग्योन्यानि स्थितिस्थानानि संखेयगुणानि १० । क. प्र. (म. टी.) १, १९ ।

कुदो ? सादविट्ठाणियजवमज्जस्स उवरि सामाराणागारपाओग्गाद्धिदिबंघज्जवसाणे-
हिंतो असादविट्ठाणियजवमज्जस्स हेट्ठिमएयंतसागारपाओग्गाद्धिदिबंघज्जवसाणट्ठाणाण-
मसुहुतुवल्लमादो ।

मिस्सयाणि संखेज्जगुणाणि' ॥ २१४ ॥

कारणं सुगमं ।

**असादस्स चेव विट्ठाणियजवमज्जस्सुवरि मिस्सयाणि संखेज्ज-
गुणाणि' ॥ २१५ ॥**

एदेसिं द्विदिबंघट्ठाणाणं संखेज्जगुणत्तस्स कारणं पुवं पस्सुविदमिदि नेह पस्सुविज्जे ।
सादस्स सागाराणागारपाओग्गाद्धिदिबंघट्ठाणप्पट्ठिविट्ठाण-तिट्ठाण-चउट्ठाणपाओग्गादि-
हेट्ठिमासेसट्ठिदीहिंतो संखेज्जगुणमट्ठाणमुवरि गंतुण असादस्स विट्ठाणजवमज्जस्स सागार-
अणागारपाओग्गाट्ठाणाणि होति । कुदो ? पयविबिसेसेण तदो संखेज्जगुणं गंतुण
तदुप्पत्तिविरोहाभावादो ।

एयंतसागारपाओग्गाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि' ॥ २१६ ॥

कारणं सुगमं ।

इसका कारण यह है कि साताने द्विस्थानिक यवमध्यके ऊपरके साकार व अनाकार
उपयोगके योग्य स्थितिवन्ध्याप्यवसानोंकी अपेक्षा असाताके द्विस्थानिक यवमध्यके नीचेके
सर्वथा साकार उपयोगके योग्य स्थितिवन्ध्याप्यवसानस्थान अनुम पड़े जाते हैं ।

मिश्र स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१४ ॥

इसका कारण सुगम है ।

ऊपर मिश्र स्थितिवन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१५ ॥

इन स्थितिवन्धस्थानोंके संख्यातगुणे होनेका जो कारण है उसकी प्ररूपणा पहिले
की जा चुकी है, अतः वह यहाँ फिरसे नहीं की जा रही है । साता वेदनीयके साकार
और अनाकार उपयोगके योग्य स्थितिवन्धस्थानोंको लेकर द्विस्थान द्विस्थान एवं
चतुस्थान योग्य स्थिति नीचेकी समस्त स्थितियोंसे संख्यातगुणे अध्वान आगे जाकर
असातावेदनीयके द्विस्थान यवमध्यके साकार व अनाकार उपयोग योग्य स्थान होते हैं,
क्योंकि, प्रकृतिविशेषके कारण उनसे संख्यातगुणे स्थान आगे जाकर उनके उत्पन्न होनेमें
कोई विरोध नहीं है ।

एकान्ततः साकार उपयोगके योग्य स्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१६ ॥

इसका कारण सुगम है ।

१ तत्तासामेव परावर्तमानाणुप्रकृतीनां द्विस्थानकरसयवमज्जाद्वयः पाश्चात्येभ्य ऊर्ध्वे मिश्रानि
स्थितिरस्थानानि संखेयगुणानि ११ । क. प्र. (म. टी.) १, १९. । २ तेम्भोइपि तातामेवाणुप्रपरावर्तमान-
प्रकृतीनां द्विस्थानकरसयवमज्जाद्वयपरि स्थितिरस्थानानि मिश्रानि संखेयगुणानि १२ । क. प्र. (म. टी.) १, १९.
३ तेम्भोइप्यपरि एकान्तसाकारोपयोग्योन्मानि स्थितिरस्थानानि संखेयगुणानि १३ । क. प्र. (म. टी.) १, १९. ।

असादस्स तिट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि संखेज्ज-
गुणाणि ॥ २१७ ॥

कुदो ? हेट्ठिमसंक्खित्सेद्धितो एदेसिं संक्खित्सेसाणमसुहत्तदंसादो ।

उवरि संखेज्जगुणाणि ॥ २१८ ॥

कारणं सुगमं ।

असादस्स चट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि संखेज्ज-
गुणाणि ॥ २१९ ॥

कारणं सुगमं ।

सादस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो ॥ २२० ॥

कुदो ? असादस्स चट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठिमट्ठिदिबंधट्ठाणाणि सागरोवमसदपुध-
त्तेत्ताणि । सादस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो पुण अंतोकोडाकोडिआवाधृणा । तेण असादस्स
चट्ठाणियजवमज्झहेट्ठिमट्ठाणेहिंतो सादस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो जादो ।

जट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ॥ २२१ ॥

असाता वेदनीयके त्रिस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१७ ॥

कारण यह कि नीचेके संक्लेश परिणामोंकी अपेक्षा ये संक्लेश परिणाम अशुभ
देखे जाते हैं ।

उसके ऊपरके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१८ ॥

इसका कारण सुगम है ।

असाता वेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २१९ ॥

इसका कारण सुगम है ।

सातावेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है ॥ २२० ॥

कारण कि असाता वेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यके नीचेके स्थितिबन्धस्थान
शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण हैं । परन्तु सातावेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध आधाघासे
हीन अन्तःकोडाकोडि सागरोपम प्रमाण है । इसीलिये असाताके चतुःस्थानिक यवमध्यके
नीचेके स्थानोंकी अपेक्षा साता वेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा हो जाता है ।

ज-स्थितिबन्ध उससे विशेष अधिक है ॥ २२१ ॥

१ तेभ्योऽपि तातामेव परावर्तमानाश्चमप्रकृतीनां त्रिस्थानकरसयवमध्यादधः स्थितिरिस्थानानि
संख्येयगुणानि १४ । क. प्र. (म. टी.) १,१९. २ तेभ्योऽपि तातामेव परावर्तमानाश्चमप्रकृतीनां
त्रिस्थानकरसयवमध्यादधः स्थितिरिस्थानानि संख्येयगुणानि १५ । क. प्र. (म. टी.) १,१९. ३
तेभ्योऽप्यश्चमपरावर्तमानप्रकृतीनामेव चतुःस्थानकरसयवमध्यादधः स्थितिरिस्थानानि संख्येयगुणानि १६ ।
क. प्र. (म. टी.) १,१९. ४ तेभ्योऽपि शुभानां परावर्तमानप्रकृतीनां जघन्यः स्थितिरिस्थानानि
संख्येयगुणः ८ । क. प्र. (म. टी.) १,१८.

जट्टिदिबन्धो णाम आबांहाए सहिदज्जहण्णट्टिदिबन्धो, पहाणीकयकालसादो । जहण्ण-
बन्धो णाम आबाधूणजहण्णबन्धो, पहाणीकयणिसेयट्टिदिसादो । तेण जहण्णट्टिदिबन्धादो
जट्टिदिबन्धो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? सगअतोमुहुत्तजहण्णवाहामेत्तेण ।

असादस्स जहण्णओ ट्टिदिबन्धो विसेसाहिओ ॥ २२२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जसागरोवममेत्तेण ।

जट्टिदिबन्धो^१ विसेसाहिओ ॥ २२३ ॥

केत्तियमेत्तेण ? जहण्णावाहामेत्तेण ।

जत्तो उक्कस्सयं दाहं गच्छदि सा ट्टिदी संखेज्जगुणां ॥ २२४ ॥

दाहो णाम संकिलेसो । कुदो ? इह-परभवसंतावकारणत्तादो । उक्कस्सदाहो णाम
उक्कस्सट्टिदिबन्धकारणउक्कस्ससंकिलेसो । जिस्से ट्टिदीए ठाइण उक्कस्ससंकिलेसं गंतुण
उक्कस्सट्टिदि^२ बन्धदि सा ट्टिदी संखेज्जगुणा ति उत्तं होदि ।

अंतोकोडाकोडी संखेज्जगुणां ॥ २२५ ॥

आबाधासे सहित जघन्य स्थितिबन्धको अस्थितिबन्ध कहा जाता है, क्योंकि,
वहां कालकी प्रधानता है । आबाधासे हीन जघन्य स्थितिबन्ध जघन्य बन्ध कहलाता है,
क्योंकि, उसमें निबेकस्थितिकी प्रधानता है । इसीलिये जघन्य स्थितिबन्धसे अस्थितिबन्ध
विशेष अधिक है । कितने मात्रसे वह अधिक है ? वह अपनी अन्तर्मुहूर्त मात्र जघन्य
आबाधाके प्रमाणसे अधिक है ।

असातावेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ २२२ ॥

वह कितने मात्रसे अधिक है । वह संख्यात सामरोपम मात्रसे अधिक है ।

अस्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ २२३ ॥

कितने मात्रसे अधिक है ? वह जघन्य आबाधा मात्रसे अधिक है ।

जिसके कारण प्राणी उत्कृष्ट दाहको प्राप्त होता है वह स्थिति संख्यातगुणी है ॥ २२४ ॥

दाहका अर्थ संकलेडा है, क्योंकि, वह इस भव और पर भवमें स्मृतावका कारण
है । उत्कृष्ट दाहका अर्थ उत्कृष्ट स्थितिबन्धका कारणभूत उत्कृष्ट संकलेडा है । जिस
स्थितिमें स्थित होकर उत्कृष्ट संकलेडाको प्राप्त हो जीव उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है वह
स्थिति संख्यातगुणी है, यह अभिप्राय है ।

अन्तःकोडाकोडिका प्रमाण संख्यातगुणा है ॥ २२५ ॥

१ ततोऽप्यद्युपपरावर्तमानप्रकृतीनां जघन्यः स्थितिबन्धः विशेषाधिकः १ । क. प्र. (म. टी.)
१, ९८. २ अ-आ-काप्रतिषु 'जहण्णट्टिदिबन्धो' इति पाठः । ३ तेनोऽपि सुब्रमण्यादुपरि ब्रह्मस्थिति-
संखेज्जगुणः १७ । यतः स्थितिरथानावपवर्तनाकरणवशेनोत्कृष्टा स्थिति इति तावती स्थितिर्द्वयसिद्धिः
सिद्ध्यन्ते । क. प्र. (म. टी.) १, ९९. ४ ताप्रतौ 'उक्कस्सट्टिदी' इति पाठः । ५ ततोऽपि सामरोपमा-
णामन्तःकोडाकोडी संखेज्जगुणा १८ । क. प्र. (म. टी.) १, १०० ।

पुञ्जिह्विदी अंतोकोडाकोडिमैसा, एसा वि द्विदी' अंतोकोडाकोडिमैसा चेव ।
किंतु एसा विज्वियप्पा, तेण संखेजगुणा ति मणिदा ।

सादस्स बिट्ठाणियजवमज्झस्स उवरि एयंतसागारपाओ-
ग्गट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ २२६ ॥

कुदो ? अंतोकोडाकोडीए उणपण्णारससागरोवमकोडाकोडिपमाणत्तादो ।

सादस्स उक्कस्सओ द्विदिवंधो' विसेसाहियो ॥ २२७ ॥

कैतियमेतेण ? सादअणागारपाओग्गट्ठाणप्पहुडि हेट्ठिमआबाधूणअंतोकोडाकोडि-
गिसेयट्ठिदिमेतेण ।

जट्ठिदिवंधो विसेसाहियो ॥ २२८ ॥

कैतियमेतेण ? सगआबाधामेतेण ।

दाहट्ठिदी विसेसाहियाँ ॥ २२९ ॥

पूजाँक स्थितिका प्रमाण अन्तःकोडाकोडि मात्र है, यह स्थिति भी अन्तःकोडाकोडि
प्रमाण ही है । किन्तु यह स्थिति निर्विकल्प है, इसीलिये संख्यातगुणों कही गई है ।

साता वेदनीयके द्विस्थानिक यवमध्यके उपरके एकान्ततः साकार उपयोगके योग्य
स्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २२६ ॥

क्योंकि, वे अन्तःकोडाकोडिसे हीन पन्द्रह कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण हैं ।

साता वेदनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ २२७ ॥

वह कितने मात्रसे अधिक है ? साताके अनाकार उपयोगके योग्य स्थानोंको लेकर
नीचे आधाघासे रहित अन्तःकोडाकोडि सागरोपम निर्विकल्पितियोंके प्रमाणसे वह
अधिक है ।

ज-स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ॥ २२८ ॥

कितने मात्रसे वह अधिक है ? वह अपनी आधाघाके प्रमाणसे अधिक है ।

दाहस्थिति विशेष अधिक है ॥ २२९ ॥

१ अ-आ-काप्रतिपु 'एसा दि द्विदि' इति पाठः । २ ततोऽपि परावर्तमानं क्षुमप्रकृतीनां द्विस्थान-
करतयवमध्यस्थोपरि यानि मित्राणि स्थितिस्थानानि तेष्वुपर्यैकान्तसाकारोपयोग्योभ्यानि स्थितिस्थानानि
संखेयगुणानि १९ । क. प्र. (म. टी.) १, १००. ३ अ-आ-काप्रतिपु 'उक्कस्सट्ठिदिवंधो' इति पाठः ।
४ तेम्बोऽपि परावर्तमानक्षुमप्रकृतीनामुत्कृष्टः स्थितिक्रमो विशेषाधिकः २० । क. प्र. (म. टी.)
१, १००. ५ मप्रतिपत्तोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिपु 'मेत्तो' इति पाठः । ६ अ-आ-काप्रतिपु
'बहणट्ठिदिवंधो' इति पाठः । ७ ततोऽन्यक्षुम-(१) परावर्तमानक्षुमप्रकृतीनां बद्धा बाधस्थितिर्विशेषा-
धिका २१ । अतः स्थितिस्थानान् मातृकस्थित्यान्वायेन द्वावां फालां दत्त्वा वा वा स्थितिर्यथ्यते ततः प्रथमि

दाहो उक्कस्सद्विदिपाओग्गसंकिळेसो तस्स दाहस्स कारणभूदद्विदी दाहद्विदी पाय,
कारणे कज्जुवयारादो । तत्थ जहण्णदाहद्विदिप्पहुडि जाव उक्कस्सदाहद्विदि ति एवाहिं
सव्वासिं जादिदुवारेण एयत्तमावण्णाणं दाहद्विदि ति सण्णा । सा पण्णारससागरोवम-
कोडाकोडीयो पेविखदूणं विसेसाहिया, किंत्तणीतीससागरोवमकोडाकोडिपमाणत्तादो ।

**असादस्स चउट्टाणियजवमज्झस्स उवरिमट्टाणाणि विसेसाहि-
याणि ॥ २३० ॥**

केतियमेत्तेण ? असादचउट्टाणियजवमज्झादो उवरिमजहण्णदाहद्विदीदो हेट्ठिम-
अंतोकोडाकोडिसागरोवममेत्तेण ।

असादस्स उक्कस्सद्विदिबन्धो विसेसाहिओ' ॥ २३१ ॥

केतियमेत्तेण ? अंतोकोडाकोडीए ।

जट्टिदिबन्धो विसेसाहिओ ॥ २३२ ॥

केतियमेत्तेण ? तिण्णिवाससहस्समेत्तेण ।

एदेण अट्टपदेण सव्वत्थोवा सादस्स चउट्टाणबन्धा जीवां ॥ २३३ ॥

दाहका अर्धं उत्कृष्ट स्थितिके योग्य संकेतः है । उस दाहकी कारणभूत स्थिति
कारणमें कारिका उपचार करनेसे दाहस्थिति कही जाती है । उसमें जलन्य दाहस्थितिके
लेकर उत्कृष्ट दाहस्थितिपर्यन्त जातिके द्वारा एकताको प्राप्त हुई इन सब स्थितियोंकी
दाहस्थिति संज्ञा है । वह पन्द्रह कोड़ाकोड़ि सागरोपमोंकी अपेक्षा विशेष अधिक है,
क्योंकि, वह कुछ कम तीन कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है ।

असाता वेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यके ऊपरके स्थान विशेष अधिक हैं ॥ २३० ॥

वे कितने मात्रसे अधिक हैं ? असाता वेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यके ऊपरकी
अधन्य दाहस्थितिके भीवेके अन्तः कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्रसे अधिक हैं ।

असाता वेदनीयका उत्कृष्ट स्थितिकन्ध विशेष अधिक है ॥ २३१ ॥

वह कितने मात्रसे अधिक है ? वह अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्रसे अधिक है ।

ज-स्थितिकन्ध विशेष अधिक है ॥ २३२ ॥

वह कितने मात्रसे अधिक है ? वह तीन हजार वर्ष मात्रसे अधिक है ।

इस अर्थपदसे सातावेदनीयके चतुःस्थानबन्धक जीव सबसे स्तोक हैं ॥ २३३ ॥

तदन्ता तावती स्थितिर्बद्धा ज्ञापयितिरिहोच्यते । सा चोत्कर्षतोऽन्तःसागरोपमकोटिकोटयूना सकलकर्मस्थिति-
प्रमाणा वेदितव्या । तथाहि—अन्तःसागरोपमकोटिकोटिप्रमाणं स्थितिकन्धे कृत्वा क्पातिसंकेतवन्निष्प
अकृतां स्थितिं वृत्तासीति, नान्यथा । क. प्र. (म. टी.) १, १००.

१ तन्वेऽपि परावर्तमानाद्यमप्रकृतीनामुत्कृष्टः स्थितिकन्धो विशेषाधिक इति २२ । क. प्र. (म. टी.)
१, १००. २ संक्षेपगुणा जीव कमसे एकद्व द्विहपदार्थः । अनुमानं तिहाणे सन्धुवरि विसेसयो अन्विता ।

एदमत्थमाहारं काऊण छण्णं जवाणं जीवाणमप्याबहुगं भणिस्सामो । तम्हि भण्णमाणे सादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा योवा । कुदो ? योवट्ठाणत्तादो ।

तिट्ठाणबंधा जीवा संखेज्जगुणा ॥ २३४ ॥

कुदो ? सादचउट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदीहिंतो तिट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदिविसेसाणं संखेज्जगुणतुवलंभादो ।

बिट्ठाणबंधा जीवा संखेज्जगुणा ॥ २३५ ॥

कुदो ? सादावेदणीयतिट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदिविसेसेहिंतो तस्सेव बिट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदिविसेसाणं संखेज्जगुणतुवलंभादो ।

असादस्स बिट्ठाणबंधा जीवा संखेज्जगुणां २३६ ॥

सादावेदणीयबिट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदिविसेसेहिंतो असादावेदणीयबिट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदिविसेसा संखेज्जगुणहीणा । कुदो ? अंतोकोडाकोडिऊणपण्णारससागरोवमकोडाकोडिमेत्तसादबिट्ठाणाणुभागबंधपाओग्गट्ठिदीहिंतो सागरोवमसदपुधत्तट्ठिदिविसेसाणं संखेज्जगुणहीणतुवलंभादो । तदो असादस्स बिट्ठाणबंधा जीवा संखेज्जगुणा ति ण

इस अर्थको आधार करके छह यवोंके जीवोंके अस्पृहबहुत्वको कहते हैं । उसका कथन करनेमें साता वेदनीयके चतुस्थानबन्धक जीव स्तोक हैं, क्योंकि, उनका अध्यान स्तोक है ।

त्रिस्थानबन्धक जीव उनसे संख्यातगुणे हैं ॥ २३४ ॥

इसका कारण यह है कि साता वेदनीयके चतुःस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितियोंकी अपेक्षा त्रिस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष संख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

द्विस्थानबन्धक जीव संख्यातगुणे हैं ॥ २३५ ॥

कारण कि सातावेदनीयके त्रिस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेषोंकी अपेक्षा उसके ही द्विस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष संख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

असाता वेदनीयके द्विस्थानबन्धक जीव संख्यातगुणे हैं ॥ २३६ ॥

शंका—साता वेदनीयके द्विस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेषोंसे असाता वेदनीयके त्रिस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष संख्यातगुणे हीन हैं, क्योंकि, अन्तःकोडाकोडिसे हीन पद्मह कोडाकोडि सागरोपम प्रमाण साता वेदनीयके त्रिस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितियोंकी अपेक्षा शतपृथक्त्व सागरोपम प्रमाण स्थितिविशेष संख्यातगुणे हीन पाये जाते हैं । अतएव असाताके द्विस्थानबन्धक जीव संख्यातगुणे हैं, यह कहना उचित नहीं है ?

क. प्र. १, १०१. सर्वस्तोकाः परावर्तमानश्चमप्रकृतीनां चतुःस्थानकरसम्बन्धका जीवाः तेभ्योऽपि त्रिस्थानकरसम्बन्धकाः संख्येयगुणाः । तेभ्योऽपि द्विस्थानकरसम्बन्धकाः संख्येयगुणाः (म. टी.)

१ तेभ्योऽपि परावर्तमानश्चमप्रकृतीनां द्विस्थानकरसम्बन्धकाः संख्येयगुणाः । तेभ्योऽपि चतुःस्थानकरसम्बन्धका संख्येयगुणाः । तेभ्योऽपि त्रिस्थानकरसम्बन्धका विरोधाधिकाः । क. प्र. (म. टी.) १, १०१. । २ ताम्रौ ' सादावेदणीयं विट्ठाणाणु — ' इति पाठः । ३ ताम्रौ ' विट्ठाणाणुबन्ध ' इति पाठः ।

जुअदि ? ण, सादावेदणीयबंघगद्धादो संखेज्जगुणाए असादावेदणीयबंघगद्धाए संचिदाणे संखेज्जगुणत्तेण विरोहाभावादो संखेज्जगुणत्तं जुअदे ।

चउट्टाणबंघा जीवा संखेज्जगुणा ॥ २३७ ॥

कुदो ? असादविहाणुभागबंघपाओग्गट्ठिदिविसेसेहिंतो तस्सेव चउट्टाणाणुभागबंघपाओग्गट्ठिदिविसेसाणं संखेज्जगुणत्तुवलंभादो ।

तिट्ठाणबंघा जीवा विसेसाहिया ॥ २३८ ॥

असादस्स चउट्टाणाणुभागबंघपाओग्गट्ठिदिविसेसेहिंतो तस्सेव तिट्ठाणाणुभागबंघपाओग्गट्ठिदिविसेसा संखेज्जगुणहीणा । तदो तिट्ठाणबंघजीवाणं विसेसाहियत्तं [ण] जुअदिति ? ण एम दोसो, सुक्कुक्कस्सपग्णिमेसु बहुट्ठिदिविसेसेसु वट्ठमाणजीवेहिंतो योवट्ठिदिविसेसेसु मज्झिमपरिणामेसु च वट्ठमाणजीवाणं बहुत्तं पडि विरोहाभावादो । ण च बहुत्तं किलेसविसेहीसु खल्लविल्लसंजोगो व्व तुट्ठीए समुप्पज्जमाणसु जीवबहुत्तं संभवदि, तद्दाणुवलंभादो । संखेज्जगुणा ण होति, विसेसाहिया चेव होति^१ ति कथं णव्वदे ? एदम्हादो

समाधान—नहीं, क्योंकि, सादावेदनीयके बन्धककालकी अपेक्षा संख्यातगुणे असादा वेदनीयके बन्धक कालमें संखित जीवोंके संख्यातगुणत्वसे कोई विरोध न होनेके कारण उनको संख्यातगुणा कहना उचित ही है ।

चतुःस्थानबन्धक जीव संख्यातगुणे हैं ॥ २३७ ॥

कारण कि असादा वेदनीयके त्रिस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेषोंकी अपेक्षा उसके ही चतुःस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष संख्यातगुणे पाये जाते हैं । त्रिस्थानबन्धक जीव विशेष अधिक हैं ॥ २३८ ॥

संका—असादा वेदनीयके चतुःस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेषोंकी अपेक्षा उसके ही त्रिस्थान अनुभागबन्धके योग्य स्थितिविशेष संख्यातगुणे हीन हैं । इस कारण त्रिस्थानबन्धक जीवोंको उनसे विशेष अधिक कहना उचित [नहीं] है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, शुक्ललेख्याके उक्त परिणामोंमें बहुत स्थितिविशेषोंमें वर्तमान जीवोंकी अपेक्षा स्तोत्र स्थितिविशेषों और मध्यम परिणामोंमें वर्तमान जीवोंके बहुत होनेमें कोई विरोध नहीं है । कस्व विल्लसंजोग (काल्वाट और विल्ल फलके संयोग) के समान वृद्धिसे अर्थात् यदा कदाचित् उत्पन्न होनेवाले बहुत संश्लेश व बहुत विशुद्धिमें जीवोंकी अधिकता सम्भव नहीं है, क्योंकि वैसा पाया नहीं जाता ।

संका—वे संख्यातगुणे नहीं हैं, विशेष अधिक ही हैं; यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

१ अत्रो ' कल्लविज्जसंतो व्व तुट्ठीए ', आ-काप्रसो. ' कल्लविज्जसंतो व्व तुट्ठीए ' इति पाठः ।
२ अ-आ-काप्रतिषु ' व्ववहुत्त ' इति पाठः । ३ ताप्रसौ ' वित्तेसाहिया होति ' इति पाठः ।

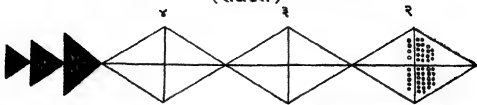
चेव सुत्तादो । विसंवादिसुत्तं' किण्ण जायदे ? ॥ १. विसंवादकारणसयलदोसुम्भुक्कधदधत्ति-
यण-विणिग्गयस्स सुत्तस्स विसंवादित्तैकरोहादो । एसो जीवसमुदाहारो वीइंदिय-तीइंदिय-
चउरिंदिय-असण्णिपचिंदियपज्जत्तापज्जत्तएसु सण्णिअपज्जत्तएसु च जोजेयव्वो । णव्वरि द्विदि-
विसेसो णायव्वो । बादर-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तेसु वि एवं चेव वत्तव्वो । णव्वरि एदेसु
सव्वेसु वि सादासादाणं बिट्ठाणजक्कज्जं चेव । तत्थ तिट्ठाण-चउट्ठाणाणुभागाणं बंधा-
भावादो । णव्वरि बादर-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तएसु एकेविकस्से द्विदीए अणता जीवा ।
पढमद्विदिबंधजीवप्पहुडि कमेण विसेसाहिया । केत्तिपमेत्तेण ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदि-
भागेण खंडिदमेत्तेण । पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतुण दुगुणवड्ठिदा दुगुणवड्ठिदा जाव
जक्कज्जं । तेण परं विसेसहीणा । सेसं जाणिदण वत्तव्वं । एसो जीवसमुदाहारो बहुमेदो
वि संतो संखेवेण एत्थ परुविदो । एवं जीवसमुदाहारो समतो ।

शंका—यह सूत्र विसंवाद् सहित क्यों नहीं है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जो भूतबलि भट्टारक विसंवादके कारणभूत समस्त
जीवोंसे रहित हैं उनके मुक्तसे निकले हुए सूत्रके विसंवादी होनेमें विरोध है ।

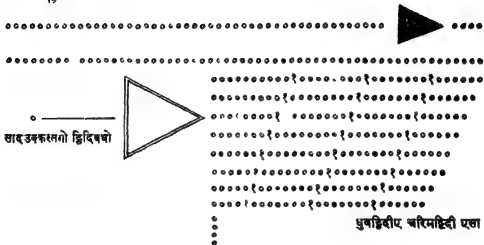
इस जीवसमुदाहारको त्रीन्द्रिय, श्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय
पर्याप्तक अपर्याप्तक तथा संज्ञी अपर्याप्तक जीवोंमें जोड़ना चाहिये । विशेष इतना है कि
उक्त जीवोंके स्थितिमेवको जानना चाहिये । बादर व सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक
जीवोंमें भी इसी प्रकार कहना चाहिये । विशेष इतना है कि इन सभी जीवोंमें साता व
असाताका द्विस्थानिक अनुभाग रूप यवमध्य ही होता है, क्योंकि, उनमें त्रिस्थानिक और
चतुःस्थानिक अनुभागोंके बन्धका अभाव है । विशेषता यह है कि बादर व सूक्ष्म
एकेन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंमें एक एक स्थितिमें अनन्त जीव होते हैं । वे क्रमशः
प्रथम स्थितिबन्धके जीवोंसे लेकर विशेष अधिक है । कितने मात्रसे वे अधिक हैं ?
उनको पचोपमके असंख्यातवें भागसे भाजित करनेपर जो एक भाग लब्ध हो उतने
मात्रसे भी अधिक हैं । पचोपमके असंख्यातवें भाग आकर यवमध्य तक दुगुणी दुगुणी
बृद्धिसे वृद्धिगत होते गये हैं । आगे वे विशेष हीन हैं । शेष कथन जानकर कना
चाहिये । बहुत मेदोसे संयुक्त होनेपर भी इस जीवसमुदाहारकी यहां संक्षेपसे
प्रकरणता की गई है । इस प्रकार जीवसमुदाहार समाप्त हुआ ।

१ अ-भा-काप्रतिपु ' विसंवादीसुत्तं', ताप्रवो ' विसंवादी सुत्त' इति पाठः । २ प्रतिपु ' विसंवादत्त-
इति पाठः । ३ ताप्रवो ' द्विदिविसेसो वत्तव्वो' इत्येतावानर्थ पाठस्तुटितोऽस्ति ।



साद्वण्णया आवावा
उक्कसावावा
साद्वण्णया गो
द्विदिबवो

जसो उक्कसं गच्छदि सा द्विदी एसा



साद्वण्णया गो
द्विदिबवो

द्विदिबवो
जसो उक्कसं गच्छदि सा द्विदी एसा



जहणिया आवावा
उक्कसावावा

असाद्वण्णया गो
द्विदिबवो



जसो उक्कसं दाह
सगच्छदि सा द्विदी एसा

जसो उक्कसं दाह
सगच्छदि सा द्विदी एसा



ज. १२-४४

दाहद्विदी

असाद्वण्णया गो
द्विदिबवो

**पयडिसमुदाहारे' ति तत्थ इमाणि दुवे' अणियोगद्वाराणि
पमाणानुगमो अप्पाबहुए ति' ॥ २३९ ॥**

परूवणाए सह तिण्णिअणियोगद्वाराणि किण्ण परूविदाणि ? ण, एदेसु च्चैव
परूवणाए अंतम्भूदत्तादो । ण च परूवणाए विणा पमाणादीणं संभवो अत्थि,
विरोहादो । तेण एत्थ ताव परूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा—अत्थि णाणावरणादीणं
पयडीणं द्विदिबंध्यज्जवसाणट्ठाणाणि । परूवणा गदा ।

**पमाणानुगमे णाणावरणीयस्स असंखेज्जा लोगा द्विदिबंध्यज्ज-
वसाणट्ठाणाणि ॥ २४० ॥**

णाणावरणीयस्स द्विदिबंध्यकारणअज्जवसाणट्ठाणाणि सव्वाणि एगट्ठं कादण एसा
परूवणा परूविदा । ठिदिं पडि अज्जवसाणट्ठाणाणमेसा पमाणपरूवणा ण होदि, उवरि
द्विदिसमुदाहारे ठिदिं पडि अज्जवसाणपमाणस्स परूविज्जमाणत्तादो ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ २४१ ॥

जहा णाणावरणीयस्स द्विदिबंध्यज्जवसाणट्ठाणाणमव्वोगाढेण पमाणपरूवणा कदा
अव प्रकृतिसमुदाहारका अधिकार है । उसमें दो अनुयोगद्वार हैं—प्रमाणानुगम
और अल्पबहुत्व ॥ २३९ ॥

शंका—प्ररूपणाके साथ यहां तीन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?
समाधान—नहीं, क्योंकि, इनमें ही प्ररूपणाका अन्तर्भाव हो जाता है । कारण कि
प्ररूपणाके बिना प्रमाणादिकोंकी सम्भावना ही नहीं है, क्योंकि, उसमें विरोध है ।

इसी कारण यहां पहिले प्ररूपणाको कहते हैं । वह इस प्रकार है—ज्ञानावरणादिक
प्रकृतियोंके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हैं । प्ररूपणा समाप्त हुई ।

प्रमाणानुगमके अनुसार ज्ञानावरणीयके असंख्यात लोक प्रमाण स्थितिबन्धाध्यव-
सानस्थान हैं ॥ २४० ॥

ज्ञानावरणीयके स्थितिबन्धमें कारणभूत सब अध्यवसानस्थानोंको इकट्ठा करके यह
प्रमाणप्ररूपणा कही गई है । प्रत्येक स्थितिके अध्यवसानस्थानोंकी यह प्रमाणप्ररूपणा
नहीं है, क्योंकि, आगे स्थितिसमुदाहारमें प्रत्येक स्थितिके आश्रयसे अध्यवसानस्थानोंके
प्रमाणकी प्ररूपणा की जानेवाली है ।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी प्रमाणप्ररूपणा है ॥ २४१ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी अव्वोगाढ स्वरूपसे

१ आप्रती 'समुदाहारे' इति पाठः । २ अ-आप्रत्योः 'इमा दुवो' इति पाठः । ३ संप्रति
प्रकृतिसमुदाहार उच्यते । तत्र च द्वे अनुयोगद्वारे । तद्यथा—प्रमाणानुगमः अल्पबहुत्वं च । तत्र प्रमाणानु-
गमे ज्ञानावरणीयस्स सर्वेषु स्थितिबन्धेषु किन्त्यध्यवसानस्थानानि ? उच्यते—असंख्येयलोकांशप्रदेश-
प्रमाणानि । एवं सर्वकर्मणामपि ब्रह्मम् । क. प्र. (म. टी.) १, ८८ ।

तथा सेससत्तणं कम्माणं पमाणपरूवणा कायव्वा । एवं पमाणानुगमे त्ति समसमणियोगदारं ।

**अप्पाबहुए त्ति सब्वत्थोवा आउअस्स द्विदिबधञ्जवसाण-
ट्टाणाणि ॥ २४२ ॥**

कुदो ? चटुण्णमाउआणं सब्वोदयविषयपमाहणादो । कसायउदयट्टाणेसु उच्चिदुणं यहिदज्जवसाणट्टाणाणमाउअबधपाओग्गाणं किण्ण [परूवणा] कीरदे ? ण, सगट्ठिदिबध-
ट्टाणहेदुभ्रदसोदयट्टाणाणं परूवणाए अण्णपयडिउदयट्टाणेहि पओजणाभावादो ।

**णामा-गोदाणं द्विदिबधञ्जवसाणट्टाणाणि दो वि तुल्लणि
असंखेजगुणाणि ॥ २४३ ॥**

कुदो ? सामावियादो । णामा-गोदाणमुदयस्सेव आउओदयस्स संसारावत्थाए
सब्वत्थ संभवे संते द्विदिबधञ्जवसाणट्टाणाणं थोवत्तं कत्तो णव्वदे ? ठिदिबधट्टाणाणं थोव-

प्रमाणप्ररूपणा की गई है उसी प्रकार जोष सात कमोंकी प्रमाणप्ररूपणा भी करना चाहिये ।
इस प्रकार प्रमाणानुगम अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्व अनुयोगद्वाराके अनुसार आयुर्कर्मके स्थितिवन्धाध्यवसान सबसे
स्तोक हैं ॥ २४२ ॥

कारण कि चारों आयुओंके सब उदयविकल्पोंका यहां ग्रहण किया गया है ।

शंका—कवयोदयस्थानोंमेंसे चुनकर ग्रहण किये गये आयुबन्धके योग्य अव्यव-
सानस्थानोंकी प्ररूपणा यहां क्यों नहीं की जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि अपने स्थितिवन्धस्थानोंके हेतुभूत अपने उदयस्थानोंकी
प्ररूपणामें दूसरी प्रकृतियोंके उदयस्थानोंका कोई प्रयोजन नहीं है ।

नाम व गोत्रके स्थितिवन्धस्थान दोनोंही तुल्य असंख्यातगुणे हैं ॥ २४३ ॥

कारण कि ऐसा स्वभावसे है ।

शंका—जिस प्रकार संसार अवस्थामें नाम व गोत्रका उदय सर्वत्र सम्भव है, उसी
प्रकार आयुके उदयकी भी सर्वत्र सम्भावना होनेपर उसके स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंकी
स्तोकता कहाँसे जानी जाती है ?

१ ठिइदीहयाए त्ति—स्थितिदीर्घतया क्रमशः क्रमेणाध्यवसायस्थानान्यसंख्येयगुणानि वक्कम्यानि ।
यस्य यतः क्रमेण दीर्घा स्थितिस्तस्य ततः क्रमेणाध्यवसायस्थानान्यसंख्येयगुणानि वक्कम्यानीत्यर्थः । तथाहि
—सर्वैस्तोकाज्जयायुषः स्थितिवन्धाध्यवसायस्थानानि । क. प्र. (म. टी.) १, ८१. । २ प्रतिपु ' उच्चिदुण '
इति पाठः । ३ तेभ्योऽपि नाम-गोत्रयोस्तंख्येयगुणानि । नन्वायुषः स्थितिस्थानेषु यथोत्तरमसंख्येयगुणा वृद्धिः,
नाम-गोत्रयोस्तु विशेषाधिका, तत्कथमायुरपेक्षया नाम-गोत्रयोस्तंख्येयगुणानि भवन्ति ? उच्यते—आयुषो
वधन्परिधतावध्यवसायस्थानान्यतीव स्तोकानि, नाम-गोत्रयोः पुनर्बध्न्यात्वा स्थितौ अतिप्रभूतानि, स्तोकानि
आयुषः स्थितिस्थानानि, नाम-गोत्रयोस्तुप्रतिप्रभूतानि, ततो न कश्चिदोषः । क. प्र. (म. टी.) १, ८१. ।

सादो । द्विदिबन्धद्वाणाणं पद्धान्ते इच्छिज्जमाणे गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो होसि । होडु णाम, असंखेज्जलोमेत्तो चेवेत्ति गुणगारे अम्हाणं पमाणणियमाभावादो । णामा-गोदज्जवसाणद्वाणाणं कथं तुलत्तं ? ण, द्विदि बंधंताणं समाणत्तणेण तत्तुल्लतावगमादो ।

णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वेयणीय-अंतराहयाणं द्विदिबन्ध-ज्जवसाणद्वाणाणि चत्तारि वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २४४ ॥

णामा-गोदेहितो चत्तारि वि कम्माणि मिच्छतांसजम-कसायपच्चएहि सरिसाणि । तेष णामा-गोदाणं अज्जवसाणेहितो चट्ठणं कम्माणं अज्जवसाणद्वाणाणि असंखेज्ज-गुणाणि ति ण घडे । णामा-गोदाणं द्विदिबन्धद्वाणेहितो चट्ठणं कम्माणं द्विदिबन्धद्वाणाणि विसेसाहियाणि ति असंखेज्जगुणत्तं ण जुज्जे । हेट्ठिमवेतिभागद्विदिबन्धद्वाणपाओगकसा-एहितो उवरमतिभागद्विदिबन्धद्वाणपाओगकसाउदयद्वाणाणं असमाणाणमणुवल्लेणे

समाधान—चूंकि उसके स्थितिबन्धस्थान स्तोक हैं, अतः इसीसे उसके स्थितिबन्धव्यवसानस्थानोंकी स्तोकताका भी परिज्ञान हो जाता है ।

स्थितिबन्धस्थानोंकी प्रधानताके अभीष्ट होनेपर गुणकार पत्त्योपमका असंख्यातबां भाग होता है ।

शंका—यदि पत्त्योपमक असंख्यातबां भाग गुणकार है तो, हो, क्योंकि असंख्यात लोक मात्र ही गुणकार होता है, ऐसा हमारे पास उसके प्रमाणका कोई नियम नहीं है ।

शंका—नाम व गोत्रके स्थितिबन्धस्थानोंके परस्पर समानता कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि स्थितिबन्धस्थानोंकी समानतासे उनकी समानता भी निश्चित है ।

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय और अन्तराय, इन चारों ही कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान तुल्य व असंख्यातगुणे हैं ॥ २४४ ॥

शंका—चारों ही कर्म मिथ्यात्व, असंयम और कषाय रूप प्रत्ययोंकी अपेक्षा चूंकि नाम-गोत्रके समान हैं इसी कारण नाम-गोत्रके अव्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा चारों कर्मोंके अव्यवसानस्थानोंकी असंख्यातगुणा बतलाना संगत नहीं है । दूसरे, नाम-गोत्रके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा चार कर्मोंके स्थितिबन्धस्थान चूंकि विशेष अधिक हैं, इसलिये भी उनके स्थितिबन्धव्यवसानस्थानोंको असंख्यातगुणा बतलाना उचित नहीं है । इसके अतिरिक्त चूंकि नीचेके दो त्रिभाग मात्र स्थितिबन्धस्थानोंके योग्य कषायो-व्यवस्थानोंकी अपेक्षा ऊपरके एक त्रिभाग मात्र स्थितिबन्धस्थानोंके योग्य कषायोदय-स्थानोंके असमान न पाये जानेसे भी उनका असंख्यातगुणत्व प्रकट नहीं होता ?

१ नाम-गोत्रयोः सकस्थितिबन्धव्यवसायस्थानेभ्यो ज्ञानावरणीयदर्शनावरणीय-वेदनीयान्तरायानां स्थितिबन्धव्यवसायस्थानान्वसंख्येयगुणानि । कथमिति चेदुच्यते—इह पत्त्योपमासंख्येयभागमात्रासु स्थिति-भक्तिकान्तासु द्विगुणद्विषयकत्वा । तथा च तत्वेकैकस्यापि पत्त्योपमस्यास्तेऽसंख्येयगुणानि लभ्यन्ते, किं पुनरसंख्येयगुणोपमकोटीकोच्यन्ते इति । क. प्र. (म. टी.) १, ८९. ।

असंखेज्जगुणत्ताणुववत्तीदो ? ण एस दोसो, णामा-गोदाणमुदयट्ठाणेहिंतो चदुण्णं कम्माणं उदयट्ठाणबहुतेण असंखेज्जगुणत्ताविरोहादो । कथं चदुण्णं कम्माणं पयडिअज्जवसाणाणं अण्णोण्णं समाणत्तं ? ण, सोदयादिवियपेहि तेसिं भेदाभावादो ।

मोहणीयस्स द्विदिबंध्यवसाणट्ठाणाणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥ २४५ ॥

को गुणगारो ? पल्लिवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? चदुण्णं कम्माणमुदयट्ठाणेहिंतो मोहणीयस्स उदयट्ठाणाणमसंखेज्जगुणत्तादो । एवं पगडिसमुदाहारो समतो ।

ठिदिसमुदाहारे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्वाराणि पगणणा अणुकट्ठी तिव्व-मंददा तिं ॥ २४६ ॥

तत्थ पगणणा णाम इमिस्से इमिस्से द्विदिए बंधकारणभूदाणि द्विदिबंध्यवसाण-ट्ठाणाणि एत्थियाणि एत्थियाणि होति त्ति द्विदिबंध्यवसाणट्ठाणाणं पमाणं परूवेदि । तत्थ अणुकट्ठी णाम द्विदिं पडिं द्विदिबंध्यवसाणट्ठाणाणं समाणत्तमसमाणत्तं च परूवेदि । तिव्व-मंददा णाम तेसिं जहण्णुक्कस्सपरिणामाणमविभागपडिच्छेदानमप्याबहुगं परूवेदि ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नाम-गोत्रके उदयस्थानोंकी अपेक्षा चार कमोंके उदयस्थानोंके बहुत होनेसे उनके असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका—चार कमोंके प्रकृतिअध्यवसानस्थानोंके परस्पर समानता कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि स्वोद्भाविक विकल्पोंकी अपेक्षा उनमें कोई भेद नहीं है ।

मोहनीयके स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २४५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पस्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, चार कमोंके उदयस्थानोंकी अपेक्षा मोहनीयके उदयस्थान असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार प्रकृतिसमुद्धार समाप्त हुआ ।

अब स्थितिसमुदाहारका अधिकार है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं—प्रगणना, अनुकृष्टि और तीव्रमन्दता ॥ २४६ ॥

इनमें प्रगणना नामक अनुयोगद्वार अमुक अमुक स्थितिके बन्धके कारणभूत स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान इतने इतने होते हैं, इस प्रकार स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करता है । अनुकृष्टि अनुयोगद्वार प्रत्येक स्थितिके स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंकी समानता व असमानताको बतलाता है । तीव्रमन्दता अनुयोगद्वार उनके अधम्य व उत्कृष्ट परिणामोंके अधिभाग प्रतिच्छेदोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करता है ।

१ तेषोऽपि कथायमोहनीयस्य स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानान्यसंख्येयगुणानि । तेषोऽपि दर्शनमोहनीयस्य स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानान्यसंख्येयगुणानि । क. प्र. (म. टी.) १, ८९. २ तत्र स्थितिसमुदाहारेऽपि भीष्पुन्ययोगद्वाराणि । तद्यथा—प्रगणना १, अनुकृष्टिः २, तीव्रमन्दता ३ च । तत्र प्रगणना प्ररूपणार्थमाह—क. प्र. (म. टी.) १, ८७ गाथाया उत्थानिका । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-ताप्रतिष्ठ 'पवडि' इति पाठः ।

तिणि षेव अणियोगद्वाराणि किमदं परुविदाणि ? ण, चउत्थादिअणियोगद्वाराणं संभवाभावादो ।

प्रगणणाए णाणावरणीयस्स जहण्णियाए द्विदीए द्विदिबंधज्जवसाणट्टाणाणि असंखेज्जा लोगा ॥ २४७ ॥

जहण्णट्टिदी णाम धुवट्टिदी, ततो हेट्ठा द्विदिबंधाभावादो । तत्थ द्विदिबंधज्जवसाणट्टाणाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि अणंतभागवट्ठि-असंखेज्जभागवट्ठि-संखेज्जभागवट्ठि-संखेज्जगुणवट्ठि-असंखेज्जगुणवट्ठि-अणंतगुणवट्ठिहि णिप्पणअसंखेज्जलोगमेत्तछट्टाणाणि होति । कथमेक्कस्स जहण्णट्टिदिबंधज्जवसाणट्टाणस्स अणंतो सव्वजीवरासी भागहारो कीरदे ? ण, जहण्णट्टिदिबंधज्जवसाणट्टाणे वि असंतसव्वजीवरासिमेत्तअविभागपट्टिच्छेदुवलंभादो ।

विदियाए द्विदीए द्विदिबंधज्जवसाणट्टाणाणि असंखेज्जा लोगा ॥ २४८ ॥

विदियाए द्विदीए ति वुत्ते समउत्तरमवट्टिदी वेत्तव्वा । कथं तिस्से विदियत्तं ? ण, शंका—तीन ही अनुयोगद्वार किस लिये कहे हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि चतुर्थादिक अन्य अनुयोगद्वारोंकी सम्भावनाका अभाव है ।

प्रगणना अनुयोगद्वारका अधिकार है । ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यात लोक प्रमाण हैं ॥ २४७ ॥

जघन्य स्थितिका अर्थ ध्रुवस्थिति है, क्योंकि, उसके नीचे स्थितिबन्धका अभाव है । उसमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यात लोक प्रमाण हैं । वे अनन्तभागवृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि और अनन्तगुणवृद्धि, इन छह वृद्धियोंसे उत्पन्न असंख्यात लोक मात्र छह स्थानोंसे संयुक्त होते हैं ।

शंका—अनन्त सर्व जीव राशिको एक जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानका भागहार कैसे किया जा रहा है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि एक जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानमें भी अनन्त सब जीवराशि प्रमाण अविभागप्रतिच्छेद पाये जाते हैं ।

द्वितीय स्थितिमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यात लोक प्रमाण हैं ॥ २४८ ॥

‘विदियाए द्विदीए’ ऐसा कहनेपर एक समय अधिक अवस्थितिका ग्रहण करना चाहिये ।

शंका—इसको द्वितीय स्थिति कहना कैसे उचित है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ध्रुवस्थितिसे एक समय अधिक स्थिति पृथक् पायी

१ ठिइबंधे ठितिबंधे अज्जवसाणणखेज्जया लोगा । इस्सा वे (वि) सेत्तुट्ठी आऊणमसंखगुणवट्ठी ॥

धुवट्टिदीदो समउत्तरट्टिदीए पुवतुवलंभादो । तिस्से ट्टिदीए बंधपाओग्गज्जवसाणट्टाणाणि असंखेज्जलोगमेत्तछट्टाणाणि होति ति भणिदं होदि ।

तदियाए ट्टिदीए द्विदिबन्धज्जवसाणट्टाणाणि असंखेज्जा लोगा ॥ २४९ ॥

अणंतभागवट्टीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तद्वाणं गंतुण सइमसंखेज्जभागवट्टी होदि । पुणो वि तेत्तियमेत्तं चेव अणंतभागवट्टीए अट्टाणं गंतुण बिदियाअसंखेज्जभागवट्टी होदि । एवं कंदयमेत्तअसंखेज्जभागवट्टीओ कंदयवग्ग-कंदयमेत्तअणंतभागवट्टीयो च गंतुण सइ संखेज्जभागवट्टी होदि । पुणो वि एत्तियमेत्तं चेव अट्टाणं पुव्वविहाणेण गंतुण बिदिया संखेज्जभागवट्टी होदि । एवमेदेण विहाणेण कंदयमेत्तसंखेज्जभागवट्टीसु गदासु समयाविरोहेण सइ संखेज्जगुणवट्टी होदि । एदेण कमेण कंदयमेत्तसंखेज्जगुणवट्टीसु गदासु सइमणंतगुणवट्टी होदि । पुणो समयाविरोहेण कंदयमेत्तअसंखेज्जगुणवट्टीसु गदासु सइमणंतगुणवट्टी होदि । एदं सव्वं पि एगं छट्टाणं ति भण्णदि । एरिसाणि असंखेज्जदिलोगमेत्तछट्टाणाणि धेतूण तदियाए ट्टिदीए द्विदिबन्धज्जवसाणट्टाणाणि होति ।

एवमसंखेज्जा लोगा असंखेज्जा लोगा जाव उक्कस्सट्टिदि ति ॥ २५० ॥

जाती है ।

उक्त स्थितिके बन्धके योग्य अण्ववसानस्थान असंख्यात लोक मात्र छह स्थानोंसे संयुक्त होते हैं, यह अभिप्राय है ।

तृतीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यात लोक प्रमाण हैं ॥ २४९ ॥

अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र अनन्तभागवृद्धिके स्थानोंके धीतनेपर एक बार असंख्यात भागवृद्धि होती है । फिरसे भी उतना ही अनन्तभागवृद्धिका अध्वान जाकर द्वितीय असंख्यातभागवृद्धि होती है । इस प्रकारसे काण्डक प्रमाण असंख्यातभागवृद्धियों, काण्डक वर्ग और काण्डक प्रमाण अनन्तभागवृद्धियोंके धीतनेपर एक बार संख्यातभागवृद्धि होती है । फिरसे भी पूर्वोक्त रीतिसे इतने मात्र स्थान जाकर द्वितीय संख्यातभागवृद्धि होती है । इस प्रकार इस रीतिसे काण्डक प्रमाण संख्यातभागवृद्धियोंके धीतनेपर आगमाविरोधसे एक बार संख्यातगुणवृद्धि होती है । इस क्रमसे काण्डक प्रमाण संख्यातगुणवृद्धियोंके धीत जानेपर एक बार असंख्यातगुणवृद्धि होती है । पश्चात् आगमाविरोधसे काण्डक प्रमाण असंख्यातगुणवृद्धियोंके धीतनेपर एक बार अनन्तगुणवृद्धि होती है । यह सभी एक वदस्थान कहा जाता है । ऐसे असंख्यात लोक प्रमाण वदस्थान ग्रहण करके तृतीय स्थितिमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते हैं ।

इस प्रकार उक्त स्थिति तक असंख्यात लोक असंख्यात लोक प्रमाण स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते हैं ॥ २५० ॥

१ प्रतिशु 'कंदयवग्गो कंदय' इति पाठः ।

जहा पुव्विलीणं तिण्णं द्विदीणं अज्झवसाणट्ठाणाणि पमाणेण असंखेज्जलोगमेत्ताणि तथा उवरिमसव्वद्विदीणं पि द्विदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणं पमाणं होदि त्ति जाणावणट्ठमेवमिदि णिहेसो कदो ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ २५१ ॥

जहा णाणावरणीयस्स द्विदि पडि' द्विदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणं पमाणपरूवणा कदा तथा सेससत्तण्णं पि कम्माणं परूवेदव्वं, असंखेज्जलोगपमाणत्तं पडि भेदाभावादो । एवं पमाणपरूवणा गदा ।

एत्थ संतपरूवणा किण्ण परूविदा ? ण, तिस्से पमाणंतम्भावादो । कदो ? पमाणेण विणा संताणुववत्तीदो ।

तेसिं दुविधा सेडिपरूवणा अणंतरोवणिधा परंपरोव- णिधा ॥ २५२ ॥

जत्थ णिरंतं धोवबहुत्तपरिक्खा कीरदे सा अणंतरोवणिधा । जत्थ दुगुण-चटुगुणा-दिपरिक्खा कीरदि सा परंपरोवणिधा । एवं सेडिपरूवणा दुविहा चेव, तदियादिपयारा-

जिस प्रकार पूर्वोक्त तीन स्थितियोंके अध्यवसानस्थान प्रमाणसे असंख्यात लोक मात्र हैं; उसी प्रकार आगेकी सब स्थितियोंके भी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका प्रमाण होता है; यह बतलानेके लिये सूत्रमें 'एवं' पदका निर्देश किया गया है ।

इसी प्रकार सात कर्मोंके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ २५१ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयकी प्रत्येक स्थितिसम्बन्धी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार दोष सात कर्मोंकी भी स्थितियोंके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उनमें असंख्यात लोक प्रमाणकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है । इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

शंका—यहां सत्प्ररूपणाकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि उसका प्रमाण अनुयोगद्वारमें अन्तर्भाव हो जाता है, कारण कि प्रमाणके बिना सत्त्व घटित ही नहीं होता है ।

उक्त स्थानोंकी श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा ॥ २५२ ॥

जहांपर निरन्तर अल्पबहुत्वकी परीक्षा की जाती है वह अनन्तरोपनिधा कही जाती है । जहांपर दुगुणत्व और चतुर्गुणत्व आदिकी परीक्षा की जाती है वह परम्परोपनिधा कहलाती है । इस प्रकार श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार की है, क्योंकि, और तृतीयादि प्रकारोंकी

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-का-प्रतिपु 'णाणावरणीयस्स पडि', ताप्रती 'णाणावरणीयस्स पयडि' इति पाठः ।

संभवादो । एत्थ संदिट्ठी भालज्जणुद्धिविष्कारणद्धं ठ्वेदव्वा—१६।२०।२४।२८।
३२।४०।४८।५६।६४।८०।९६।११२।१२८।१६०।१९२।
२२४।२५६।

अणंतरोवणिधाए णाणावरणीयस्स जहण्णियाए द्विदीए
द्विदिबंज्जवसाणट्टाणाणि थोवाणि ॥ २५३ ॥

केहितो थोवाणि ति वुत्ते उवरिमद्विदिबंज्जवसाणट्टाणेहितो । कवमेदं णव्वे ?
देह्हा द्विदिबंज्जट्टाणाभावेण द्विदिबंज्जवसाणट्टाणाभावादो ।

विदियाए द्विदीए द्विदिबंज्जवसाणट्टाणाणि विसेसा-
हियाणि ॥ २५४ ॥

केतियमेत्तेण ? असंखेज्जलोगमेत्तेण । जहण्णद्विदिअज्जवसाणट्टाणाणं विसेसागमणद्धं
को भागहारो ? पल्लिवमस्स असंखेज्जदिभागो । एगगुणहाणिअट्टाणमिदि वुत्तं होदि ।

सम्भावना नहीं है । बड़ापर अज्ञानी जनोंकी बुद्धिको विकसित करनेके लिये संचयिकी
की स्थापना करना चाहिये (मूलमें देखिये)

अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यव-
सानस्थान स्तोक हैं ॥ २५३ ॥

शंका—किनकी अपेक्षा स्तोक हैं ?

समाधान—इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि वे ऊपरके स्थितिबन्धाध्यवसान-
स्थानोंकी अपेक्षा स्तोक हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि नीचे स्थितिबन्धस्थानोंके न होनेसे स्थितिबन्धाध्यवसान-
स्थानोंका अभाव है, अतः इसीसे ज्ञात होता है कि वे ऊपरके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी
अपेक्षा स्तोक हैं ।

द्वितीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं ॥ २५४ ॥

कितने मात्रसे अधिक हैं ? असंख्यात लोक मात्रसे वे अधिक हैं ।

शंका—जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंके विशेषको ज्ञानेके लिये भागहारा
क्या है ?

१ अत्र देवा प्रकृपणा । तद्यथा—अनन्तरोपनिधया परंपरोपनिधया च तत्र । अनन्तरोपनिधया
प्रमाणमाह—इस्सा वे (वि) सेसवद्धी आयुर्वैर्जानां कर्मेणा इत्थाज्जघन्यात् स्थितिक्त्वात् परतो
द्वितीयादिषु स्थितिस्थानकत्वेषु विशेषबुद्धिः विशेषाधिका बुद्धिरवच्छेया । तद्यथा—ज्ञानावरणीयस्य जघन्य-
स्थितौ तद्वन्धहेतुभूता अध्यवसाया नानाबीवापेक्षयाऽऽवन्त्येवलोकाकाशप्रदेशप्रमाणाः । ते चान्धापेक्षया
सर्वस्तोका । क. प्र. (म. टी.) १, ८७. २ ततो द्वितीयस्थितौ विशेषाधिकाः । ततोऽपि तृतीयस्थितौ
विशेषाधिकाः । एवं तावद्वाच्यं यावदुत्कृष्टा स्थितिः । एवं सर्वेष्वपि कर्मसु वाच्यम् । क. प्र. (म. टी.) १, ८७. ।

संदिद्धीए एत्थ गुणहाणिपमार्णं चत्तारि ४ । एदं विरलेदुण जहण्णट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि सोलस समखंडं कादण दिण्णे विरलणस्त्वं पडि एगेगपक्खेवपमार्णं पावदि । एत्थ एगपक्खेवं वेत्तुण जहण्णट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणेसु पक्खित्ते विदियट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि होति ति वेत्तव्वं ।

तदियाए [ट्टिदीए] ट्टिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि विसेसा-
हियाणि ॥ २५५ ॥

केतियमेतेण ? एगपक्खेवमेतेण । एत्थ जाव पढमगुणहाणिचरिमसमओ ति अव-
ट्ठिदो पक्खेवो । कुदो ? वट्ठिदएगेगपक्खेवाणं ट्टिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणमेगेगस्वादियगुण-
हाणिभागहास्वलमादो ।

एवं विसेसाहियाणि विसेसाहियाणि जाव उक्कस्सिया
ट्टिदि ति ॥ २५६ ॥

एवं सव्वट्टिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि । अणंतराणंतरेण विसेसाहियकमेणं गच्छंति जाव
उक्कस्सट्टिदिबंधज्झवसाणट्ठाणे ति । नवरि गुणहाणिं पडि पक्खेवो दुगुण-दुगुणो होदि ।
कुदो ? दुगुण-दुगुणकमेण ट्टिदिगुणहाणिचरिमट्टिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणमवट्टिदएगगुणहाणि-
भागहारदसणादो ।

समाधान—भागहार एव्योपमका असंबध्यातवां भाग है । अभिप्राय यह कि
एकगुणहानिमपक्षान भागहार है ।

यहां संक्षिप्तमें गुणहानिका प्रमाण चार (४) है । इसका विरलन करके जघन्य
स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके प्रमाण सोलहको समकण्ठ करके देनेपर एक एक
विरलनरूपके ऊपर एक प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां एक प्रक्षेपको ग्रहण करके
जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंमें मिलातेपर द्वितीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसान-
स्थानोंका प्रमाण होता है, ऐसा जानना चाहिये ।

तृतीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं ॥ २५५ ॥

कितने मात्रसे वे विशेष अधिक हैं ? एक प्रक्षेपके प्रमाणसे वे विशेष अधिक हैं ।
यहां प्रथम गुणहानिके अन्तिम समय तक अवस्थित प्रक्षेप है, क्योंकि एक प्रक्षेपसे
बुद्धिको प्राप्त हुए स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका उत्तरोत्तर एक एक अंकसे अधिक
गुणहाणि भागहार पाया जाता है ।

इस प्रकार वे उत्कृष्ट स्थितिक विशेष अधिक विशेष अधिक हैं ॥ २५६ ॥

इस प्रकार सब स्थितिमेंके अव्यवसानस्थान अनन्तर-अनन्तर क्रमसे उत्कृष्ट
स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंतक उत्तरोत्तर विशेष अधिक होते गये हैं । विशेष
इतना है कि प्रक्षेप प्रत्येक गुणहानिके अनुसार बूना बूना होता गया है । कारण कि बूने
बूने क्रमसे स्थित गुणहानियोंमें अन्तिम स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका अवस्थित
एक गुणहाणि भागहार देखा जाता है ।

१ ताप्ती 'अपट्ठिदो । कुदो' इति पाठः ।

एवं छण कम्माणं ॥ २५७ ॥

जहा पाणावरणीयस्स अणंतरोपनिधा परुविदा तहा छणं कम्माणं आउववज्जाणं परुवेदव्वा, विसेसादियत्तं पडि भेदामावादो ।

आउअस्स जहणियाए ट्टिदीए ट्टिदिबन्धवसाणट्टाणाणि थोवाणि ॥ २५८ ॥

कुदो ? आउअस्स असंखेज्जदिलोगमेतट्टिदिबन्धवसाणट्टाणाणमसंखेज्जदिभागमेत्ताणं चेव जहणट्टिदिपाओग्गतादो ।

विदियाए ट्टिदीए ट्टिदिबन्धवसाणट्टाणाणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥ २५९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? जहणट्टिदिबन्धकारणादो समउत्तरट्टिदिबन्धकारणाणं बहुतुवलंभादो ।

तदियाए ट्टिदीए ट्टिदिबन्धवसाणट्टाणाणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥ २६० ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं पुवं व वत्तवं ।

इसी प्रकार छह कर्मोंकी अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ २५७ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मकी अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार आयुको छोड़कर शेष छह कर्मोंकी अनन्तरोपनिधाकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें विशेष अधिकताकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

आयु कर्मकी जघन्य स्थितिमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान स्तोक हैं ॥ २५८ ॥

इसका कारण यह है कि आयु कर्मके अस्तंश्यात लोक प्रमाण स्थितिबन्धाध्यवसान-स्थानोंमें उनके अस्तंश्यातवर्ष भाग मात्र ही जघन्य स्थितिके योग्य हैं ।

द्वितीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ २५९ ॥

शुणकार क्या है ? शुणकार आबलिका अस्तंश्यातवां भाग है, क्योंकि, जघन्य स्थितिबन्धके कारणोंकी अपेक्षा एक एक समय अधिक स्थितिबन्धके कारण बहुत पाये जाते हैं ।

तृतीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ २६० ॥

शुणकार क्या है ? शुणकार आबलिका अस्तंश्यातवां भाग है । इसके कारणका कथन पहिलेके ही समान करना चाहिये ।

१ आऊणमसंशुणवद्दी । आयुवां जघन्यस्थितेरारम्भ प्रतिस्थितिबन्धमसंख्येयगुणवद्विबन्धना । तथा—आयुषो जघन्यस्थितौ तद्वत्त्वहेतुभूता अभ्यवसाया असंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणाः । ते च सर्वस्तोकाः । ततो द्वितीयस्थितौ असंख्येयगुणाः । ततोऽपि तृतीयस्थितावसंख्येयगुणाः । एव तावद्वाच्यं वाच्यमुक्त्या स्थितिः । क. प्र. (म. मी.) १, ८७ ।

एवमसंस्वेज्जगुणाणि असंस्वेज्जगुणाणि जाव उक्कसिया
ट्ठिदि ति ॥ २६१ ॥

एवं 'ठिदिं पडि' ट्ठिदिं पडि आवलियाए असंस्वेज्जदिभागगुणगारेण सव्वट्ठिदिबंध-
ज्जस्सणट्ठाणाणि णेदव्वाणि जाव उक्कस्सट्ठिदि ति । एवमणंतरोवणिधा समत्ता ।

परंपरोवणिधाए णाणावरणीयस्स जहणियाए ट्ठिदीए
ट्ठिदिबंधज्जवसाणट्ठाणेहिंतो तदो पल्लिदोवमस्स असंस्वेज्जदिभागं
गंतुण दुगुणवड्ढिदा ॥ २६२ ॥

कुदो ? विरलणमेत्तपक्खेवेसु जहण्णट्ठिदिबंधज्जवसाणट्ठाणेषु वड्ढिदेषु दुगुणज्जवसाण-
ट्ठाणसमुप्पत्तीदो ।

एवं दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि
ति ॥ २६३ ॥

एवमवट्ठिदमेत्तियमद्धानं गंतुण सव्वदुगुणवड्ढीओ उप्पज्झति ति वत्तवं ।

एवं ट्ठिदिबंधज्जवसाणदुगुणवड्ढिदाणिट्ठाणंतरं पल्लिदोवमस्स
असंस्वेज्जदिभागो ॥ २६४ ॥

इस प्रकार वे उत्कृष्ट स्थिति तक उत्तरोत्तर असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे होते
गये हैं ॥ २६१ ॥

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितितक एक एक स्थितिके प्रति सब स्थितिबन्धाध्यवसान
स्थानोंकी आवलिके असंख्यातवें भाग गुणकारसे के जाना चाहिये । इस प्रकार
अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसान-
स्थानोंकी अपेक्षा उनसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर वे दुगुणी वृद्धिको
प्राप्त हैं ॥ २६२ ॥

इसका कारण यह है कि जघन्य स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंमें विरक्तन
राशिके बराबर प्रक्षेपोंकी वृद्धिके होनेपर पुगुणे अध्यवसानस्थानोंकी उत्पत्ति होती है ।

इस प्रकार वे उत्कृष्ट स्थिति तक दुगुणी दुगुणी वृद्धिको प्राप्त हुए हैं ॥ २६३ ॥

इस प्रकार इतना मात्र अध्वान जाकर सब पुगुणवृद्धियां उत्पन्न होती हैं, ऐसा
कहना चाहिये ।

एक स्थितिसम्बन्धी अध्यवसानोंके दुगुण-दुगुणवृद्धिहानिस्थानोंके अन्तर पत्योपमके
असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ २६४ ॥

१ अ-आ-का-प्रतिपु 'पयडि' इति पाठः । २ पल्लसंस्त्रियमार्गं गंतुं दुगुणाणि जाव उक्कोसा क.प. १, ८८.

कुदो ? णाणागुणहाणिसलागाहि पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताहि संखेज्ज-
पल्लिदोवमेषु भागे हिंदेसु असंखेज्जपल्लिदोवमपढमवग्गमूलुवलंभादो । एवमेदेण सुत्तेण एगगुण-
हाणिअद्धानपमाणं परुविदं । णाणागुणहाणिसलागाणं पमाणपरुवणद्वुत्तरसुत्तं भणदि—

**णाणाद्विदिबंज्जवसाणदुगुणवड्ढिह-हाणिट्ठाणंतराणि अंगुल-
वग्गमूलछेदणाणामसंखेज्जदिभागो' ॥ २६५ ॥**

अंगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते सूचीअंगुलपढमवग्गमूलं घेतत्वं । तस्स अद्दछेदणाणं
असंखेज्जदिभागमेत्ताओ णाणागुणहाणिसलागाओ होति । होताओ वि मोहणीयद्विदिपदेस-
णाणागुणहाणिसलागाहितो घोवाओ, ताणि पल्लिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ
ति पमाणमभणिदूण अंगुलवग्गमूलछेदणाणं असंखेज्जदिभागो ति परुविदत्तादो । होताओ
वि असंखेज्जगुणहीणाओ पुवं विहज्जमाणरासीदो संपहि विहज्जमाणरासीए असंखेज्जगुण-
हीणत्तादो ।

**णाणाठिदिबंज्जवसाणदुगुणवड्ढिह-हाणिट्ठाणंतराणि
योवाणि ॥ २६६ ॥**

कारण कि पत्थोपमके असंख्यातवें भाग मात्र नानागुणहाणिशालाकायोंका संख्यात
पत्थोपमोंमें भाग देनेपर पत्थोपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध होते हैं । इस प्रकार
इस सूत्रके द्वारा एक गुणहाणिअब्जालके प्रमाणकी प्ररूपणा की गई है । नानागुणहाणि-
शालाकायोंके प्रमाणकी प्ररूपणाके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

नानास्थितिवन्धाध्यवसानो सम्बन्धी दुगुण-दुगुणवृद्धि-हानिस्थानान्तर अंगुलसम्बन्धी
वर्गमूलके अर्धच्छेदोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥ २६५ ॥

‘अंगुलवर्गमूल’ ऐसा कहनेपर सूचीअंगुलके प्रथम वर्गमूलको ग्रहण करना
चाहिये । उसके अर्धच्छेदोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण नानागुणहाणिशालाकायों होती हैं ।
इतनी होकरके भी मोहनीय कर्मके स्थितिप्रवेशोंकी नानागुणहाणिशालाकायोंसे स्तोक हैं,
क्योंकि, ‘वे पत्थोपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं’ ऐसा उनका प्रमाण न बतलाकर
‘वे अंगुलके वर्गमूलसम्बन्धी अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भाग हैं’ ऐसी प्ररूपणा की गई है ।
असंख्यातगुणी हीन होती हुई भी पूर्वमें विभज्यमान राशिसे इस समयकी विभज्यमान
राशि असंख्यातगुणी हीन है ।

नानास्थितिवन्धाध्यवसानदुगुणवृद्धिहानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥ २६६ ॥

१ नार्थतराणि अंगुलमूलछेदयणमसंखतमो ॥ क. प्र. १,८८., नानाद्विगुणवृद्धिस्थानानि चांगुलवर्ग-
मूलछेदनकासंख्येयतमभागप्रमाणानि । एतदुक् भवति—अंगुलमात्रश्रेयगतप्रदेशराशेर्वत्प्रथमं वर्गमूलं
तन्मनुष्यप्रमाणहेतुराक्षिषणवतिच्छेदनविधिना तावच्छिद्यते बाधद् भागं न प्रवच्छति । तेषां च छेदनका-
नामसंख्येयतमे भागे बाधन्ति छेदनकानि तावत्सु बाधानाकाशप्रदेशराशिस्तावत्प्रमाणानि नानाद्विगुण-
स्थानानि भवन्ति (म. मी.) । २ अ-आ-काप्रतिषु ‘तासि व पल्लिदोवम—’ इति पाठः ।

कुदो ? पल्लिदोवमपढमवममूलस्स असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

**एयट्ठिदिबंघज्जवसाणदुगुणवडिढ-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्ज-
गुणं ॥ २६७ ॥**

कुदो ? असंखेज्जपल्लिदोवमपढमवममूलपमाणत्तादो । कधमेदं णव्वेदो ? णाणागुण-
हाणिसलागाहि कम्मट्ठिदीए ओवट्ठिदाए एगगुणहाणिपमाणुवल्भादो ।

एवं छण्णं कम्माणमाउववज्जाणं ॥ २६८ ॥

जहा णाणावरणीयस्स परंपरोवणिधा परूविदा तहा छण्णं कम्माणं परूवेदव्वं,
विसेसामावादो । आउअस्स एसा परूवणा जत्थि, ठिदिं पडि असंखेज्जगुणक्खमेण ट्ठिदि-
बंघज्जवसाणट्ठाणाणं वट्ठिदंसणादो ।

संधि सेडिपरूवणाए सृचिदाणं अवहार-भागाभाग-अप्पावहुगाणं परूवणं कस्सामो ।
तं जहा—जहणियाए ट्ठिदीए ट्ठिदिबंघज्जवसाणट्ठाणपमाणेण सव्वट्ठिदिबंघज्जवसाणट्ठाणाणि
केवचिरेण कालेण अवहिरिजंति ? असंखेज्जदिवङ्गुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिजंति ।
तं जहा—उक्खस्सट्ठिदिबंघज्जवसाणट्ठाणपमाणेण सव्वट्ठिदिबंघज्जवसाणेसु कदेषु किंचुण-

क्योंकि, वे पर्योपम सम्बन्धी प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ।

एक स्थितिवन्धाध्यवसानदुगुणवृद्धिहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ २६७ ॥

क्योंकि, वह पर्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंके बराबर है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—चूँकि कर्मस्थितिमें नानागुणहानिघातामोंका भाग देनेपर एक
गुणहानिका प्रमाण लब्ध होता है, इसीसे जाना जाता है कि वह पर्योपमके असंख्यात
प्रथम वर्गमूलोंके बराबर है ।

इसी प्रकार आयुको छोड़कर छह कर्मोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ॥ २६८ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयकी परम्परोपनिधाकी प्ररूपणा की गई है, वही प्रकार छह
कर्मोंकी परम्परोपनिधाकी भी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता
नहीं है । आयु कर्मके सम्बन्धमें यह प्ररूपणा लागू नहीं होती, क्योंकि, उसके
स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंके प्रत्येक स्थितिके अनुसार असंख्यातगुणितकमसे वृद्धि देखी
जाती है ।

अब भोगप्ररूपणाके द्वारा सूचित अवहार, मागाभाग और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा
करते हैं । यथा—अजन्म स्थितिके स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे सब
स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे
असंख्यात डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालके द्वारा अपहृत होते हैं । यथा—सब
स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंको उक्त स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे करनेपर वे
कुछ कम डेढ़ गुणहानि प्रमाण होते हैं । वहां संहतिमें सब अजन्मस्थानस्थानोंका प्रमाण

दिवङ्गुणहाणिमेत्तं होदि तत्त्व संदिहीए सव्वज्जवसाणह्माणपमाणमेदं' १५६० । पुणो एदम्पि उक्कस्सद्विदिवञ्जवसाणेहि मागे हिदे दिवङ्गुणहाणिपमाणमागच्छदि । तं च एदं १९५ । ३२ । पुणो एदं जहण्णद्विदिवञ्जवसाणभागहारमिच्छामो ति सव्वज्जवसाणदुगुणवङ्कि-हाणिसलागाओ विरलिय विगुणिय अण्णोण्णम्मासे कदे जो उप्पण्णरासी तेण रासिणा १६ दिवङ्गुणहाणीए गुणिदाए जहण्णद्विदिवञ्जवसाणभागहारो होदि १९५ । २ । पुणो एदेण सव्वज्जवसाणेसु अवहिरिदेसुं जहण्णद्विदिवञ्जवसाणमागच्छदि १६ । पुणो एदस्सुवरि भागहारो विसेसहीणकमेण जाणिदण पेदव्वो जाव एगदुगुणवङ्किपमाणमेत्तं चडिदो ति । पुणो तप्पमाणेण अवहिरिजमाणे पुव्वभागहारो अदं होदि । कुदो ? एगगुणवङ्कि चडिदो ति एगस्सुवे विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्मास्यं कादूण पुव्वभागहारे ओवट्टिदे तददुव-लंभादो १९५ । ४ । पुणो एदस्सुवरि भागहारो जाणिदण पेदव्वो जाव उक्कस्सद्विदिव-अज्जवसाणे ति । पुणो तप्पमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिजमाणे किंचणदिवङ्गुणहाणिह्माणंतरेण अवहिरिजदि ।

एवं छण्णं कम्माणं भागहारपरूवणा परूवेदव्वा । एवं आउअस्स वि वत्तव्वं । जवरि जहण्णद्विदिवञ्जवसाणपमाणेण सव्वज्जवसाणह्माणणि असंखेजलोगेमेत्तकारेण अवहिरिजंति तं जहा—आउअस्स अज्जवसाणगुणमारो अवट्टिदो ति के वि आइरिया मणंति ।

यह है—१५६० । इसमें उत्कृष्ट स्थितिविध्यवसानस्थानोंका भाग देनेपर डेढ़ गुणहानि प्रमाण आता है । यह यह है— $\frac{1}{2}$ । इस जघम्य स्थितिसम्बन्धी अध्यवसानोके भागहारको छानेकी इच्छासे सब अध्यवसानस्थानोंकी दुगुणवङ्कि-हाणिशलाकाओंका विरलन करके दुगुणित कर परस्पर गुणा करनेपर जो राशि उत्पन्न हो (१६) उससे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर जघम्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंका भागहार होता है— $\frac{1}{2} \times 16 = 8$ । इसका सब अध्यवसानस्थानोंमें भाग देनेपर जघम्य स्थितिके अध्यवसानस्थानोंका प्रमाण आता है— $1560 \div \frac{1}{2} = 3120 \times \frac{1}{2} = 1560$ । इसके आगे एक दुगुणवङ्कि प्रमाण मात्र जाने तक भागहारको विशेषरीन कमसे जानकर छे जाना चाहिये । फिर उक्त प्रमाणसे अपहृत करनेपर पूर्व भागहार आया होता है, क्योंकि, एक गुणहानि आगे गये हैं, अतः एक अंकका विरलन करके दुगुणा कर परस्पर गुणा करनेपर जो प्राप्त हो उससे पूर्व भागहारको अपवर्तित करनेपर उसका अर्ध भाग लब्ध होता है— $\frac{1}{2} + 8 = \frac{1}{2}$ । फिर इसके आगे उत्कृष्ट स्थितिके अध्यवसानस्थानोंतक भागहारको जानकर छे जाना चाहिये । उसके प्रमाणसे सब प्रथमको अपहृत करनेपर यह कुछ कम डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है ।

इस प्रकार छह कर्मोंके भागहारकी प्ररूपणा करना चाहिये । इसी प्रकार आयुर्कर्मके भी भागहारकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि सब अध्यवसानस्थान जघम्य स्थितिसम्बन्धी अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे असंख्यत छेक मात्र कालके द्वारा

तेसिमहिषाएण भागहारो वुच्चदे—अंतोमुहुत्तूणतेतीससागरोक्काणि गच्छं कावूण “अर्थे शून्यं रूपेण गुणम्” इति गणितन्यायेन जं लब्धं तं ठविय “रूपोन्मादिसंगुणमेकोणगुणोन्मथितमिच्छा” एदेण सुतेण रूवूणं काउण असंखेज्जलोगमेत्तआदिणा गुणिय रूवूणगुणगारेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे सव्वज्जवसाणपमाणं होदि । एदम्मि जहण्णट्टिदिज्जवसाणपमाणेणोवट्टिदे असंखेज्जा लोगा लब्धंति । तेण जहण्णट्टिदिज्जवसाणपमाणेण अवहिरिज्जमाणे सव्वज्जवसाणट्टाणाणि असंखेज्जलोगमेत्तकालेण अवहिरिज्जंति । एवं उंवरिमट्टिदिज्जवसाणाणं पि असंखेज्जलोगभागहारो वत्तव्वो । णवरि सव्वत्थ एसो चेव भागहारो होदि ति णियमो णत्थि, कत्थ वि णलोग-जगपदर-सेडि-सागर-पल्ल-आवलिया-तदसंखेज्जदिभागमेत्तभागहास्वत्तंभादो । उवक्त्तसट्टिदिज्जवसाणपमाणेण सव्वज्जवसाणाणि सादरेणएणरूपपमाणेण अवहिरिज्जंति । एत्थ कारणं जाणिदूण वत्तव्वं । एवं भागहारपरूवणा समत्ता ।

जहणियाए ट्टिदिए अज्जवसाणट्टाणाणि सव्वट्टिदिज्जवसाणट्टाणाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जजाणि गुणहाणिट्टाणंतराणि । एवं पेदव्वं जाव उक्त्तसट्टिदिज्जवसाणट्टाणे ति । एवं छणं कम्माणं । आउअस्स वि एवं अपहृत होते हैं । यथा—आयु कर्मके अध्यवसानोंका गुणकार अवस्थित है, ऐसा कितने ही भावार्थ कहते हैं । उनके अभिप्रायसे भागहारका कथन करते हैं—अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोष्मोंको गच्छ करके “अर्थे शून्यं रूपेण गुणम्” इस गणितन्यायसे जो लब्ध हो उसको स्थापित करके ‘रूपोन्मादिसंगुणमेकोनगुणोन्मथितमिच्छा’ इस सूत्रके अनुसार एक रूप कम करके असंख्यात लोक मात्र आदिसे गुणितकर एक अंकसे रहित आबलिके असंख्यातवें भाग मात्र गुणकारका भाग हैनेपर सब अध्यवसानोंका प्रमाण होता है । इसमें जघन्य स्थितिके अध्यवसानोंका जो प्रमाण हो उसका भाग हैनेपर असंख्यात लोक लब्ध होते हैं । इसी कारण जघन्य स्थितिके अध्यवसानोंका जो प्रमाण है उससे सब अध्यवसानस्थानोंको अपहृत करनेपर वे असंख्यात लोक मात्र कालसे अपहृत होते हैं । इसी प्रकार आगेकी स्थितिओंके भी अध्यवसानस्थानोंका भागहार असंख्यात लोक मात्र कहना चाहिये । विशेष इतना है कि सभी जगह यही भागहार हो, ऐसा नियम नहीं है, क्योंकि, कहींपर वनलोक, जगप्रतर, जगभ्रेणि, सागर, पल्ल, आवलि और उनके असंख्यातवें भाग मात्र भागहार पाया जाता है । उक्तल्ल स्थितिके अध्यवसानोंके प्रमाणसे सब अध्यवसान साक्षिक एक रूपके प्रमाणसे अपहृत होते हैं । यहाँ कारण जानकर बतलाना चाहिये । इस प्रकार भागहार प्रकृपणा समाप्त हुई ।

जघन्य स्थितिके अध्यवसानस्थान सब स्थितिओंके अध्यवसानस्थानोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? वे उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग असंख्यात गुणहानिस्थानान्तर हैं । इस प्रकार, उक्तल्ल स्थितिके अध्यवसानस्थानोंतक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार छह कर्मोंके सम्बन्धमें भागाभागीकी प्रकृपणा करना चाहिये ।

१ अमत्तो ‘परूवण’ इति पाठः ।

वेव वत्तव्वं । जवरि उक्कस्सद्विदिअज्जवसाणट्ठाणाणि सव्वज्जवसाणट्ठाणाणमसंखेज्जा भागा होति । एवं भागामागपस्त्वणा समत्ता ।

सव्वत्थोवाणि णाणावरणीयस्य जहणियाए द्विदीए द्विदिबंघज्जवसाणट्ठाणाणि १६ । उक्कस्सियाए द्विदीए द्विदिबंघज्जवसाणाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणमारो ? अण्णोण्णमत्थरासी १६ । अजहण्ण-अणुक्कस्सद्विदिबंघज्जवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणमारो ? किंज्जणदिवक्कगुणट्ठाणीयो । तस्स पमाणमेदं १६३ । ३२ । पुणो एदेण उक्कस्सद्विदिअज्जवसाणट्ठाणेसु गुणिदेसु अजहण्ण-अणुक्कस्सद्विदिबंघज्जवसाणट्ठाणपमाणं होवि १३०४ । अणुक्कस्सियासु द्विदीसु द्विदिबंघज्जवसाणाणि विसेसाहियाणि । केतियमेतेण ? जहण्णद्विदिअज्जवसाणमेतेण १३२० । अजहणियासु द्विदीसु द्विदिबंघज्जवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केतियमेतेण ? जहण्णद्विदिअज्जवसाणेहि परिहीणउक्कस्सद्विदिअज्जवसाणमेतेण १५६०^१ । सव्वासु द्विदीसु अज्जवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केतियमेतेण ? अजहण्णद्विदिअज्जवसाणमेतेण १५७६ ।

आउववज्जाणं छण्णं पि कम्माणं एवं चेव वत्तव्वं । आउअस्स जहणियाए द्विदीए द्विदिबंघज्जवसाणट्ठाणाणि योवाणि । अजहण्णअणुक्कस्सियासु द्विदीसु द्विदिबंघज्जवसाणट्ठाणाण्युके विषयमें भी इसी प्रकार ही कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि आयुक्रमके उत्कृष्ट स्थिति सम्बन्धी अभ्यवसान समस्त अभ्यवसानस्थानोंके असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं । इस प्रकार भागामाग प्ररूपणा समाप्त हुई ।

ज्ञानावरणीयकी अद्यन्य स्थिति सम्बन्धी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान सबसे स्तोके हैं (१६) । उत्कृष्ट स्थितिसम्बन्धी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार अन्योन्याभ्यस्त राशि है (१६) । अजद्यन्य-अनुत्कृष्ट स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार कुछ कम डेढ गुणहानियां हैं । उसका प्रमाण यह है— $1\frac{1}{2}$ । इसके द्वारा उत्कृष्ट स्थिति सम्बन्धी अभ्यवसानस्थानोंको गुणित करनेपर अजद्यन्य अनुत्कृष्ट स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका प्रमाण होता है— $246 \times 1\frac{1}{2} = 1320$ । अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे वे विशेष अधिक हैं ? अद्यन्य स्थितिके अभ्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं । $1320 + 16 = 1320$ अजद्यन्य स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? अद्यन्य स्थितिके अभ्यवसानस्थानोंसे हीन उत्कृष्ट स्थितिके अभ्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं— $1320 + (246 - 16) = 1560$ । सब स्थितियोंमें अभ्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं । अद्यन्य स्थितिके अभ्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है— $1560 + 16 = 1576$ ।

आयु कर्मको छोड़कर छह कर्मोंके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके अस्पष्टत्वकी प्ररूपणा इसी प्रकारसे करना चाहिये । आयु कर्मकी अद्यन्य स्थितिमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान स्तोके हैं । अजद्यन्य-अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान असंख्यात-

णाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । अणुक्कस्सियासु द्विदीसु द्विदिबंधज्जवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णद्विदिअज्जवसाणमेत्तेण । उक्कस्सियाए द्विदीए द्विदिबंधज्जवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिमागो । अजहणियासु द्विदीसु द्विदिबंधज्जवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? अजहण्ण-अणुक्कस्सद्विदिबंधज्जवसाणट्ठाणमेत्तेण । सव्वासु द्विदीसु द्विदिबंध-ज्जवसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । केत्तियमेत्तेण ? जहण्णद्विदिअज्जवसाणट्ठाणमेत्तेण । एवं पगण्णा ति समत्तमणिओगहारं ।

अणुकट्टीए णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीए जाणि द्विदिबंधज्जवसाणट्ठाणाणि ताणि बिदियाए द्विदीए बंधज्जवसाण-ट्ठाणाणि अपुव्वाणि' ॥ २६९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अथे भण्णमाणे संदिट्ठी उच्चदे । तं जहा—जहण्णद्विदीए विणा उक्कस्सद्विदिपमाणं सत्त ७ । धुवट्ठिदिपमाणं पंच ५ । धुवट्ठिदीए सह उक्कस्सद्विदिपमाणमेदं १२ । पुणो एदिस्से समयचरणं काट्ठण धुवट्ठिदिप्पहुडि उवरिमसव्वद्विदिविसेसेसु सव्वज्ज-

गुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार असंख्यात लोक हैं । अनुत्कृष्ट स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक है ? अजघन्य स्थिति सम्बन्धी अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिमें स्थितिबन्धाध्यवसान-स्थान असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? गुणकार आवलिका असंख्यातधां भाग है । अजघन्य स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थितियोंके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं । सब स्थितियोंमें स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान विशेष अधिक हैं । कितने मात्रसे अधिक हैं ? अजघन्य स्थितियोंके अध्यवसानस्थानोंके प्रमाणसे वे अधिक हैं । इस प्रकार प्रगणना अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

अनुकृष्टिकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थितिमें जो स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हैं द्वितीय स्थितिमें वे स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हैं और अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान भी हैं ॥ २६९ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते समय संहति कहीं जाती है । वह इस प्रकार है—अजघन्य स्थितिके बिना उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण सात (७) है । ध्रुवस्थितिका प्रमाण पांच (५) है । ध्रुवस्थितिके साथ उत्कृष्ट स्थितिका प्रमाण यह है—१२ । इसके समर्थोंकी

१ संप्रतमनुकृष्टिर्भिरूपते । सा च न विद्यते । तथा हि—ज्ञानावरणीयस्य जघन्यस्थितिकन्धे धान्यव्यवसायस्थानानि, तेभ्यो द्वितीयस्थितिकन्धेऽन्यानि, तेभ्योऽपि तृतीयस्थितिकन्धेऽन्यानि, एवं तावद्धान्यं धावदुक्कडा स्थितिः । एव सर्वेषामपि कर्मणा दृष्टव्यम् (१-२) । क. प्र. (म. टी.) १,८८. ।

वसाणाणमसंखेअलोगमेत्ताणं तिरिच्छेण रचणा कायव्वा । एवं रचणं कापूण सव्वद्विदि-
विसेसद्विदअण्ववसाणट्ठाणाणं णिव्वग्गाणकंदयमेत्तखंडाणि कादव्वाणि । किं पमाणं
णिव्वग्गाणकंदयं ? पल्लिदोवमस्स असंखेअदिमागो । संदिट्ठीए तस्स पमाणं चत्तारि ४ ।
एदाणि खंडाणि किं समाणि, आहो विसमाणि ? ण होति समाणि, विसमाणि^१ चेव ।
कवं णव्वदे ? परमाहरियोवदेसादो । तं जहा—पढमखंडादो विदियखंडं विसेसाहियं
असंखेअलोगमेत्तेण । विदियखंडादो वदियखंडं विसेसाहियं असंखेअलोगमेत्तेण ।
तदियखंडादो चउत्थखंडं विसेसाहियमसंखेअलोगमेत्तेण । एवं गेदव्वं जाव चरिमखंडं ति ।
णवरि पढमखंडादो वि चरिमखंडं विसेसाहियं चेव । कुदो ? परमाहरियोवदेसादो
बाहाणुवलंभादो च । एत्थ संदिट्ठी^२ ।

एवं ठविय एदस्स सुत्तस्स अत्थो उच्चदे-णाणावणीयस्स जहणियाए द्विदीए जाणि

रचना करके ध्रुवस्थितिको आदि लेकर आगेके सब स्थितिविशेषोंमें रहनेवाले असंख्यात
लोक प्रमाण सब अध्यवसानस्थानोंकी तिरछे रूपसे रचना करना चाहिये । इस प्रकार
रचना करके सब स्थितिविशेषोंमें स्थित अध्यवसानस्थानोंके निर्बर्गणाकाण्डक प्रमाण
अण्ड करना चाहिये ।

शंका—निर्बर्गणाकाण्डकका प्रमाण कितना है ?

समाधान—यह पत्थोपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

संदृष्टिमें उसका प्रमाण चार (४) है ।

शंका—ये अण्ड क्या सम हैं, अथवा विषम ?

समाधान—वे सम नहीं होते, विषम ही होते हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह श्रेष्ठ आचार्योंके उपदेशसे जाना जाता है । जैसे—प्रथम अण्डकी
अपेक्षा द्वितीय अण्ड असंख्यात लोक मात्रसे विशेष अधिक है । द्वितीय अण्डकी अपेक्षा
तृतीय अण्ड असंख्यात लोक मात्रसे विशेष अधिक है । तृतीय अण्डकी अपेक्षा चतुर्थ
अण्ड असंख्यात लोक प्रमाणसे विशेष अधिक है । इस प्रकार अन्तिम अण्ड तक के
जाना चाहिये । विशेष इतना है कि प्रथम अण्डकी अपेक्षा भी अन्तिम अण्ड विशेष
अधिक ही है, क्योंकि, ऐसा ही उत्कृष्ट आचार्योंका उपदेश है, तथा उसमें कोई बाधा भी
नहीं पायी जाती है । यहां संदृष्टि—(पृष्ठ ३४५ पर देखिये) इस प्रकार स्थापित करके इस
सूचका अर्थ कहते हैं—ज्ञानावरणीयकी अघन्य स्थितिमें जो स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान

१ अ-आकाप्रतिषु ' विसमाणि ण होति विसमाणि ', ताप्रती ' विसमाणि ण होति ! विसमाणि '
इति पाठः । २ अत्रोपलब्धमाना संदृष्टयः ३४५ तमे पृष्ठे ब्रह्म्याः ।

द्विदिबन्धज्जवसाणह्माणाणि ताणि च विदियाए द्विदीए द्विदिबन्धज्जवसाणह्माणाणि होति, अपुव्वाणि च । कथमपुव्वाणं संभवो ? न, विदियद्विदीए द्विदिबन्धज्जवसाणह्माणाणस्संबज्जवसाणह्माणाणं धुवद्विदिअज्जवसाणेसु अभावादो । न च जहण्णद्विदिसव्वज्जवसाणाणि विदियद्विदिअज्जवसाणह्माणेसु अत्थि, जहण्णद्विदिपढमखंडज्जवसाणह्माणाणं विदियद्विदिअज्जवसाणह्माणेसु अनुवलंभादो । जाणि विदियाए द्विदीए द्विदिबन्धज्जवसाणह्माणाणि ताणि तदियाए द्विदीए द्विदिबन्धज्जवसाणह्माणेसु होति ति न वेतव्वं, पढमखंडज्जवसाणह्माणाणं तदियद्विदिअज्जवसाणह्माणेसु अनुवलंभादो । कथमेदं णव्वदे ? ताणि सव्वाणि होति ति भिदेसामावादो । अपुव्वाणि ति वुत्ते अपुव्वाणि चेव वत्तव्वं, च-सहेण विणा-समुच्चयावगमाभावादो । जदि एवं तो सुत्ते च-सहो किण्ण पत्तुविदो ? न, च-सहजिहेसेण विणा वि तदह्मावगमादो ।

एवमपुव्वाणि अपुव्वाणि जाव उक्कसिसया द्विदि त्ति ॥२७०॥

हे 'बे' भी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिमें हैं, तथा अपूर्व भी स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान हैं ।

शंका—अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि द्वितीय स्थितिके स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंके अन्तिम खण्ड सम्बन्धी अध्यवसानस्थान ध्रुवस्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं हैं, तथा अद्यन्य स्थितिके सब अध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं हैं; कारण कि अद्यन्य स्थितिसम्बन्धी प्रथम खण्डके अध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं पाये जाते हैं । जो स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान द्वितीय स्थितिमें हैं वे तृतीय स्थितिके अध्यवसानोंमें होते हैं, ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि द्वितीय स्थितिके प्रथम खण्ड सम्बन्धी अध्यवसानस्थान तृतीय स्थितिके अध्यवसानस्थानोंमें नहीं पाये जाते हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि, 'बे' सभी होते हैं, ऐसा सूत्रमें निर्देश नहीं किया गया है, इसीसे उसका ज्ञान हो जाता है ।

सूत्रमें जो 'अपुव्वाणि' ऐसा निर्देश किया है उससे 'अपुव्वाणि' 'बेव' अर्थात् अपूर्व भी होते हैं, ऐसा कथन करना चाहिये, क्योंकि, च शब्दके विना समुच्चयका ज्ञान नहीं होता है ।

शंका—यदि ऐसा है तो सूत्रमें च शब्दका निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान—बही, क्योंकि च शब्दके निर्देशके विना भी उक्त अर्थका ज्ञान हो जाता है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक अपूर्व अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते हैं ॥२७०॥

१ अ-काप्रत्योः '—णिदेशेण' इति पाठः ।

एवं उत्तविवाणेण अपुव्वाणि अपुव्वाणि चेव द्विदिबंधज्जवसाणट्ठाणाणि सव्व-
द्विद्विसेसेसु होइण गच्छंति जाव उवकस्सद्विदि ति । सव्वद्विद्विसेसेसु पुव्वद्विदि-
बंधज्जवसाणट्ठाणाणि वि अत्थि, ताणि च अमणिदूण अपुव्वाणि चेव अत्थि ति किमहं
तुच्छे ? ण, एवमिदि वयणादो चेव पुव्वाणं अत्थितसिद्धीदो । एवं वयणादो चेव पुव्वाणं
पि अत्थितसिद्धीए संतीए अपुव्वाणं णिदेसो किमहं कदो ? ण, अपुव्वपरिणामअत्थितपओ-
जणत्तेण तप्पदुप्पायणे दोसाभावादो ।

जहण्णद्विदीए पढमखंडं उवरि केण वि सरिसं ण होदि । विदियखंडं समउत्तर-
जहण्णद्विदीए पढमज्जवसाणखंडेण सरिसं । तदियखंडं दुसमउत्तरजहण्णद्विदीए पढमखंडेण
सरिसं । चउत्त्यखंडं तिसमउत्तरजहण्णद्विदीए पढमखंडेण सरिसं । एवं णेयव्वं जाव
णिव्वग्गणकंदयचरिमसमओ ति । तदो उवरिमसमए जहण्णद्विदिअज्जवसाणानमणुक्कड्डी
बोच्छिज्जदि, तत्थ एदेहि सरिसपरिणामाभावादो । एवं सव्वद्विद्विसेससव्वज्जवसाणार्ण
पादेक्कमणुकट्टिवोच्छेदो परूवेदव्वो ति भावत्थो ।

इस प्रकार उक्त प्रक्रियासे उत्कृष्ट स्थितितक सब स्थितिनिशेधोंमें होकर अपूर्व ही
अपूर्व स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान होते जाते हैं ।

शंका—सब स्थितिनिशेधोंमें जब पूर्व स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान भी हैं, तब उन्हें
त कहकर 'अपूर्व ही हैं' ऐसा किसलिये कहा जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि 'एवं' अर्थात् 'इसी प्रकार' ऐसा कहनेसे ही पूर्व
स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंका अस्तित्व सिद्ध हो जाता है ।

शंका—यदि 'एवं' पदका निर्देश करनेसे ही पूर्व स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंका
अस्तित्व सिद्ध हो जाता है, तो फिर अपूर्व स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंका निर्देश किसलिये
किया गया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि यहां अपूर्व परिणामोंके अस्तित्वका प्रयोजन होनेसे
उनके कहनेमें कोई दोष नहीं है ।

अचन्य स्थितिका प्रथम अण्ड आगे किसीके भी सदृश नहीं है । उसका द्वितीय
अण्ड एक समय अधिक अचन्य स्थितिके प्रथम अण्डवसानअण्डके सदृश होता है ।
अचन्य स्थितिके अण्डवसानोंका तृतीय अण्ड दो समय अधिक अचन्य स्थितिके प्रथम
अण्डवसानअण्डके सदृश होता है । चतुर्थ अण्ड तीस समय अधिक अचन्य स्थितिके
प्रथम अण्डवसानअण्डके सदृश होता है । इस प्रकार निर्वाणकाण्डके अन्तिम समय
तक के अन्ना चाहिये । उससे आगेके समयमें अचन्य स्थितिके अण्डवसानस्थानोंके
अनुकूलिका व्युत्पद्ये हो जाता है, क्योंकि, वहां इनके सदृश परिणामोंका अभाव है । इस
प्रकारसे सब स्थितिनिशेधोंके सब अण्डवसानोंमेंसे प्रत्येकमें अनुकूलिके व्युत्पद्येकी
प्रकृपा करना चाहिये । यह उक्त कथनका मात्तार्थ है ।

संपदि अपुणरूतज्जवसाणपरूवणा कीरदे । तं जहा—जहण्हिदिमार्दि कादूण जाव दुचरिमद्विदि ति ताव सच्चद्विदिविसेसंसच्चज्जवसाणं सच्चपढमखंडाणि अपुणरूताणि । उक्कस्सद्विदीए सच्चखंडाणि अपुणरूताणि चेव । सेस-दुचरिमादिद्विदीणं विदियादिखंडाणि पुणरूताणि, एदेहि समानपरिणामाणमपुणरूतपरिणामेसु उवलंभादो ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ २७१ ॥

जहा णाणावरणीमस्स अनुकट्ठी परूविदा तहा सत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं । णवरि आउ-अस्स जहण्हिदीए णिव्वग्गणमेत्तअज्जवसाणखंडाणि पुव्वं व पढमखंडप्पहुडि विसेसाहियाणि होति । समउत्तरजहण्हिदिप्पहुडिस्सच्चज्जवसाणखंडाणि अण्णोण्णं पेक्खिदूण जहाकमेण विसेसाहियाणि चेव । किंतु तत्थ समयाहियजहण्हिदीए दुचरिमखंडादो चरिमखंड-मायामेण असंखेज्जगुणं । तदुवरिमद्विदीए पुण तिचरिमखंडादो दुचरिमखंडमसंखेज्जगुणं । तदो चरिमखंडमसंखेज्जगुणं । एवं णेदव्वं जाव णिव्वग्गणकंदयदुचरिमसमओ ति । पुणो तदुवरिमद्विदिप्पहुडि जाव उक्कस्सद्विदि ति ताव सच्चखंडाणि अण्णोण्णं पेक्खिदूण आयामेण असंखेज्जगुणाणि होति ति वेत्तव्वं । एत्थ वि अणुकट्ठिवोच्चेदो पुव्वं व परूवेदव्वो । एवमणुकट्ठी समत्ता ।

तिव्व-मंददाए णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीए जहण्यं

जब अपुनरुक्त अच्यवसानोकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—जघन्य स्थितिको आदि लेकर द्विचरम स्थिति तक सब स्थिति-विशेषोंके सभी अच्यवसानस्थान सम्बन्धी सब प्रथम खण्ड अपुनरुक्त हैं । उक्त स्थितिके सब खण्ड अपुनरुक्त ही हैं । शेष द्विचरम आदि स्थितियोंके द्वितीयादिक खण्ड पुनरुक्त हैं, क्योंकि, इनके समान परिणाम अपुनरुक्त परिणामोंमें पाये जाते हैं ।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें अनुकृष्टिका कथन करना चाहिये ॥ २७१ ॥

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयके विषयमें अनुकृष्टिकी प्ररूपणा की है, उसी प्रकार अन्य सात कर्मोंके सम्बन्धमें अनुकृष्टिकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि आयुकी जघन्य स्थितिके निर्बर्गणाकाण्डक प्रमाण अच्यवसानखण्ड पूर्वके ही समान प्रथम खण्डको आदि लेकर उत्तरोत्तर विशेष अधिक होते हैं । एक समय अधिक जघन्य स्थितिको आदि लेकर सब अच्यवसानखण्ड परस्परकी अपेक्षा यथाक्रमसे विशेष अधिक ही हैं । परन्तु उनमें एक समय अधिक जघन्य स्थितिके द्विचरम खण्डसे अन्तिम खण्ड आयामकी अपेक्षा असंख्यातगुणा है । उससे आगेकी स्थितिके द्विचरम खण्डकी अपेक्षा द्विचरम खण्ड असंख्यातगुणा है । उससे अन्तिम खण्ड असंख्यातगुणा है । इस प्रकार निर्बर्गणाकाण्डके द्विचरम समय तक ले जाना चाहिये । फिर उससे आगेकी स्थितिसे लेकर उक्त स्थिति तक सब खण्ड एक दूसरेकी अपेक्षा आयामसे असंख्यात गुणे होते हैं, वेसा समझना चाहिये । यहाँ भी अनुकृष्टिके व्युत्पत्तिके पूर्वके ही समान प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार अनुकृष्टिका कथन समाप्त हुआ ।

तीव्र-मन्दताकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी जघन्य स्थिति-

१ ताप्रतो 'सच्चद्विदिविसेसस्स' इति पाठः ।

द्विदिबंघज्जवसाणट्ठाणं सव्वमंदाणुभागं ॥ २७२ ॥

सव्वट्ठिदीसु पुणरुत्तद्विदिबंघज्जवसाणट्ठाणाणि अवणिय अपुणरुत्ताणि^१ वेत्तुण एद-
मप्पाबहुणं वुब्बदे । सव्वमंदाणुभागमिदि वुत्ते सव्वजहण्णसत्तिसंजुत्तमिदि वेत्तव्वं । सेसं सुणमं ।

तिस्से चेव उक्कस्समणंतगुणं ॥ २७३ ॥

तिस्से चेव जहण्णट्ठिदीए पढमखंडस्स अपुणरुत्तस्स उक्कस्सपरिणामो अणंतगुणो,
असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि चडिदुण ट्ठिदत्तादो । चरिमखंड्हुक्कस्सपरिणामो ण गहिदो
ति कवं णव्वदे ? जहण्णट्ठिदिउक्कस्सपरिणामादो समयाहियजहण्णट्ठिदीए जहण्णपरिणामो
अणंतगुणो ति सुत्तणिदेसादो णव्वदे ।

विदियाए ट्ठिदीए जहण्णयं द्विदिबंघज्जवसाणट्ठाणमणंतगुणं ॥ २७४ ॥

पुव्विल्लउक्कस्सपरिणामो उव्वंको, एसो जहण्णपरिणामो अट्ठंको ति काउण
हेट्ठिमउक्कस्सपरिणामं सव्वजीवरामिणा गुणिदे उवरिमट्ठिदिजहण्णपरिणामो द्वादो, तेण
अणंतगुणत्तं ण विरुज्जदे । उवरिं पि उक्कस्सपरिणामादो जत्थ जहण्णपरिणामो अणंतगुणो
ति वुच्चदि तत्थ एदं चेव कारणं वत्तव्वं ।

बन्धाध्यवसानस्थान सबसे मन्द अनुभागवाला है ॥ २७२ ॥

सब स्थितियोंमें पुनरुक्त स्थितिवन्धाध्यवसानस्थानोंको छोड़कर और अपुनरुक्तोंको
ग्रहण करके यह अणुबहुत्व कहा जा रहा है । 'सव्वमंदाणुभाग' ऐसा कहनेपर सबसे
अचम्य शक्तिसे संयुक्त है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । शेष कथन सुगम है ।

उसीका उत्कृष्ट स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान अनन्तगुणा है ॥ २७३ ॥

उसी अचम्य स्थितिके अपुनरुक्त प्रथम अण्डका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है,
क्योंकि वह अलंकारात् लोक मात्र छहस्थान आगे जाकर स्थित है ।

शंका—अन्तिम अण्डका उत्कृष्ट परिणाम नहीं ग्रहण किया गया है, यह कैसे
जाना जाता है ?

समाधान—अचम्य स्थितिके उत्कृष्ट परिणामसे एक समय अधिक अचम्यस्थितिका
परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा सूत्रमें निर्देश किया जानेसे उसका परिहान होता है ।

द्वितीय स्थितिका अचम्य स्थितिवन्धाध्यवसानस्थान अनन्तगुणा है ॥ २७४ ॥

पूर्वका उत्कृष्ट परिणाम ऊर्ध्वक और यह अचम्य परिणाम अधांक है, ऐसा करके
अधस्तम उत्कृष्ट परिणामको सबे जीवराक्षिसे गुणित करनेपर आगेकी स्थितिका अचम्य
परिणाम होता है, इसी कारण उसके अनन्तगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है । आगे भी
जहांपर उत्कृष्ट परिणामकी अपेक्षा अचम्य परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा कहा जाता है
जहां पर भी यही कारण बतलाना चाहिये ।

१ उग्रति स्थितिसुदृढहारे वा प्राक् तीव्र-मन्दता नोक्ता सामिणीयते—अणंसेत्त्यादि । तद्यथा—
ज्ञानावरणीयस्य अचम्यस्थितौ अचम्यस्थितिवन्धाध्यवसायस्थानं सर्वमन्दानुभावं । ततस्तस्यामेव अचम्यस्थितौ
उत्कृष्टमध्यवसायस्थानमनन्तगुणम् । ततोऽपि द्वितीयस्थितौ अचम्य स्थितिवन्धाध्यवसायस्थानमनन्त-
गुणम् । ततोऽपि तस्यामेव द्वितीयस्थितौ उत्कृष्टमनन्तगुणम् । एव प्रैतिस्थिति अचम्यमुत्कृष्टं च स्थितिवन्धाध्य-
वसायस्थानमनन्तगुणतया तावद्वचनं बावदुक्तायां स्थितौ चरम स्थितिवन्धाध्यवसायस्थानमनन्तगुणम्
(१-३) । क. प्र. (म. दी.) १, ८९. । २ अ-आ-काप्रतिपु-‘पुनरुत्ताणि’ इति पाठः ।

तिस्से चैव उक्कस्समणंतगुणं ॥ २७५ ॥

असंखेज्जलोगमेत्तच्छट्ठाणाणि उवरि चड्ढिदूणं द्विदत्तादो ।

सदियाए द्विदीए जहण्णयं द्विदिबंधज्झवसाणट्ठाणमणंतगुणं ॥ २७६ ॥

कारणं सुगमं, पुव्वं परूविदत्तादो ।

तिस्से चैव उक्कस्सयमणंतगुणं ॥ २७७ ॥

असंखेज्जलोगमेत्तच्छट्ठाणाणि उवरि चड्ढिदूणं द्विदत्तादो ।

एवमणंतगुणा जाव उक्कस्सद्विदि ति ॥ २७८ ॥

एवं पुव्वुत्तकमेण अणंतगुणाए सेडीए णेदव्वं जाव उक्कस्सद्विदि ति । णवरि उक्कस्सियाए द्विदीए जहण्णादो उक्कस्समणंतगुणमिदि वुत्ते चरिमखंडुक्कस्सपरिणामो अणंतगुणो ति धेतव्वं ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ २७९ ॥

जहा णाणावरणीयस्स तिव्वमंददाए अप्पाणहुगं परूविदं तहा सत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं, विसेसाभावादो । एवं तिव्व-मंददा ति समत्तमणियोगहारं । एवं द्विदिसमुदाहारा समत्तो । एवं द्विदिबंधज्झवसाणपरूवणा समत्ता । एवं वेयणकालविहाणे ति समत्तमणियोगहारं ।

उसी स्थितिका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है ॥ २७५ ॥

क्योंकि, वह अधन्य परिणामसे असंख्यात लोक प्रमाण छह स्थान आगे जाकर स्थित है ।

उससे तृतीय स्थितिका अधन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्यान अनन्तगुणा है ॥ २७६ ॥

इसका कारण सुगम है, क्योंकि, वह पूर्वमें बतलाया जा चुका है ।

उसी स्थितिका उत्कृष्ट परिणाम उससे अनन्तगुणा है ॥ २७७ ॥

क्योंकि, वह उससे असंख्यात लोक मात्र छह स्थान आगे जाकर स्थित है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक वे अनन्तगुणे अनन्तगुणे हैं ॥ २७८ ॥

इस प्रकार अर्थात् पूर्वोक्त क्रमसे उत्कृष्ट स्थिति तक अमन्तगुणित श्रेणिले के जाना चाहिये । विशेष इतना है कि उत्कृष्ट स्थितिके अधन्य परिणामकी अपेक्षा उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा कहनेपर अन्तिम जगडका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुण्य है, ऐसा बहण्य करना चाहिये ।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वको कहना चाहिये । २७९ । जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मके विषयमें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वकी प्रकृपणा की गई है, उसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें कहना चाहिये, क्योंकि वहां उसमें कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार तीव्रमन्दता अनुयोगहार समाप्त हुआ । इस प्रकार स्थितिबन्धाध्यवसान प्रकृपणा समाप्त हुई । इस प्रकार वेदनकालविधान अनुयोगहार समाप्त हुआ ।

वेदणास्तेतविहाणसुत्ताणि

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	वेयणसेतविहाणे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणिभोगहाराणि णाद- व्वाणि भवन्ति ।		१६	अण्णदरस्स केवलस्स केवल- समुग्धादेण समुद्दरस्स सव्वलोगं गदस्स तस्स वेदणीयवेदणा सेतदो उक्कसा ।	२९
२	पदमीमांसा सामितं अप्पाबहुए त्ति ।	३	१७	तव्वदिरित्ता अणुक्कस्सा ।	३०
३	पदमीमांसाए णाणावरणीयवेयणा सेतदो किं उक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा ?	४	१८	एवमाउव-णामा-गोदार्ण ।	३३
४	उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा ।	४	१९	सामित्तेण जहण्णपदे णाणावर- णीयवेयणा सेतदो जहण्णिया कस्स ?	३३
५	एव सत्तण्णं कम्माणं ।	११	२०	अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअप- ज्जत्तयस्स तिसमयआहारयस्स तिसमयतम्भवत्थयस्स जहण्ण- जोगिस्स सव्वजहण्णियाए सरीरो- गाहणाए वट्टमाणस्स तस्स णाणा- वरणीयवेयणा सेतदो जहण्णा ।	३३
६	सामितं दुविहं जहण्णपदे उक्कस्सपदे ।	११	२१	तव्वदिरित्तमजहण्णा ।	३६
७	सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीय- वेयणा सेतदो उक्कस्सिया कस्स ?	१४	२२	एव सत्तण्णं कम्माणं ।	५३
८	ओ मच्छो जोयणसहस्सिओ सयंभु- रमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तव्वे अच्छिदो ।	१५	२३	अप्पाबहुए त्ति । तत्थ इमाणि तिण्णि अणिभोगहाराणि जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ।	५३
९	वेयणसमुग्धादेण समुद्दो ।	१८	२४	जहण्णपदे अट्टण्ण पि कम्माण वेयणाओ तुल्लाओ ।	५३
१०	कायलेस्सियाए लमो ।	१९	२५	उक्कस्सपदे णाणावरणीय-दंस- णावरणीय-मोहणीय-अंतराहयाण वेयणाओ सेतदो उक्कस्सियाओ वत्तारि वि तुल्लाओ थोवाओ ।	५४
११	पुणरवि मारणतियसमुग्धादेण समुद्दो तिण्णि बिग्गहकंदयाणि कादूण ।	२०	२६	वेयणीय आउअ-णामा-गोदवेयणाओ सेतदो उक्कस्सियाओ वत्तारि वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ ।	५४
१२	से काळे अबो सत्तमाए पुडवीए णेराएसु उप्पज्जिदिदि त्ति तस्स णाणावरणीयवेयणा सेतदो उक्कस्सा	२३	२७	जहण्णुक्कस्सपदेण अट्टण्णं पि कम्माण वेदणाओ सेतदो जह- ण्णियाओ तुल्लाओ थोवाओ ।	५५
१३	तव्वदिरित्ता अणुक्कस्सा ।	२३			
१४	एवं दंसणावरणीय-मोहणीय- अंतराहयाणं ।	२९			
१५	सामित्तेण उक्कस्सपदे वेदणीय- वेदणा सेतदो उक्कस्सिया कस्स ?	२९			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
२८	गानावरणीय-दंसणावरणीय- मोहणीय अंतराद्यवेयणाओ खेत्तदो उक्कास्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ ।	५५	४१	निगोदपदिद्विद्वापज्जत्तयस्स जह- णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	५८
२९	वेयणाय-आउअ-णामा-गोद्वेय- णाओ खेत्तदो उक्कास्सियाओ चत्तारि वि तुल्लाओ असंखेज्ज- गुणाओ ।	५५	४२	बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसीर- अपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	५९
३०	एत्तो सव्वजीवेसु ओगाहणमहा- दंडओ कायव्वो भवदि ।	५६	४३	बीईदियअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	५९
३१	सव्वत्थोवा सुद्धमणिगोदजीवअप- ज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा ।	५६	४४	तीईदियअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	५९
३२	सुद्धमवाउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्ज- गुणा ।	५६	४५	चउरिदियअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	५९
३३	सुद्धमतेउकाइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्ज- गुणा ।	५६	४६	पंविदियअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	५९
३४	सुद्धमवाउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्ज- गुणा ।	५६	४७	सुद्धमणिगोदजीवणिव्वत्तिपज्जत्त- यस्स जहणिया ओगाहणा असं- खेज्जगुणा ।	५९
३५	सुद्धमपुढविकाइयलद्धिअपज्जत्त- यस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	५७	४८	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कास्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।	६०
३६	बादरवाउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्ज- गुणा ।	५७	४९	तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कास्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।	६०
३७	बादरतेउक्काइयअपज्जत्तयस्स जह- णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा	५७	५०	सुद्धमवाउक्काइयपज्जत्तयस्स जह- णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	६०
३८	बादरवाउक्काइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	५७	५१	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कास्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।	६०
३९	बादरपुढविकाइयअपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	५७	५२	तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कास्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।	६०
४०	बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स जह- णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	५८	५३	सुद्धमतेउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	६१
			५४	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कास्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।	६१
			५५	तस्सेव निव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्का- स्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ।	६१
			५६	सुद्धमवाउक्काइयनिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहणिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।	६१

[illegible]

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	पृष्ठ	पृष्ठ
८८	बादरवण्णकदिक्काइयपत्तेयसरीर- णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।	६७	९४	पँचिदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्क- स्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।	६९
८९	पँचिदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।	६८	९५	सुहुमादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवळियाप अस्संखेज्जदिभागो ।	७०
९०	तेहँदियणिव्वत्ति ज्जत्तयस्स उक्क- स्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।	७१	९६	सुहुमादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पळिदोवमस्स अस्संखेज्जदिभागो ।	७२
९१	बडरिदिय णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।	७२	९७	बादरादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवळियाप अस्संखेज्जदिभागो ।	७३
९२	बेहँदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्क- स्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।	७३	९८	बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पळिदोवमस्स अस्संखेज्जदिभागो ।	७४
९३	बादरवण्णकदिक्काइयपत्तेयसरीर- णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ।	७४	९९	बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो संखेज्जा समया ।	७५

वेयणकालविहाणसुत्ताणि

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	वेयणकालविहाणे त्ति । तत्थ इमाणि तिणिण अणियोगहाराणि णादव्वाणि भवन्ति ।	७५	९	पज्जत्तयदस्स कम्मभूमियस्स अकम्मभूमियस्स वा कम्मभूमिप- ट्ठिभागस्स वा संखेज्जवासा- उअस्स वा अस्संखेज्जवासाउअस्स वा देवस्स वा मणुस्सस्स वा तिरि- क्कस्स वा नेरइयस्स वा इत्थि- वेवस्स वा पुरिसवेवस्स वा णउंसयवेवस्स वा जलवरस्स वा थलवरस्स वा खगवरस्स वा सागार-जागार-सुदोषजोगजुत्तस्स उक्कस्सियाप ट्ठिदीप उक्कस्सट्ठिवि- संफिलेसे बट्टमाणस्स, अधवा ईसिमज्झमपरिणामस्स तस्स णाणा- वरणीयवेयणा कालदो उक्कस्सा ।	८८
२	पदमीमांसा-सामित्तमप्याबहुप त्ति ।	७७	१०	तण्वदिरिचमणुकस्सा ।	९१
३	पदमीमांसाए णाणावरणीयवेयणा कालदो किमुक्कस्सा किमणुकस्सा कि जहण्णा किमजहण्णा ?	७८	१०	एवं छण्णं कम्मार्णं ।	९२
४	उक्कस्सा वा अणुकस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा ।	७९			
५	एवं सत्तण्णं कम्मार्णं ।	८५			
६	सामित्तं दुविहं जहण्णपदे उक्कस्स- पदे	८०			
७	सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीय- वेयणा कालदो उक्कस्सिया कस्स ?	८७			
८	अण्णदरस्स पँचिदियस्स सणिणस्स मिच्छादित्थस्स सव्वाहि पज्जत्तीहि				

एव संख्या

एव

पुत्र एव संख्या

एव

पुत्र

- ११ सामित्तेण उक्कस्सपदे आउअ-
वैयणा कालदो उक्कस्सिया कस्स ? ११२
- १२ अण्वरस्स मणुस्सस्स वा पंचिविय-
तिरिक्खज्जोणियस्स वा सण्णस्स
सम्माहट्ठिस्स वा [मिक्खारहट्ठिस्स
वा] सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्त-
यवस्स कम्मभूमियस्स वा कम्म-
भूमिपडिभागस्स वा संखेज्जवासाउ-
अस्स इत्थिवेवस्स वा पुरिसवेवस्स
वा णडंसयवेवस्स वा जलचरस्स वा
थलचरस्स वा सागार-जागारतप्पा-
भोगसंक्किल्लुस्स वा [तप्पाभोग-
विशुद्धस्स वा] उक्कस्सियाप
आवाधाय जस्स तं वेव-णिरयाउअं
पढमसमप बंधनस्स आउअवैयणा
कालदो उक्कस्सा । ११३
- १३ तव्वदिरित्तमणुक्कस्सा । ११६
- १४ सामित्तेण जहण्णपदे णाणावरणीय-
वेवणा कालदो जहण्णिया कस्स ? ११८
- १५ अण्वरस्स चरिमसमयच्छुमत्थस्स
तस्स णाणावरणीयवैयणा कालदो
जहण्णा । ११९
- १६ तव्वदिरित्तमजहण्णा । १२०
- १७ एवं दंसणावरणीय-अंतराह्याणं । १२२
- १८ सामित्तेण जहण्णपदे वैयणीयवैयणा
कालदो जहण्णिया कस्स ? ”
- १९ अण्वरस्स चरिमसमयभवसिद्धि-
यस्स तस्स वैयणीयवैयणा कालदो
जहण्णा । ”
- २० तव्वदिरित्तमजहण्णा । १२३
- २१ एवं आउअ-णामा-गोदाणं । १२४
- २२ सामित्तेण जहण्णपदे मोहणीय-
वैयणा कालदो जहण्णिया कस्स ? १२५
- २३ अण्वरस्स अवगस्स चरिमसमय-
सकसाह्यस्स मोहणीयवैयणा
कालदो जहण्णा । १२६
- २४ तव्वदिरित्तमजहण्णा । ”

- २५ अप्पाबहुप स्सि । तथ इमाणि तिणिण
अणिओगद्वाराणि—जहण्णपदे
उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे । १२६
- २६ जहण्णपदेण अट्ठणं पि कम्माणं
वैयणाओ कालदो जहण्णियाओ
तुल्लाओ । १२७
- २७ उक्कस्सपदेण सव्वथोवा आउअ-
वैयणा कालदो उक्कस्सिया । ”
- २८ णामा-गोदवैयणाओ कालदो उक्क-
स्सियाओ दो वि तुल्लाओ संखेज्ज-
गुणाओ । ”
- २९ णाणावरणीय-दंसणावरणीय-वैय-
णीय-अंतराह्यवैयणाओ कालदो
उक्कस्सियाओ वत्तारि वि तुल्लाओ
विसेसाहियाओ । १२८
- ३० मोहणीयस्स वैयणा कालदो उक्क-
स्सिया संखेज्जगुणा । ”
- ३१ जहण्णुक्कस्सपदे अट्ठणं पि कम्माणं
वैयणाओ कालदो जहण्णियाओ
तुल्लाओ योवाओ । ”
- ३२ आउअवैयणा कालदो उक्कस्सिया
असंखेज्जगुणा । १२९
- ३३ णामा-गोदवैयणाओ कालदो
उक्कस्सियाओ दो वि तुल्लाओ
असंखेज्जगुणाओ । ”
- ३४ णाणावरणीय-दंसणावरणीय-
वैयणीय-अंतराह्यवैयणाओ कालदो
उक्कस्सियाओ वत्तारि वि तुल्लाओ
विसेसाहियाओ । ”
- ३५ मोहणीयवैयणा कालदो उक्क-
स्सिया संखेज्जगुणा । ”
- (१ चूलिया)
- ३६ एसो मूलपयडिद्धिदिबंधे पुब्बं गम-
णिज्जे तथ इमा ण वत्तारि अणि-
योगद्वाराणि—द्विदिबध्दुणपकवणा
णिसेयकवणा आवाधायकवणा
अप्पाबहुप स्सि । ”

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
७१	बादरेईदियपज्जत्तयस्स उक्क- स्सओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	२३०	८८	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	२३४
७२	सुद्धमेईदियपज्जत्तयस्स उक्क- स्सओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	"	८९	तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	"
७३	बादरेईदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	२३१	९०	संजवस्स उक्कस्सओ द्विविंधो संखेज्जगुणो	"
७४	वीईदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विविंधो संखेज्जगुणो ।	"	९१	संजदासंजवस्स जहण्णओ द्विवि- ंधो संखेज्जगुणो ।	२३५
७५	तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	"	९२	तस्सेव उक्कस्सओ द्विविंधो संखेज्जगुणो ।	"
७६	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	"	९३	असंजदसम्मादिद्विपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विविंधो संखेज्जगुणो	"
७७	तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	२३२	९४	तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विविंधो संखेज्जगुणो ।	"
७८	तीईदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	"	९५	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विविंधो संखेज्जगुणो ।	२३६
७९	तीईदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	"	९६	तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विविंधो संखेज्जगुणो ।	"
८०	तस्सेव उक्कस्सद्विविंधो विसेसाहिओ ।	"	९७	सण्णिमिच्छाद्विपेक्षिदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विविंधो संखेज्जगुणो ।	"
८१	तीईदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	"	९८	तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विविंधो संखेज्जगुणो ।	२३७
८२	वउरिदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	२३३	९९	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विविंधो संखेज्जगुणो ।	"
८३	तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	"	१००	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विविंधो संखेज्जगुणो ।	"
८४	तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	"	१०१	जिसेयपरुवणवाए तथे इमाणि पुवे अणियोगइराणि अणेत- रोवणिघा परंपरोवणिघा ।	"
८५	तस्सेव पज्जत्तयस्स उक्कस्सओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	"	१०२	अणंतरोवणिघाए पंचिदियाणं सण्णीणं मिच्छाद्विपेक्षं पज्जत्त- याजं णाणावरणीय-दंलणावर- णीय-वेयणीय-अंतराइयाणं तिणिण वाससहस्सणि आवाधं मोत्तणं अं पइयसमए पइसमं जिसिंसं तं बह्वगं, अं विदियसमए	
८६	असण्णिपंचिदियपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विविंधो संखेज्जगुणो ।	२३४			
८७	तस्सेव अपज्जत्तयस्स जहण्णओ द्विविंधो विसेसाहिओ ।	"			

पदेसगं निसितं तं विसेसहीणं,
अं तद्वियसमप पदेसगं निसितं
तं विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं
विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण तीसं
सागरोवमकोडीयो त्ति ।

२३८

१०३ पंचद्वियाणं सण्णीणं मिच्छादिहीणं
पज्जत्तयाणं मोहणीयस्स सत्त-
वाससहस्साणि आबाहं मोत्तूण
अं पढमसमप पदेसगं निसितं
तं बहुगं, अं विद्वियसमप पदेसगं
निसितं तं विसेसहीणं, अं तद्विय-
समप पदेसगं निसितं तं विसे-
सहीणं, एवं विसेसहीणं विसे-
सहीणं जाव उक्कस्सेण सत्तरि-
सागरोवमकोडाकोडि त्ति ।

२४२

१०४ पंचद्वियाणं सण्णीणं सम्मादि-
हीणं वा मिच्छादिहीणं वा
पज्जत्तयाणमाउअस्स पुव्वकोडि-
तिभागमाबाधं मोत्तूण अं पढम-
समप पदेसगं निसितं तं बहुगं,
अं विद्वियसमप पदेसगं निसितं
तं विसेसहीणं, अं तद्वियसमप
पदेसगं निसितं तं विसेसहीणं,
एवं विसेसहीणं विसेसहीणं
जाव उक्कस्सेण तेतीससागरो-
वमाणि त्ति ।

२४५

१०५ पंचद्वियाणं सण्णीणं मिच्छादि-
हीणं पज्जत्तयाणं जामा-गोदाणं
बेवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण
पढमसमप पदेसगं निसितं तं
बहुगं, अं विद्वियसमप पदेसगं
निसितं तं विसेसहीणं, अं
तद्वियसमप पदेसगं निसितं तं
विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं
विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण
बीसं सागरोवमकोडीयो त्ति ।

२४६

१०६ पंचद्वियाणं सण्णीणं मिच्छादि-
हीणमपज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्मा-

जमाउववज्जाणमंतोमुहुत्तमाबाधं
मोत्तूण अं पढमसमप पदेसगं
निसितं तं बहुगं, अं विद्विय-
समप पदेसगं निसितं तं
विसेसहीणं, अं तद्वियसमप पदे-
सगं निसितं तं विसेसहीणं,
एवं विसेसहीणं विसेसहीणं
जाव उक्कस्सेण अंतोकोडा-
कोडीयो त्ति ।

२४९

१०७ पंचद्वियाणं सण्णीणमसण्णीणं
चउरिं विय-तीरिंदिय-बीरिंदियाणं
बादरेरिंदियअपज्जत्तयाणं सुहुमे-
रिंदियपज्जत्तापज्जत्ताणमाउअस्स
अंतोमुहुत्तमाबाधं मोत्तूण अं
पढमसमप पदेसगं निसितं तं
बहुगं, अं विद्वियसमप पदेसगं
निसितं तं विसेसहीणं, अं तद्विय-
समप पदेसगं निसितं तं विसे-
सहीणं, एवं विसेसहीणं विसे-
सहीणं जाव उक्कस्सेण पुव्वको-
डीयो त्ति ।

२४८

१०८ पंचद्वियाणमसण्णीणं चउरिं दि-
याणं तीरिंदियाणं बीरिंदियाणं
बादरेरिंदियपज्जत्तयाणं सत्तण्णं
कम्माणं आउअवज्जाणं अंतो-
मुहुत्तमाबाधं मोत्तूण अं पढम-
समप पदेसगं निसितं तं बहुगं,
अं विद्वियसमप पदेसगं निसितं
तं विसेसहीणं, अं तद्वियसमप
पदेसगं निसितं तं विसेसहीणं
एवं विसेसहीणं विसेसहीणं
जाव उक्कस्सेण सागरोवमसह-
स्सस्स सागरोवमसहस्स सागरो-
वमपण्णासाय सागरोवमपण्णी-
साय सागरोवमसत्तिण्णं सत्त
भागा सत्त-सत्त-भागा बेसत्त
भागा पडिबुण्णा त्ति ।

२४९

सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ सूत्र संख्या

पृष्ठ

पृष्ठ

१०९ पंचिदियाणमसण्णीणं अउरिदिय-
याणं तीहंदियाणं बीहंदियाणं
बादरेहंदियपज्जत्तयाणमाउअस्स
पुब्बकोडिसिआगं वेमासं सोल-
सराहंदियाणि साविरेयाणि
असारिवासाणि सत्तवाससह-
स्साणि साविरेयाणि आबाहं
मोसूणं अं पढमसमयं पदेसगं
णिसित्तं तं बहुगं, अं बिदियसमयं
पदेसगं णिसित्तं तं विसेसहीणं,
अं तवियसमयं पदेसगं णिसित्तं
विसेसहीणं, एवं विसेसहीणं
विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण
पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो
पुब्बकोडि सि । २५१

११० पंचिदियाणमसण्णीणं अउरिदिय-
याणं तीहंदियाणं बीहंदियाणं
बादरेहंदियअपज्जत्तयाणं सुहु-
मेहंदियपज्जत्तअपज्जत्तयाणं
सत्तण्हं कम्माणमाउववज्जाणमंतो-
मुहुत्तमाबाधं मोसूणं अं पढम-
समयं पदेसगं णिसित्तं तं बहुगं,
अं बिदियसमयं पदेसगं णिसित्तं
तं विसेसहीणं, अं तवियसमयं
पदेसगं णिसित्तं तं विसेसहीणं,
एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव
उक्कस्सेण सागरोवमसदस्स
सागरोवमपण्णासाए सागरोवम-
पणुवीसाए सागरोवमस्स तिणिण
सत्तभागा, सत्त-सत्तभागा, वे
सत्तभागा पलिदोवमस्स संखेज्ज-
विभागोण ऊणया पलिदोवमस्स
असंखेज्जविभागोण ऊणया सि । २५२

१११ परंपरोवणिआए पंचिदियाणं
सण्णीणमसण्णीणं पज्जत्तयाणं
अट्ठणं कम्माणं अं पढमसमयं
पदेसगं तदो पलिदोवमस्स

असंखेज्जविभागं गंतूणं दुगुणहीणा,
एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव
उक्कस्सिया द्विदी सि । २५३

११२ एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं असं-
खेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि । २५५

११३ णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि
पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखे-
ज्जविभागो । २५६

११४ णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि
योवाणि । २५७

११५ एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखे-
ज्जगुणं । "

११६ पंचिदियाणं सण्णीणमसण्णीण-
मपज्जत्तयाणं अउरिदिय-तीहं-
दिय-बीहंदिय-एहंदिय-बादर-सुहु-
मपज्जत्तापज्जत्तयाणं सत्तण्णं
कम्माणमाउववज्जाणं अं पढम-
समयं पदेसगं तदो पलिदोव-
मस्स असंखेज्जविभागं गंतूणं
दुगुणहीणा, एवं दुगुणहीणा
दुगुणहीणा जाव उक्कस्सिया
द्विदि सि । "

११७ एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखे-
ज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि । "

११८ णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि
पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखे-
ज्जविभागो । २५८

११९ णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि
योवाणि । "

१२० एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसं-
खेज्जगुणं । "

१२१ आवाचाकंदयपरुवणत्ताए । २६६

१२२ पंचिदियाणं सण्णीणमसण्णीणं
अउरिदियाणं तीहंदियाणं बीहं-
दियाणं एहंदियबादर-सुहु-
पज्जत्तअपज्जत्तयाणं सत्तण्णं
कम्माणमाउववज्जाणमुक्कस्सि-

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	यादो द्वितीयो समय समय पलिवोवमस्त असंखेज्जवि- भागमेत्तमोसरिदूण एयमाबाहा- कंद्यं करेदि । एस कमो जाव जहणिया द्विदि ति । २६७		१४०	उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसा- हियो । २७५	
१२३	अप्पाबहु ए ति । २७०		१४१	पंचिदियाणं सण्णीणमसण्णीण- मपज्जत्तयाणं चउरिंदियाणं तीरिंदियाणं बीरिंदियाणं एरिंदिय- बादर—सुद्धमपज्जत्तापज्जत्तया- णमाउमस्त सव्वत्थोवा जहणिया आबाहा । ”	
१२४	पंचिदियाणं सण्णीणं मिच्छाह- ट्ठीणं पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्तण्णं कम्माणमाउववज्जाणं सव्वत्थोवा जहणिया आबाहा । ”		१४२	जहण्यओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । ”	
१२५	आबाहट्टाणाणि आबाहाकंद्याणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि । ”		१४३	आबाहट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि । ”	
१२६	उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया । २७१		१४४	उक्कस्सिया आबाहा विसेसा- हिया । २७६	
१२७	णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । ”		१४५	टिदिबंधट्टाणाणिसंखेज्जगुणाणि । ”	
१२८	एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखे- ज्जगुणं । ”		१४६	उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसा- हियो । ”	
१२९	एयमाबाहाकंद्यमसंखेज्जगुणं । २७२		१४७	पंचिदियाणमसण्णीणं चउरिंदि- याणं तीरिंदियाणं पज्जत्त-अपज्जत्त- याणं सत्तण्णं कम्माणं आउव- वज्जाणमाबाहट्टाणाणि आबाहा- कंद्याणि च दो वि तुल्लाणि धोवाणि । ”	
१३०	जहण्यओ द्विदिबंधो असंखेज्ज- गुणो । ”		१४८	जहणिया आबाहा संखेज्जगुणा । २७७	
१३१	टिदिबंधट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि । ”		१४९	उक्कस्सिया आबाहा विसेसा- हिया । ”	
१३२	उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसा- हियो । २७३		१५०	णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । ”	
१३३	पंचिदियाणं सण्णीणमसण्णीणं पज्जत्तयाणमाउमस्त सव्वत्थोवा जहणिया आबाहा । ”		१५१	एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्ज- गुणं । ”	
१३४	जहण्यओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । ”		१५२	एयमाबाहाकंद्यमसंखेज्जगुणं । ”	
१३५	आबाहाट्टाणाणि संखेज्जगुणाणि । ”		१५३	टिदिबंधट्टाणाणि असंखेज्ज- गुणाणि । २७८	
१३६	उक्कस्सिया आबाहा विसेसा- हिया । २७४		१५४	जहण्यओ द्विदिबंधो संखेज्जगुणो । ”	
१३७	णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । ”		१५५	उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो । ”	
१३८	एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखे- ज्जगुणं । ”		१५६	एरिंदियबादर—सुद्धम-पज्जत्त- अपज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्माणं आउववज्जाणमाबाहट्टाणाणि	
१३९	टिदिबंधट्टाणाणि असंखेज्जगुणाणि । ”				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	आवाहाकंद्याणि च दो वि तुहाणि थोवाणि ।	२७८	१७३	तिट्टाणबंधा जीवा संकिलिद्धरा ।	३१५
१५७	जहणिया आवाहा असंखेज्जगुणा ।		१७४	चउट्टाणबंधा जीवा संकिलिद्धरा ।	॥
१५८	उक्कस्सिया आवाहा विसेसाहिया ।	२७९	१७५	सादस्स चउट्टाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहणियं द्विदि बंधंति ।	३१६
१५९	णाणापवेस गुणहाणिट्टाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ।	॥	१७६	सादस्स तिट्टाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स अजहण-अणु- क्कस्सियं द्विदि बंधंति ।	॥
१६०	एयपवेसगुणहाणिट्टाणंतरम- संखेज्जगुणं ।	॥	१७७	सादस्स बिट्टाणबंधा जीवा सादस्स वेव उक्कस्सियं द्विदि बंधंति ।	३१७
१६१	एयमावाहाकंद्यमसंखेज्जगुणं ।	॥	१७८	असादस्स बेट्टाणबंधा जीवा सत्थाणेण णाणावरणीयस्स जह- णियं द्विदि बंधंति ।	३१८
१६२	ठिदिबंधट्टाणाणि असंखेज्जगुणाणि ।	॥	१७९	असादस्स तिट्टाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स अजहण- अणुक्कस्सियं द्विदि बंधंति ।	३१९
१६३	जहणओ द्विदिबंधो असंखेज्ज- गुणो ।	॥	१८०	असादस्स चउट्टाणबंधा जीवा असादस्स वेव उक्कस्सियं द्विदि बंधंति ।	॥
१६४	उक्कस्सओ द्विदिबंधो विसेसाहियो ।	॥	१८१	तेसि ठुविहा सेट्ठिपरूवणा अणंत- रोवणिधा परंपरोवणिधा ।	३२०
(बिदिया चूलिया)			१८२	अणंतरोवणिधाए सादस्स चउ- ट्टाणबंधा तिट्टाणबंधा जीवा असादस्स बिट्टाणबंधा तिट्टाण- बंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहणियाए द्विदीय जीवा थोवा ।	३२१
१६५	ठिदिबंधज्जसवसाणपरूवणए तत्थ इमाणि तिणिण अणिओग- हाराणि जीवसमुदाहारो एयडि- समुदाहारो द्विदिसमुदाहारो स्ति ।	३०८	१८३	बिदियाए द्विदीय जीवा विसे- साहिया ।	३२२
१६६	जीवसमुदाहारो स्ति जे ते णाणा- वरणीयस्स बंधा जीवा ते ठुविहा- सादबंधा वेव असादबंधा वेव ।	३११	१८४	तवियाए द्विदीय जीवा विसे- साहिया ।	३२३
१६७	तत्थ जे ते सादबंधा जीवा ते तिविहा-चउट्टाणबंधा तिट्टाणबंधा विट्टाणबंधा ।	३१२	१८५	एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोवमसदुधणं ।	॥
१६८	असादबंधा जीवा तिविहा-विट्टा- णबंधा तिट्टाणबंधा चउट्टाण- बंधा स्ति ।	३१३	१८६	तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सागरोवमसदुधणं ।	॥
१६९	सम्भविमुद्धा सादस्स चउट्टाण- बंधा जीवा ।	३१४			
१७०	तिट्टाणबंधा जीवा संकिलिद्धरा ।	॥			
१७१	बिट्टाणबंधा जीवा संकिलिद्धरा ।	३१५			
१७२	सम्भविमुद्धा असादस्स बिट्टाण- बंधा जीवा ।	॥			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१८७	सादस्स बिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णिंयाए द्वितीय जीवा घोवा ।	३२४	१९८	तेण परं पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणा ।	३२७
१८८	विदियाए द्वितीय जीवा विसेसाहिया ।	"	१९९	एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव सादस्स असादस्स उक्कस्सिया द्विदि त्ति ।	"
१८९	तद्वियाए द्वितीय जीवा विसेसाहिया ।	"	२००	एगजीव-दुगुणवड्हिद-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पल्लिदोवमवग्गामूढाणि ।	"
१९०	एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव सागरोपमसदपुधत्तं ।	"	२०१	णाणाजीव-दुगुणवड्हिद-हाणिट्ठाणंतराणि पल्लिदोवमवग्गामूलस्स असंखेज्जदिभागो ।	३२८
१९१	तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सादस्स असादस्स उक्कस्सिया द्विदि त्ति ।	"	२०२	णाणाजीव-दुगुणवड्हिद-हाणिट्ठाणंतराणि घोवाणि ।	"
१९२	परंपरोवणिघाए सादस्स चउट्ठाणबंधा तिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स बिट्ठाणबंधा, तिट्ठाणबंधा णाणावरणीयस्स जहण्णिंयाए द्वितीय जीवेहितो तदो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणवड्हिदा ।	३२५	२०३	एगजीव-दुगुणवड्हिद-हाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।	"
२०३	एवं दुगुणवड्हिदा दुगुणवड्हिदा जाव जममज्झं ।	३२६	२०४	सादस्स असादस्स य बिट्ठाणयम्मि णियमा अणागारपाओम्माट्ठाणाणि ।	३३२
१९४	तेण परं पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणा ।	"	२०५	सागारपाओग्गट्ठाणाणि सव्वत्थ ।	"
१९५	एवं दुगुणहीणा-दुगुणहीणा जाव सागरोवमसदपुधत्तं ।	"	२०६	सादस्स चउट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि घोवाणि ।	३३४
१९६	सादस्स बिट्ठाणबंधा जीवा असादस्स चउट्ठाणबंधा जीवा णाणावरणीयस्स जहण्णिंयाए द्वितीय जीवेहितो तदो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणवड्हिदा ।	३२७	२०७	उवरि संखेज्जगुणाणि ।	"
१९७	एवं दुगुणवड्हिदा दुगुणवड्हिदा जाव सागरोवमसदपुधत्तं ।	"	२०८	सादस्स तिट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो ट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि	३३५
			२०९	उवरि संखेज्जगुणाणि ।	"
			२१०	सादस्स बिट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो एयंतसागारपाओग्गट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ।	"
			२११	मिस्सयाणि संखेज्जगुणाणि	३३६
			२१२	सादस्स खेव बिट्ठाणियजवमज्झस्स उवरि मिस्सयाणि संखेज्जगुणाणि ।	"
			२१३	असादस्स बिट्ठाणियजवमज्झस्स हेट्ठदो एयंतसागारपाओग्गट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ।	"

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
२१४	मिस्सयाणि संखेज्जगुणाणि ।	३३७	२३४	विद्वाणबन्धा जीवा संखेज्जगुणा ।	३४२
२१५	असावस्स वेध विद्वाणियज्जवमज्जस्स- सुवरि मिस्सयाणि संखेज्ज- गुणाणि ।	"	२३५	विद्वाणबन्धा जीवा संखेज्जगुणा ।	"
२१६	पर्यत्तासागारपाभोग्गद्वाणाणि संखेज्जगुणाणि ।	"	२३६	असावस्स विद्वाणबन्धा जीवा संखेज्जगुणा ।	"
२१७	असावस्स तिद्वाणियज्जवमज्जस्स हेह्वदो द्वाणाणि संखेज्जगुणाणि ।	३३८	२३७	अउद्वाणबन्धा जीवा संखेज्जगुणा ।	३४३
२१८	उवरि संखेज्जगुणाणि ।	"	२३८	तिद्वाणबन्धा जीवा विसेसाहिया ।	"
२१९	असावस्स अउद्वाणियज्जवमज्जस्स हेह्वदो द्वाणाणि संखेज्जगुणाणि ।	"	२३९	पयड्सिमुदाहारे स्ति तत्थ इमाणि दुवे अणियोगहारानि पमानाणुगमो अप्पाबहुय स्ति ।	३४६
२२०	सावस्स जहण्णभो द्विविंधो संखेज्जगुणो ।	"	२४०	पमानाणुगमे णाणावरणीयस्स असंखेज्जा लोगा द्विविंधज्जव- साणद्वाणाणि ।	"
२२१	अद्विविंधो विसेसाहिभो ।	"	२४१	एवं सत्तण्णे कम्मणं ।	"
२२२	असावस्स जहण्णभो द्विविंधो विसेसाहिभो ।	३३९	२४२	अप्पाबहुय स्ति सव्वत्थोवा आउ- अस्स द्विविंधज्जवसाण- द्वाणाणि ।	३४७
२२३	अद्विविंधो विसेसाहिभो ।	"	२४३	णामा-गोवाणं द्विविंधज्जवसा- णद्वाणाणि हो वि तुल्लाणि असं- खेज्जगुणाणि ।	"
२२४	अतो उक्कस्सयं वाहं गच्छवि सा द्विरी संखेज्जगुणा ।	"	२४४	णाणावरणीय-दंसणावरणीय- वेयणीय-अंतराहयाणं द्विविंध- ज्जवसाणद्वाणाणि चत्तारि वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ।	३४८
२२५	अंतोकोडाकोडी संखेज्जगुणा ।	"	३४५	मोहणीयस्स द्विविंधज्जवसा- णद्वाणाणि असंखेज्जगुणाणि ।	३४९
२२६	सावस्स विद्वाणियज्जवमज्जस्स उवरि पर्यत्तासागारपाभोग्गद्वाणाणि संखेज्जगुणाणि ।	३४०	२४६	ठिविसमुदाहारे स्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगहारानि पणणणा अणुकट्ठी तिस्व-मंदा स्ति ।	"
२२७	सावस्स उक्कसभो द्विविंधो विसेसाहिभो ।	"	२४७	पणणणाए णाणावरणीयस्स जहण्णयाए द्विरीए द्विविंधज्ज- वसाणद्वाणाणि असंखेज्जा लोगा ।	३५०
२२८	अद्विविंधो विसेसाहिभो ।	"	२४८	विदियाए द्विरीए द्विविंधज्ज- वसाणद्वाणाणि असंखेज्जा लोगा ।	"
२२९	वाहद्विरी विसेसाहिया ।	"	२४९	तद्वियाए द्विरीए द्विविंधज्ज- वसाणद्वाणाणि असंखेज्जगुणा ।	३५१
२३०	असावस्स अउद्वाणियज्जवमज्जस्स उवरिमद्वाणाणि विसेसाहियाणि ।	३४१			
२३१	असावस्स उक्कस्सद्विविंधो विसेसाहिभो ।	"			
२३२	अद्विविंधो विसेसाहिभो ।	"			
२३३	एदेण अट्ठपदेण सव्वत्थोवा सावस्स अउद्वाणबन्धा जीवा ।	"			

सूत्र संख्या	सूत्र	शृङ्खला संख्या	सूत्र	शृङ्खला संख्या
२५०	एवमसंख्येज्जा लोगा असंख्येज्जा लोगा जाव उक्कस्सट्ठिवि सि । ”		२६४	एवं द्विविबंघज्झवसाण-दुगुण-वड्ढिहाणिट्ठाणंतरे पल्लिवोवमस्स . असंख्येज्जविभागो । ”
२५१	एवं सत्तण्णं कम्माणं । ”	३५२	२६५	णाणाट्ठिविबंघज्झवसाण-दुगुण-वड्ढिहाणिट्ठाणंतराणि अंगुल-वग्गामूलखेदणाणमसंख्येज्जविभागो । ”
२५२	तेसिं वुविधा सेडिपरुवणा अणंत-रोवणिधा परंपरोवणिधा । ”	३५३	२६६	णाणाट्ठिविबंघज्झवसाण-दुगुण-वड्ढिहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि । ”
२५३	अणंतरोवणिधाए नाणावरणी-यस्स जहणियाए ट्ठिदीए ट्ठिवि-बंघज्झवसाणट्ठाणाणि थोवाणि ”		२६७	एयट्ठिविबंघज्झवसाणदुगुणव-ड्ढिहाणिट्ठाणंतरमसंख्येज्जगुणं । ”
२५४	विदियाए ट्ठिदीए ट्ठिविबंघज्झ-वसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ”		२६८	एवं छण्णं कम्माणमाउववजाणं । ”
२५५	तदियाए [ट्ठिदीए] ट्ठिविबंघज्झ-वसाणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ”		२६९	अणुकट्ठीए नाणावरणीयस्स जहणियाए ट्ठिदीए जाणि ट्ठिवि-बंघज्झवसाणट्ठाणाणि ताणि विदियाए ट्ठिदीए बंघज्झवसाण-ट्ठाणाणि अपुव्वाणि । ”
२५६	एवं विसेसाहियाणि विसेसाहियाणि जाव उक्कस्सियाट्ठिवि सि । ”		२७०	एवमपुव्वाणि अपुव्वाणि जाव उक्कस्सिया ट्ठिवि सि । ”
२५७	एवं छण्णं कम्माणं । ”	३५५	२७१	एवं सत्तण्णं कम्माणं । ”
२५८	आउअस्स जहणियाए ट्ठिदीए ट्ठिविबंघज्झवसाणट्ठाणाणि थोवाणि । ”		२७२	तिव्वमंदहाए नाणावरणीयस्स जहणियाए ट्ठिदीए जहणयं ट्ठिविबंघज्झवसाणट्ठाणं सव्व-मंदाणुभाणं । ”
२५९	विदियाए ट्ठिविबंघज्झवसाण-ट्ठाणाणि असंख्येज्जगुणाणि । ”		२७३	तिस्से खेव उक्कस्समणंतगुणं । ”
२६०	तदियाए ट्ठिदीए ट्ठिविबंघज्झवसा-णट्ठाणाणि असंख्येज्जगुणाणि । ”		२७४	विदियाए ट्ठिदीए जहणयं ट्ठिविबंघज्झवसाणट्ठाणमणंतगुणं ”
२६१	एवमसंख्येज्जगुणाणि असंख्येज्ज-गुणाणि जाव उक्कस्सिया ट्ठिवि सि । ”	३५६	२७५	तिस्से खेव उक्कस्समणंतगुणं । ”
२६२	परंपरोवणिधाए नाणावरणी-यस्स जहणियाए ट्ठिदीए ट्ठिवि-बंघज्झवसाणट्ठाणेहिंतो तदो पल्लिवोवमस्स असंख्येज्जविभागं गंतूण वुगुणवड्ढिवा । ”		२७६	तदियाए ट्ठिदीए जहणयं ट्ठिवि-बंघज्झवसाणट्ठाणमणंतगुणं । ”
२६३	एवं दुगुणवड्ढिवा दुगुणवड्ढिवा जाव उक्कस्सिया ट्ठिवि सि । ”		२७७	तिस्से खेव उक्कस्सयमणंतगुणं । ”
			२७८	एवणंतगुणा जाव उक्कस्सट्ठिवि सि । ”
			२७९	एवं सत्तण्णं कम्माणं । ”

२ अवतरण-गाथा-सूची

क्रमसंख्या	गाथा	पृष्ठ	अव्यय कहीं
	(वेदना-क्षेत्रविधान)		प्रमाणवार्तिक ४-१९०
१	अवगमनिवारणद्वं	१	पंचा. १०१
	(वेदना-कालविधान)		
५	अच्छेदनस्य राशेः	१५४	पंचा. १००
८	अयोगमपर्यैंग—	३१७	गो. जी. ५६९
४	कालो ऽस्ति य वक्ष्यते	७६	व. सं. पु. ६ पृ. १५८, पु. १० पृ. ४८५
१	कालो परिणामभावो	७५	गो. जी. ५८८
२	अथ परिणाम इत्यस्य सो	७६	
६	प्रक्षेपकसंक्षेपेण	२४१	
३	लोगागासपक्षे	७६	
७	विशेषणविशेषाभ्याम्	३१७	

३ ग्रन्थोल्लेख

१ छेदसूत्र

१ अ च द्वित्येति-णसुस्यवेदानं चोलादिचागो अत्यि, छेदसूत्रेण सह विरोधादो । १८४

२ तत्त्वार्थसूत्र (१-२०)

१ अ च पुष्पसहो कारणतथभावेन अपसिद्धो, “मविपुष्पं सुदं” (विशेषा १०५) इत्येतत् कारणे वदमानपुष्पसहवर्लभादो । १४१

३ प्रदेशविरचितअल्पबहुत्व

१ तं कचं णव्वदे ? चरिमगुणहाणिद्ववादो पदमणिसेयो असंखेज्जगुणो ऽस्ति पदेसविरह्यअप्पाबहुगादो । २५६

४ मूलाचार

१ अ च तेण सह तस्स बंधो, आपंचमी ऽस्ति सिंहा इत्थीभो अंति छट्ठिपुडवि ऽस्ति (१२-११३) । ११४

२ अ च वेवानं उक्कत्ताउअं द्वित्येतिवेदेण सह बज्झइ, णियमा णिगंगयल्लिणेण (१२-१३४) । ११४

५ संतकम्मपाहुड

१ संतकम्मपाहुडे पुण णिगोदेसु उप्पादो । २१

६ अनिर्दिष्टनाम

१ “अखे शून्यं रूपेण शुणम्” इति गणितन्यायेन जं लखं तं ठविय “रुवोनमाविसं-शुणमेकोनशुणोन्मथितमिच्छा” एवेण रुवूणं काऊण...सब्बज्झवसाणपमाणं होवि । ३६०

४ पारिभाषिक शब्द-सूची

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		अनन्तशुणवृद्धि	३५१	अव्यययोगव्यवच्छेद	२४५, ३१८
अकर्मभूमि	८९	अनन्तमागवृद्धि	३५२	अप्रधानकाल	७६
अक्षितकाल	७६	अनन्तरोपनिधा	३५२	अयोगव्यवच्छेद	२४५, ३१७
अत्यन्तायोगव्यवच्छेद	३१८	अलुल्लिखित	३५२	अलोका	२
अज्ञाकाल	७७	अव्ययकाकलेरया	१९	अवगाहनावपटक	५६

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अव्योगादभ्युपगच्छ	१४७, १६३, १७७	चतुर्थस्थान अनुयागबन्ध	"	प्रधानद्रव्यकाष्ठ	७५
असंख्यातगुणवृद्धि	३५१	चतुःस्थानबन्धक	"	प्रमाणकाष्ठ	७७
असंख्यातभागवृद्धि	"	चूलिका	१४०	भ	
असंख्येयवर्षायुष्क	८९, ९०	छ		भावजघन्य	८५
असातबन्धक	३१२	छेदगुणकार	१२८	भावतः आवेशजघन्य	१२
आ		छेदभागहार	१२५	भावतः उत्कृष्ट	११
आगमभावकाल	७६	ज		ल	
आगमभावक्षेत्र	२	जघन्यबन्ध	३३९	लघ्वमत्स्य	१५, ५१
आगमभाव जघन्य	१२	जघन्यस्थिति	३५०	लोक	२
आवेश उत्कृष्ट	१३	ज-स्थितिबन्ध	३३९	लोकोत्तरसमाचारकाल	७६
आवेश जघन्य	१२	जलवर	९०, ११५	लौकिकसमाचारकाल	"
आवेशतः काल जघन्य	"	ज्ञानोपयोग	३३४	व	
आवाधा	९२, २०२, २६१	त		विग्रह	२०
आवाधा काण्डक	९२, २६६	तृतीयस्थान	३१३	विशुद्धता	३१४
आवाधा स्थान	१६२, २७१	त्रिस्थानबन्धक	"	विशुद्धि	२०९
उ		द		विशुद्धिस्थान	२०८, ३०९
उत्कृष्ट दाह	३३२	दर्शनोपयोग	३३३	वीचारस्थान	१११
उत्कृष्ट स्थितिसंक्लेश	९१	दाह	३३९	वेदना	२
ए		दाहस्थिति	३४१	वेदनाक्षेत्रविधान	"
एकस्थान	३१३	द्रव्य उत्कृष्ट	१३	वेदनासमुद्घात	१८
ओ		द्रव्य जघन्य	१२, ८५	स	
ओष उत्कृष्ट	१३	द्रव्यतः आवेश जघन्य	१२	सचिप्तकाल	७६
ओष जघन्य	१२	द्वितीय स्थान	३१३	समभागहार	१२७
क		द्विस्थानबन्धक	"	समाचारकाल	७६
कर्मक्षेत्र उत्कृष्ट	१३	घ		समुदाहार	३०८
कर्मक्षेत्र जघन्य	१२	ध्रुवस्थिति	३५०	संक्लेश	२०९, ३०९
कर्मभूमिप्रतिभाग	८९	न		संक्लेशस्थान	२०८
काकलेष्ट्या	१९	निर्वर्णजाकाण्डक	३६३	संख्यातगुणवृद्धि	३५१
काक जघन्य	८५	निषेक	२३७	संख्यातभागवृद्धि	"
कालतः उत्कृष्ट	१३	नोभागमभावकाल	७७	संख्येयवर्षायुष्क	८९
क्षेत्र	२	नोभागमभावक्षेत्र	२	सातबन्धक	३१२
क्षेत्र जघन्य	८५	नोभागमभावजघन्य	१२	लिकयमत्स्य	५२
क्षेत्रतः आदेशजघन्य	१२	नोकार्मक्षेत्र उत्कृष्ट	१३	स्थलवर	९०, ११५
ख		नोकार्मक्षेत्रजघन्य	१२	स्थितबन्धस्थान	१४२, १५२, २०५, २२५
खगवर	९०, ११५	प		स्थितिबन्धाध्यवसान	३१०
च		पञ्जिका	३०३	स्थस्थानजघन्यस्थिति	३११
चतुर्थस्थान	३१३	परम्परोपनिधा	३५३		

